अनिल मोहन

जथूरा

देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ

नया उपन्यास

जथूरा पूर्व जन्म की ऐसी रहस्यमय शक्ति थी जो हमारी दुनिया में घटित होने वाले हर बुरे एक्सीडेंट का देवता था, परंतु जगमोहन की छठी इंद्री ने जैसे जथूरा के हादसों को ब्रेक लगानी शुरू कर दी थी और फिर शुरू हुआ एक भयानक जलजला!

एक बात बताइए—अगर आपको पूर्वाभास होने लगे, जो घटनाएं भविष्य में होने वाली हैं, उनका आपको पहले ही पता चलने लगे तो, आपकी हालत क्या होगी। ये सोचकर आप चकरा गए न कि तब तो आपका बुरा हाल हो जाएगा। इन्हीं हालातों में उपन्यास के भीतर जगमोहन उलझा हुआ है, क्योंकि उसे जथूरा के द्वारा रचे गए हादसों का पूर्वाभास होना शुरू हो चुका है।

जथूरा

देवराज चौहान दो कदम आगे निकल गया, या यूं कह लें कि मखानी ही धीमा होकर दो कदम पीछे रह गया था और इसी लापरवाही का फायदा उठाया मखानी ने। पीछे से मखानी ने डंडे का भरपूर वार, देवराज चौहान के सिर पर किया।

देवराज चौहान के होंठों से पीड़ा-भरी कराह निकली। वो बिजली की तरह घूमा और एक हाथ में डंडा पकड़ लिया। चेहरा क्रोध और पीड़ा से धधक उठा था।

मखानी के होंठ भिंचे हुए थे।

"तो तुम जगमोहन नहीं हो। मेरा शक ठीक निकला।"

तभी मखानी के जूते की ठोकर देवराज चौहान की टांगों के बीच पड़ी।

देवराज चौहान चीख पड़ा। डंडा उसके हाथ से छूट गया। दोनों हाथ टांगों के बीच रख लिए।

पागल हो चुके मखानी ने दोनों हाथों से डंडा थामकर, पूरी ताकत से देवराज चौहान के सिर पर मारा।

ये वार घातक सिद्ध हुए।

नीचे जा गिरा देवराज चौहान। सिर से बहता खून, चेहरे और फर्श पर बिखरने लगा।

"तू ठीक समझा कि मैं जगमोहन नहीं हूं, मैं मखानी हूं—मखानी।"

देवराज चौहान बेहोश हो चुका था।

अनिल मोहन का नया उपन्यास

क्या आप भविष्य में झांक सकते हैं?
अगर आप जान लें कि अगले पल आपके साथ क्या होने वाला है, तो आप क्या करेंगे?
जादू-टोना, भूत-प्रेत, तंत्र-मंत्र, जीवन और मृत्यु से भी बढ़कर है भविष्य में झांक लेना।

नसूरा

देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ!

अनिल मोहन

राजा पॉकेट बुक्स में

अनिल मोहन का

देवराज चौहान

मोना चौधरी

एक साथ वाला आगामी नया उपन्यास

पोतेबाबा

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र व घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी जीवित व मृत व्यक्ति से इनका कोई संबंध नहीं है। उपन्यास में स्थान आदि का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिए किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन मात्र है।

प्रकाशक : राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084

मुद्रक : विमल ऑफसेट प्रिंटर्स
128, नई मोहनपुरी (नियर शिव मंदिर) मेरठ

दो शब्द—लेखक की कलम से

अपने प्रिय पाठकों को
अनिल मोहन का नमस्कार!

लम्बे इंतजार के बाद आपके हाथों में है, देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाला उपन्यास—**'जथूरा'**।

पहले बात करते हैं **राजा पॉकेट बुक्स** से पूर्व प्रकाशित आर.डी.एक्स. सीरीज के नए उपन्यास **'ऑप्रेशन टू किल'** की। **'ऑप्रेशन टू किल'** आपको मिला और आपने पसंद भी किया। ये पता चला मुझे। परंतु इस उपन्यास में कुछ गड़बड़ हो गई है, वो मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं। इस गड़बड़ की वजह से श्री राजकुमार गुप्ताजी भी नाराज हुए। वैसे देखा जाए तो गुप्ताजी अपनी जगह पर ठीक हैं कि पहला भाग उनके यहां से प्रकाशित हो रहा है और हाथोहाथ ही **'ऑप्रेशन टू किल'** का दूसरा भाग किसी अन्य प्रकाशक के द्वारा प्रकाशित होकर आ गया। इसमें मेरी गलती है। मुझे दूसरा भाग वहीं से प्रकाशित करवाना चाहिए था, जहां से पहला भाग प्रकाशित हुआ है, हमेशा ऐसा ही होता रहा है और अब भी ऐसा ही होना चाहिए था। मैं पाठकों को यकीन दिलाता हूं, ऐसा भविष्य में नहीं होगा। बहरहाल आर. डी.एक्स. सीरीज का मुक्त रूप से प्रथम उपन्यास **'ऑप्रेशन टू किल'** पाठकों को पसंद आया। वरना पहले तो जो भी उपन्यास आर.डी.एक्स. सीरीज के बाजार में आए, तब साथ में देवराज चौहान को लिया गया था। परंतु पाठकों ने कहा कि देवराज चौहान को आर.डी.एक्स. के साथ मिक्स न करें। मैंने पाठकों की बात मानी और उदाहरण के तौर पर **'ऑप्रेशन टू किल'** का दूसरा भाग पेश कर दिया।

अब बात करते हैं **'जथूरा'** की।

'जथूरा' देवराज चौहान और मोना चौधरी सीरीज का एक साथ वाला उपन्यास है। जो कि आपको पूर्वजन्म की रहस्यमय दुनिया की सैर पर ले जाएगा। पहले के उपन्यासों में आप पढ़ ही चुके हैं कि पूर्वजन्म की दुनिया में कैसे-कैसे रोमांच भरे हादसे होते हैं। साथ के सब पात्र जैसे कि जगमोहन, सोहनलाल, बांकेलाल राठौर, रुस्तम राव, महाजन, नगीना, पारसनाथ भी पूर्वजन्म में प्रवेश करते हैं। वहां पर घटने वाली अजीबो-गरीब घटनाएं

रोमांचित करती हैं। इस उपन्यास में जथूरा पूर्वजन्म का पात्र है, जो कि हमारी दुनिया में होने वाले हादसों का देवता है। वो हादसे तैयार करता है और जांच-परख होने के बाद हादसों को, हमारी दुनिया के किसी भी आदमी के नाम छोड़ देता है। वो हादसा हमारी दुनिया में पहुंचते ही उस व्यक्ति को वैसा ही करने पर मजबूर कर देता है, जैसा कि हादसा रचकर भेजा गया है। इस काम में जथूरा के हजारों सेवक दिन-रात व्यस्त रहते हैं। परंतु देवराज चौहान और मोना चौधरी का पूर्वजन्म की यात्रा करने का संयोग बनता है, जिसका आभास 'जथूरा' को पहले ही हो जाता है और वो अपनी दुनिया में बैठा, इस बात की कोशिश करना शुरू कर देता है कि देवराज चौहान और मोना चौधरी पूर्वजन्म में प्रवेश न कर सकें। परंतु कुछ ऐसी भी पवित्र शक्तियां हैं जो देवराज चौहान और मोना चौधरी की पूर्वजन्म की यात्रा चाहती हैं, इसलिए वो अपनी चेष्टा करती हैं कि पूर्वजन्म के सफर में कोई अड़चन न हो। उपन्यास में आपको बेहद मजेदार पात्र मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा मिलेंगे। जो कि मनोरंजन के लिहाज से बेहद शानदार साबित सिद्ध होंगे। इनकी बातें आपको गुदगुदाएंगी। परंतु जथूरा के कारनामे आपको चक्कर में डाल देंगे। क्या करें, उपन्यास के भीतर के हालात ही ऐसे उलझे हुए हैं।

'पोतेबाबा' की बात न की तो मेरा ये पत्र अधूरा रह जाएगा। जी हां 'पोतेबाबा' जथूरा का सबसे विशेष साथी है, जो कि जथूरा की तरह ही रहस्यमय ताकतों और करतबों का मालिक है। पोतेबाबा अवश्य आपको पसंद आएगा। ये मेरा विश्वास है। कहानी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती चली जाएगी **'पोतेबाबा'** के कारनामे रहस्यों से भरे होते चले जाएंगे। इसी कारण तो **'जथूरा'** के बाद आगामी उपन्यास का नाम भी **'पोतेबाबा'** रखा है।

तो अब **'जथूरा'** पढ़ना शुरू करते हैं और मजा लेना शुरू करते हैं।

अगली मुलाकात होगी देवराज चौहान और मोना चौधरी के एक साथ वाले नए उपन्यास **'पोतेबाबा'** में।

शेष फिर!

——अनिल मोहन
पोस्ट बॉक्स नम्बर-6627
नई दिल्ली-110018

जथूरा

वो बेढंगा-सा पत्थर था जो कि उस सुनसान सड़क के पचास फीट ऊपर हवा में देर से लहरा रहा था। अजीब-सा पत्थर। इधर-उधर से दो-चार चोंचें बाहर निकली हुई थीं। कहीं से गहरा तो कहीं से उभरा हुआ था। परंतु उसमें एक बात बेहद खास थी, वो थी उसका चमकना। जब भी वो सूर्य की सीधी किरणों के सामने आता तो उसके चमकने का नजारा देखने ही वाला होता। रंग-बिरंगी किरणें निकलतीं उसमें से और कई फीट दूर तक फैलती दिखाई देतीं।

यूं वो पत्थर ज्यादा बड़ा नहीं था।

हाथ की मुट्ठी में उसे जकड़ा जा सकता था, परंतु फिर भी वो थोड़ा-बहुत दिखाई देता रहता।

ये हैरत और रहस्यमय बात थी वो देर से उस सड़क के पचास फीट ऊपर मंडरा रहा था।

सड़क पर से इक्का-दुक्का वाहन कभी-कभार निकल जाते थे।

धूप से तप रही थी सड़क। गर्मी ने मौसम को बेहाल किया हुआ था।

तभी दूर सड़क पर काले रंग की लम्बी कार आती दिखाई दी। कार की खिड़कियों के शीशे काले थे। उसके अलावा सड़क पर दूर तक कोई वाहन नहीं आ रहा था।

वो कार अब पास आ चुकी थी।

एकाएक वो चमकता पत्थर तेजी से नीचे आया और कार के आगे के शीशे पर जा लगा। 'चटाक' की तेज आवाज आई और वो पत्थर कार के भीतर प्रवेश कर गया। शीशा चटक गया था। फौरन ही कार के ब्रेक लगते चले गए।

कार में दो व्यक्ति थे।

दोनों की उम्र 50-55 थी। उन्होंने महंगे कपड़े पहन रखे थे। उनमें से एक कार को चला रहा था और दूसरा बगल में बैठा था।

दोनों बचपन के यार थे। अब दोनों अलग-अलग बिजनेस करते थे और अपने काम में सफल थे। इस वक्त वे दोनों पांच-सात दिन मौज-मस्ती में बिताने के लिए दिल्ली से कहीं दूर जा रहे थे। उनकी मौज में खलल न पड़े, इस वास्ते उन्होंने साथ में ड्राइवर भी नहीं लिया था।

एक का नाम लक्ष्मण दास था।

दूसरा सपन चड्ढा था।

ये हादसा होते ही लक्ष्मण दास ने फौरन कार के ब्रेक लगा दिए। पहिए के चीखने की आवाज उभरी फिर थम गई।

दोनों ने एक-दूसरे को देखा। चेहरों पर बौखलाहट थी।

फिर सामने चटक चुके शीशे को देखा, जिसके पार कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। शीशे में उस जगह पर छेद नजर आ रहा था, जहां से रास्ता बनाता वो पत्थर कार के भीतर आ पहुंचा था।

"क्या हुआ लक्ष्मण?" सपन चड्ढा परेशान-सा कह उठा।

"किसी हरामी ने पत्थर मारा है कार पर। देखता हूं साले को अभी।" लक्ष्मण दास ने कहा और कार को सड़क किनारे रोककर खड़ा किया—"छोडूंगा नहीं उस कमीने को।" वो दरवाजा खोलकर बाहर निकलता कह उठा।

'क्या मुसीबत है!' सपन चड्ढा बड़बड़ाया और वो भी बाहर निकला।

दोनों की निगाह हर तरफ घूमी।

वहां कोई होता तो उन्हें नजर आता!

"कोई नहीं है।" सपन चड्ढा कह उठा।

"छिप गया होगा।"

"छोड़। रास्ते में कहीं से नया शीशा फिट करा लेंगे।" सपन चड्ढा ने कहा।

"सारा मजा खराब कर दिया।"

"चल अब।"

गुस्से में बड़बड़ाता लक्ष्मण दास चटक चुके शीशे को नीचे गिराने लगा कि आगे का रास्ता साफ देख सके। साथ ही साथ वो नजरें भी घुमा रहा था कि पत्थर फेंकने वाला दिखे तो सही।

सपन चड्ढा ने भी उसके काम में हाथ बंटाया।

"तूने आज सुबह किसका मुंह देखा था?" सपन चड्ढा ने पूछा।

"अब तेरे से क्या छिपाना।" लक्ष्मण दास मुंह फुलाकर बोला—"शीशे में अपना ही चेहरा देखा था।"

"तभी।"

"चुप कर। नहीं तो तेरे दांत तोड़ दूंगा। मैं इस वक्त गुस्से में हूं।"

तभी सपन चड्ढा की निगाह कार के भीतर पड़ी तो उसके चेहरे पर हैरानी के भाव उभरे। आगे की दोनों सीटों के बीच उसे वो ही चमकता-सा पत्थर नजर आ रहा था। सपन चड्ढा की आंखें फैल गईं। वो जल्दी से कार के दरवाजे की तरफ बढ़ा और उस पत्थर को उठाकर हाथ में ले लिया। उसे उलट-पलटकर देखा।

"लक्ष्मण—इधर तो आ।" सपन चड्ढा ने उसे पुकारा।

"तंग मत कर।"

"ये देख, मेरे हाथ में क्या है?"

लक्ष्मण दास उसके पास आया।

उस चमकते पत्थर को देखकर चौंका।

"ये क्या?"

"इसी ने तो हमारी कार का शीशा तोड़ा है। मैंने इसे कार के भीतर से उठाया है।"

"ये तो कीमती पत्थर लगता है।" लक्ष्मण दास ने तुरंत पत्थर अपने हाथ में लिया।

दोनों बेहद हैरानी में थे।

"इसे किसी ने फेंका नहीं है।" लक्ष्मण दास बोला—"इतना कीमती पत्थर कोई कैसे फेंक सकता है?"

"हीरा है।"

"शायद उससे भी बढ़कर। इसकी चमक देख, हीरा भी इस तरह नहीं चमकता।" लक्ष्मण दास ने सिर उठाकर आसमान की तरफ देखा और कह उठा—"शायद हमारे हाथ बेशकीमती चीज लग गई है।"

"बेशकीमती?"

"हां, लगता है ये पत्थर अंतरिक्ष में से नीचे आ गिरा है। ये इस धरती का पत्थर नहीं है। कितनी तेजी से आया? वरना कार के शीशे को आसानी से नहीं तोड़ा जा सकता। एक-आध पत्थर शीशे को आसानी से नहीं तोड़ सकता। ये बहुत ऊपर से शीशे पर आ गिरा है। अंतरिक्ष की ही देन है ये पत्थर।"

"फिर तो सच में बेशकीमती है।" सपन चड्ढा अजीब-से स्वर में कह उठा।

"निकल ले यहां से।"

दोनों कार में बैठे।

लक्ष्मण ने कार आगे बढ़ा दी।

अब वो चमकता पत्थर सपन चड्ढा के हाथ में था।

"अब इसका हम क्या करेंगे?" सपन चड्ढा बोला।

"जेब में रख। बहुत ऊंचे दामों पर बेचेंगे। माल को आधा-आधा करेंगे।" लक्ष्मण दास मुस्करा पड़ा।

"तू रोज सोकर उठने के बाद शीशे में अपना चेहरा देखा कर।" सपन चड्ढा मुस्कराकर बोला।

"अब से ऐसा ही किया करूंगा।" लक्ष्मण दास हंसा।

सपन चड्ढा ने उस चमकते पत्थर को अपनी पैंट की जेब में रख लिया।

कार अब ज्यादा रफ्तार से नहीं चल रही थी। क्योंकि सामने का शीशा टूटा होने की वजह से हवा सीधी चेहरों पर पड़ रही थी। अब गर्मी का एहसास उन्हें होने लगा था। वरना पहले तो कार का ए.सी. चल रहा था।

"कोई वर्कशाप देख, जहां से शीशा लगवा सकें।"

"आधे घंटे बाद आएगी।" लक्ष्मण दास बोला—"मैं उस कीमती पत्थर के बारे में सोच रहा हूं।"

"लगता है हमारी किस्मत के दरवाजे...ओह।"

"क्या हुआ?" लक्ष्मण दास ने उसे देखा।

"वो...वो पत्थर गर्म हो रहा है।" सपन चड्ढा ने अपनी पैंट की जेब की तरफ देखा।

"ये कैसे हो सकता है।"

"ये हो रहा है उल्लू के पट्ठे।" सपन चड्ढा ने हड़बड़ाकर जेब में हाथ डाला और पत्थर निकाला—"देख...गर्म है ये।"

"ओह...सच में।" लक्ष्मण दास ने पत्थर को हाथ लगाते ही कहा।

"अब क्या करूं...इसे तो हाथ में रखना भी कठिन होता जा रहा है।" सपन चड्ढा कह उठा।

"डैशबोर्ड पर रख दे।"

सपन चड्ढा ने फौरन पत्थर को डैशबोर्ड पर रख दिया।

"ये गर्म क्यों हो रहा है?"

"अंतरिक्ष से आया पत्थर है ये। यहीं की जमीन के असर की वजह से कुछ हो रहा होगा। अभी सब ठीक हो जाएगा।"

सपन चड्ढा रह-रहकर कर डैशबोर्ड पर रखे पत्थर को देखने लगा।

लक्ष्मण दास कार चलाने पर ध्यान दे रहा था।

तभी सपन चड्ढा की आंखें भय और हैरत से फैलती चली गईं।
वो पत्थर एकाएक मानवीय आकृति का रूप लेने लगा था।
सपन चड्ढा चीखकर, लक्ष्मण दास को बताना चाहता था, परंतु होंठों से आवाज न निकली।
देखते ही देखते वो तीन इंच की हिलती-फिरती आकृति में बदल गया। गंजा सिर। कानों में बालियां। नाक में नथनी। बड़े-से कान। सूखा-सा शरीर। टांगों के बीच कोई कपड़ा जैसा कुछ लिपटा था।
"लक्ष्मण।" सपन चड्ढा के गले से खरखराता-सा स्वर उभरा।
"हां।"
"देख...पत्थर।"
लक्ष्मण दास की निगाह ज्यों ही उस तरफ घूमी, घबराहट में कार पर से कंट्रोल हट गया।
"कार संभाल।" सपन चड्ढा चीखा।
परंतु तब तक कार 'धड़ाम' से सड़क के किनारे खड़े पेड़ से जा टकराई थी।
सपन चड्ढा ने किसी तरह खुद को बचाया।
लक्ष्मण दास का माथा स्टेयरिंग से जा टकराया। परंतु रफ्तार कम होने की वजह से बचाव हो गया था।
परंतु वो तीन इंच का इंसान डैशबोर्ड पर मौजूद रहा।
"ये...ये क्या है सपन?"
"क...कहीं अंतरिक्ष जीव त...तो नहीं है?"
"पागल है क्या...ये...ये।"
तभी कार में अजीब-सी महक फैलने लगी।
दोनों को लगा जैसे उनके मस्तिष्क सुन्न होने लगे हों।
"जो मुझे छू लेता है, वो मेरा गुलाम बन जाता है।" डैशबोर्ड पर खड़े तीन इंच के आदमी के होंठों से आवाज निकली—"तुम दोनों ने मुझे छुआ, अब तुम दोनों मेरे गुलाम हो।"
"क...कौन हो तुम?"
"मोमो जिन्न हूं मैं।"
"मोमो जिन्न?"
"हां, जथूरा का सेवक मोमो जिन्न। इस दुनिया के लोग मुझे कम ही जानते हैं।"
"इ...इस दुनिया...?"
"खामोश रहो। जो मैं कहता हूं सिर्फ वो सुनो। मैं तो कब से तुम दोनों के इंतजार में उड़ रहा था।"
"उड़ रहा था?"

"हां, जथूरा ने खबर भिजवाई थी मुझे कि तुम दोनों यहां से निकलोगे और...।"

"तेरी तो।" एकाएक लक्ष्मण दास ने उसे पकड़ने के लिए गुस्से से अपना हाथ आगे बढ़ाया।

इससे पहले कि वो मोमो जिन्न को पकड़ पाता, उसके हाथ को बेहद तीव्र झटका लगा।

लक्ष्मण दास का पूरा शरीर झनझना उठा।

मोमो जिन्न की हंसी गूंजी वहां।

"दोबारा ऐसी गलती की तो मैं तुम्हारी जान ले लूंगा। अपने गंदे हाथ मुझसे दूर रखो।" मोमो जिन्न ने कहा।

लक्ष्मण दास अपना हाथ थामे डरा-सा बैठ गया।

सपन चड्ढा के होश गुम हो गए लगते थे।

उसी पल मोमो जिन्न ने डैशबोर्ड से छलांग लगाई और पीछे वाली सीट पर जा पहुंचा और देखते-ही-देखते वो चार फीट जितना बड़ा होता चला गया। अब वो आराम से सीट पर बैठ गया था।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की गर्दन घूमी और उस पर जा टिकी थी।

उसका बड़ा रूप देखकर दोनों कांप उठे थे।

"मैं तो पेड़ से भी लम्बा हो जाऊं, लेकिन इस वक्त कार में बैठा हूं।" मोमो जिन्न हंस पड़ा—"ये बात अपने दिमाग में बिठा लो कि तुम दोनों अब मेरे गुलाम हो। जो मैं कहूंगा, वो ही तुम्हें करना पड़ेगा। तुम दोनों ने मुझे छुआ, इससे मुझे हक मिल गया, तुम दोनों को गुलाम बनाने का।"

"म...मैंने कहां छुआ?" सपन चड्ढा ने कहा।

"जब मैं पत्थर बना हुआ था तो तुम दोनों ने मुझे छुआ।"

"हमने तो पत्थर को छुआ था।"

"वो मैं ही था। लेकिन तुम लोगों ने मुझे कीमती पत्थर समझा। मैं तुम दोनों की बातें सुन रहा था और बहुत मजा आ रहा था मुझे। अगर तुम लोग मुझे न छूते तो, तब मैं तुमसे बात कर ही नहीं सकता था।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा, दोनों मन ही मन कांप रहे थे। चेहरे फक्क थे। हालत बुरी थी।

"त...तुम हमसे क्या चाहते हो?"

"मैं कुछ नहीं चाहता। मेरी अपनी तो इच्छाएं ही नहीं हैं। वो तो जथूरा का हुक्म मानना पड़ता है।"

"कौन...जथूरा...लक्ष्मण तू जानता है जथूरा को?"

"इस नाम की मेरी कोई पार्टी नहीं।"
"मैं अपने मालिक जथूरा की बात कर रहा हूं। उसके हुक्म पर ही आया हूं।"
दोनों चुप।
"तू देवा को जानता है लक्ष्मण दास?"
"देवा, नहीं, मैं इस नाम के किसी व्यक्ति को नहीं जानता।" लक्ष्मण दास जल्दी से बोला।
"झूठ मत बोल मेरे से, वरना मैं तुझे मार दूंगा।"
"कसम से, मैं किसी देवा को नहीं जानता।"
उसी पल मोमो जिन्न की आंखें बंद हो गईं। वो इस तरह गर्दन हिलाने लगा, जैसे किसी की बात सुन रहा हो। फिर उसने आंखें खोलीं और कह उठा।
"तू देवराज चौहान को नहीं जानता क्या?"
"व...वो डकैती मास्टर?" लक्ष्मण दास के होंठों से निकला।
"उसी की बात कर रहा हूं।"
"उसका नाम देवा नहीं...।"
"मैं उसे देवा कहकर बुलाता हूं।" मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा—"तू देवराज चौहान को कैसे जानता है?"
"म...मैंने एक बार उससे अपना कोई काम करवाया था।"
"फिर तो बढ़िया पहचान है उससे।"
"थोड़ी सी, उसका फोन नम्बर है मेरे पास—दूं क्या?"
"रख अपने पास। बहुत काम आएगा अभी।" मोमो जिन्न ने कहा।
"क्या मतलब?"
"तू मतलब बड़े पूछता है।"
"न...हीं पूछता।"
मोमो जिन्न ने सपन चड्ढा को देखा।
"और तू, सपन चड्ढा नाम है तेरा?"
"हजूर, कोई गलती हो गई मुझसे? मैं देवराज चौहान को नहीं जानता।"
"उसे जानने की जरूरत भी नहीं है।" मोमो जिन्न बोला—"मोना चौधरी को जानता है?"
"नहीं जानता।"
"तो तेरी पहचान करानी पड़ेगी मोना चौधरी से।"
"म...मैं समझा नहीं।"
दो पल चुप रहकर मोमो जिन्न कह उठा।

"एक बात कान खोलकर सुन लो। अब तुम दोनों मेरे गुलाम हो। जो मैं कहूंगा, वो तुम लोगों को हर हाल में करना पड़ेगा। न करने का मतलब बहुत बुरा होगा। मैं तुम दोनों को नंगा करके भरे बाजार में घुमाऊंगा।"

"ऐसा मत करना।" लक्ष्मण दास कह उठा।

"जब मेरी बात नहीं मानोगे तो मैं ऐसा ही करूंगा। इंसान कैसी सजाओं से डरते हैं, मैं सब जानता हूं। मैं बहुत बुरी सजाएं देता हूं। सुनोगे तो कांप उठोगे। नमूना दिखाऊं क्या?"

"न...हीं...।"

"समझदार हो। अब मेरा पहला आदेश सुनो। वापस जाओ। मुझसे पूछे बिना तुम लोग शहर से बाहर नहीं जाओगे।"

"पूछेंगे कैसे?"

"मोमो जिन्न कहोगे तो मैं हाजिर हो जाऊंगा।"

"ठीक है।" सपन चड्ढा बोला—"लेकिन तुम चाहते क्या हो हमसे? हम...।"

"मालूम हो जाएगा। याद रखो, जथूरा महान है। उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। वो हादसों का देवता है। परंतु आसमान में बुरे ग्रह इकट्ठे हो रहे हैं, जो कि जथूरा के हक में ठीक नहीं। उन बुरे ग्रहों में दो ग्रह मुख्य हैं देवा और मिन्नो। इनमें से एक ग्रह मिट गया तो दूसरे की ताकत खुद-ब-खुद ही खत्म हो जाएगा। अब तुम दोनों माध्यम बनोगे जथूरा के खेल के। तभी तो मजा आएगा।"

"मजा? किसे आएगा मजा?"

"सबको, जो भी इस खेल में शामिल होगा।" मोमो जिन्न हंस पड़ा—"वास्तव में जथूरा महान है। उस जैसा दूसरा कोई नहीं।"

जगमोहन ने कार को जर्जर हो रही छः मंजिला इमारत की पार्किंग में रोका और इंजन बंद करके बाहर निकला। चिलचिलाती धूप जोरों पर थी। दिन के बारह बज रहे थे। उसने सिर उठाकर इमारत की छठी मंजिल को देखा, फिर रूमाल निकालकर चेहरे पर उभर रहे पसीने को पोंछता बड़बड़ा उठा।

'मैंने जाने कौन से पाप किए होंगे, जो मुझे इस गर्मी में, सीढ़ियों से छः मंजिलें तय करनी पड़ रही हैं।'

फिर जगमोहन इमारत के प्रवेश द्वार की तरफ बढ़ गया। ये बरसोवा का भीड़-भाड़ वाला, महंगा इलाका था। बाहर की सड़क पर जाते वाहनों का शोर भीतर तक, उसके कानों में पड़ रहा था।

ये पुरानी इमारत थी। लिफ्ट का इंतजाम नहीं था। जगमोहन जब सीढ़ियां चढ़कर छठी मंजिल पर पहुंचा तो हांफ रहा था। चेहरा और शरीर पसीने से भर चुका था। चंद पल ठिठककर जगमोहन ने सांसों को संयत किया। रूमाल निकालकर पसीना पोंछा फिर आगे बढ़ गया।

दाईं तरफ वाले फ्लैट पर पहुंचकर रुका। दरवाजा बंद था।

जगमोहन ने बाहर लगी बेल का स्विच दबाया तो भीतर कहीं बेल बजी।

गर्मी को कोसता जगमोहन इधर-उधर देखने लगा।

तभी दरवाजा खुला। तीस बरस का लाल-लाल आंखों वाला आदमी दिखा। उसका चेहरा बता रहा था कि रात उसने दबाकर पी थी। जिसके निशान चेहरे पर अभी तक नजर आ रहे थे।

"तुम?" जगमोहन को देखते ही उसके होंठों से निकला।

"हजम नहीं हुआ मेरा आना?" जगमोहन होंठ सिकोड़कर कह उठा।

"आओ।" दरवाजा पूरा खोलते वो पीछे हटता चला गया।

जगमोहन ने भीतर प्रवेश किया। उसने दरवाजा बंद कर दिया।

ये कमरा ड्राइंग रूम था और ए.सी. चल रहा था।

जगमोहन ने उस आदमी को देखा और बोला।

"रमजान भाई हैं या छः मंजिल की सीढ़ियां चढ़नी बेकार गईं?"

"हैं, तुम बैठो।"

"सुनकर राहत मिली।" जगमोहन ने कहा और आगे बढ़कर सोफे पर जा बैठा।

मिनट-भर बाद ही कमरे में पचास बरस के रमजान भाई ने भीतर प्रवेश किया। उसने सफेद धोती-कुर्ता पहना हुआ था। और माथे पर तिलक लगा रखा था।

"रमजान भाई तुम्हारी तो जात ही पता नहीं चलती।" जगमोहन बोला।

"क्यों?" रमजान भाई बैठते हुए मुस्कराकर बोला।

"मुसलमान होकर तुम हिन्दुओं की तरह रहते...।"

"फिर भी मेरी जात पता नहीं चली?" रमजान भाई मुस्कराया।

"हिन्दू हो?"

"नहीं।" रमजान भाई ने इंकार में सिर हिलाया।

"मुसलमान हो?"

"नहीं।"

"इसके अलावा कौन-सी जात है तुम्हारी?"

"मैं इंसान की जात का हूं।"

जगमोहन मुस्कराया।

"मैं हिन्दू नहीं, मुसलमान नहीं। इंसान हूं मैं...बस। यही मेरी जात है। ये ही मेरा धर्म है।"

"बहुत ऊंचे खयाल हैं।"

"साधारण विचार है मेरा ये। ऊंचा-वूंचा कुछ नहीं है।" रमजान भाई हाथ हिलाकर बोला।

"काम की बात कर।" जगमोहन की निगाह उसके चेहरे पर जा टिकी।

"तू आया है तो तू करेगा बात।"

"तेरा काम पूरा हो गया?"

"हां, तूने और देवराज चौहान ने कर दिया।"

"काम में कोई कमी तो नहीं रही?"

"नहीं।"

"कितने दिन हो गए काम को पूरे हुए?"

"चार दिन।"

"और तूने नोट देने का नाम ही नहीं लिया। एक बार भी फोन नहीं किया कि तूने नोट तैयार कर रखे हैं। तेरी जात इंसानों वाली है तो इंसानों वाला काम कर। कीमत चुका।" जगमोहन बोला।

"मैं दो-तीन दिन बहुत व्यस्त रहा।"

"अब तो व्यस्त नहीं है?"

"नहीं हूं।" रमजान भाई मुस्करा पड़ा।

"नोट निकाल।"

"नोट तैयार रखे हैं तेरे।" फिर रमजान भाई ने आवाज लगाई—"किशन।"

वो ही आदमी कमरे में आ पहुंचा।

"जगमोहन के लिए ठंडा-गर्म...।"

"नोट की बात कर—ठंडा-गर्म मैं लेकर ही यहां आया हूं।"

"इसका सामान ला दे।" रमजान भाई ने कहा।

किशन वापस चला गया।

"मेरे को फोन करता तो, मैं तेरे को नोट पहुंचा देता।"

"तेरी इतनी ही मेहरबानी होगी कि अपने आदमी के हाथ नोट छः मंजिल नीचे तक कार में पहुंचा देना।"

तभी वो आदमी मीडियम साइज का छोटा ब्रीफकेस लेकर आया और जगमोहन के सामने रखा।

"खोल इसे।"

उसने सूटकेस खोला।
हजार की गड्डियों से ठुंसा पड़ा था वो।
"कितने हैं?" जगमोहन ने रमजान भाई को देखा।
"अस्सी लाख।"
"बात कितने में तय हुई थी?" जगमोहन के मत्थे पर बल पड़े।
"अस्सी लाख।"
"तुमने कहा था कि काम मेरी पसंद से निबटाओगे तो एक करोड़ दूंगा। और तू मान चुका है कि काम में कोई कमी नहीं रही।"
"तो तेरे को मेरी कही वो बात याद है।"
"नोटों से वास्ता रखती, मैं कोई बात नहीं भूलता। बीस और दे।"
रमजान भाई ने उस आदमी को इशारा किया तो वो पलटकर चला गया।
"किधर गया है वो?"
"बीस लेने।"
"रिवॉल्वर लेने तो नहीं भेजा?"
"रमजान भाई कभी भी धोखेबाजी नहीं करता।"
तभी वो वापस आया। हाथ में मोटे कागज का छोटा-सा लिफाफा था, जिसका पैकिट बना रखा था। वो उसने जगमोहन के सामने रख दिया।
"इसमें कितने हैं?"
"बीस लाख।"
"ये ठीक है।" जगमोहन ने लिफाफा उठाया और उसे खोलकर भीतर झांका।
हजार-हजार के नोटों की गड्डियां दिखीं।
"नोट असली ही हैं न? कहीं ये तो नहीं कि छापाखाना लगाकर, उसमें छपे नोट मुझे टिका रहे हो?"
रमजान भाई मुस्कराया।
"अब इस सामान को नीचे मेरी कार तक...।"
कहते-कहते जगमोहन के मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा।
उसे लगा जैसे दिमाग में कोई चीज घुसती चली गई हो।
आंखें बंद कर लीं। होंठ जोरों से भींच लिए।
इस बदलाव पर रमजान भाई चौंका। उसने अजीब-से स्वर में पुकारा।
"क्या हुआ जगमोहन, तू ठीक तो है?"
जगमोहन ने हाथ उठाकर, उसे खामोश रहने का इशारा किया। आंखें बंद हो गई थीं।

परंतु जगमोहन के मस्तिष्क की हालत अजीब-सी थी।

धमाके-से उठ रहे थे दिमाग में। बिजलियां-सी कौंध रही थीं। तभी उसे 'एयरटेल' का बड़ा-सा बोर्ड लगा मस्तिष्क में दिखा। सामने सड़क थी, जिस पर ढेरों वाहन आ-जा रहे थे। फिर कुछ आगे उसे बस स्टॉप दिखा। स्टॉप की शेड के नीचे दस-बारह लोग खड़े थे। उनमें चौबीस-पच्चीस बरस की युवती थी। जिसने जींस की पैंट और स्कीवी पहन रखी थी। ब्वॉयकट बाल थे उसके। हाथ में उसने छोटा-सा पर्स थाम रखा था। साधारण-सी खूबसूरती थी उसकी। उसी पल एक काले रंग की, काले शीशे चढ़ी कार वहां आ रुकी। कार का पिछला शीशा नीचे हुआ। भीतर युवक दिखा। फिर उस कार का बुरा एक्सीडेंट हुआ दिखा। युवती की कार में पड़ी लाश देखी। पास में वो युवक बुरी तरह घायल अवस्था में था।

एकाएक जगमोहन की आंखें खुल गईं।

रमजान भाई और उसका साथी हैरानी से उसे देख रहे थे।

"क्या हुआ?" रमजान भाई ने अजीब से स्वर में पूछा।

"मुझे जाना होगा।" जगमोहन बेचैनी से कहते हुए उठ खड़ा हुआ—"म...मैंने कुछ देखा।"

"क्या देखा...क्या कह रहे हो?"

जगमोहन पलटा और तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"पैसा तो लेते जाओ।"

परंतु तब तक जगमोहन बाहर निकल चुका था।

फिर जगमोहन नीचे जाने के लिए तेजी से सीढ़ियां उतर रहा था। मस्तिष्क में उभरी घटनाएं उसकी आंखों के सामने नाच रही थी। युवती का चेहरा स्पष्ट तौर पर वो अपने दिमाग में महसूस कर रहा था। वो रुकना चाहता था, ठिठककर, उन सब बातों का मतलब समझना चाहता था। परंतु कदम थे कि आगे बढ़े जा रहे थे, जैसे कोई उसे चलने पर मजबूर कर रहा हो। वो नीचे पहुंचा। पसीने से उसका शरीर भर चुका था। लेकिन उसे अपना होश नहीं था। पार्किंग में खड़ी कार की तरफ न जाकर, वो तेज-तेज कदमों से मुख्य प्रवेश गेट की तरफ बढ़ता चला गया।

जगमोहन उस गेट से बाहर निकल आया।

सामने ही सड़क पर वाहन तेजी से आते-जाते दिखाई दे रहे थे। तभी उसकी निगाह सड़क पार ठीक सामने 'एयरटेल' के बड़े से बोर्ड पर पड़ी। वो चौंका।

"ये ही बोर्ड तो मैंने देखा था, बिल्कुल यही था।" जगमोहन एकाएक बेचैन हो उठा।

उसी पल वो तेजी से आगे बढ़ा। वाहनों से भरी सड़क उसने पार कर ली और फुटपाथ पर ठिठककर उसने उस एयरटेल के बोर्ड को देखा कि अगले ही पल उसकी निगाह बाईं तरफ घूमती चली गई।

'इस तरफ, इधर ही तो है वो बस स्टॉप।' जगमोहन बड़बड़ाते हुए तेजी से फुटपाथ पर आगे बढ़ता चला गया।

वाहनों का कानों को फाड़ देने वाला, शोर कानों में पड़ रहा था। पसीने से भर चुका था वो।

परंतु अपनी तो जैसे उसे होश ही नहीं थी।

करीब डेढ़ सौ कदम चलने पर उसे बस स्टॉप दिखा। वो तेजी से चलता वहां जा पहुंचा। वहां पर दस-बारह लोग खड़े थे। जगमोहन की निगाह उन लोगों पर गई।

फिर जगमोहन स्तब्ध रह गया।

वो ही युवती खड़ी थी, जो उसके दिमाग ने देखी थी। वो ही कपड़े। वैसा ही पर्स। जगमोहन भारी तौर पर बेचैनी महसूस करने लगा। आगे बढ़ता हुआ वो युवती से दो कदम के फासले पर जा खड़ा हुआ।

अब जगमोहन समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे?

कभी युवती को देखता तो कभी सड़क पर जाते वाहनों को देखने लगता।

उसी क्षण एक काली कार बस स्टॉप पर आ रुकी। उसके काले शीशे थे।

वो ही कार, जो उसके दिमाग ने देखी थी। जगमोहन बुरी तरह चौंका।

तभी उस कार का पीछे वाला शीशा नीचे हुआ तो जगमोहन स्तब्ध रह गया। वो ही युवक भीतर बैठा दिखा जो उसके मस्तिष्क ने देखा था। जगमोहन का हाल बुरा हो चुका था अब तक।

उस युवक ने आंख मारकर युवती से कहा।

"चलना है?"

"तीन हजार।"

"दो दूंगा।"

"ठीक है।" कहकर युवती कार की तरफ बढ़ने को हुई।

युवक ने कार का दरवाजा खोल दिया।

इससे पहले कि युवती आगे बढ़ती, जगमोहन ने झपटकर उसकी कलाई पकड़ ली।

"छोड़ो मुझे।" युवती हड़बड़ाकर बोली।

"उसके साथ मत जाओ।" जगमोहन कह उठा।

"मेरी उससे बात हो चुकी है। पहले तुम बात करते तो, मैं तुम्हारे साथ...।"

"इस कार का एक्सीडेंट होने वाला है।" जगमोहन तेज स्वर में बोला—"तुम मर जाओगी।"

"बकवास मत करो। वो मुझे दो हजार दे रहा है। मैं तुम्हारे साथ जाने वाली नहीं।" युवती ने क्रोध से कहकर, अपनी कलाई छुड़ाई और आगे बढ़कर, खुले दरवाजे से कार में जा बैठी।

युवक ने दरवाजा बंद किया और दांत दिखाकर जगमोहन को देखा।

"इस कार से बाहर निकल जाओ।" जगमोहन चीखा—"कार का एक्सीडेंट होने वाला है।"

युवक हंसा। उसी पल कार आगे बढ़ गई।

जगमोहन होंठ भींचे कार को जाता देखने लगा।

तभी जगमोहन की आंखें फैल गईं। सामने से आता ट्रक, जिसका कि अचानक बैलेंस बिगड़ गया था, वो अपनी जगह छोड़कर, एकाएक उलटी दिशा में आने लगा। सामने काली कार थी। जो कि आगे बढ़ रही थी।

"बचो-ऽ-ऽ-ऽ।" जगमोहन गला फाड़कर चिल्लाया।

बस स्टॉप पर खड़े अन्य लोगों की निगाह भी उस तरफ उठी।

यही वो पल था जब तेज रफ्तार से आता ट्रक, कार को रौंदता चला गया।

जगमोहन ठगा-सा खड़ा रह गया। टक्कर की ऐसी आवाज उभरी जैसे बम फटा हो। आधी कार ट्रक के नीचे जा धंसी थी। इसके साथ ही ट्रैफिक रुकने लगा। लोग इकट्ठे होने लगे।

जगमोहन पागलों की तरह कार की तरफ दौड़ा।

अभी पूरी तरह वहां भीड़ इकट्ठी नहीं हुई थी। कार के पास पहुंचकर वो ठिठक गया। कार का पीछे वाला दरवाजा अधखुला हुआ था। भीतर उस युवती की उसी तरह लाश पड़ी नजर आई जैसे कि उसने देखा था और उसी सीट पर बगल में मौजूद युवक बुरी तरह घायल हुआ, तड़प रहा था।

तभी लोगों ने वहां इकट्ठा होना शुरू कर दिया था।

जगमोहन भीड़ से बाहर आया और वापस चल पड़ा। इस वक्त वो ही जानता था कि उसकी क्या हालत हुई पड़ी है। युवती का चेहरा बार-बार उसकी आंखों के सामने घूम रहा था। उसने युवती को रोकने की भरपूर चेष्टा की परंतु वो नहीं रुकी थी। उसे रोकने की थोड़ी और कोशिश करनी चाहिए थी। उसने सोचा।

जगमोहन वापस उस इमारत के अहाते में खड़ी कार की ड्राइविंग सीट पर जा बैठा। बेहद अजीब-सी हालत हो रही थी उसकी। सिर घूमा हुआ लग रहा था। आंखों के सामने रह-रहकर वो एक्सीडेंट और युवक-युवती का चेहरा आ रहा था। क्या हो गया था उसे? उसे कैसे पता चल गया कि आने वाले वक्त में वो बुरी घटना होने वाली है?

जगमोहन ने सिर को झटका दिया।

परंतु ये सब कुछ उसके दिमाग से बाहर न निकल रहा था। जो हुआ वो उसके लिए कम हैरत की बात नहीं थी। वो अभी तक बीती बातों को न पचा पा रहा था।

आखिरकार जगमोहन ने गहरी सांस ली और फोन निकालकर रमजान भाई के नम्बर मिलाने लगा। तुरंत ही रमजान भाई से बात हो गई।

"तू किधर है, अचानक भाग क्यों गया तू?" रमजान भाई की आवाज कानों में पड़ी।

"पैसा नीचे भिजवा दे।"

"नीचे?"

"कार में हूं मैं।"

"परंतु हुआ क्या जो...।"

"कुछ नहीं हुआ। मैं पागल हो गया था। तू पैसा भिजवा जल्दी।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा और फोन बंद कर दिया।

फोन जेब में डाला। चेहरे पर उलझन नाच रही थी।

और यही वो पल था कि उसके मस्तिष्क में पुनः तूफान उठ खड़ा हुआ।

बिजलियां-सी चमकीं दिमाग में और आंखें बंद होती चली गईं। परंतु इस बार उसके सिर की हालत पहले से बेहतर रही। मस्तिष्क में बहुत बड़ा चौराहा चमका। ट्रैफिक आ-जा रहा था। नेताजी सुभाष मार्ग का बोर्ड लगा दिखा, जिसके पास ही घना पेड़ था। वहां रेड लाइट पर रुका ट्रैफिक दिखा। एक युवक मोटरसाइकिल पर हैलमेट पहने दिखा, वो ग्रीन लाइट होने का इंतजार कर रहा था। उसने गुलाबी कमीज पहनी थी। तभी पीछे से एक तेज रफ्तार से कार आई और वेग के साथ उस युवक की मोटरसाइकिल से टकराई। टक्कर इतनी जबर्दस्त थी कि युवक मोटरसाइकिल छोड़कर डिवाइडर के पार उछलकर गिरा और वहां जाती कार युवक के ऊपर चढ़ती चली गई।

उसी पल जगमोहन की आंखें खुल गईं।

वो गहरी-गहरी सांसें लेने लगा।

चेहरे पर गहरी उलझन के भाव थे।

'नेताजी सुभाष मार्ग का चौराहा।' जगमोहन बड़बड़ा उठा। इसके साथ ही उसने कार स्टार्ट की, बैक की और कार को बाहर ले जाता चला गया। उस पैसे का भी इंजार न किया जो रमजान भाई भेज रहा था।

□ □
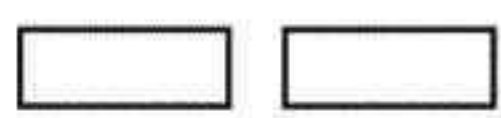
जगमोहन की हालत अजीब-सी हो रही थी। दिमाग घूमा हुआ था। वो नहीं जानता था कि उसके साथ क्या हो रहा है, परंतु एक हादसे से ये तो उसे महसूस हो गया कि भविष्य में होने वाली घटनाओं का आभास उसे पहले हो रहा है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। अब भी ऐसा नहीं होना चाहिए लेकिन हो रहा था। इस वक्त जगमोहन नेताजी सुभाष मार्ग के व्यस्त चौराहे पर, सड़क के पास फुटपाथ पर खड़ा था। कुछ दूरी पर उसे घने पेड़ की छाया में, नेताजी सुभाष मार्ग वाला वो बोर्ड लगा दिखाई दे रहा था, जो उसके मस्तिष्क में चमका था।

यही वो चौराहा था जो उसके मस्तिष्क में दिखाई दिया था।

वो ऐसी जगह खड़ा था, जहां पास ही रेड लाइट होने पर वाहन रुक रहे थे। उसकी बेचैन निगाह बार-बार रुकने वाले वाहनों पर जा रही थी, परंतु गुलाबी कमीज वाला मोटरसाइकिल सवार अभी तक उसे नहीं दिखा था। वो पता भी कर चुका था कि इस चौराहे पर कोई एक्सीडेंट तो नहीं हुआ? परंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ था।

कहीं ये सब उसका वहम तो नहीं?

नहीं, वहम नहीं है। उसने सब कुछ तो मस्तिष्क में स्पष्ट देखा था।

पहली बार जब मस्तिष्क में युवती का एक्सीडेंट दिखा था तो, वो बात भी सही निकली थी फिर ये वाली बात कैसे गलत हो सकती है। लेकिन वो गुलाबी कमीज वाला...।

अगले ही पल जगमोहन की आंखें फैलती चली गईं।

वो-वो। वो ही था। गुलाबी कमीज वाला। वैसा ही हैलमेट पहने हुए था। मस्तिष्क ने इसी की तो छवि देखी थी। अभी-अभी वो मोटरसाइकिल पर सवार हुआ रेड लाइट पर आ रुका था। उसके आगे दो कारें थीं। दाईं तरफ एक कार थी। बाईं तरफ सड़क के बीच का फुटपाथ था। वो फुटपाथ के पास था। उसके पीछे की तरफ अभी तक कोई वाहन नहीं आया था।

एक्सीडेंट होने वाला है।

जगमोहन के मस्तिष्क में कौंधा।

अगले ही पल जगमोहन तेजी से उसकी तरफ दौड़ा। रुके वाहनों के बीच में से होता उसके पास जा पहुंचा और उसका कंधा पकड़कर, ऊंचे स्वर में उससे कह उठा।

"सुनो, तुम्हारा एक्सीडेंट होने वाला है।"

"पागल हो तुम क्या?" हैलमेट पहने युवक ने उसे देखा।

"मैं सच कह रहा हूं।" जगमोहन चीखा—"पीछे से तेज रफ्तार से आती कार तुम्हें टक्कर मारेगी और तुम डिवाइडर के पार सड़क पर गिरोगे और तुम्हारे ऊपर से कार निकलेगी। ये होने वाला है।"

"तुम कोई ठग हो। मैं तुम्हारी बातों में नहीं आने वाला।"

"मेरी बात मानो और यहां से हट जाओ।" जगमोहन का स्वर गुस्से से भर गया।

पास में मौजूद कार का ड्राइवर हंसकर कह उठा।

"तुम तो ऐसे बता रहे हो, जैसे सब कुछ पहले ही अपनी आंखों से देख चुके हो।"

"हां—मैंने देखा है।" जगमोहन तेज स्वर में बोला—"तभी तो कहा है कि...।"

"चलो जाओ यहां से।" मोटरसाइकिल पर सवार युवक कह उठा।

"मेरी बात का यकीन करो, ये सब अभी होने वाला है।" जगमोहन की आवाज में गुस्सा आ गया।

"बकवास मत करो।"

जगमोहन का खून खौल उठा।

तभी जगमोहन के कानों में एक फुसफुसाहट पड़ी।

"तुम क्यों मेरा खेल खराब कर रहे हो?"

जगमोहन ने चिहुंककर आस-पास देखा।

परंतु कोई न दिखा।

"कौन है?" जगमोहन के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

मोटरसाइकिल वाला, कार ड्राइवर हैरानी से जगमोहन को देखने लगे।

"पागल है सच में, ये तो।" कार सवार कह उठा।

"सुन लिया।" वो फुसफुसाहट पुनः जगमोहन के कानों में पड़ी—"ये तुझे पागल कह रहे हैं।"

"कौन हो तुम?"

"मैं...। मैं तो पोतेबाबा हूं।"

"पोतेबाबा? कौन पोतेबाबा?"

"जथूरा का सेवक।"

"मैं नहीं जानता जथूरा को।" जगमोहन गुस्से से कह उठा।

कानों में कोई हंसा।

जगमोहन होंठ भींचे युवक से पुनः कह उठा।

"हट जाओ यहां से। तुम मरने वाले हो। रेड लाइट अभी पार कर जाओ—मेरी बात...।"

"चले जाओ पागल इंसान।" वो युवक गुस्से से कह उठा।

"तुम मेरी बात मानते क्यों...।"

अगले ही पल जगमोहन की आंखें फैल गईं।

वो पीछे देख रहा था।

पीछे, वो ही कार तेजी से बढ़ी चली आ रही थी, जो उसके मस्तिष्क में दिखी थी।

"वो आ गई। वो ही कार।" जगमोहन के होंठों से निकला।

युवक ने भी पीछे देखा।

जगमोहन तेजी से पीछे हटता चिल्लाया।

"मोटरसाइकिल छोड़कर पीछे हट जाओ। तुम्हारा बुरा एक्सीडेंट होने वाला है।"

युवक वहीं, मोटरसाइकिल पर बैठा रहा।

पास आने पर भी उस कार की रफ्तार कम नहीं हुई थी।

जगमोहन वहां से हटकर वापस फुटपाथ पर चढ़ आया। वो परेशान-सा कार को देख रहा था। उसने युवक को देखा जो मोटरसाइकिल पर बैठा, पीछे आती कार को देख रहा था।

"हमारे तैयार किए हादसों को रोक पाना आसान नहीं होता।" वो ही फुसफुसाहट पुनः जगमोहन के कानों में पड़ी।

जगमोहन की निगाह पुनः आस-पास घूमी।

कोई न दिखा।

उसकी निगाह पुनः कार पर जा टिकी। आंखें फैल चुकी थीं जगमोहन की।

ठीक तभी वो कार रफ्तार से मोटरसाइकिल से जा टकराई।

जगमोहन की आंखों ने वो ही देखा जो उसका मस्तिष्क पहले देख चुका था।

टक्कर लगते ही युवक का शरीर जोरों से उछला और मोटरसाइकिल छोड़कर पास के डिवाइडर को फलांग कर दूसरी तरफ सड़क पर जा गिरा कि तभी सामने से आती कार उसके ऊपर चढ़ती चली गई।

जगमोहन ने आंखें बंद कर लीं।

जो बुरी घटना को रोकना चाहता था वो ही घट गई थी।

जगमोहन ठगा-सा खड़ा उधर ही देखता रहा। आगे बढ़ने की चेष्टा न की। यहीं से उसे युवक का कुचला शरीर नजर आ रहा था। जगमोहन ने गहरी सांस लेकर आंखें खोली और थके से अंदाज में उस तरफ बढ़ गया, जहां उसने कार खड़ी की थी। एक्सीडेंट रोज ही होते थे। रोज ही लोग मरते थे, परंतु जगमोहन के लिए दुख की बात ये थी कि होने वाली घटना का उसे पहले पता चल रहा था, परंतु वो चाहकर भी वक्त रहते, बुरी घटना को बचा न पा रहा था।

पहले उस युवती ने भी उसकी बात नहीं मानी।

अब उस युवक ने भी उसकी बात नहीं मानी थी।

इसी बात का दुख हो रहा था जगमोहन को।

उखड़े मन से जगमोहन अपनी कार में जा बैठा। मस्तिष्क में उथल-पुथल मची हुई थी कि आखिर उसके साथ ये सब क्या हो रहा है? क्यों उसे पहले ही, होने वाले हादसों का आभास होने लगा है?

परंतु इस बात का जवाब उसके पास नहीं था।

मन दुखी था कि सब कुछ पहले पता होते हुए भी वो उस युवती और उस युवक की जानें नहीं बचा पाया। परंतु इसमें उसका भी दोष नहीं था। उन्होंने उसकी बात मानी होती तो, वो अवश्य बच गए होते।

जगमोहन कार स्टार्ट करने लगा कि उसी पल उसके कानों में फुसफुसाहट पड़ी।

"कर ली तूने अपनी?"

जगमोहन चिहुंका।

युवक की मौत के साथ ही इस रहस्यमय आवाज को तो बिल्कुल ही भूल गया था।

जगमोहन ने कार में निगाह मारी। परंतु दिखा कोई भी नहीं।

"मुझे ढूंढ़ रहा है?" वो आवाज पुनः उसके कानों में पड़ी—"मैं तेरे पास, आगे वाली सीट पर बैठा हूं। पहले ही आकर बैठ गया था, क्योंकि मैं जानता था कि अब तू वापस कार में ही आएगा।"

जगमोहन ने सीट पर निगाह मारी।

लेकिन वो खाली नजर आई।

"मैं तेरे को नजर नहीं आऊंगा। क्योंकि मैंने अदृश्य होने की दवा खा रखी है।" वो आवाज पुनः सुनाई दी।

"तू है कौन?" जगमोहन के माथे पर बल पड़ गए थे।
"पोतेबाबा।"
"मैं तेरे को नहीं जानता।"
"बताया तो मैं जथूरा का सेवक हूं।"
"मैं जथूरा को नहीं जानता।" जगमोहन ने कहा।
"वो मेरा मालिक है।"
"सामने आकर बात कर।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।
"नहीं आ सकता।"
"क्यों?"
"तू मुझे देख सके, इसके लिए मुझे चांदी के कलश में रखी दवा खानी होगी।"
"चांदी के कलश में रखी दवा?"
"हां। वहां पर चांदी और सोने के कलश रखे हुए हैं। सोने के कलश में रखी दवा खाने से, इंसान अदृश्य हो जाता है और चांदी के कलश में रखी दवा खाने से, उसकी अदृश्यता समाप्त हो जाती है, वो पुनः दिखने लगता है। अब तो दोनों दवाएं खत्म होने वाली हैं। दोबारा बनवाऊंगा वापस जाकर।" जगमोहन के कानों में पड़ने वाली आवाज शांत और सामान्य थी। जैसे दोस्ती में बात चल रही हो।
"तेरी बात सुनकर मुझे हैरानी हुई।"
"मेरे लिए ये सब साधारण बातें हैं।"
"तू मेरे पास क्यों आया?"
"तेरे भले के लिए।"
"कैसा भला?"
"जथूरा के कामों में अड़चन मत बन। वरना बुरा भुगतेगा।" अब उस आवाज में धमकी का पुट आ गया था।
जगमोहन के चेहरे पर अजीब-से भाव आ ठहरे।
"मैं जथूरा को नहीं जानता और फिर मैंने क्या किया है?"
"तूने उन हादसों को रोकने की चेष्टा की?"
"हां की।"
"ये ही हमारे कामों में अड़चन डालना है। तू जथूरा के कामों को रोकने की चेष्टा कर रहा है।"
"मैं समझा नहीं।" जगमोहन भारी तौर पर उलझन में दिखने लगा।
"जथूरा हादसों का देवता है। तुम्हारी दुनिया में होने वाले बुरे एक्सीडेंट को जथूरा ही तो तैयार करता है।"

"हमारी दुनिया में?" जगमोहन ने अजीब-से स्वर में पूछा—"तुम कौन-सी दुनिया से हो?"

चंद पल कार में गहरी खामोशी रही।

"कहां हो तुम?" जगमोहन बोला।

"यहीं हूं।" पास वाली सीट से आवाज आई।

"जवाब दो, तुम किस दुनिया की बात कर रहे हो?"

"मैंने तो सोचा था जग्गू कि तूने मुझे पहचान लिया होगा।"

"जग्गू?" जगमोहन चिहुंक उठा। क्योंकि ये उसके पूर्वजन्म का नाम था।

"हैरान हो गए।"

"त...तुम पूर्वजन्म से हो?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"हां। अब तूने ठीक पहचाना। मैं पूर्वजन्म की दुनिया से वास्ता रखता हूं। तब दुनिया का काफी बड़ा हिस्सा जमीन में धंस कर बच गया था और वहां भी जीवन था। हम सब बच गए और अपने कामों में लगे रहे। इस दुनिया में आने का रास्ता हमने तैयार कर लिया, तेरे को मेरी याद आई क्या?"

"नहीं।"

"जथूरा को तो न भूला होगा?"

"मुझे याद नहीं वो।"

"वक्त आने पर सब याद आ जाएगा तुझे जग्गू। मेरा तो ये कहना है कि तू जथूरा के रास्तों में मत आ। इस दुनिया में होने वाले हादसों को जथूरा ही तैयार करता है और तू उन्हें रोकने की कोशिश कर रहा है।"

अब जगमोहन कुछ समझा।

"जथूरा हमारी दुनिया में हादसे क्यों करवाता है?"

"क्या करे वो, वो भी मजबूर है। हादसों का देवता है वो तो हादसों को ही जन्म देगा।"

"मेरे को कैसे पता चल जाता है कि कोई हादसा होने वाला है?"

"जथूरा की दुश्मन शक्ति होगी कोई, जो भविष्य की तस्वीर तुझे दिखाकर, हादसों को रुकवाने की चेष्टा कर रही होगी।"

"उसने मुझे ही क्यों चुना?"

"तेरे को इस लायक समझा होगा उस शक्ति ने, लेकिन वो बेवकूफ है।"

"क्यों?"

"जथूरा से कोई टक्कर नहीं ले सकता। ये ही बात तेरे को समझाने आया हूं। जथूरा के रास्ते से हट जा।"

"तू पूर्वजन्म से आया है?"
"हां।"
"जथूरा इस वक्त कहां है?"
"पूर्वजन्म की दुनिया में। वो भला इस दुनिया में क्यों आएगा। उसके तो हजारों सेवक हैं, हर काम करने को।"
जगमोहन खुद को अजीब-सी स्थिति में महसूस कर रहा था।
सबसे ज्यादा कंपा देने वाली बात तो ये थी कि वो पुनः पूर्वजन्म के मामलों में उलझ बैठा था। तो क्या एक बार फिर पूर्वजन्म की दुनिया का सफर शुरू होने वाला है?
"किस सोच में पड़ गया तू?"
"मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा।"
"तेरा दिमाग जो भी देखे, उसे तूने रोकने की कोशिश नहीं करनी है।"
"जरूरी तो नहीं कि मैं तेरी बात मानूं।"
"जरूरी है। नहीं मानेगा तो बुरा भुगतेगा।" इस बार आवाज में कर्कशता आ गई थी।
"तू मुझे धमकी देता है।"
"हम जो कहते हैं वो करके दिखाने की भी हिम्मत रखते हैं।" पोतेबाबा की आवाज में कठोरता आ गई थी—"जो भी हमारा खेल खराब करने की कोशिश करेगा, भुगतेगा।"
"मुझे ऐसी धमकियां सुनने की आदत नहीं है।"
"बेवकूफ इंसान, तेरा जीना मुहाल हो जाएगा अगर तू जथूरा के रास्ते में आया। मत भूल कि जथूरा एक्सीडेंट का देवता है। वो कहीं भी तेरे साथ हादसा पेश करके तेरी जान ले लेगा। जथूरा अमर है। असीमित ताकत है उसके पास। उसे अपने देवता का आशीर्वाद प्राप्त है। कोई भी उसका मुकाबला नहीं कर सकता। उसने बड़ी-से-बड़ी विद्या ग्रहण कर रखी है। तू उसके बाल बराबर भी नहीं है।"
जगमोहन खामोश रहा।
"अपने काम से मतलब रखो। जो हादसा भी तेरे दिमाग में आए, उसे भूल जा। जथूरा ने मुझे भेजा है कि तुझे सावधान कर दूं।"
"वो मुझे सावधान क्यों कर रहा है?"
"क्योंकि जथूरा पर, तेरा एहसान है। इसलिए वो सीधे-सीधे तेरी जान नहीं लेना चाहता।" पोतेबाबा की आवाज सुनाई दी।

"कैसा एहसान?"

"ये तो मैं भी नहीं जानता, जथूरा ने मुझे जो कहा, वो तेरे को बता दिया। संभल जा, वक्त अभी हाथ में है।"

जगमोहन चुप रहा। सोचों में गुम रहा।

तभी बगल वाली सीट का दरवाजा खुला, चंद पलों बाद दरवाजा बंद हो गया।

"जा रहा हूं मैं।" इस बार पोतेबाबा की आवाज दूर से आई—"अब जथूरा के रास्ते में कभी न आना।"

उसके बाद कोई आवाज नहीं आई।

जगमोहन ठगा-सा बैठा, उसी दरवाजे को देखे जा रहा था।

मस्तिष्क में एक साथ इतने विचार इकट्ठे हो गए थे कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या सोच रहा है। जथूरा, पोतेबाबा। होने वाले हादसों का उसे पहले ही आभास हो जाना। ये सब क्या हो रहा है उसके साथ? कभी-कभी तो उसे लगता कि वो सपने से बाहर निकला है। सब ठीक है। जैसे कुछ भी नहीं हुआ।

लेकिन उथल-पुथल मच चुकी थी।

उसके साथ जो भी हो रहा है, वो सपना नहीं, हकीकत है।

तभी जगमोहन चौंका। उसका फोन बजने लगा था।

"हैलो।" जगमोहन ने फोन निकालकर बात की।

"क्या हो गया है तुझे?" रमजान भाई की आवाज कानों में पड़ी—"किशन पैसा लेकर नीचे पहुंचा तो तू वहां नहीं मिला?"

जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"सब ठीक तो है?" रमजान भाई की आवाज कानों में पड़ी।

"हां, ठीक ही है। पैसा मैं एक-दो दिन में फिर किसी वक्त ले लूंगा।"

"तू ठिकाना बता, किशन वहीं पहुंचा देता...।"

"संभाल के रख। मैं ले जाऊंगा।"

▭ ▭

जगमोहन बंगले पर पहुंचा।

वो देवराज चौहान को जल्द-से-जल्द आपबीती बताना चाहता था। मन में व्याकुलता ठूंस-ठूंसकर भरी हुई थी। परंतु मुख्य द्वार बंद मिला। स्पष्ट था कि देवराज चौहान बंगले पर नहीं था। जगमोहन ने गहरी सांस ली और पास ही रखे गमलों की कतार पर नजरें गईं। वो आगे बढ़ा और एक खास गमले के नीचे रखी चाबी निकाली और मुख्य दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश कर गया।

मन में, जगमोहन का अजीब-सा हाल हो रहा था इस वक्त।

देवराज चौहान मौजूद नहीं था कि उसे सब कुछ बताकर मन को हल्का कर सके। उसने देवराज चौहान को फोन किया।

"कहो।" उधर से देवराज चौहान की आवाज आई।

"मैं रमजान भाई के पास...।"

"पेमेंट दी उसने?"

"हां...वो...।"

"कोई परेशानी तो नहीं हुई?" उधर से देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं हुई। रमजान भाई की तरफ से कोई समस्या नहीं आई—मैं...।"

"जल्दी में हूं, तुम्हें फिर फोन करूंगा।"

"सुनो तो...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

परंतु उधर से देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया था।

जगमोहन मन-ही-मन और उखड़ गया कि देवराज चौहान ने उसकी बात नहीं सुनी। परंतु ये भी जानता था कि देवराज चौहान इस वक्त कहीं फंसा होगा, तभी उससे ज्यादा बात नहीं कर पाया।

जगमोहन कुर्सी पर आ बैठा और बीती सारी बातें याद करने लगा।

पोतेबाबा।

जथूरा।

और वो कौन है जो उसे पहले ही, होने वाले हादसों का आभास करा देता है?

पोतेबाबा ने कहा था कि वो जथूरा की कोई दुश्मन शक्ति होगी।

परंतु वो शक्ति उससे क्या चाहती है?

जगमोहन उठा और किचन में जा पहुंचा। इन सब बातों ने उसका दिमाग खराब कर दिया था। उसने चाय बनाई और इन बातों को अपने से दूर करने की चेष्टा की, परंतु सफल नहीं हो सका। सब कुछ उसे अजीब-सा लग रहा था। कभी उसे यकीन होता तो कभी उस यकीन पर अविश्वास की छाया मंडराने लगती।

उसने चाय समाप्त की। वक्त देखा।

शाम के साढ़े चार बज रहे थे।

कुछ आराम करने की सोची। वो चाहता था कि घंटा भर नींद आ जाए, ताकि जब नींद से उठे तो दिमाग हल्का हो उसका। बेडरूम में पहुंचा। जूते उतारे और बेड पर जा लेटा। कपड़े चेंज करने के बारे में सोचा भी नहीं।

आंखें बंद कर लीं।

परंतु दिमाग में चैन कहां।

सब कुछ सोचों के तौर पर, उसके दिमाग में गुड़मुड़ हो रहा था।

वो परेशान हो उठा कि उसे चैन क्यों नहीं मिल रहा?

तभी पुनः बिजलियां-सी कौंधीं उसके दिमाग में। आंखें पहले से ही बंद थीं।

जगमोहन की छठी इंद्री को संकेत मिल गया था कि फिर उसका मस्तिष्क कुछ देखने जा रहा है।

अगले ही पल उसके मस्तिष्क ने 'मीरा नाइट क्लब' का साइन बोर्ड चमकते देखा। उसके बाद उसे बड़ी-सी घड़ी दिखी, जिसमें रात के 11.30 बज रहे थे। क्लब में काफी लोग दिखे। फिर उसके मस्तिष्क में बार काउंटर के पास खड़ा एक व्यक्ति दिखा। उसने रिवॉल्वर निकाली, देखी, फिर उसे वापस जेब में रखा और पलटकर तेजी से क्लब के बाहर की तरफ बढ़ गया। उसके बाद जगमोहन के मस्तिष्क ने बोरीवली की एक सड़क देखी, जिस पर फ्लैट बने हुए थे। उस व्यक्ति को उसने कार से बाहर निकलते देखा। सामने ही फ्लैटों के नम्बर, 144, 145, 146 लिखे दिखे। फिर वो आदमी 146 नम्बर के फ्लैट की बेल बजाता दिखा। दरवाजा खोलने वाली औरत थी, वो उसे देखते ही बोली 'आज आपने बहुत देर लगा दी' जवाब में आदमी ने जेब से रिवॉल्वर निकालते हुए कहा—'तू मेरी वफादार नहीं। जिस बच्चे को तूने पैदा किया है, वो मेरा नहीं है।' औरत हैरानी से कह उठी—'ये आप क्या कह...।' और उस आदमी ने उस पर गोली चला दी। वो नीचे जा गिरी। आदमी भीतर गया और एक बेड पर सोए छोटे से बच्चे को गोलियों से भून दिया।

जगमोहन की आंखें खुल गईं।

हड़बड़ाकर वो उठ बैठा।

उसकी सांसें तेजी से चल रही थीं।

अजीब-से ढंग से वो सामने की दीवार को देखे जा रहा था।

'मीरा नाइट क्लब। रात 11.30 बजे।' जगमोहन बड़बड़ा उठा—'वो...वो आदमी वहां से बोरीवली के फ्लैट पर जाएगा और अपनी पत्नी व बच्चे को गोली से मार देगा।'

जगमोहन कुछ पल चुप रहा।

'नहीं, मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। क्या करूं, क्या उस औरत को पहले से ही आगाह कर दूं कि आज रात उसका पति उसे गोली मार देगा?' जगमोहन बड़बड़ाया—'नहीं, ऐसा करने का कोई फायदा नहीं। वो औरत उसकी बातों पर यकीन नहीं करेगी। पहले कौन-सा

उस युवती या उस मोटरसाइकिल वाले युवक ने उसकी बातों पर यकीन किया था। सबने उसे ही पागल समझा। वो औरत भी उसे पागल ही कहेगी...तो क्या करे?'

जगमोहन बेड से उतरा और कमरे में चहलकदमी करने लगा।

उसने मन-ही-मन सोचा कि क्यों न वो खामोशी से बैठ जाए, जो होता है होता रहे। लेकिन उसके मन को ये बात जंची नहीं। कुछ बुरा होने वाला था और उसे पहले ही मालूम हो गया था तो उसे उस हादसे को रोकना चाहिए, ये उसका इंसानी फर्ज बनता था। परंतु कैसे...कैसे करे...कैसे रोके?

जगमोहन देर तक इसी चिंता में घुलता रहा।

□ □

मीरा नाइट क्लब।

रात के 10.45 बजे।

जगमोहन ने कार को क्लब की पार्किंग में खड़ा किया और भीतर प्रवेश कर गया।

क्लब में शाम की रौनक जवान थी। तेज प्रकाश ने वहां दिन का उजाला कर रखा था। जगमोहन क्लब के उस हिस्से में पहुंचा जहां बार था। वो काफी बड़ा हाल था। एक तरफ फ्लोर पर बैंड का इंतजाम था। मध्यम-सा मीठा म्यूजिक चल रहा था। दो जोड़े वहां पर थिरक रहे थे। टेबल के पास लगी कुर्सियों पर पचास से ज्यादा लोग व्हिस्की का मजा ले रहे थे। सौ के करीब लोग दीवारों के साथ रखे ऊंचे स्टूलों पर बैठे थे या गिलास थामे खड़े बातें कर रहे थे। छत और दीवारें सजावट से भरी हुई थीं। हर तरफ रंगीन और मजा लेने वाला माहौल था।

जगमोहन के चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी। वो उस चेहरे को तलाशने की चेष्टा कर रहा था जिसे उसके मस्तिष्क ने देखा था। परंतु इतनी भीड़ में जैसे उसे ढूंढ़ पाना आसान नहीं था।

जगमोहन बार काउंटर पर पहुंचा।

उस स्टूल को देखा, जहां उसके दिमाग ने उस व्यक्ति को बैठे देखा था।

जगमोहन उस खाली स्टूल के बगल वाले स्टूल पर बैठ गया।

"यहां क्या करने आया है तू?" कानों में पोतेबाबा की फुसफुसाहट पड़ी।

जगमोहन ने गहरी सांस लेकर आसपास नजर घुमाई।

"तू जानता है कि मैंने अदृश्य रहने वाली दवा खा रखी है, नजर नहीं आऊंगा।" पोतेबाबा का स्वर पुनः कानों में पड़ा।

जगमोहन ने बार काउंटर के उस तरफ मौजूद बार मैन से कहा।

"लार्ज बियर।"

"पेमेंट सर। नियम के मुताबिक पेमेंट पहले ली जाती है, दो सौ पचास रुपये सर।"

जगमोहन ने उसे पैसे दिए।

"बोल...बता, तू यहां क्यों आया है?" पोतेबाबा का स्वर पुनः कानों में पड़ा।

"बियर पीने।" जगमोहन ने लापरवाही से कहा।

"झूठ मत बोल।"

"इसमें झूठ क्या है?"

"मैं जानता हूं कि तू यहां क्यों आया है?"

"बता, क्यों आया हूं?"

"चालाक मत बन।"

"मेरा दिमाग खराब मत कर।"

"जथूरा ने मुझे फिर से भेजा है तेरे पास कि तेरे को फिर समझाऊं। तू सुधरेगा नहीं जग्गू?"

"मेरा दिमाग मत खा। चला जा यहां से।" जगमोहन ने बुरा-सा मुंह बनाया।

तभी बार मैन ने बियर का मग जगमोहन के सामने रख दिया।

जगमोहन ने मग उठाकर घूंट भरा।

"तू मुझसे इस तरह बात मत कर। पोतेबाबा से कोई भी इस तरह बात नहीं करता।"

"चला जा यहां से?"

"मैं तेरे को चेताने आया हूं कि मना करने के बाद भी तू फिर जथूरा के मामले में दखल दे रहा है।"

"मेरे को समझाना छोड़ दे तू।"

"तेरा भला है इसमें।"

"मैं जानता हूं कि मेरा भला किसमें है।" जगमोहन ने मुंह बनाकर कहा—"मैं तेरी बातों की परवाह नहीं करता।"

"तो तू नहीं मानेगा?"

"नहीं।"

"जथूरा से कह दूं तेरी बात?"

"कह दे। मैं उससे डरता नहीं।"

पोतेबाबा की आवाज नहीं आई।

जगमोहन ने पुनः बियर का घूंट भरा और वहीं से हाल में मौजूद लोगों पर नजरें दौड़ाईं।

"किसे ढूंढ़ रहा है?" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।
"अपने दोस्त को।"
"चालाक मत बन। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तू यहां क्यों आया है।" इस बार पोतेबाबा की आवाज में गुस्सा था।
"जानता है तो मेरा क्या कर लेगा?"
"जथूरा ने मना किया है तेरे को कुछ कहने को, वरना तेरा दिमाग मैं अभी ठीक कर देता।"
"जो खुद दूसरों को न दिखता हो, वो मेरा क्या बिगाड़ पाएगा।" जगमोहन बोला।
"भूल में है तू। मैं इस वक्त नजर नहीं आ रहा। वैसे मैं अभी भी सब कुछ कर सकता हूं।"
"मैं तेरी बातों से डरने वाला नहीं।"
तभी एक व्यक्ति बार काउंटर पर पहुंचा और पैग बनाने के लिए कहा। उसके हाथ में सिगरेट थमी थी। उसने कश लिया और धुआं छोड़ा। वो ढेर सारा धुआं जगमोहन की तरफ ही आया।
जगमोहन के सामने से निकला वो ढेर-सा धुआं।
अगले ही पल जगमोहन चौंका। उसकी आंखें सिकुड़ीं।
धुएं के बीच उसे चेहरे की आकृति महसूस हुई। कंधे भी दिखे। वो चौड़े कंधे वाले बूढ़े की आकृति थी। जिसके सिर के बाल पीछे की तरफ थे और चेहरे पर छाती तक जाती दाढ़ी थी। उसकी आंखें चमकदार थीं। गले में मालाएं पहनी थीं और कानों में कुंडल। वो एक प्रभावशाली व्यक्तित्त्व-भरा चेहरा था।
तभी धुआं वहां से आगे सरक गया।
वो आकृति लुप्त हो गई।
"तूने मुझे देख ही लिया।" पोतेबाबा की आवाज पुनः कानों में पड़ी।
"तो तू धुएं में नजर आता है?" जगमोहन के होंठ सिकुड़े।
"हां, धुएं में मेरी आकृति नजर आने लगती है। धुएं में अदृश्यता लुप्त हो जाती है।"
जगमोहन ने बियर का घूंट भरा।
"मेरी सलाह मान ले। जथूरा के रास्ते में मत आ।" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।
"मैं किसी के रास्ते में नहीं आ रहा। अपना काम कर रहा हूं मैं।"
"तू जथूरा का काम बिगाड़ने की चेष्टा में है। पहले भी तू दो बार कोशिश कर चुका है। लेकिन सफल नहीं हुआ।"
"अब सफल हो जाऊंगा।" जगमोहन ने दृढ़ स्वर में कहा।

"तो ये बात है, तू नहीं मानेगा?"

"नहीं।"

"जथूरा नाराज हो गया तो वो तेरे लिए भी कोई हादसा तैयार कर देगा।" इस बार पोतेबाबा की आवाज में धमकी थी।

"मैं जथूरा की परवाह नहीं करता।"

"जाता हूं, अब जो होगा, उसका जिम्मेवार तू ही होगा।"

उसके बाद पोतेबाबा की आवाज नहीं आई।

जगमोहन की नजरें वहां नजर आ रहे व्यक्तियों के चेहरों पर फिर रही थीं, वो उस व्यक्ति को ढूंढ़ रहा था, जिसका चेहरा उसके मस्तिष्क ने देखी थी। जिसके लिए वो यहां आया था। तभी उसकी निगाह बार काउंटर के पीछे वाली दीवार पर पड़ी, जहां पर बड़ी सी वो ही वाल क्लॉक लगी हुई थी, जो उसके मस्तिष्क ने पहले ही देखी थी। उस घड़ी पर इस वक्त 11.15 हो रहे थे। अजीब बातें हो रही थीं उसके साथ।

अदृश्य पोतेबाबा जाने कैसी रहस्यमय ताकत था, धुएं में जिसकी आकृति नजर आने लगती थी। वो उस पर नजर रख रहा था। वो यहां आया तो पोतेबाबा भी उसके पास आ पहुंचा। वो चाहता था कि वो इन कामों में दखल न दे। होने वाले हादसे को रोकने की चेष्टा न करे।

जथूरा!

ये सब उसकी पूर्वजन्म की दुनिया में से थे।

जगमोहन ये सोचकर सिहर-सा उठा कि क्या ये सब बातें पुनः उसके पूर्वजन्म में जाने की तैयारी के लिए हो रही हैं? परंतु वो अकेला तो कभी नहीं गया, पूर्वजन्म में। हमेशा देवराज चौहान के साथ गया। मोना चौधरी भी तब पूर्व जन्म के रास्तों पर ही मिलती थी। बाकी लोग भी तो होते थे।

फिर इस बार वो ही क्यों?

इसका जवाब जगमोहन के पास नहीं था।

जगमोहन ने पुनः घड़ी को देखा।

11.20 हो चुके थे।

उसे घड़ी में तब 11.30 का हुआ वक्त दिखा था।

परेशान-से जगमोहन ने हर तरफ निगाहें घुमाई।

अगले ही पल जगमोहन का दिल धड़का।

आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ।

वो ही व्यक्ति जिसे उसका मस्तिष्क पहले देख चुका था, आ रहा था इस तरफ।

जगमोहन उसे देखता रह गया।

उस व्यक्ति के चेहरे पर गम्भीरता और क्रोध नजर आ रहा था। वो उसके पास वाले स्टूल पर आ बैठा और हजार का नोट बार टैंडर की तरफ बढ़ाता बोला।

"लार्ज पैग, बढ़िया ब्रांड का।"

जगमोहन ने महसूस किया कि उसने पहले भी पी रखी है। इस वक्त जगमोहन का दिमाग तेजी से काम कर रहा था। ये व्यक्ति अब यहां से सीधा अपने घर जाएगा और अपनी पत्नी और बच्चे को शूट कर देगा।

लेकिन जगमोहन इस हादसे को होने से रोकना चाहता था।

उस औरत और बच्चे की जिंदगी बचाना चाहता था।

"हैलो।" एकाएक जगमोहन ने कहा।

उस व्यक्ति ने जगमोहन को देखा।

"आपका पैग।"

उस व्यक्ति ने नजरें घुमाईं तो बार मैन को तैयार गिलास रखते पाया। उसने गिलास उठाया और एक ही सांस में खत्म करके पुनः बार मैन से कह उठा।

"एक और।" साथ ही उसने हजार का नोट खाली गिलास के नीचे रख दिया।

"लोग मुझे पालकी वाला के नाम से जानते हैं।" जगमोहन बोला—"मैं भविष्यज्ञाता हूं।"

"तो?" उसने बेमन से कहा।

"मैं लोगों के चेहरों का हाल देखकर, उनका भविष्य और भूतकाल बता सकता हूं।"

"बकवास है।" नशे में उसकी आवाज भारी हो रही थी।

"आजमा लो।" जगमोहन सतर्कता से उससे बात कर रहा था।

"कैसे?"

"मैं तुम्हारे बारे में कई बातें बता सकता हूं।"

उसके चेहरे पर उपहास से भरी मुस्कान उभरी। बोला।

"बताओ।"

"तुम्हारा पैग आ गया।"

उसने गर्दन घुमाकर देखा। पैग को थामा। अपनी तरफ सरकाया फिर बोला।

"मुझे हैरानी है कि तुम जैसा ढोंगी इस नाइट क्लब में कैसे आ गया।"

"तुम्हारे पास रिवॉल्वर है।" जगमोहन बोला।

उसकी आंखें सिकुड़ीं।

"तुम्हारे इरादे खतरनाक हैं।"

उसका चेहरा कठोर हो गया।

"तुम अपनी पत्नी और बच्चे को मारकर बहुत बड़ी गलती करने जा रहे हो।"

वो चिहुंक पड़ा।

"क्या—क्या बोला तुमने?" उसके होंठों से फटा-फटा सा स्वर निकला।

"तुम फैसला कर चुके हो कि तुम घर जाकर पत्नी और बच्चे को शूट कर दोगे। क्योंकि तुम्हें अपनी पत्नी के चाल-चलन पर शक है। लेकिन सच बात तो ये है कि तुम्हारी पत्नी तुम्हारी वफादार है। वो बच्चा तुम्हारा ही है। तुम वहम के शिकार हो।"

उसकी हालत देखने वाली थी।

"तुम...तुम ये सब कैसे जानते हो कि मैं क्या करने वाला हूं? मैंने ये बात किसी को नहीं बताई।"

"मैं पालकी वाला हूं। लोगों का चेहरा देखकर उनके मन की बात जान लेता हूं कि वो भविष्य में क्या करने वाला है। अगर तुमने अपनी पत्नी और बच्चे को मारा तो अपनी गलती पर बहुत पछताओगे। तुम्हारी सारी उम्र जेल में बीतेगी। जहां तुम पागल हो जाओगे।"

"नहीं।" उसके होंठों से निकला।

"ये सच है।" जगमोहन गम्भीर था।

"मेरी पत्नी धोखेबाज है।" उसके होंठों से निकला।

"वहम है तुम्हारा।"

"उसने किसी से दोस्ती कर रखी है—वो...।"

"वो उसका दोस्त नहीं, भाई बना हुआ है। तुम्हें जलाने के लिए वो ऐसा करती है खुद जबकि वो बहुत अच्छी है। तुम उसे वक्त दिया करो। ब्याह कर लेने का मतलब ये तो नहीं कि औरत को घर में लाकर पटक दो और खुद बाहर रहो। उसका ध्यान कौन रखेगा?"

"तुम सच कह रहे हो कि वो ठीक औरत है?" उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कहा।

"सौ प्रतिशत।"

"वो बच्चा...।"

"तुम्हारा ही है। तुम ही उसके बाप हो।"

"ओह!" उसने आंखें बंद कर लीं। वो परेशान दिखने लगा था।

जगमोहन की गम्भीर निगाह उसके चेहरे पर ही थी।

"संभल जा।" जगमोहन के कानों में पोतेबाबा का स्वर गूंजा—"आग से मत खेल जग्गू।"

जगमोहन ने इन शब्दों पर जरा भी ध्यान नहीं दिया।

"जथूरा का खेल जो खराब करता है, वो जिंदा नहीं रहता और जथूरा तेरी जान नहीं लेना चाहता। तेरा एहसान है उस पर। लेकिन वो इस बात को कभी सहन नहीं करेगा कि तू उसके बनाए खेल को खराब करे।"

"मैं जथूरा से नहीं डरता।" जगमोहन कह उठा।

उस व्यक्ति ने आंखें खोलकर जगमोहन से कहा।

"क्या कहा तुमने?"

"तुमसे नहीं कहा।"

"तो किससे कहा?"

"मेरे आसपास मृत आत्माएं मंडराती रहती हैं। कभी-कभार उनसे बात हो जाती है। ये तुम्हारे काम की बात नहीं है।"

"म...मैं अब क्या करूं?"

"अब तो तेरे को खुश हो जाना चाहिए कि तेरी बीवी अच्छी औरत है। बच्चा भी तेरा है। क्या अभी तक तेरा मन साफ नहीं हुआ?"

"हो गया है। मैं...मैं उन्हें नहीं मारूंगा। ओह, मैं कितनी बड़ी भूल करने जा रहा था!" वो दुखी मन से कह उठा।

"घर जा। अपनी दुनिया फिर से शुरू कर। तेरे को हर तरफ अच्छा ही अच्छा नजर आएगा।"

वो तुरंत स्टूल से उतर गया। भरे गिलास को उसने हाथ भी नहीं लगाया।

"पास में रिवॉल्वर मत रखा कर। वरना कभी तू क्रोध में बहुत बड़ी भूल कर बैठेगा।"

"ठ...ठीक है।"

"ला रिवॉल्वर मुझे दे।"

उसने बेहिचक रिवॉल्वर निकाली और जगमोहन को थमा दी।

जगमोहन ने रिवॉल्वर अपनी जेब में रख ली।

"जा। अपनी गृहस्थी में रम जा।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

वो पलटा और तेजी से बाहर जाने वाले दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

जगमोहन ने चैन की लम्बी सांस ली।

इस बार उसने ठीक ढंग से मामला संभाल लिया था।

"तो तूने जथूरा से झगड़ा मोल ले ही लिया जग्गू। मेरे समझाने पर भी नहीं समझा।"

"भाड़ में जा तू और तेरा जथूरा।" जगमोहन ने कहा और स्टूल से उतरकर बाहर की तरफ बढ़ गया।

"अब तू बुरा भुगतेगा।" पोतेबाबा की आवाज पुनः कानों में पड़ी—"जथूरा जान चुका होगा कि तूने क्या गुल खिलाया है।"

जगमोहन पोतेबाबा की किसी भी बात का जवाब नहीं दे रहा था।

▭ ▭
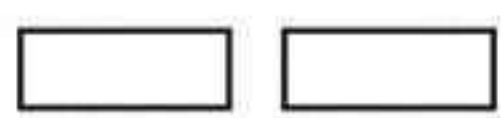
जगमोहन बंगले पर पहुंचा। रात का एक बज रहा था।

देवराज चौहान नहीं आया था।

उसने भीतर प्रवेश करके लाइट जलाई और देवराज चौहान को फोन किया।

"कहां हो?" बात होते ही जगमोहन ने पूछा।

"मैं दिल्ली में हूं।" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी—"एक-दो दिन बाद लौटूंगा।"

"ऐसा क्या काम पड़ गया जो...।"

"आने पर बताऊंगा।" इसके साथ ही उधर से देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया था।

जगमोहन ने रिसीवर वापस रख दिया।

यही सोचा कि किसी काम में व्यस्त हो गया होगा देवराज चौहान।

खैर मन-ही-मन जगमोहन को तसल्ली थी कि उसने दो लोगों को मरने से बचा लिया। मन-ही-मन फैसला किया कि कल बोरीवली जाकर उस फ्लैट में देखेगा कि वहां सब ठीक तो रहा?

डिनर वो ले आया था। सोने से पहले कॉफी पीने का मन था तो वो किचन में जा पहुंचा।

तब जगमोहन कॉफी बना रहा था कि पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।

"बहुत खुश हो रहा होगा तू कि जथूरा का काम खराब कर दिया।"

"खुश हूं, जथूरा का काम खराब करने के लिए नहीं, बल्कि दो लोगों की जान बचाने के लिए।"

"एक ही बात है, परंतु उन दो लोगों को मरने से बचाकर तेरे को क्या मिला?"

"मन की शांति।"

"मन की शांति? जग्गू अब तो जथूरा तेरे जीवन में अशांति पैदा करने जा रहा है।"

"मैं तेरी बातों की परवाह नहीं करता।"

"तू परवाह करेगा। बहुत जल्द करेगा। जब तू बर्बाद होने जा रहा होगा, तब तुझे मेरी बातें याद आएंगी।"

"मैं तेरी बातों से डरने वाला नहीं। तू डरपोक है, मैं जानता हूं।"

"अच्छा, जो मैं नहीं जानता मेरे बारे में, वो बात तूने जान ली, हैरानी है।"

"तू हिम्मत वाला होता तो सामने आकर मेरे से बात करता। यूं अदृश्य होकर नहीं।"

"इससे समझ गया कि मैं डरपोक हूं?"

"बहुत बड़ा डरपोक।"

दो पलों की खामोशी के बाद पोतेबाबा की आवाज पुनः कानों में पड़ी।

"तू शायद मेरी अहमियत को कम आंक रहा है, क्योंकि मैं बार-बार तेरे पास आ रहा हूं।"

जगमोहन चुप रहा।

"हादसों के देवता महान जथूरा का मैं सबसे खास सेवक, सलाहकार और नजदीकी हूं। ये रुतबा हमारी दुनिया में बहुत बड़ा माना जाता है। राजसी ठाठ हैं मेरे। समझ रहा है जग्गू?"

"सुन रहा हूं।"

"मैं किसी के पास जाऊं, ये बात ही अपने आप में बड़ी बात है।"

"फिर तो तेरे को मेरे पास नहीं आना चाहिए था।"

"जथूरा ने मना किया था कि किसी और को भेज दे पोतेबाबा। लेकिन मैंने स्वयं तेरे पास आना ठीक समझा।"

"क्यों?"

"क्योंकि तू पहले दर्जे का मक्कार और झूठा है। दूसरा कोई तुझे नहीं संभाल सकता।"

"तो तूने मुझे संभाल लिया?"

"संभाल ही रहा हूं। बेशक सख्ती ही क्यों न करनी पड़े, तुझे संभाल लूंगा।"

"तूने बताया जथूरा हादसों का देवता है?"

"हां। तुम्हारी दुनिया में सब हादसे जथूरा के तैयार किए ही तो होते हैं।"

"तो मेरे लिए जथूरा को एक हादसा तैयार कर देना चाहिए कि जिसमें फंसकर मैं मर जाऊं।"

"यकीनन ऐसा ही किया जाएगा। परंतु जथूरा को तेरा एहसान याद है।"

"तो?" जगमोहन ने कॉफी का प्याला थामा और किचन के बाहर आ गया।

"वो तेरी जान नहीं लेना चाहता।"

"फिर तो फंस गया जथूरा।"

"उसने कसम नहीं खा रखी। तू न माना तो फिर उसे तेरी जान लेनी पड़ेगी।"

जगमोहन ड्राइंग रूम में सोफे पर जा बैठा। घूंट भरा।

"जथूरा ने खासतौर से मुझे तेरे पास भेजा है कि तेरे को समझाऊं कि उसके रास्ते में मत आ।"

"मैं अपना कर्म कर रहा हूं। किसी के रास्ते में नहीं आ रहा।"

"तेरे कर्म हमारे लिए बुरे हैं। मान जा जग्गू।"

"मैं तेरी परवाह नहीं करता पोतेबाबा। अच्छा होगा, कि तू दोबारा मेरे पास न आए।"

"मैं जथूरा का सेवक हूं। वो कहेगा तो मैं तेरे पास सौ बार आऊंगा।"

जगमोहन ने कॉफी का घूंट भरा।

"तुझे दौलत से बहुत प्यार है—है न?"

"तो?"

"तू कहे तो मैं तेरे को ऐसे कीमती पत्थर ला दूं जिन्हें बेचकर तू दौलत का बहुत बड़ा भंडार खड़ा कर ले।"

"ये सब तू इसलिए कर रहा है कि मेरा दिमाग, भविष्य की घटनाओं को, जो पहले ही देख लेता है, उन्हें मैं रोकने की चेष्टा न करूं। लोगों का बुरा हो जाने दूं। खामखाह के एक्सीडेंट में लोगों को मरने दूं।"

"हां। तू ठीक समझा।"

"मेरे बारे में तू गलत सोच रहा है। दौलत पाने के लिए मैं इतना भी कमीना नहीं कि...।"

"तू जिस तरह से दौलत इकट्ठी कर रहा है, देवा भी तेरे साथ रहता है। वो क्या मैं जानता नहीं?"

"उन कामों में कमीनापन तो नहीं करते हम।"

"तू?"

"मुझे तेरे से कुछ नहीं चाहिए पोतेबाबा।" जगमोहन गुस्से से बोला—"तू चला जा यहां से।"

"मैं तेरे को समझाने...।"

"तू समझ गया होगा कि मैं तेरी बात नहीं मानने वाला। मेरे को समझाना तेरे बस का है भी नहीं।"

"बहुत बुरा भुगतेगा तू।" पोतेबाबा के स्वर में चेतावनी के भाव आ गए।

"कुएं में जाकर गिर तू।" जगमोहन ने कहा और कप रखकर, सोफे पर ही लेट गया।

▭ ▭
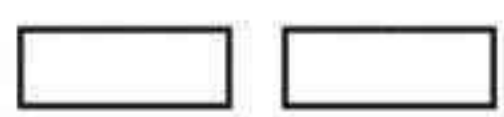
अगले दिन जगमोहन की आंख खुली तो सुबह के नौ बज रहे थे। कुछ पल वो आंखें खोले, कल की बीती घटनाओं के बारे में सोचने लगा, फिर उठा और किचन में जाकर कॉफी बनाई और सोफे पर बैठकर घूंट भरने लगा। दिमाग में तरह-तरह के विचार घूम रहे थे। सोचें तेजी से दौड़ रही थीं।

अब वो पोतेबाबा के बारे में सोचने लग गया था।

पोतेबाबा जो भी था, खतरनाक था। जो नजर नहीं आता था और कभी भी उसके आस-पास मंडराता हो सकता था। उसकी हर हरकत को देख सकता था और उसे पता भी नहीं चल सकता।

सिर्फ धुएं में उसकी आकृति चमकने लगती थी। उसकी मौजूदगी का स्पष्ट एहसास होता था।

जगमोहन ने लाख सोचा, परंतु जथूरा के बारे में कुछ भी याद नहीं आया। ये सब उसके पूर्वजन्म के लोग थे। जिनके बारे में सीधे-सीधे कुछ भी याद नहीं आ सकता था।

जथूरा हादसों का देवता था।

इस दुनिया में होने वाले हर बुरे एक्सीडेंट को वो ही तैयार करता था। वो अपनी दुनिया में बैठा इस दुनिया के लोगों को मौत के मुंह में पहुंचा रहा था।

ये गलत बात थी। जथूरा को ऐसा नहीं करना चाहिए।

मासूम लोगों की जान नहीं लेनी चाहिए उसे।

लेकिन उसे कैसे पहले ही पता चल जाता था कि कहां पर क्या हादसा होने वाला है?

पोतेबाबा कहता है कि कोई ऐसी शक्ति ये सब बातें उसके मस्तिष्क में डाल रही है, जो जथूरा के खिलाफ है। परंतु वो शक्ति उसे क्यों इस्तेमाल कर रही है, इस मामले में?

सोचों का कोई अंत नहीं था।

जगमोहन को लग रहा था कि इन सब बातों से वो पूरी तरह अंजान है कि ये सब क्या हो रहा है?

वो तो बार-बार ये ही सोचता कि क्या ये सब बातें, पूर्वजन्म की यात्रा की शुरुआत तो नहीं?

देवराज चौहान की जरूरत महसूस कर रहा था वो। परंतु देवराज चौहान दिल्ली में कहीं व्यस्त था और अब उसने ये ही तय किया कि देवराज चौहान को फोन पर कुछ नहीं बताएगा। उसकी बातें सुनकर देवराज चौहान खामखाह परेशान होगा और जो काम कर रहा है, कहीं उसमें न भटक जाए। देवराज चौहान जब वापस आएगा, तभी उसे ये सब बातें बताएगा।

जगमोहन ने कॉफी समाप्त की और उठ खड़ा हुआ।

वो सबसे पहले बोरीवली के उस फ्लैट पर जाकर देखना चाहता था कि सब ठीक रहा या नहीं।

जगमोहन नहा-धोकर तैयार हुआ। ब्रेड का नाश्ता किया फिर कार पर बोरीवली के लिए चल दिया।

पचास मिनट के सफर के पश्चात जगमोहन बोरीवली के उन फ्लैटों के पास पहुंचा। कार रोकी और 146 नम्बर फ्लैट तलाश करके सीढ़ियां चढ़ने लगा। दूसरी मंजिल पर 146 नम्बर फ्लैट के दरवाजे पर ठिठका। वहां शांति छाई थी। उसने कॉलबेल पर उंगली रखी तो भीतर कहीं बेल बजने का स्वर सुनाई दिया।

मन-ही-मन जगमोहन सोच रहा था कि सब ठीक हो।

एकाएक दरवाजा खुला।

जगमोहन ने चैन की सांस ली। क्योंकि दरवाजा खोलने वाली युवती वो ही थी, जिसे उसके मस्तिष्क ने देखा था।

"कहिए?" युवती ने उसे देखा।

तभी पीछे से मर्द की आवाज आई।

"कौन है रानी?"

जगमोहन ने पहचाना कि ये रात वाले आदमी की ही आवाज थी। यानी कि सब ठीक था। उसकी कोशिश सफल रही।

तभी वो व्यक्ति दरवाजे पर आया। उसने छोटे से बच्चे को उठा रखा था। जगमोहन को देखते ही वो चौंका।

"अ...आप!"

जगमोहन मुस्करा पड़ा।

"ओह, भीतर आइए—मैं...।"

"मैं यही देखने आया था कि क्या सब ठीक है? वो देख लिया, मुझे रोकना मत। मैं व्यस्त हूं। अभी जाना है।"

उस आदमी के होंठों से कुछ न निकला वो अवाक-सा जगमोहन को देख रहा था।

"कौन है ये?" युवती ने उस आदमी को देखा।

जगमोहन पलटा और नीचे जाने के लिए सीढ़ियां उतरने लगा।

कुछ ही पलों में वो नीचे खड़ी अपनी कार में आ बैठा था।

'मैंने जथूरा का एक हादसा बेकार कर दिया। दो की जानें बचा लीं।' जगमोहन बड़बड़ा उठा।

"तुम आग से खेल रहे हो।" कानों में पोतेबाबा की आवाज पड़ी।

"तुम फिर आ गए?"

"बहुत खुश हो कि जथूरा का एक हादसा बेकार कर दिया।"

"तुम कब से कार में हो?"

"अभी आया हूं, जब तुम ऊपर गए।" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम अचानक मुझ तक कैसे आ जाते हो?" जगमोहन ने पूछा।

"मैं अचानक नहीं आता। मैं भी तुम्हारी तरह इंसान हूं। हवा नहीं। मुझे भी भीतर-बाहर जाने के लिए दरवाजे का इस्तेमाल करना पड़ता है। खास बात सिर्फ ये है कि मैं अदृश्य हूं।"

जगमोहन के होंठ सिकुड़े।

"मतलब कि इंसानी शरीर तुम्हारे साथ है।"

"क्यों नहीं, मैं इंसान हूं तो, शरीर मेरे साथ क्यों नहीं होगा। दवा खाकर मैं अदृश्य हुआ पड़ा हूं।"

उसी पल जगमोहन ने बगल वाली सीट की तरफ हाथ बढ़ाया।

जगमोहन का हाथ किसी की बांह से टकराया।

परंतु वो बांह उसे नजर नहीं आ रही थी।

जगमोहन पूरा शरीर टटोलने लगा।

"ये क्या कर रहे हो?" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।

बांह-कंधा, सिर, चेहरा, दाढ़ी, सब चीजों का एहसास हुआ जगमोहन को।

तभी पोतेबाबा उसका हाथ झटकता कह उठा।

"हाथ पीछे रखो। मुझे अच्छा नहीं लगता कि कोई इस तरह मेरे शरीर को हाथ लगाए।"

"औरतों का स्पर्श तो तुम्हें पसंद होगा।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा।

"बहुत पसंद है। जानते हो मेरी उम्र क्या है?"

"क्या?"

"350 बरस।"

"होगी।"

"लेकिन तुम्हारी दुनिया की औरतें मुझे ज्यादा पसंद हैं। ऐसी दो औरतों को मैं ले जा चुका हूं। जो अब मेरे साथ रहती हैं।"

"तुम इस दुनिया से दो औरतों को अपनी दुनिया में ले गए?" जगमोहन के माथे पर बल पड़े।

"हां।"

"ये तुमने गलत काम...।"

"मैंने जबर्दस्ती नहीं की। वे दोनों औरतें स्वेच्छा से मेरे साथ गईं।" पोतेबाबा ने कहा।

"मैं नहीं मानता कि वो औरतें अपनी इच्छा से...।"

"मैं झूठ नहीं बोलता। क्यों बोलूंगा? तुमसे डरता नहीं मैं। वे दोनों औरतें सहेलियां थीं और बुरे हादसे का शिकार होने वाली थीं। मैंने उन्हें देखा तो वे मुझे अच्छी लगीं। तब मैं उनसे मिला और उन्हें बताया कि वो दोनों जल्द ही मरने वाली हैं। आने वाले वक्त की उन्हें तस्वीर भी दिखा दी, जिसमें वे मर रही थीं। मैंने उन्हें समझाया कि अगर वो मेरा साथ स्वीकार कर लेती हैं और मेरे साथ मेरी दुनिया में जाकर, मेरी सेवा करेंगी तो वे बच सकती हैं। इस तरह वे तैयार हो गईं।"

"जथूरा से नहीं पूछा?"

"जथूरा की इजाजत से ही मैं उन औरतों को लेकर गया था।"

"तुमने पहले उन औरतों को भयभीत किया फिर उन्हें अपने साथ चलने पर तैयार कर लिया।"

"परंतु मैंने जबर्दस्ती नहीं की।"

"घटिया हो तुम।"

"अभी तुम मुझे जानते नहीं, वरना...।"

"मैं पसंद नहीं करता कि तुम मेरे पास आते रहो।"

"मैं तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ सकता।"

"क्यों?"

"जथूरा ने तुम्हारी जिम्मेवारी मुझ पर सौंपी है कि तुम्हें समझा-बुझाकर रास्ते पर लाऊं।"

"तुम्हारी कही कोई बात भी मुझे स्वीकार नहीं।"

"तुम्हें जथूरा की बातें स्वीकार करनी होंगी।"

"तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हो?"

पोतेबाबा की आवाज नहीं आई।

"उल्लू का पट्ठा।" जगमोहन ने कहा और कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी। चेहरे पर उखड़ापन था।

"जथूरा आने वाले बुरे वक्त को टालना चाहता है, इसलिए तुम्हें इस रास्ते से हटाना चाहता है।"

"बुरा वक्त?" कार चलाते जगमोहन के होंठों से निकला।

"बहुत बुरा वक्त। अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो बुरी घटनाओं का दौर शुरू हो जाएगा।"

"बुरी घटनाएं—किसके लिए?"

"तुम्हारे लिए भी और जथूरा के लिए भी। हम सब के लिए।"

"तुम्हारा मतलब कि मेरा दिमाग जथूरा के बुरे हादसों को पहले ही देख लेता है, तो मैं उन हादसों के बारे में कुछ न करूं। बिल्ली को देखकर आंखें बंद कर लूं तो, आने वाला बुरा वक्त थम जाएगा।"

"हां। ठीक कहा तुमने।"

"वो बुरा वक्त कैसा होगा?"

"ये मैं नहीं बता सकता।"

"या तुम्हें पता ही नहीं है उस बुरे वक्त के बारे में?"

"पता है। कुछ-कुछ पता है।" पोतेबाबा की आवाज में गम्भीरता थी—"इसी कारण तुम्हें समझाने के लिए मारा-मारा फिर रहा हूं। जथूरा चाहता है कि तुम्हें, उसके काम न बिगाड़ने दूं।"

"फिर तो तुम्हारे हाथ मायूसी लगेगी। मैं तुम्हारी बातें समझने वाला नहीं।"

"क्यों जिद करते हो, मैं तुम्हें बहुत बड़ी दौलत...।"

यही वो पल थे कि जगमोहन को अपने मस्तिष्क में बिजलियां-सी कौंधती महसूस हुईं।

"आं।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"क्या हुआ?"

जगमोहन ने फौरन कार को सड़क के किनारे ले जा रोका।

अगले ही पल होंठ भींचे जगमोहन ने सिर को कार के स्टेयरिंग पर रख दिया। मस्तिष्क झनझना रहा था उसका। आंखें बंद हो चुकी थीं। और फिर उसके मस्तिष्क में तस्वीरें उभरने लगीं।

एयरपोर्ट का दृश्य उसके मस्तिष्क में चमका।

रोशनियों से एयरपोर्ट जगमगा रहा था।

दीवार पर उसे डिजिटल बोर्ड पर आज की तारीख और 4 बजे का वक्त दिखा। लोगों की भीड़ थी।

तभी एकाएक पुलिस और काले कपड़ों में कमांडोज नजर आने लगे। वो दस-बारह कमांडोज थे, जिन्होंने गनें थाम रखी थीं। वे सब भीतर से आते एक रास्ते पर खड़े हो गए। पुलिस वहां से लोगों को पीछे हटाने लगी थी।

फिर जगमोहन के मस्तिष्क में कमांडो जैसे काले कपड़ों में एक व्यक्ति दिखा जो भीड़ से अलग खड़ा था। उसकी निगाह इसी तरफ थी और हाथ में मीडियम साइज का सूटकेस थाम रखा था।

तभी उस रास्ते से छः लोगों से घिरे प्रधानमंत्री आते दिखे। छः में से चार प्रधानमंत्री के पर्सनल कमांडोज थे और बाकी के दो उनके सहायक थे। ज्यों ही प्रधानमंत्री उस रास्ते से बाहर आए, वहां मौजूद कमांडोज ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया और वे सब बाहर की तरफ बढ़ रहे थे।

पुलिस इस दौरान लोगों को पीछे रख रही थी।

कमांडो जैसे काले कपड़े पहने व्यक्ति ने फुर्ती से अपना सूटकेस खोला। उसमें गन रखी थी। उसने गन निकाली और तेजी से आगे बढ़ते हुए प्रधानमंत्री को घेरे चल रहे कमांडोज में शामिल हो गया। किसी का भी ध्यान उस पर नहीं था। वो गन थामे कमांडो के बीच में से रास्ता बनाते जरा-जरा करके आगे बढ़ने लगा।

कमांडोजयुक्त प्रधानमंत्री का काफिला, तेजी से बाहरी गेट की तरफ बढ़ रहा था।

वो व्यक्ति प्रधानमंत्री के भीतरी सुरक्षा घेरे तक आ पहुंचा था। तब तक प्रधानमंत्रीजी बाहरी गेट तक आ पहुंचे थे। सामने सिक्योरिटी से लदी प्रधानमंत्री के कार्यालय की कार खड़ी थी। जिसका दरवाजा खुल चुका था। प्रधानमंत्रीजी आगे बढ़कर उसमें बैठने ही वाले थे कि उस व्यक्ति ने उसी पल गन सीधी की और गोलियां चलाने लगा। सारी जगह गोलियों की तड़-तड़ से गूंज उठी। प्रधानमंत्री का शरीर गोलियों से भर गया। वे नीचे जा गिरे।

जगमोहन गहरी-गहरी सांसें लेने लगा था।

अब उसका दिमाग शांत हो गया था। मस्तिष्क में बिजलियां चमकनी बंद हो गई थीं।

कई पलों तक जगमोहन स्टेयरिंग पर सिर रखे रहा।

फिर उसने सिर उठाया। सीधा बैठा।

चेहरा पसीने से भरा हुआ था। अभी भी वह लम्बी सांसें ले रहा था। खुली आंखों के सामने वो सब कुछ तैर रहा था, जो उसके मस्तिष्क ने अभी-अभी देखा था।

प्रधानमंत्री की हत्या होने जा रही थी।

जबकि देश का प्रधानमंत्री एक अच्छा और शरीफ इंसान था। जनता में मशहूर था।

ये नहीं होना चाहिए।

जगमोहन ने रूमाल निकालकर अपना पसीने से भरा चेहरा पोंछा।

"क्या हुआ?" पोतेबाबा की गम्भीर आवाज कानों में पड़ी।
"तुम?" जगमोहन ने बगल वाली सीट की तरफ देखा—"तुम अभी गए नहीं?"
"नहीं, मैं तुम्हारे पास ही बैठा था। क्या हुआ था तुम्हें अभी?"
जगमोहन दो पल चुप रहकर बोला।
"तुम देश के प्रधानमंत्री को हादसे में मारने जा रहे हो?"
"हम नहीं मार रहे, वो तो हादसा होगा। तुम ये क्यों सोचते हो कि हम लोगों की जान लेते हैं?"
"लेकिन वो हादसा जथूरा ने ही रचा है।"
"ठीक समझे।"
"प्रधानमंत्री शरीफ है, उसकी जान मत लो।"
"तभी तो जथूरा उसकी जान लेने के लिए हादसा रच चुका है कि वो शरीफ है। वो शरीफ मरेगा तो कोई दूसरा प्रधानमंत्री बनेगा। षड्यंत्र भी होंगे और जथूरा को नए हादसे रचने का और भी मौका मिलेगा।" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।
"तो तुम नहीं मानोगे?"
"मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है। मैं तो तुम्हारे पास हूं। हादसे तो उस दुनिया में बैठा जथूरा रच रहा है।"
"कैसे रचे जाते हैं हादसे?"
"जथूरा सोचता है और अपने शिष्यों को बताता है कि कौन-सा हादसा कैसे रचना है। मैं वहां होता हूं तो जथूरा की इस काम में पूरी सहायता करता हूं। वैसे जथूरा के विद्वानों की जमात हादसों के तरीकों को सोचती है। विद्या ग्रहण किए हजारों शिष्य हैं जथूरा के जो आदेश के मुताबिक हादसों को रचते हैं। फिर रचे जा चुके हादसों का माप-तौल अनुभवी लोगों द्वारा किया जाता है कि हादसे को ठीक से रचा गया है या नहीं। अगर रचे हादसे में कोई कमी होती है तो उसे पुनः दुरस्त करने के लिए वापस भेज दिया जाता है। जो हादसा ठीक होता है उसे तुम्हारी दुनिया में उन नामों पर भेज दिया जाता है, जिसके लिए हादसा तैयार किया जाता है।"
"कैसे भेजा जाता है?"
"बहुत ही आसान है। जैसे तुम्हारी दुनिया के लोग मोबाइल फोन से एस.एम.एस. भेजते हैं, कुछ ऐसा ही सिस्टम हमारे पास है, परंतु उस तकनीक को हम गुप्त रखते हैं ताकि कोई हमारी वो तकनीक खराब न कर दे।"
"तुम लोगों ने बहुत तरक्की कर रखी है।"
"बहुत ज्यादा। तुम्हारी दुनिया से बड़े विद्वान हमारी दुनिया में हैं।"

"मैं पूर्वजन्म की दुनिया में कई बार जा चुका हूं।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"खबर है मुझे।"

"अब नहीं जाना चाहता।"

"क्योंकि वहां बड़े-बड़े खतरे होते हैं?"

"हां, वे खतरे हमारी दुनिया के लोगों पर भारी पड़ते हैं।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"तुम पूर्वजन्म का सफर न करो, यही मैं चाहता हूं, ये ही जथूरा चाहता है।"

"क्या मतलब?"

"जथूरा के हादसों में दखल दोगे तो तुम्हें पूर्वजन्म का सफर करना पड़ सकता है।"

जगमोहन की गर्दन घूमी और सीट की तरफ देखा।

वो खाली थी।

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"कोई चाहता है कि तुम पूर्वजन्म का सफर करो। तभी तो वो जथूरा के हादसों का तुम्हें पूर्वाभास करा रहा है।"

"वो क्यों मुझे पूर्वजन्म में भेजना चाहता है?"

"ये तो वो ही जाने।"

"कौन है वो?"

"मैं नहीं जानता, परंतु वो शक्ति जो भी है, जथूरा की दुश्मन ही होगी। तभी तो तुम्हें जथूरा के खिलाफ भड़का रही है।"

"मुझे तुम्हारी बात पर भरोसा नहीं।"

"मैं झूठ नहीं बोलता जग्गू।"

"नहीं, मैं तुम्हारा यकीन नहीं कर सकता।"

"एक बार करके देखो।"

"क्या?"

"सिर्फ एक बार तुम जथूरा के खेल में दखल मत दो। उसके बाद सब कुछ ठीक होता चला जाएगा।"

"तुम्हारा मतलब है कि मैं प्रधानमंत्री की हत्या होने दूं। दखल न दूं।"

"हां, यही मेरा मतलब है। एक बार भी तुम खामोश बैठे रह गए तो उस शक्ति का चक्र टूट जाएगा। वो कमजोर होती चली जाएगी, फिर तुम्हें पूर्वजन्म का सफर भी नहीं करना पड़ेगा।"

"और जथूरा के हादसे इसी प्रकार चलते रहेंगे।"

"हां। जैसे दुनिया चल रही है, वैसे ही चलती रहेगी।"

जगमोहन के चेहरे पर कड़वे भाव उभरे।
"पोतेबाबा।"
"हां।"
"तेरे को किसी ने ये नहीं कहा कि तू बहुत बड़ा कमीना है?" जगमोहन ने तीखे में कहा।
"ऐसा मुझे किसी ने नहीं कहा।"
"तो मैं कहता हूं। अपनी जात पहचान ले।"
"तू मेरी बेइज्जती कर रहा है जग्गू।" पोतेबाबा ने नाराजगी से कहा।
"अभी बहुत इज्जत से बात कर रहा हूं। मेरी कार से बाहर निकला जा।"
"मेरी बात...।"
"सुना नहीं तूने...मेरी कार से बाहर निकल जा।" जगमोहन गला फाड़कर चीखा।
फिर दरवाजा खुला। लगा जैसे कोई बाहर निकला हो और दरवाजा बंद हो गया।
जगमोहन ने उस खाली सीट पर हाथ घुमाया।
सब ठीक था।
पोतेबाबा वास्तव में बाहर निकल गया था।
"अब एक बात और कान खोलकर सुन ले।" जगमोहन ने गुस्से से कार की खिड़की से बाहर देखा।
"क्या?" कार के बाहर से पोतेबाबा की आवाज आई।
"दोबारा मेरी कार में बैठा तो बहुत मारूंगा।"
"तू पागल है जग्गू। मैं जो कह रहा हूं तेरे भले के लिए ही कह रहा हूं।"
"तू मेरा तो क्या, किसी का भी भला नहीं कर सकता।" जगमोहन ने दांत भींचकर कहा और कार आगे बढ़ा दी।
उखड़ा हुआ था जगमोहन।
पोतेबाबा से। जथूरा से और इन होने वाले हादसों से।
एकाएक उसने गहरी सांस ली और कार की रफ्तार कम कर दी। क्रोध की वजह से, अनजाने में कार की स्पीड तेज हो गई थी। फिर एकाएक ही सड़क के किनारे पेड़ की छाया में कार रोक दी।
घड़ी में वक्त देखा।
दिन का एक बज रहा था।
उसका दिमाग पुनः तेजी से काम करने लगा।

सिर्फ तीन घंटे बाद, ठीक चार बजे एयरपोर्ट पर प्रधानमंत्री की हत्या हो जाएगी।

ये हादसा जथूरा ने तैयार किया है। जाने किसे माध्यम बनाया है, अपना हादसा पूर्ण करने के लिए।

जो भी प्रधानमंत्री की जान लेने जा रहा है, उसे रोकना होगा। प्रधानमंत्री को बचाना होगा। वे अच्छे इंसान हैं। उनकी मौत से देश को नुकसान होगा। लेकिन कैसे?

जगमोहन को कोई रास्ता समझ नहीं आ रहा था।

प्रधानमंत्री के मामले में दखल देना, मजाक नहीं था।

जगमोहन ने कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

जल्दी ही वो एक बाजार में पहुंचा। कार से निकलकर उसने पब्लिक बूथ की तलाश की।

"डायरेक्ट्री देना।" जगमोहन फोन बूथ पर बैठे व्यक्ति से बोला।

"क्या?"

"फोन डायरेक्ट्री।"

"वो कहां से आ गई? पांच सालों से तो फोन वालों ने डायरेक्ट्री ही नहीं छापी।"

"नहीं छापी?"

"नहीं।"

"पुरानी डायरेक्ट्री होगी?"

"वो भी नहीं है।"

"तुम्हें प्रधानमंत्री कार्यालय का फोन नम्बर पता है?"

"क्या?" उसने अजीब-सी नजरों से जगमोहन को देखा।

"प्रधानमंत्री कार्यालय का फोन नम्बर।"

"तो आप फोन डायरेक्ट्री में प्रधानमंत्री कार्यालय का नम्बर तलाश करना चाहते थे?"

"हां।"

"आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि पी.एम. आफिस का नम्बर फोन डायरेक्ट्री में नहीं होता।"

"ओह, मेरा दिमाग खराब हो गया है।" जगमोहन ने कहा और बाहर आ गया।

मन ही मन बहुत परेशान था जगमोहन।

वो प्रधानमंत्री की हत्या किए जाने की सूचना देना चाहता था।

लेकिन उसे प्रधानमंत्री कार्यालय का फोन नम्बर नहीं पता था।

जगमोहन अपनी कार की तरफ बढ़ा कि तभी उसकी निगाह कुछ दूर हवलदार पर पड़ी।

जगमोहन तेजी से चलता उसके पास जा पहुंचा।
"सुनिए सर।"
हवलदार ने पलटकर जगमोहन को देखा।
जगमोहन पास आया उसके।
"आधे घंटे में मेरी ड्यूटी खत्म होने वाली है।" हवलदार बोला—"लफड़े वाली बात हो तो दूसरे से कहो।"
"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं आपसे प्रधानमंत्री कार्यालय का नम्बर पूछना चाहता हूं।"
"पी.एम. आफिस का फोन नम्बर?" हवलदार ने अजीब-से स्वर में कहा।
"हां—वो ही।"
"क्यों?"
"काम है।"
"क्या काम है—मुझे बता।"
"तुम्हारे जानने लायक नहीं है।"
"समझा।" हवलदार ने पैनी नजरों से उसे घूरा—"तुम वहां फोन करके धमकी देना चाहते हो।"
"धमकी?"
"यही कि पी.एम. हाउस में बम रखा है, जो कि फटने वाला है। ऐसे बोगस कॉल पहले भी आ चुके हैं वहां। वो तुमने किए?"
जगमोहन उखड़ गया।
"मैंने किए होते तो तुमसे नम्बर न मांगता फिरता।"
"तो अब पहली बार, धमकी भरा फोन करने जा रहे हो... तभी...।"
"दिमाग खराब हो गया है तुम्हारा।" जगमोहन झल्लाया।
"क्या—तुमने ऑन ड्यूटी पुलिस वाले को पागल कहा?" उसने आगे बढ़कर जगमोहन की बांह पकड़ी—"चल थाने में।"
"हाथ छोड़—पांच सौ दूंगा।" जगमोहन बोला।
"पांच सौ? ठीक है दे।"
"बांह तो छोड़।"
हवलदार ने बांह छोड़ी।
जगमोहन ने जेब से पांच सौ का नोट निकाला और उसे देते हुए कहा।
"बता प्रधानमंत्री कार्यालय का फोन नम्बर?"
"इस पांच सौ के बदले तेरे को सलाह दे रहा हूं।" उसने नोट अपनी जेब में रखते हुए कहा—"मेरे खयाल में शायद ही किसी

पुलिस वाले को प्रधानमंत्री कार्यालय का नम्बर पता होगा और जिसे पता होगा वो इस तरह तेरे को नहीं मिलने वाला।"

"तो कैसे मिलेगा?"

"नहीं मिलेगा। ये ही तो समझाना चाहता हूं। मेरे को समझ नहीं आता कि आखिर तेरे को पी.एम. ऑफिस में काम क्या है?"

"तेरे को तो पांच सौ मिल गए?" जगमोहन ने चिढ़कर कहा।

"हां।" वो मुस्कराया।

"मजे कर।" जगमोहन ने कहा और पलटकर अपनी कार की तरफ बढ़ गया।

▭ ▭

एयरपोर्ट।

3.30 बजे।

जगमोहन वहां मौजूद था। वो फैसला कर चुका था कि उसे क्या करना है। अभी तक सब ठीक नजर आ रहा था। कोई कमांडो या फालतू की पुलिस न दिखाई दे रही थी।

यात्रियों का आना-जाना और एनाउंसर की आवाजें गूंज रही थीं।

कई यात्री फर्श पर कपड़ा फैलाकर बैठे, खाना खा रहे थे। रेलवे स्टेशन जैसा माहौल महसूस होता कभी-कभी। दो बच्चे एक खाली डिब्बा एक-दूसरे पर फेंकते खेल रहे थे। कभी-कभार प्लेन के इंजन के चीखने की आवाज कानों में पड़ जाती थी। कुछ काउंटरों पर लोग कतारों में भी खड़े दिखे।

जगमोहन की निगाह दीवार पर गई, जहां डिजीटल घड़ी लगी थी।

इस घड़ी को उसका मस्तिष्क पहले भी देख चुका था।

घड़ी में अब 3.40 हो रहे थे।

प्रधानमंत्री की हत्या होने में सिर्फ बीस मिनट बाकी थे।

जगमोहन का दिल इस विचार के साथ जोरों से धड़का। वहां मौजूद लोगों पर निगाह मारी, जो कि होने वाले इस हादसे से बेखबर थे। अगर हादसा हो गया तो एयरपोर्ट पुलिस छावनी में बदल जाना था।

जगमोहन ने उस तरफ देखा जहां उसके मस्तिष्क ने प्रधानमंत्री का हत्यारा खड़ा देखा था।

वहां इस वक्त कोई नहीं खड़ा था।

वक्त आगे सरकता जा रहा था।

3.50 बज गए।

तभी जगमोहन ने पंद्रह-बीस पुलिस वालों को भीतर प्रवेश करते देखा।

देखते ही देखते वो उस रास्ते से लोगों को हटाने लगे, जहां से प्रधानमंत्री को निकलना था।

जगमोहन सतर्क हो गया।

प्रधानमंत्री की हत्या का वक्त करीब आता जा रहा था।

उसी पल उसने काले कपड़े पहने दस-बारह कमांडो द्वार से भीतर प्रवेश करते देखे। सबके हाथों में गनें थमी हुई थीं। वे सतर्क और खूंखार जैसे लग रहे थे।

कमांडोज उस रास्ते पर खड़े होने लगे, जहां से होकर प्रधानमंत्री को आगे जाना था।

जगमोहन की निगाह घड़ी पर गई।

3.55 होने वाले थे।

जगमोहन की निगाह उधर घूमी जहां प्रधानमंत्री का हत्यारा खड़ा देख चुका था उसका मस्तिष्क।

थम गईं नजरें जगमोहन की।

काले कपड़ों में उसे वहां वो ही हत्यारा दिखा, जिसे उसका मस्तिष्क देख चुका था। उसके पांवों के पास ही मीडियम साइज का सूटकेस रखा था। जगमोहन जानता था कि उसी सूटकेस में गन है।

जगमोहन फुर्ती से पास के पब्लिक फोन बूथ में घुस गया और रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाने लगा। सिक्का उसने पहले ही भीतर डाल दिया था। ये नम्बर एयरपोर्ट के सुरक्षा स्टाफ के चीफ मिस्टर कौल का था।

बेल हुई, फिर आवाज आई।

"हैलो।"

"मिस्टर कौल?"

"यस।"

"तुम एयरपोर्ट की सुरक्षा के चीफ हो?" जगमोहन ने जल्दी से कहा।

"हां।"

"अभी प्रधानमंत्री का प्लेन आया होगा। वो बाहर आ रहे हैं।"

"हां, लेकिन तुम...।"

"मेरी सुनो, बीच में मत बोलो, ठीक चार बजे प्रधानमंत्री की हत्या होने वाली है।"

"क्या कहा?"

"मैं तुम्हें एक मौका दे रहा हूं कि हत्यारे को पकड़ सको, तैयार हो?"

"ह...हां।"

"कहां हो तुम?"

"वहां जहां से प्रधानमंत्री को निकलना है। कमांडोज के बीच...।"

जगमोहन की निगाह फोन बूथ से बाहर, कमांडोज की तरफ घूमने लगी।

तभी उसे पचपन बरस का एक व्यक्ति दिखा जो फोन कान पर लगाए, कमांडोज के पास ही टहल रहा था। तभी उसके कानों में आवाज पड़ी।

"तुम खामोश क्यों हो गए?"

"तुमने नीली कमीज पहन रखी है।"

"हां...मैंने...ओह तुम मुझे देख रहे हो?"

"हां। मेरी बात ध्यान से सुनो।" जगमोहन ने हत्यारे की तरफ नजर मारी—"तुम वहां से पीछे की तरफ घूमो।"

वो घूमा।

"गुड।" जगमोहन कह उठा—"अब ठीक सामने दूर तक देखो।"

जगमोहन ने उसे ऐसा करते भी देखा।

"ठीक है, अब अपनी नजर को थोड़ा-सा बाएं घुमाओ। आराम से और तब तक घुमाते रहो, जब तक कि तुम्हें काले कपड़े पहने एक आदमी न दिख जाए। उसके पांवों के पास एक सूटकेस...।"

"हां—दिख गया है मुझे वो।"

"वो ही प्रधानमंत्री की हत्या करने वाला है। उस सूटकेस में गन है। प्रधानमंत्री के आते ही वो सूटकेस से गन निकालेगा और आगे बढ़कर वो कमांडोज में मिक्स हो जाएगा। क्योंकि उसके कपड़े कमांडोज जैसे ही हैं और फिर वो पास जाकर प्रधानमंत्री की हत्या कर देगा। उसके इरादे पक्के हैं और वो पीछे हटने वाला नहीं।"

"तुम...तुम कौन हो और तुम्हें कैसे...?"

"बेवकूफ दो-तीन मिनट का वक्त रह गया है प्रधानमंत्री की हत्या होने में। कुछ करो।"

"क्या?" वो घबरा गया दिखता था।

"ये भी क्या मैं बताऊं?" जगमोहन झल्लाया—"उसे रोको—गोली मारो। बेशक पहले मारो या तब मारो जब वो प्रधानमंत्री की हत्या

करने के लिए गन का इस्तेमाल करने जा रहा हो। मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है कि वो प्रधानमंत्री का हत्यारा बनने जा रहा है।” कहने के साथ ही जगमोहन ने रिसीवर वापस रखा और फोन बूथ से बाहर निकलकर एक तरफ तमाशबीन की तरह खड़ा हो गया। उसने सोच रखा था कि सिक्योरिटी चीफ कौल कुछ न कर सका तो वो अपने रिवॉल्वर का इस्तेमाल करके हत्यारे को रोकेगा। परंतु जथूरा के रचे हादसे को पूरा नहीं होने देगा।
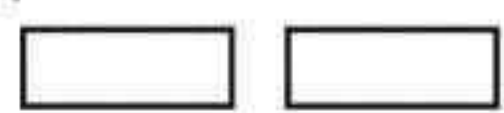
कमांडोज जैसे कपड़े पहने वो व्यक्ति गन थामे कमांडोज में आ मिला। सबका ध्यान प्रधानमंत्री पर था, जो कि सुरक्षा घेरे में, बाहर की तरफ बढ़ रहे थे, साथ ही वो लोगों को देखते हाथ भी हिला रहे थे।

सिक्योरिटी चीफ कौल की निगाह उस नकली कमांडो पर थी, जो कमांडोज की भीड़ में शामिल होकर, उनका ही हिस्सा बन गया था। कौल चीख-चीखकर बता देना चाहता था सबको कि वो प्रधानमंत्री की हत्या करने जा रहा है।

परंतु इसमें खतरा था।

उस हत्यारे के हाथ में गन थी।

अपना भेद खुलते ही उसने घबराकर फायरिंग शुरू कर देनी थी। निर्दोषों का खून बहने लगता। कौल देख रहा था कि वो हत्यारा कमांडोज को पार करता, प्रधानमंत्री तक पहुंचने की चेष्टा कर रहा था।

कौल ने रिवॉल्वर निकाल ली। वो हत्यारे के करीब रहने का प्रयत्न कर रहा था। इस वक्त उसे सिर्फ वो ही व्यक्ति याद रहा था। दुनिया को जैसे भूल चुका था। कौल चाहता तो आसानी से अभी उसे शूट कर सकता था, परंतु वो ये भी नहीं चाहता था कि वो कोई गलती कर बैठे। क्या पता उसे फोन करने वाला कोई बोगस इंसान हो। जिस पर शक कर रहा है कि वो हत्यारा है, वो हत्यारा न हो। कौल के दिमाग में बहुत कुछ दौड़ रहा था।

प्रधानमंत्री का कमांडोज से भरा काफिला बाहर निकलने वाले शीशे के दरवाजे पर जा पहुंचा।

कौल ने देखा वो व्यक्ति अब प्रधानमंत्री के काफी पास जा पहुंचा है।

प्रधानमंत्रीजी सामने खड़ी कार की तरफ बढ़ने लगे। जिसके दरवाजे खोले जा चुके थे।

कदम-कदम पर सिक्योरिटी थी।

अगले ही पल कौल को अपने शरीर में चींटियां-सी रेंगती महसूस हुईं। उसने उस व्यक्ति को गन सीधी करते देखा। कौल ने प्रधानमंत्री पर निगाह मारी, जो कि कार तक पहुंच चुके थे।

कौल समझ गया कि वो व्यक्ति प्रधानमंत्री पर गोलियां चलाने जा रहा है।

वो प्रधानमंत्री की तरफ गन को उठाकर सीधी कर चुका था।

"न...ऽऽ...ऽ...हीं..।" कौल गला फाड़कर चीखा। उसने रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा किया।

कौल के चीखने पर वहां हड़कंप मच गया।

परंतु वो व्यक्ति जैसे अपना काम पूरा कर देना चाहता था।

इससे पहले कि वो गोलियां चला पाता प्रधानमंत्री पर।

कौल एक-के-बाद एक ट्रेगर दबाता चला गया।

पहली गोली उस हत्यारे के सिर में लगी, बाकी तीन गोलियां उनकी पीठ में जा धंसी थीं।

गोलियों की आवाजों के साथ ही हर कोई सन्न रह गया था।

किसी को समझने का मौका नहीं मिला कि क्या हुआ है।

तब तक तीन कमांडो कौल की तरफ झपटे। एक ने उसके रिवॉल्वर वाले हाथ पर गन मारी तो रिवॉल्वर नीचे जा गिरी। दो ने उसे जकड़ लिया।

कौल गहरी-गहरी सांसें ले रहा था। कांप-सा रहा था।

वो हत्यारा छाती के बल नीचे पड़ा था। गन उसकी छाती के नीचे दबी थी। वो मर चुका था। उसका खून आस-पास के फर्श पर फैलता जा रहा था। कौल ने गहरी सांसें लेकर कहा।

"छोड़ो मुझे। मैं एयरपोर्ट सिक्योरिटी का चीफ हूं। वो आदमी प्रधानमंत्रीजी को शूट करने जा रहा था।"

"वो हमारा आदमी था।" एक कमांडो ने कठोर स्वर में कहा।

"वो तुम लोगों में से नहीं है। पहचानो उसे। उसके कपड़ों की वजह से तुम लोग भी धोखा खा गए।"

दो कमांडो उस मरे हुए व्यक्ति की तरफ बढ़े।

उसे सीधा करके उसका चेहरा देखा गया।

फौरन ही ये स्पष्ट हो गया कि मरने वाला बाहरी व्यक्ति था।

कौल को छोड़ दिया गया।

प्रधानमंत्रीजी इस हादसे के बाद एक पल के लिए वहां न रुके थे। वे जा चुके थे।

कुछ दूर भीड़ में खड़े जगमोहन के चेहरे पर मुस्कान नाच रही थी।

जगमोहन अपनी कार में बैठा और वापस चल पड़ा। मन-ही-मन खुश था कि उसने प्रधानमंत्री की हत्या जैसा, बड़ा हादसा होने से बचा लिया वरना देश-भर में दुख की लहर दौड़ जाती। बहुत नुकसान होता देश का। अब उसे ये सब करना अच्छा लगने लगा था। आज पहली बार वो महसूस कर रहा था कि लोगों का भला करके मन को कितनी शांति मिलती है। आज उसे सच्ची खुशी हासिल हुई थी।

रास्ते में उसने मार्किट में कार रोकी और धूप के दो बड़े पैकिट ले लिए।

बंगले पर पहुंचा।

देवराज चौहान अभी तक नहीं लौटा था।

जगमोहन ने सबसे पहले धूप को ड्राइंगरूम-बेडरूम, किचन में सुलगा दिया। बंगले में धूप का खुशबूदार धुआं फैलने लगा। ये सब काम करके हटा और फ्रिज से ब्रेड-बटर निकालकर टोस्ट तैयार किए और खाते हुए किचन में जा पहुंचा और कॉफी तैयार करने लगा।

कॉफी का मग थामे वो ड्राइंग रूम में पहुंचा तो ठिठक गया। चेहरे पर तीखी मुस्कान आ ठहरी।

सोफे पर पोतेबाबा बैठा था।

वो अदृश्य था, परंतु धूप के धुएं में उसकी आकृति स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

सिर के बाल पीछे को जाते। सफेद फैली दाढ़ी छाती तक जाती। गले में मालाएं। कानों में कुंडल। धूप का धुआं जब कम होता तो आकृति धुंधला जाती, वरना आकृति स्पष्ट नजर आती।

"स्वागत है पोतेबाबा।" जगमोहन ने व्यंग-भरे स्वर में कहा और सोफा चेयर पर बैठकर कॉफी का घूंट भरा।

पोतेबाबा गम्भीर निगाहों से जगमोहन को देखता रहा।

"पहले मैंने कहा था कि तुम्हारा, मेरे पास आना मुझे अच्छा नहीं लगता।" जगमोहन मुस्कराया—"लेकिन अब ऐसा नहीं है। तुम्हारा आना मुझे अच्छा लगने लगा है। कम-से-कम देख तो सकता हूं कि तुम्हारा उतरा हुआ चेहरा कैसा लगता है।"

"मैंने सोचा था जग्गू कि तुम मेरा कहना मान जाओगे।"

"इतनी बड़ी गलत बात तुमने कैसे सोच ली?"

"इसी में हम सबका भला है।" पोतेबाबा के होंठ हिलते दिखाई दिए।

"मेरा जो मन करेगा, मैं वो ही करूंगा।"

पोतेबाबा उसे देखता रहा।

धुएं में उसकी बनती-बिगड़ती आकृति दिखती रही।

"तू सच में बहुत बड़ा मक्कार है।"

"एक बात बता पोतेबाबा।"

"क्या?"

"किसी को कैसे मालूम हो जाता है कि जथूरा ने कौन-सा हादसा रचा है और वो मेरे मस्तिष्क में डाल देता है?"

"किसी ने हमारे हादसे तैयार करने वाले सिस्टम पर अपनी तार डाल दी है। जिसकी वजह से वो जान लेता है कि जथूरा कौन-सा हादसा इस दुनिया में भेजने जा रहा है।" पोतेबाबा ने कहा।

"फिर तो तुम्हें मेरे पास नहीं आना चाहिए था। तुम्हें वो तार ढूंढ़कर निकाल फेंकनी चाहिए तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

"ये असम्भव जैसी बात है।"

"क्यों?"

"सिस्टम पर हमने अपनी आवश्यकता के अनुसार सैकड़ों तारें डाल रखी हैं। सैकड़ों तारों में से उस बहरूपी तार को तलाश करना आसान नहीं है। फिर भी हमारे लोग दिन-रात उस तार को तलाश करने की चेष्टा कर रहे हैं।"

जगमोहन ने कॉफी का घूंट भरा।

"तू बता जग्गू, तू कैसे मेरी बात मानेगा?" पोतेबाबा गम्भीर था।

"कैसे भी नहीं।"

"मानेगा तो जरूर।"

"भूल है तेरी, जो ऐसा सोचता है।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

जगमोहन ने पोतेबाबा की आकृति को मुस्कराते देखा।

"तू अभी जथूरा की ताकत को पहचानता ही कहां है। उस ताकत के आगे तेरा वजूद चींटी जैसा है।" पोतेबाबा ने कहा।

"अगर ऐसा होता तो तुम लोग मुझसे अपनी बात मनवा चुके होते।"

"हमारी भी कुछ सीमाएं हैं। हम इस दुनिया के लोगों को शक्तियों के दम पर ही, अपनी मनमानी कर सकते हैं। परंतु तेरे साथ तो हम इस वक्त कुछ भी गलत नहीं कर सकते। क्योंकि तेरे को उस शक्ति का आशीर्वाद मिल चुका है, जो तेरे को इस्तेमाल कर रही है।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"तेरे ऊपर हमारी शक्तियां असर नहीं करेंगी। जब तू हमारी दुनिया में आएगा, तब तुझ पर हमारी शक्तियां चल सकेंगी।"

"फिर तो तुम लोग मजबूर हो गए, मुझे कुछ न कहने को।"

"इतने भी मजबूर नहीं हुए, जितने कि तुम सोच रहे हो।"

"तो क्या करोगे मेरा?"

"तू नहीं तो देवा तो है।"

"देवराज चौहान।" जगमोहन के होंठों से निकला—माथे पर बल पड़े—"क्या कहना चाहता है तू?"

"जथूरा एक हादसा तैयार कर रहा है, जो देवा के साथ होगा। तू देवा को कैसे बचा पाएगा?"

"कमीने—हरामी।" जगमोहन कॉफी का प्याला फेंकते हुए पोतेबाबा की आकृति पर झपट पड़ा।

जगमोहन को लगा जैसे किसी शरीर से जा टकराया हो।

जगमोहन ने पोतेबाबा की आकृति की गर्दन दोनों हाथों से पकड़ ली।

"मैं तेरे को अभी खत्म कर...।"

तभी जगमोहन ने पोतेबाबा का हाथ अपने सिर पर महसूस किया।

जगमोहन को लगा पोतेबाबा अंगूठे से उसकी कनपटी दबा रहा हो।

दर्द की तीव्र लहर उसके सिर में दौड़ी और वो बेहोश होता चला गया।

▭ ▭
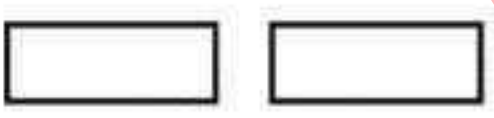
सपन चड्ढा ने कॉल बेल पर उंगली रखते हुए दबाई।

भीतर बेल बजने की आवाज गूंजी, जो बाहर तक सुनाई दी।

सपन चड्ढा ने इस वक्त कीमती सूट पहन रखा था। उसकी कार सामने ही खड़ी थी। हाथों की उंगलियों में सोने की, हीरे के नगों वाली अंगूठियां पहनी, चमक रही थीं। गले में सोने की मोटी-सी चेन थी।

तभी दरवाजा खुला और राधा दिखी। उसके हाथ में बेलन था। गालों पर दाएं-बाएं से आती बालों की लट झूल रही थी। माथे पर सूखे आटे की लकीर लगी दिखाई दे रही थी।

"क्या है?" राधा ने डंडा मारने वाले ढंग में पूछा।

"न...नमस्कार।" सपन चड्ढा ने दोनों हाथ जोड़े।

"नमस्कार-नमस्कार, देख तू पहले ही सुन ले, नीलू कहीं नहीं

जाएगा। वो बोत बिजी है।" राधा बेलन वाला हाथ हिलाकर कह उठी—"मैं आलू के परांठे बना रही हूं और उसे बोत जोरों की भूख लगी है।"

"मैंने उससे बात करनी है।"

"उसे ले के तो नहीं जाएगा?"

"नहीं, सिर्फ बात...।"

तभी पीछे से नीलू महाजन की आवाज आई।

"कौन है राधा?"

"खुद ही देख लो। तुम्हें पूछ रहा है कोई। मेरा बनाया आलू का परांठा खाए बिना तुम जाना नहीं।" राधा ने पलटते हुए कहा और भीतर चली गई। तभी दरवाजे पर महाजन दिखा।

सपन चड्ढा ने मुस्कराकर उसे देखा।

"कहो।" महाजन बोला।

"मेरा नाम सपन चड्ढा है।" वो जेब से कार्ड निकालकर महाजन की तरफ बढ़ाता बोला—"मेरा शीशा बनाने का बिजनेस है।"

महाजन ने कार्ड लिया, देखा फिर सपन चड्ढा के चेहरे पर निगाह टिक गई।

"आगे बोलो।"

"तुम नीलू महाजन हो। इसलिए पूछ रहा हूं कि मैंने तुम्हें पहले नहीं देखा।"

"हां।" महाजन के होंठ सिकुड़े।

"मोना चौधरी से मुझे काम है।"

"क्या?"

"काम उसी को बताऊंगा। मुझसे किसी ने कहा कि तुम मोना चौधरी की खास पहचान वाले हो।"

"किसने कहा?"

"उसने अपना नाम बताने को मना किया है, इसी शर्त पर उसने मुझे तुम्हारा पता बताया।"

"तुम मोना चौधरी से बात करना चाहते हो?" महाजन बोला।

सपन चड्ढा ने फौरन हां में सिर हिलाया।

"तो काम मुझे बताना पड़ेगा। उसके बाद ही मोना चौधरी तय करेगी कि तुमसे मिलना है कि नहीं।"

तभी पीछे से राधा की आवाज आई।

"नीलू, परांठा तैयार है। खा ले ठंडा हो जाएगा। उसे भी ले आ। कोई गरीब खाना खा लेगा, तो दुआ देगा।"

"बोलो क्या काम है मोना चौधरी से?" महाजन बोला।

"एक को खत्म कराना है।"

"किसे?"

"ये बात तो मैं सिर्फ मोना चौधरी को ही बताऊंगा। इस काम के तीन करोड़ दे सकता हूं।"

"तीन करोड़ एक कत्ल के?" महाजन ने गहरी सांस ली।

"लेकिन ये काम जल्दी का है। नहीं तो वो मुझे मार देगा।" सपन चड्ढा कह उठा।

"तुम्हारा कार्ड मैंने ले लिया है। काम करने का। बेबी का मन हुआ तो आज तुमसे मिल लेगी।"

"मैं सारा दिन अपने बंगले पर रहकर ही, मोना चौधरी का इंतजार करूंगा।"

"ये जरूरी नहीं कि वो तुमसे, तुम्हारे बंगले पर ही मिले।"

"वो जहां कहेगी, मैं वहीं आ जाऊंगा।"

"ठीक है, तुम जाओ।"

"कोशिश करना कि मोना चौधरी मेरा काम करने को तैयार हो जाए। मैं तुम्हें पांच लाख दूंगा।"

"बेबी को काम के लिए राजी करने के?"

"हां।"

महाजन ने दरवाजा बंद कर लिया।

सपन चड्ढा वहां से हटा और कार में आ बैठा। कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

"क्या तीर मार के आया है?" पीछे वाली सीट पर बैठे चार फीट के मोमो जिन्न ने पूछा।

"जैसा तूने कहा था, वो ही बात कर आया हूं नीलू महाजन से।"

"तो मुंह लटका के क्यों बोलता है, खुश होकर कह।"

"मैं तुम्हारे कहने पर चल रहा हूं। इसके बाद तो तू मेरा पीछा छोड़ देगा?"

"तू मेरा गुलाम है।"

"तूने कहा था कि इस काम के बाद मेरा पीछा छोड़ देगा।"

"मैंने कहा और तूने सच मान लिया।" मोमो जिन्न कहकर हंस पड़ा।

सपन चड्ढा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"तूने तो कहा था कि...।"

"अभी काम किधर पूरा हुआ है। काम पूरा कर, तभी तो छोड़ूंगा।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तेरा कोई भरोसा नहीं।"

"अब की बार तूने ठीक बात कही।"

सपन चड्ढा खुद को, मोमो जिन्न के हाथों बुरी तरह फंसा महसूस कर रहा था।

"तू किस्मत वाला है कि जथूरा ने ये काम मुझे करने को दिया। लोमा को दिया होता तो अब तक तू गंजा हो चुका होता। जो बात बाद में करता है और सिर पर चपत पहले मारता है। वो दूसरे को पागल कर देता है।"

"लोमा—वो भी जिन्न है?" सपन चड्ढा के होंठों से निकला।

"हां, लेकिन अपने को बड़ा तीसमार खां समझता है। मैंने तो एक बार उसे पकड़कर पीट दिया था।"

सपन चड्ढा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"अब सीधा अपने बंगले पे चल। मैं तेरे बेड पर आराम करूंगा। उसका गद्दा बहुत अच्छा है, उस पर लेटो तो वो झुला देता है।"

सपन चड्ढा कुछ न बोला।

"चुप क्यों हो गया। बातें करता रह।" मोमो जिन्न बोला।

"बातें...तुम मोना चौधरी के हाथों देवराज चौहान को क्यों मरवाना चाहते हो?"

"मैं कुछ नहीं चाहता। मैंने तुम्हें पहले भी बताया है कि मुझसे इच्छाएं निकाल दी गई हैं। मैं सिर्फ जथूरा का गुलाम हूं और जथूरा चाहता है कि देवा और मिन्नो का झगड़ा हो। दोनों में से एक मर जाए। जथूरा महान है।"

"वो ऐसा क्यों चाहता है?"

"देवा और मिन्नो बुरे ग्रह बनकर जथूरा के सामने आने वाले हैं। दोनों में से एक मरेगा, तो दूसरे के ग्रहों की ताकत कमजोर होती चली जाएगी। वरना दोनों के ग्रह मिल गए तो जथूरा पर बुरा प्रभाव डालेंगे।"

"मेरी समझ में नहीं आ रही तुम्हारी बातें।"

"तो फिर पूछता क्यों है?"

"तूने ही तो कहा है बात करने को।"

"अच्छी बात कर।"

"जथूरा रहता कहां है?"

"ऐसी बातें करनी हैं तो चुप ही रह।" मोमो जिन्न अपने नाक में पड़ी बाली को छूता कह उठा।

"मोना चौधरी मेरे पास आए, ये जरूरी तो नहीं।"

"वो आएगी। उसे तेरे पास लाने का काम जथूरा की शक्तियां करेंगी। जथूरा महान है।"

"तो जथूरा अपनी ताकतों से देवराज चौहान और मोना चौधरी को मार सकता है?" सपन चड्ढा ने कहा।

"वो ऐसा करने में सफल नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि देवा और मिन्नो के ग्रह ऐसे हैं कि उसका वार सफल नहीं हो सकता, परंतु देवा और मिन्नो अगर जथूरा की धरती पर आ जाते हैं तो जथूरा उन्हें खत्म करने में सफल हो सकता है। लेकिन इसमें जथूरा को खतरा है। देवा और मिन्नो का जथूरा की धरती पर पांव रखना ही, जथूरा के लिए खतरे की बात है। तभी तो वो पहले ही एक को खत्म...।"

"मुझे समझ नहीं आता कि आखिर जथूरा की धरती है कहां?"

"वो धरती भी, तुम्हारी इसी धरती का हिस्सा है, परंतु वो किसी को नजर नहीं आती।"

"क्यों?"

"श्रापित है वो धरती। इसलिए वो वक्त की गहराइयों में धंसी है। उस धरती के श्रापित होने की कई अहम वजहें हैं, उन्हीं वजहों को खत्म करने के लिए अनजाने में देवा और मिन्नो बार-बार पूर्वजन्म की दुनिया में प्रवेश कर जाते हैं। वो दोनों श्रापित होने की वजहों को एक-एक करके खत्म कर रहे हैं।"

"देवराज चौहान और मोना चौधरी ही क्यों? किसने उस धरती को श्रापित किया और...।"

"ये लम्बी कहानी है। तू क्या करेगा जानकर। कभी फुर्सत में सारी बात बताऊंगा। लेकिन उस श्रापित धरती के सारे श्राप देवा और मिन्नो के साथ बंधे हैं कि जब वे दोनों एक-दूसरे के सहयोग से, पूर्व जन्म की दुनिया में जाकर, वहां के बिगड़े कामों को संवारेंगे तो, उस धरती से श्रापों का असर कम होता चला जाएगा, फिर एक दिन वो धरती श्रापों से मुक्त होकर सामान्य बन जाएगी। इस धरती की तरह।"

"तुम्हारी अपनी कही बातों में ही उलझनें बहुत हैं।"

"क्या?"

"अगर तुम ठीक कह रहे हो तो जथूरा उन्हें उस धरती पर आने से रोकना क्यों चाहता है?"

"जथूरा महान है।" मोमो जिन्न कह उठा—"उसकी महानता तब तक ही सलामत है, जब तक वो धरती श्रापित रहेगी। उस

धरती के सलामत रहने पर ही, उसका खेल जारी रहेगा। वो हादसों का देवता बना रहेगा। उसके नाम का डंका बजता है वहां तो वो क्यों चाहेगा कि देवा और मिन्नो उसकी महानता नष्ट कर दें।"

"इसका मतलब जथूरा किसी श्राप का हिस्सा है।"

"अब तू ठीक समझा।"

"तो वो महान कैसे हो गया?"

"क्योंकि वो हादसों का देवता है। तुम्हारी दुनिया में होने वाले हादसे वो ही रचता है और भेजता है। वो सच में महान है। वरना ये काम कर पाना बच्चों का तो खेल नहीं। इसके निपुण होने के लिए सैकड़ों बरसों तक विद्या ग्रहण करनी पड़ती है। तपस्या करनी पड़ती है। खुद को भूलना पड़ता है। कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं। वरना इस विद्या को जानने का रास्ता तो कांटों से भरा पड़ा है। नौ हजार शिष्य थे जब हादसों की विद्या का पाठ शुरू किया गया था, लेकिन एक-एक करके सब शिष्य पिछड़ते चले गए। सिर्फ जथूरा ही एकमात्र शिष्य रहा जो अंत तक चला और हादसों की सारी विद्याओं में निपुण हो गया। आह...जथूरा महान है।"

"क्या जथूरा ने बुरी विद्या ग्रहण की है?"

"कोई भी विद्या बुरी नहीं होती। बात उसको इस्तेमाल की है कि उसका कहां इस्तेमाल हो रहा है।"

"तो क्या जथूरा विद्या का बुरा इस्तेमाल कर रहा है?"

"ये तुमने कैसे सोचा?"

"क्योंकि वो देवराज चौहान और मोना चौधरी से डर रहा...।"

"नहीं...नहीं। डर नहीं रहा। सिर्फ सावधानी। सतर्कता बरत रहा है जथूरा। उसकी विद्या ने उसे संकेत दिया कि देवा और मिन्नो का इस वक्त पूर्वजन्म की दुनिया में आने का संयोग बन सकता है। ऐसा न हो, इसलिए देवा और मिन्नो को जथूरा इसी धरती पर लड़ाकर, उसमें दुश्मनी बढ़ा देना चाहता है। इसी काम के लिए मुझे भेजा गया है। उनमें दुश्मनी बैठेगी तो वो एक कैसे होंगे। एक नहीं होंगे तो, पूर्वजन्म की दुनिया में प्रवेश नहीं करेंगे। कर भी गए तो दुश्मनी की वजह से दोनों मिलकर काम नहीं करेंगे। इसी में जथूरा का फायदा है।"

"तो जथूरा दोनों को एक नहीं होने देना चाहता।"

"बिल्कुल सही बात।" मोमो जिन्न ने अपनी गर्दन हिलाई—"देवा और मिन्नो के एक हो जाने से, उनके ग्रह बलशाली हो जाते हैं तब वो मिलकर, बड़ी-से-बड़ी शक्ति को भी पस्त कर सकते हैं।"

"ओह, तो ये बात है।" सपन चड्ढा ने सिर हिलाया—"इसके लिए जरूरी है कि मोना चौधरी मेरे से मिलने आए।"

"बहुत जरूरी है।"

"वो न आई तो?"

"वो आएगी।" मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा—"जथूरा की रहस्यमय ताकतें उसे तुम तक आने को मजबूर करेंगी। मिन्नो को ये बात महसूस भी नहीं हो सकेगी कि कोई उसे धकेल रहा है। एक बार नील सिंह को मिन्नो से बात तो कर लेने दे।"

"नील सिंह?"

"वो ही, नीलू महाजन। नील सिंह उसके पूर्वजन्म का नाम है।"

"कभी-कभी तुम मुझे पागल लगते हो।" सपन चड्ढा के होंठों से निकला।

"मुंह बंद रख। तूने ब्रुश किया नहीं लगता। बास आ रही है।" मोमो जिन्न चिढ़कर कह उठा।

'उल्लू का पट्ठा।' सपन चड्ढा बड़बड़ा उठा।

"क्या बोला तू?"

"जथूरा महान है।" सपन चड्ढा हड़बड़ाकर कह उठा।

"तेरे में जथूरा का सच्चा गुलाम बनने के गुण हैं। तू मेरे साथ क्यों नहीं चलता, जथूरा के पास?"

"नहीं, मुझे नहीं जाना कहीं। तू तो मेरे पीछे ही पड़ गया है।"

"अगली बार काम पड़ा तो जथूरा से कहूंगा कि तेरे पास लोमा को भेजे। तब तेरे सिर में एक बाल नहीं बचेगा।"

"मैं नया घर ले लूंगा। लक्ष्मण दास से दोस्ती छोड़ दूंगा। बिजनेस बदल लूंगा। तब तुम लोग मुझे नहीं ढूंढ़ सकोगे।" सपन चड्ढा ने गुस्से से कहा—"मैं दुखी हो गया हूं तुमसे।"

"बच्चा है अभी तू...।" मोमो जिन्न ठठाकर हंस पड़ा।

▭ ▭

मोना चौधरी गहरी नींद में थी, जब फोन बजने लगा।

सुबह चार बजे वो एक काम को निबटाकर लखनऊ से लौटी थी और आते ही बिस्तर पर ढेर हो गई थी। व्यस्तता के कारण दो दिन से वो ठीक से नींद नहीं ले पाई थी। अब शाम के चार बज रहे थे।

मोना चौधरी सोई रही। फोन बजने का एहसास उसे हुआ। परंतु उठाया नहीं उसे।

बेल बंद होकर दोबारा फोन बजने लगा।

मोना चौधरी की बंद पलकें हिलीं। फिर शरीर हिला। आंखें बंद

ही रहीं उसकी। फिर उसका हाथ बेड पर फिरने लगा। हाथ से फोन टकराया तो कॉलिंग स्विच दबाकर फोन कान पर रख लिया।

"हैलो।"

"बेबी...कैसी हो?" महाजन की आवाज कानों में पड़ी।

"एकदम ठीक। सुबह ही काम से लौटी हूं।"

"एक काम है तुम्हारे लिए।"

"बहुत थकी हुई हूं। अभी कोई काम नहीं करना।" मोना चौधरी की आंखें अभी भी बंद थीं।

"एक कत्ल और तीन करोड़ रुपया।"

मोना चौधरी ने गहरी सांस ली और आंखें खोल दीं।

"कोई पागल मिला होगा तुमसे।" मोना चौधरी ने कहा—"एक कत्ल का तीन करोड़। सम्भव नहीं।"

"वो आदमी तुम्हें ढूंढ़ता हुआ मेरे पास आया और अपना कार्ड दे गया। सपना चड्ढा नाम है उसका। अच्छा बिजनेसमैन है। कीमती कार पर आया था। कह रहा था कि मोना चौधरी को इस काम के लिए तैयार कर लूं तो पांच-सात लाख मुझे भी दे देगा।"

"किसे मारना है?"

"मेरे से इस बारे में बात नहीं की, पता सुन लो। बात कर लेना उससे।" कहकर उधर से महाजन ने सपन चड्ढा का पता बताया।

□□

मोना चौधरी नहा-धोकर तैयार हुई तो शाम के छः बज रहे थे।

कोई काम नहीं था उसे। दिन-भर सोए रहने की वजह से उसने खाया भी कुछ नहीं था। वो फ्लैट लॉक करके बाहर निकली कि सामने वाले फ्लैट का जरा-सा दरवाजा खोले, मुंडी बीच में फंसाए नंदराम को झांकते पाया।

"किया हाल है मोना डार्लिंग?" नंदराम दांत फाड़कर कह उठा।

"बढ़िया।"

"सांई, आ जा नीं। कल की बियर रखी है फ्रिज में, एकदम चिल्ड है नी। दोनों मारते हैं।"

"तेरी बीवी किधर है?" मोना चौधरी मुस्कराई।

"वड़ी, वो तो तीन दिन से घर नेई लौटी। बॉस के साथ वो काम में बोत बिजी है नी।"

"काम?"

"हां नी।"

"कौन-सा काम?"

"वड़ी काम नी, कोई भी काम।"

मोना चौधरी मुस्कराई और आगे बढ़ गई।

"सुन नी, वो चिल्ड बियर।" पीछे से नंदराम की आवाज कानों में पड़ी।

मोना चौधरी कार पर पास के बाजार में पहुंची और वहां से बर्गर और कॉफी लेकर अपनी कार में आ बैठी। बर्गर खाने लगी। साथ ही कॉफी के घूंट भी लेती जा रही थी।

तभी उसके दिमाग में सपन चड्ढा का नाम आया।

उसका पता भी याद आया।

मोना चौधरी की सोचें सपन चड्ढा की तरफ मुड़ गईं।

वो एक कत्ल की खातिर तीन करोड़ उसे देने को तैयार है। मोल-भाव करके रकम बढ़ भी सकती है। सौदा बुरा नहीं। इस वक्त हाथ में कोई काम भी नहीं था।

एक बार उससे मिल लेने में क्या हर्ज है?

मोना चौधरी ने फोन करने की सोची।

फिर फोन करने का ख्याल छोड़ दिया और सीधा, उसके पास पहुंचने का प्रोग्राम बनाया। महाजन ने उसे बताया था कि उसके इंतजार में वो दिन भर अपने बंगले पर रहेगा।

मोना चौधरी ने दो बर्गर और कॉफी खत्म की फिर सपन चड्ढा के बंगले की तरफ कार दौड़ा दी। वो इन सब खयालों को अपना खयाल समझ रही थी। ये बात तो मोना चौधरी सोच भी नहीं सकती थी कि जथूरा की ताकतें उसके आस-पास काम कर रही हैं, वो ही उसके खयालों को बना-बिगाड़ रही हैं।

▭ ▭

मोना चौधरी सपन चड्ढा के बंगले पर पहुंची। दरबान को अपना नाम बताया तो उसने फौरन मोना चौधरी को भीतर जाने को कहा कि सेठजी आपका इंतजार कर रहे थे, साथ ही उसने बंगले के भीतर इंटरकॉम कर दिया कि मैडम मोना चौधरी मिलने आ गई है। चंद पलों में ही मोना चौधरी बंगले के ड्राइंग रूम में मौजूद थी।

सपन चड्ढा फौरन एक कमरे से निकलकर वहां आ पहुंचा।

मोना चौधरी की खूबसूरती देखकर पल भर के लिए सकपकाया।

उसने आगे बढ़कर मोना चौधरी से हाथ मिलाया।

"तुम सपन चड्ढा हो?" मोना चौधरी ने पूछा।

"हां। तुम मोना चौधरी हो। शुक्र है कि तुम मुझसे मिलने आ गई। वरना मैं तो बुरा फंसा पड़ा हूं।" सपन चड्ढा कह उठा।

"तुम मेरे लिए आज महाजन के पास गए थे?"

"हां। बैठ जाओ। आराम से बात करते हैं।" फिर दूर मौजूद नौकर से कह उठा—"कॉफी और खाने-पीने का सामान जल्दी लाओ।"

नौकर तुरंत चला गया।

मोना चौधरी बैठ चुकी थी।

सपन चड्ढा भी बैठा। उसकी छिपी निगाह इधर-उधर नीचे की तरफ फिरने लगी। जल्दी ही उसे तीन इंच का मोमो जिन्न नजर आ गया, जो कि सोफे के पाए के साथ चिपका उसे देख रहा था। दोनों की नजरें मिलीं तो मोमो जिन्न ने दांत फाड़े, तो सपन चड्ढा ने तुरंत उस पर से नजरें हटा लीं।

मोमो जिन्न सोफे के पीछे से होता मोना चौधरी से नजरें बचाकर, कुछ दूर रखे प्लास्टिक के फूलों के फूलदान के पास पहुंचा, जिनके बीच कैमरा रखा हुआ था। उसने एक बटन दबाकर कैमरा चालू कर दिया।

"तुम चुप क्यों हो गए?" मोना चौधरी ने पूछा।

"सोच रहा हूं कि बात कैसे शुरू करूं।" सपन चड्ढा धीमे स्वर में बोला—"मेरा एक दोस्त था लक्ष्मण दास। लेकिन अब मेरी उससे जबर्दस्त दुश्मनी हो गई है। वो मुझे मार देना चाहता है।"

"दुश्मनी की वजह?"

"पैसे का लेन-देन। मैंने उससे बहुत पैसा लिया। परंतु लौटाता रहा। आखिरी किश्त पांच करोड़ की थी। परंतु उससे वो पांच करोड़ कोई छीनकर ले गया। जबकि मैं उसे दे चुका था। वो पुनः मेरे से पांच करोड़ मांगने लगा। मैंने देने को मना कर दिया कि मैंने उसे लौटा दिया था। बस इसी बात को लेकर, उसकी मेरी बिगड़ गई।"

"फिर?"

"उसने गुस्से में मेरे को मारने का काम किसी को तीन करोड़ में दे दिया। लेकिन ये बात किसी से मुझे पता चल गई।"

"तीन करोड़ में!"

"हां।"

"तो अब तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे दोस्त लक्ष्मण दास को खत्म कर दूं?" मोना चौधरी बोली।

"नहीं, वो पागल है। जैसा भी है, कभी मेरा दोस्त रहा है वो। मैं उसकी जान नहीं लेना चाहता।"

"तो?"
"मैं चाहता हूं तुम उसे मार दो, जो मुझे मारना चाहता है। उसके मरने पर मैं लक्ष्मण दास से बात करके कह दूंगा कि उस आदमी को मैंने खत्म करवाया है, जिसे उसने मुझे मारने पर लगाया था। अब की बार उसने फिर ऐसी कोशिश की तो मैं उसे खत्म करवा दूंगा। ये सुनकर वो डर जाएगा। पीछे हट जाएगा। फिर मुझे मारने की कोशिश नहीं करेगा।"
"बचकानी बात है तुम्हारी। तुम्हें लक्ष्मण दास को खत्म करवाना चाहिए।"
"मैं उसकी जान नहीं लेना चाहता। वो बुरा आदमी नहीं है। लेकिन इस वक्त उसका दिमाग खराब हुआ पड़ा है। मैं भी तुम्हें तीन करोड़ रुपया दूंगा अगर तुम मेरा ये काम कर दो।" कहकर चड्ढा ने गहरी सांस ली।
मोना चौधरी ने फौरन कुछ नहीं कहा।
तभी नौकर ट्रे में कॉफी और खाने का सामान लाया और वहां रख गया।
"तुम्हारे दोस्त ने किसे तैयार किया है तुम्हें मारने को?"
"देवराज चौहान को।"
मोना चौधरी बुरी तरह चौंकी।
"देवराज चौहान?"
"वो बहुत बड़ा डकैती मास्टर है। खतरनाक है।"
मोना चौधरी के दांत भिंचते चले गए। नजरें सपन चड्ढा पर थीं।
सपन चड्ढा उसके चेहरे पर उभरे भाव देखकर घबरा गया।
"क...क्या हुआ तुम्हें?" उसने हड़बड़ाकर पूछा।
"देवराज चौहान बहुत देर से बचता आ रहा है मेरे हाथों से।" मोना चौधरी गुर्रा उठी।
सपन चड्ढा की जान वापस लौटी।
"तुम मेरा ये काम करोगी?"
"हां। अब देवराज चौहान मेरे हाथों से नहीं बचेगा।"
"मैं ये काम जल्दी चाहता हूं।"
"जल्दी ही होगा। आज क्या तारीख है?" मोना चौधरी का खूबसूरत चेहरा गुस्से से धधक उठा था।
"23 जून।"
"तो नोट कर लें। 30 तारीख तक देवराज चौहान खत्म होगा।" मोना चौधरी ने दांत पीसते हुए कहा और खड़ी हो गई।

"मैं तुम्हारा पैसा...।"
"तैयार रखना। मैं कभी भी मंगवा लूंगी।"
सपन चड्ढा ने सिर हिलाया।
"कोई खबर कि देवराज चौहान कहां मिलेगा?"
"नहीं।"
"कोई बात नहीं ढूंढ़ लूंगी उसे।" मोना चौधरी ने कहा और पलटकर बाहर की तरफ बढ़ गई।
"कॉफी—कॉफी तो पी जाओ।"
परंतु तब तक मोना चौधरी बाहर निकल चुकी थी।
मोमो जिन्न ने कैमरे का बटन बंद किया और एकाएक वो चार फीट का हो गया। वो मुस्करा रहा था। आगे बढ़ा और मोना चौधरी वाली सोफा चेयर पर बैठता कह उठा।
"जथूरा महान है।"
सपन चड्ढा ने मोमो जिन्न को देखा।
"मिन्नो कमजोर मोहरा है। जथूरा ने ये शब्द मुझसे कहे थे।" मोमो जिन्न बोला।
"कमजोर मोहरा?" सपन चड्ढा के चेहरे पर उलझन उभरी।
"हां, मिन्नो को गुस्सा जल्दी आ जाता है। खासतौर से देवा का जिक्र आते ही।"
"तुम्हारी बातें मेरी समझ से बाहर हैं मोमो जिन्न।"
"मैं भी यूं ही तुझसे माथा मारने बैठ जाता हूं उठो और कैमरे की रिकार्डिंग वहां तक साफ कर दो, जब तक तुम्हारी मिन्नो के साथ पहले की बातें हैं। बात वहां से शुरू होनी चाहिए, जब देवराज चौहान का जिक्र आया।"
"तो तुम उसका क्या करोगे?"
"मैं उसे लक्ष्मण दास को दूंगा। आगे जो करना है, लक्ष्मण दास ही करेगा।"
"लेकिन इस रिकार्डिंग का वो क्या करेगा?"
"देवा को दिखाएगा।"
"क्यों?"
"ताकि वो मिन्नो को मारने को तैयार हो जाए। मिन्नो, देवा को मारने के लिए उग्र स्वभाव की है, परंतु देवा, मिन्नो को मारने में जरा भी उग्र नहीं है। वो शांत दिमाग से काम लेता है। उसे तैयार करने में लक्ष्मण दास को मेहनत करनी पड़ेगी।"
"तुमने मुझे बताया कि लक्ष्मण दास उसे तीन करोड़ का ऑफर देगा?"

“हां। मेरे कहने पर उसने तीन करोड़ तैयार रखे हैं।”

“फिर तो वो तीन करोड़ का नाम सुनते ही तैयार हो जाएगा।”

“वो ऐसा नहीं है। मिन्नो के रास्ते में आने से पहले वो दस बार सोचेगा।”

“डरता है वो मोना चौधरी से?”

“डरता नहीं है, लेकिन सोच-समझ के चलता है। तू सवाल बोत पूछता है।

“तुम्हारी बातें अजीब-सी होती हैं। मेरे मन में उत्सुकता पैदा करती हैं।”

“तू पागल का पागल ही रहेगा।”

“अब तो मैंने तुम्हारा काम कर दिया।”

“तो?”

“अब तो तुम मेरे पास फिर नहीं आओगे? मुझे तंग नहीं करोगे?”

“तू मेरा गुलाम है। मोमो जिन्न जिसे अपना गुलाम बना लेता है, उसे आसानी से नहीं छोड़ता।”

“लेकिन तुमने तो कहा था कि...।”

“मेरे कहे पर तुमने भरोसा कर लिया। तू तो बड़ा मूर्ख है। चल, कैमरे की रिकार्डिंग निकालकर मुझे दे।”

‘कमीना—कुत्ता!’ सपन चड्ढा होंठों ही होंठों में बड़बड़ाया।

“क्या कहा?”

“जथूरा बहुत महान है।”

“सच में यही कहा?” मोमो जिन्न ने उसे घूरा।

“कसम से, तेरी कसम।”

“तू जथूरा का सच्चा गुलाम बनने की काबिलीयत रखता है। तेरे को मैं अपने साथ उस दुनिया में जथूरा के पास ले चलूंगा। जथूरा तेरे जैसा सेवक पाकर खुश होगा।” मोमो जिन्न एकाएक मुस्करा पड़ा।

“न...नहीं। मैं नहीं जाऊंगा।” सपन चड्ढा तेज स्वर में बोला।

“तेरे को तो पता भी नहीं चलेगा जब मैं ले जाऊंगा। तेरी आंख जथूरा की दुनिया में ही खुलेगी। एक बार फिर बोल।”

“क्या?”

“जथूरा महान है।”

“नहीं बोलता।” सपन चड्ढा ने होंठ भींचकर कहा।

“बोल, नहीं तो तेरे सारे कपड़े उतरवाकर बाहर भेज दूंगा। मेरी शक्तियों को तू अभी जानता नहीं।”

"ऐसा मत करना।" सपन चड्ढा घबराकर कह उठा।

"तो बोल।"

"जथूरा महान है।" सपन चड्ढा जल्दी-से कह उठा।

"तरक्की करेगा। जथूरा का गुलाम बनने के सब गुण तेरे में हैं। जथूरा खुश होगा तेरे से।"

□ □

देवराज चौहान कल सुबह बंगले से निकला था। उसे, जिससे मिलना था, वो सुबह ही मिलता था। तब जगमोहन गहरी नींद में था। देवराज चौहान नहीं जानता था कि उसका सफर बहुत लम्बा और खतरनाक होने वाला है। अपनी तरफ से तो वो साधारण से काम के लिए निकला था और वो काम सुबह नौ बजे तक निबट भी गया था।

उस वक्त वो कार पर वापस बंगले की तरफ जा रहा था जब उसका फोन बजा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"देवराज चौहान।" दूसरी तरफ से लक्ष्मण दास की आवाज कानों में पड़ी—"तुम देवराज चौहान ही हो न?"

देवराज चौहान को महसूस हुआ कि वो घबराया हुआ है।

"हां, लक्ष्मण दास।" देवराज चौहान ने कहा।

"ओह, तुमने मुझे पहचान लिया। लक्ष्मण दास हूं मैं। तुम...तुम कहां हो?"

"मुम्बई में...क्यों?"

"मुम्बई, ओह तुम फौरन मेरे पास दिल्ली आ जाओ। मेरे पास तुम्हारे काम की खबर है। बहुत ही जरूरी।"

"मैं अभी नहीं आ सकता।"

"समझा करो। तुम्हारे काम की खबर है। मोना चौधरी तुम्हें मारना चाहती है।"

"मोना चौधरी?" देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गए।

"इश्तिहारी मुजरिम मोना चौधरी, नाम सुना है कभी?"

"अच्छी तरह जानता हूं उसे।" देवराज चौहान ने कहा—"तुम कैसे कह सकते हो कि मोना चौधरी मुझे मारना चाहती है?"

"मेरे पास एक सी.डी. है। उसे देखोगे तो तुम समझ जाओगे। तीन करोड़ में उसने तुम्हारी हत्या का ठेका लिया है। ये तो अच्छा हुआ कि मैं तुम्हें जानता हूं, वरना मोना चौधरी ने चुपके से तुम्हारा गला काट देना था।"

"तुम्हारे पास वो सी.डी. कहां से आई?"

"सब बातें फोन पर नहीं हो सकतीं। तुम मेरे पास आ जाओ। सब बता दूंगा।" उधर से लक्ष्मण दास की आवाज कानों में पड़ी।

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे।

"आ रहे हो न?"

"हां। तीन घंटे तक तुम्हारे पास होऊंगा।"

"आओ—आओ—मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं।"

देवराज चौहान ने फोन बंद करके जेब में रखा और कार को सड़क के किनारे रोका। कार में छिपाकर रखी मूंछें निकालकर होंठों पर चिपकाईं। शीशे में देखा। मूंछें ठीक तरह से लगाईं। उसके बाद कार को एयरपोर्ट की तरफ दौड़ा दिया। मन-ही-मन वो हैरान था कि तीन करोड़ में मोना चौधरी उसे मारने जा रही थी। जबकि वो जानती थी कि उस पर हाथ डालना आसान नहीं है। देवराज चौहान पहले कुछ नहीं सोचना चाहता था। पहले वो लक्ष्मण दास की सारी बात सुनना चाहता था। सी.डी. देखना चाहता था, जिसका जिक्र लक्ष्मण दास ने किया था। वो यही सोच रहा था कि जो भी हो, मोना चौधरी को उसके रास्ते में नहीं आना चाहिए। जैसे कि वो कभी भी मोना चौधरी के रास्ते में नहीं आता।

□ □

दिल्ली।

दोपहर 1.30 बजे।

देवराज चौहान लक्ष्मण दास के बंगले पर पहुंचा।

लक्ष्मण दास बेसब्री से उसका इंतजार करता मिला। वो उसे सीधा अपने बेडरूम में ले गया।

"अच्छा हुआ जो तुम फौरन आ गए।" दरवाजा बंद करता लक्ष्मण दास बोला—"वरना जब से ये खबर मुझे पता चली है, मैं घबराया हूं तब से।"

देवराज चौहान बैठा और सिगरेट सुलगा ली।

"क्या लोगे—चाय—ठण्डा—गर्म—आज तो गर्मी बहुत है, बियर...?"

"जिस बात के लिए तुमने मुझे बुलाया है, वो बात करो।" देवराज चौहान ने कहा।

"ठीक है। खाना-पीना तो बाद में भी हो जाएगा।" लक्ष्मण दास ने कहकर चोर नजरों से बेड के तकिए की तरफ देखा जहां तीन इंच का मोमो जिन्न तकिए की ओट में बैठा हुआ था।

लक्ष्मण दास ने गहरी सांस ली और दूसरी तरफ देखने लगा।

"तुम परेशान हो।" देवराज चौहान बोला।

"तुम्हारी वजह से। मोना चौधरी तुम्हें मारना चाहती है। वो...।"

"पूरी बात बताओ।"

"वो दरअसल।" लक्ष्मण दास ने सोच-भरे स्वर में कहा—"मेरा एक खास यार था, सपन चड्ढा। बचपन का यार है, परंतु महीना भर पहले मेरी उससे इस हद तक बिगड़ गई कि हममें तगड़ी दुश्मनी हो गई। वो जानता है कि तुम्हारे साथ मेरा रिश्ता बढ़िया है, ऐसे में उसे डर लगा कि कहीं मैं तुम्हें कहकर उसे खत्म न करवा दूं।"

"तो?"

"तो इसी डर से उसने मोना चौधरी से सम्पर्क बनाया। उसे अपने पास बुलाया और तीन करोड़ में तुम्हें मारने का काम दे दिया।"

"हैरानी है कि सपन चड्ढा ने मुझे मारने का काम उसे दिया, जबकि उसे चाहिए था कि तुम्हें खत्म करवाता।"

लक्ष्मण दास ने गहरी सांस लेकर कहा।

"हममें दुश्मनी अवश्य हो गई है, लेकिन ऐसा नहीं कि मैं उसकी जान ले लूं। परंतु सपन के मन में वहम भर गया है कि मैं तुम्हारे हाथों उसे खत्म करा दूंगा। जबकि ऐसा कुछ नहीं है। सपन के इस कदम से कि, मोना चौधरी तुम्हें खत्म कर दे, मैं समझ गया कि वो भी मेरी जान नहीं लेना चाहता। लेकिन मोना चौधरी तुम्हें खत्म करना चाहती है।"

"तुम्हें कैसे पता चला कि तुम्हारे दोस्त ने मोना चौधरी से इस बारे में बात की है?"

"सपन का मैनेजर है, जो उसकी खबरें मुझे देता रहता है। उसी ने सब कुछ बताया, बल्कि सपन की मोना चौधरी से मिलने के वक्त की रिकार्डिंग भी कर ली और सी.डी. तैयार करके मुझे दे दी। इस तरह मुझे पता चला तो मैंने तुम्हें...।"

"वो सी.डी. दिखाओ।"

लक्ष्मण दास ने फौरन डी.वी.डी. पर सी.डी. लगाकर टी.वी. चला दिया।

सी.डी. वहां से शुरू हुई, जहां देवराज चौहान का नाम आया था।

सब देखा-सुना देवराज चौहान ने।

सी.डी. खत्म हो गई।

"एक सप्ताह में मोना चौधरी तुम्हें खत्म कर देगी।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"तुम मेरी वजह से इस मामले में फंसे हो।"

"तो?"

"मैं भी तुम्हें तीन करोड़ दूंगा।"

"वो क्यों?"

"ताकि तुम मोना चौधरी को खत्म कर दो।" लक्ष्मण दास ने कहा—"मैंने तीन करोड़ तैयार कर रखा है तुम्हारे लिए।"

"ये तुम्हारा नहीं मेरा काम है।"

"मेरी वजह से तुम...।"

"मोना चौधरी से मेरी बहुत पुरानी पहचान है। तुम इस बात को नहीं समझोगे लक्ष्मण दास।"

लक्ष्मण दास देवराज चौहान को देखने लगा।

"मोना चौधरी का क्या करोगे?"

"अभी कह नहीं सकता।"

"अभी तुम मेरे पास, यहीं पर रहो।" लक्ष्मण दास बोला—"सपन का मैनेजर मोना चौधरी के बारे में कोई नई खबर दे सकता है। तुम्हारे काम की हो सकती है।"

"मेरा तुम्हारे पास रहना ठीक नहीं। मैं कहीं होटल में रहूंगा और बता दूंगा कि किस होटल में हूं।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी।" लक्ष्मण दास के चेहरे पर चिंता थी।

देवराज चौहान बंगले से चला गया।

लक्ष्मण दास जब उसे छोड़कर वापस कमरे में आया तो मोमो जिन्न को चार फीट का, कुर्सी पर बैठे देखा।

"तुम तो कमाल के एक्टर हो। कितनी अच्छी तरह से तुमने देवा को बेवकूफ बनाया।"

"देवराज चौहान को गलत बात कहना मुझे अच्छा नहीं लगा।" लक्ष्मण दास ने नाराजगी से कहा।

"अपने प्यारे मोमो जिन्न के लिए तुम्हें सब कुछ करना पड़ेगा लक्ष्मण दास।" मोमो जिन्न ने बेढंगे-से दांत फाड़े।

"सब कुछ नहीं। सिर्फ यही काम।"

"सब कुछ।" मोमो जिन्न हंसा।

"तुमने सिर्फ इसी काम के लिए कहा था।"

"अब तुम मेरे गुलाम हो। वो ही करोगे जो मैं कहूंगा, वरना अभी तुम्हारा दिमाग घुमा दूंगा तो तुम पागलों की तरह हरकतें करने लगोगे। अपने कपड़े उतारकर, नंगे होकर सड़कों पर दौड़ते फिरोगे।"

"नहीं, ऐसा मत करना।" लक्ष्मण दास घबरा उठा।

"तुम्हें मेरी बातें मानती रहनी होंगी।"

"कब तक?"

"जब तक तुम जिंदा हो।"

"पहले तो तुमने कहा था कि एक ही काम...।"

"नए गुलाम को धीरे-धीरे फांसना पड़ता है। एक ही बार में सब कुछ कह दूंगा तो तुम जीते जी ही मर जाओगे।"

लक्ष्मण दास ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि मिन्नो, कब कहां मिलेगी और तुम ये खबर देवा को दोगे।"

"तुम दोनों में खून-खराबा कराना चाहते हो।"

"तुम्हें एतराज है?" मोमो जिन्न ने उसे घूरा।

"म...मुझे क्यों एतराज होगा।" लक्ष्मण दास घबराकर बोला।

देवराज चौहान करोलबाग स्थित होटल में ठहरा और लक्ष्मण दास को होटल के बारे में फोन पर बताया। इस दौरान जगमोहन का फोन भी आया था, परंतु उसने जगमोहन को नहीं बताया कि वो किस मामले में है। क्योंकि देवराज चौहान जानता था कि मोना चौधरी के बारे में सुनकर जगमोहन चिंता करेगा।

अब देवराज चौहान को तलाश थी मोना चौधरी की।

परंतु मोना चौधरी का पता-ठिकाना वो नहीं जानता था।

लेकिन पारसनाथ के रेस्टोरेंट के बारे में उसे पता था।

देवराज चौहान ने टैक्सी ली और पारसनाथ के रेस्टोरेंट जा पहुंचा। शाम के 3.30 हो रहे थे और रेस्टोरेंट में लंच चल रहा था। देवराज चौहान ने लंच का ऑर्डर दिया।

बीस मिनट बाद उसे लंच सर्व कर दिया गया।

इसी के साथ ही रेस्टोरेंट ने अब लंच टाइम समाप्त करने की घोषणा कर दी थी। शाम के चार बजने जा रहे थे। खाने के दौरान देवराज चौहान की निगाह हर तरफ घूम रही थी कि पारसनाथ दिख जाए, परंतु पारसनाथ कहीं भी नजर न आया। देवराज चौहान ने लंच समाप्त किया।

वेटर 'बिल' के लिए पास आया।

देवराज चौहान ने हजार का नोट 'बिल' के साथ रखते हुए पूछा।

"पारसनाथ कहां है?"

"मालिक?" वेटर ने फौरन कहा—"मुझे खबर नहीं कि वो कहां हैं।"

देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान आ ठहरी।
"उसे कहो, देवराज चौहान मिलना चाहता है।"
"मैं देखता हूं। पता नहीं वो यहां हैं भी कि नहीं।" कहकर वेटर चला गया।
देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली। रेस्टोरेंट में इस वक्त एक-दो लोग ही थे।
आधी सिगरेट ही खत्म हुई थी कि उसे पारसनाथ अपनी तरफ आता दिखा।
देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान उभरी। वो उठा और पास आ चुके पारसनाथ से हाथ मिलाया।
"बैठो-बैठो।" पारसनाथ ने कहा—"खैर तो है? तुम मेरे रेस्टोरेंट में मुझसे मिलने आए हो।"
दोनों बैठे।
पारसनाथ ने इशारे से वेटर को पास बुलाया और कॉफी लाने को कहा।
"तुम्हारे यहां का खाना अच्छा है।" देवराज चौहान बोला।
"सिर्फ यही कहने के लिए तो तुम मुझसे मिलना नहीं चाहते होगे?" पारसनाथ ने अपने खुरदरे चेहरे पर हाथ फेरा।
देवराज चौहान ने कश लिया और पानी के गिलास में सिगरेट डाल दी।
पारसनाथ की सतर्क निगाह देवराज चौहान के चेहरे पर थी।
"मोना चौधरी कहां है?" देवराज चौहान का स्वर शांत था।
पारसनाथ को अपने शरीर में तनाव-सा आता महसूस हुआ।
"यहीं है, दिल्ली में। दो दिन पहले वो मिलने आई थी मेरे से।" पारसनाथ ने संभले स्वर में कहा।
"मैं उससे मिलना चाहता हूं।"
"क्यों?"
"शायद वो मेरी तलाश कर रही है।"
"वजह।"
"तीन करोड़ में उसने मुझे मारने का काम हाथ में लिया है। मुझे पता लगा तो, मैंने उसकी तलाश शुरू कर दी।"
पारसनाथ की आंखें सिकुड़ीं।
"कब पता लगा?"
"दो-ढाई घंटे पहले।"
पारसनाथ अब सतर्क नजर आने लगा था।
"तुम्हें गलती लगी है देवराज चौहान, ऐसा कुछ भी नहीं...।"

"सपन चड्ढा नाम के आदमी ने मोना चौधरी से, मेरी मौत का सौदा किया है।"

"विश्वास नहीं होता।"

"मैं कह रहा हूं, इसलिए तुम्हें विश्वास कर लेना चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा।

पारसनाथ देवराज चौहान को देखता अपने खुरदरे चेहरे पर हाथ फेरने लगा।

तभी वेटर कॉफी के प्याले रख गया।

"कॉफी लो।"

देवराज चौहान ने प्याला अपनी तरफ सरकाया। उठाया। घूंट भरी। नजरें पारसनाथ पर थीं।

"मैं मोना चौधरी से बात करना चाहूंगा।" पारसनाथ बोला।

"यहीं पर मेरे सामने?"

"हां।" कहते हुए पारसनाथ ने जेब से मोबाइल फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा। चेहरे पर गम्भीरता थी।

"उसे बताओ कि मैं यहां हूं, तुम्हारे पास।"

"मैं बेवकूफ नहीं हूं।" पारसनाथ फोन कान पर लगाता कह उठा।

"क्या मतलब?"

"मैं कभी नहीं चाहूंगा कि तुम और मोना चौधरी सामने पड़ो। मुझे तो अब भी यकीन नहीं आ रहा...।" कहते-कहते पारसनाथ ठिठका। तभी उसके कानों में मोना चौधरी की आवाज पड़ी थी—"कहो पारसनाथ?"

"तुम्हारी खैरियत जानने के लिए फोन किया।" देवराज चौहान को देखते पारसनाथ शांत स्वर में बोला।

"हैरानी है, पहले तो कभी भी तुमने खैरियत जानने के लिए फोन नहीं किया।"

"यूं ही अब कर...।"

"सितारा कैसी है?" उधर से मोना चौधरी ने पूछा। (सितारा के बारे में विस्तार से जानने के लिए अनिल मोहन के देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाले पूर्व प्रकाशित उपन्यास—**'देवदासी', 'इच्छाधारी', 'नागराज की हत्या', 'विषमानव'** अवश्य पढ़ें)।

"वो ठीक है, शॉपिंग के लिए गई हुई है। तुमने कोई नया काम हाथ में लिया क्या?"

फौरन मोना चौधरी की तरफ से आवाज नहीं आई।

"हां। लेकिन तुमने क्यों पूछा?"

"मैं जानना चाहता हूं कि वो काम क्या है?" पारसनाथ का गम्भीर स्वर सामान्य था।

देवराज चौहान की निगाह पारसनाथ पर थी।

"तो तुम्हें मालूम हो गया कि मैंने क्या काम हाथ में लिया है?" मोना चौधरी की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता हूं।"

"देवराज चौहान को खत्म करने का मौका हाथ में आया है।" मोना चौधरी की आवाज में सख्ती आ गई थी।

पारसनाथ ने गहरी सांस ली।

"तीन करोड़ में।"

"तुम्हें कैसे पता?" उधर से मोना चौधरी की आवाज में उलझन आ गई थी।

"मैं तुम्हें बाद में फोन करता हूं।"

"लेकिन तुम्हें कैसे...?"

परंतु पारसनाथ ने फोन बंद किया और गम्भीर स्वर में देवराज चौहान से बोला।

"तुम सही थे।"

"मोना चौधरी को तुम्हें बता देना चाहिए था कि मैं यहां हूं, ताकि वो काम निबटा लेती।"

"प्लीज देवराज चौहान।" पारसनाथ बोला—"मैं नहीं जानता कि क्या बात है, परंतु मोना चौधरी, तुम्हारे नाम से ही उखड़ जाती है। ये शायद पूर्वजन्म का कोई असर हो सकता है। तुम जरा संयम से काम लो। मैं मोना चौधरी से बात...।"

"मैं तुम्हारे पास इसलिए नहीं आया कि तुम मोना चौधरी से बात करो। मैं मोना चौधरी से मिलने आया हूं।"

"और तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें उसका पता दे दूंगा।"

"दे देना चाहिए। मोना चौधरी को भी मेरी तलाश है।"

"तुम दोनों का एक-दूसरे के सामने पड़ना ठीक नहीं।"

"मुझे मारने के लिए मोना चौधरी मेरी तलाश कर रही है।" देवराज चौहान बोला।

पारसनाथ ने अपनी खुरदरे चेहरे पर हाथ फेरा।

"तुम ये बात भूल जाओ। मैं मोना चौधरी से बात करूंगा, उसे समझाऊंगा कि...।"

"तो मुझे खुद ही मोना चौधरी का ठिकाना ढूंढ़ना होगा।" देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।

पारसनाथ उसे देखता रहा।

देवराज चौहान वहां से हटा और बाहर की तरफ बढ़ता चला गया।

पारसनाथ वहीं बैठा उसे देखता रहा, जब तक वो बाहर निकलकर नजरों से ओझल न हो गया। उसकी आंखों में बेचैनी स्पष्ट दिखाई दे रही थी। उसने फोन निकाला और महाजन का नम्बर मिलाने लगा।

"कहो पारसनाथ।" अगले ही पल महाजन की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम मेरे पास आओ।"

"क्यों—क्या हुआ?"

"नई मुसीबत शुरू होने जा रही है। मोना चौधरी और देवराज चौहान आमने-सामने पड़ने जा रहे हैं।"

"ये कैसे हो सकता है?"

"हो रहा है ये। मोना चौधरी ने तीन करोड़ में, देवराज चौहान को मारने का काम हाथ में लिया है।"

"सत्यानाश! मैं अभी आता हूं।"

▭ ▭

50 मिनट में महाजन पारसनाथ के रेस्टोरेंट के ऊपरी हिस्से में, वहां था जहां पारसनाथ ने इस जगह को घर का रूप दे रखा था और सितारा के साथ रहता था।

"क्या कहा था तुमने फोन पर?" महाजन ने अजीब-से स्वर में कहा।

"मोना चौधरी ने देवराज चौहान को मारने का काम हाथ में लिया है।" पारसनाथ बोला।

"तुमसे किसने कहा?"

"देवराज चौहान ने।"

"देवराज चौहान ने?" महाजन अचकचा उठा—"उसका तुम्हें फोन आया क्या?"

"वो खुद आया था मेरे पास।"

"रेस्टोरेंट में?"

पारसनाथ ने सहमति से सिर हिलाया।

"क्यों?"

"वो मेरे से मोना चौधरी का पता जानना चाहता था। मोना चौधरी से मिलना चाहता है वो।"

"क्यों?"

"ताकि मोना चौधरी उसे मार सके। या फिर वो मोना चौधरी को खत्म कर दे।" पारसनाथ ने अपने खुरदरे चेहरे पर हाथ फेरा।

"क्या पता ये बात गलत हो?"

"सही है। मैंने मोना चौधरी से बात की है।"

"तुमने...तुमने उसे बताया कि देवराज चौहान तुम्हारे पास...।"

"नहीं बताया। परंतु ये बात ज्यादा देर तक मोना चौधरी से छिपाई नहीं जा सकती। वो महसूस कर लेगी कि...।"

"किसने सौंपा ये काम बेबी को?"

"सपन चड्ढा नाम का आदमी है कोई।"

"ये तेरे को देवराज चौहान ने बताया?"

"हां।"

"लेकिन देवराज चौहान को कैसे पता चला कि सपन चड्ढा ने देवराज चौहान को मारने का काम, मोना चौधरी को सौंपा है?"

"मैंने नहीं पूछा। देवराज चौहान ने बताया भी नहीं।"

महाजन उठा और एक तरफ रखी बोतल उठाकर गिलास तैयार किया। घूंट भरा।

"भाभी कहां है?"

"शॉपिंग के लिए गई है।" पारसनाथ के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी।

"बहुत गलत होने जा रहा है पारसनाथ।" महाजन बोला।

"बहुत ही गलत।"

"देवराज चौहान और बेबी के टकराने का मतलब है, एक बार फिर पूर्वजन्म के सफर के लिए चल देना। जो कि बहुत ही खतरनाक होता है। हमें बेबी को इस काम के लिए पीछे हटने के लिए मजबूर करना होगा। वरना बीता वक्त इस बात का गवाह है कि जब-जब देवराज चौहान और बेबी आमने-सामने पड़े, पूर्वजन्म में प्रवेश करना पड़ा।"

"यही चिंता तो मुझे सता रही है।" पारसनाथ व्याकुल था।

"हम बेबी को समझाएंगे।"

"मानेगी वो?"

"मनवा के रहेंगे।"

"नहीं।" पारसनाथ ने इंकार में सिर हिलाया—"देवराज चौहान के मामले में मोना चौधरी हमारी एक बात भी नहीं सुनेगी। ये पहले भी हो चुका है। देवराज चौहान से टकराने की सोचकर, मोना चौधरी पागल-सी हो जाती है।"

"हां, लेकिन ऐसा क्यों होता है?" महाजन ने घूंट भरकर पारसनाथ को देखा।

"पूर्वजन्मों का असर।" पारसनाथ ने गहरी सांस ली।

महाजन कुछ चुप रहकर कह उठा।

"देवराज चौहान और बेबी पहले जन्म में मिले। उनकी शादी होने वाली थी, परंतु मिन्नो नगरी की मालकिन बन गई, जबकि देवराज चौहान नगरी का साधारण इंसान रहा और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता रहा। इस तरह देवराज चौहान और बेबी की पहले जन्म में ठन गई। देवराज चौहान की शादी, बेबी की बहन बेला से हो गई। फिर उस जन्म का अंत ऐसा हुआ कि झगड़े में दोनों एक-दूसरे को मारकर, खुद भी मर गए।"

पारसनाथ की नजरें महाजन पर थीं।

"दूसरे जन्म में देवराज चौहान और बेबी मिल गए। उनकी शादी हो गई। पंजाब के लुधियाना में दोनों ने जीवन बिताया। प्यार-भरा जीवन, ऐसा कि एक को चोट लगे और दूसरे को दर्द हो और तीसरा जन्म अब चल रहा है। दोनों एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन हैं। एक-दूसरे को देखना भी पसंद नहीं करते। बेबी तो मौका ढूंढ़ती है कि कब देवराज चौहान के सामने पड़ने का मौका मिले। उसका नाम सुनकर ही बेबी का दिमाग खराब हो जाता है।"

(पाठको! देवराज चौहान और मोना चौधरी के पूर्व जन्मों के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **राजा पॉकेट बुक्स** से प्रकाशित देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाले पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'हमला'**, **'जालिम'**, **'मास्टर'**, **'सरगना'**, **'गुड्डी'** और **'मंत्र'**)

"अब हमें देवराज चौहान और मोना चौधरी को आमने-सामने नहीं पड़ने देना चाहिए पारसनाथ।"

पारसनाथ कुछ न बोला।

महाजन ने व्याकुलता से पहलू बदलकर घूंट भरा फिर बोला।

"क्या सोच रहे हो?"

"मोना चौधरी ने इरादा कर लिया है देवराज चौहान को मारने का तो हमारे कहने पर वो पीछे नहीं हटेगी।"

"उसे पीछे हटाना होगा। ये जरूरी है वरना...।"

तभी उनके कानों में किसी के आने की आवाज उभरी।

"सितारा आ गई होगी।" पारसनाथ बोला।

उसी पल मोना चौधरी ने कमरे में प्रवेश किया।

पारसनाथ और महाजन चौंके।

"बेबी तुम?" महाजन कह उठा।

मोना चौधरी ने दोनों को देखा फिर एक कुर्सी पर बैठती कह उठी।

"कहो पारसनाथ, क्या बात है?"

"बात?" पारसनाथ ने गम्भीर नजरों से मोना चौधरी को देखा।

"तेरे को कैसे पता चला कि मैंने देवराज चौहान को मारने का काम हाथ में लिया है?"

"मैंने तुम्हें ऐसा तो नहीं कहा था।"

"परंतु मुझे फोन करने से पहले ही, तुम जान चुके थे कि असल बात क्या है।" मोना चौधरी का स्वर शांत था।

"हां, मालूम हो चुका था।"

"ये बात किसने बताई तुम्हें?"

"देवराज चौहान ने।"

मोना चौधरी बुरी तरह चौंकी।

पल भर के लिए सन्नाटा आ ठहरा वहां।

फिर मोना चौधरी का चेहरा क्रोध से धधक उठा।

"शांति बेबी, शांति...।" महाजन हाथ उठाकर बोला।

"वो तुमसे कहां मिला?" मोना चौधरी के होंठों से गुर्राहट निकली।

"मेरे पास आया था।"

"तो जब तुमने बात की मुझसे, तब वो तुम्हारे पास था?" मोना चौधरी के दांत भिंचे थे।

"हां।"

"और तुमने मुझे नहीं बताया?"

"नहीं।"

"क्यों?" मोना चौधरी की आवाज तेज हो गई।

"क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम और देवराज चौहान आमने-सामने पड़ो।"

"पारसनाथ, ये तुमने गलत...।"

"दिमाग ठंडा रखो बेबी—हमें भी...।"

"तुम चुप रहो महाजन—मैं...।"

"क्यों चुप रहूं? मैं तुम्हारे पास बात करने आने ही वाला था।"

"क्या बात...?"

"यही कि देवराज चौहान वाला काम हाथ में मत लो, ये ठीक नहीं।"

"क्या खराबी है इस काम में?" मोना चौधरी ने कठोर स्वर में कहा।

"ये तुम भी जानती हो।" महाजन गम्भीर हो गया।

"मोना चौधरी।" पारसनाथ बोला—"तुम्हारा और देवराज चौहान का जब-जब झगड़ा हुआ, तब-तब हम पूर्वजन्म की दुनिया में जा पहुंचे और वहां जो हादसे हमारे साथ पेश आते हैं, वो तो...।"

"तो तुम दोनों इस झगड़े से अलग रहो।"

"नहीं रह सकते। क्योंकि पूर्वजन्मों में भी हम तुम्हारे साथी थे, दोस्त थे और अब भी हैं। हम...।"

"ये मेरा और देवराज चौहान का मामला है।" मोना चौधरी ने धधकते स्वर में कहा।

"नहीं, ये हम सब से जुड़ा मामला है।"

"बेबी।" महाजन गम्भीर स्वर में बोला—"देवराज चौहान का नाम सुनकर तुम्हारा दिमाग क्यों खराब हो जाता है?"

"मैं नहीं जानती। बस तब मेरा मन करता है कि देवराज चौहान को मार दूं। वो मेरे हाथ से बचेगा नहीं।"

"ठंडे दिमाग से काम लो बेबी। देवराज चौहान कभी भी तुम्हारे रास्ते में नहीं आया। तुम ही उसके रास्ते में...।"

"पारसनाथ।" मोना चौधरी कह उठी—"देवराज चौहान ने तुमसे क्या बात की?"

"वो तुम्हारा पता जानना चाहता था कि इस मामले का निबटारा कर ले।" पारसनाथ कह उठा।

"और तुमने उसे मेरा पता नहीं दिया।"

"मैं कभी नहीं दूंगा।"

"उसे कैसे पता चला कि मैंने ये काम हाथ में लिया है?" मोना चौधरी बोली।

"मालूम नहीं।"

मोना चौधरी ने फोन निकाला और सपन चड्ढा का नम्बर मिलाया।

बात हो गई।

"मैं मोना चौधरी—तुम...।"

"और तुम...तुमने मार दिया देवराज चौहान को?"

"मैंने तुमसे सप्ताह का समय लिया है। ये काम इतनी जल्दी नहीं होते।"

"तब तक वो कहीं मेरे को न मार दे।" सपन चड्ढा की आवाज कानों में पड़ी।

"अपने को छिपाकर रखो। ये बताओ कि तुमने किससे इस बात का जिक्र किया कि मैं देवराज चौहान को मारूंगी?"

"किसी से भी नहीं।"

"तो देवराज चौहान को कैसे पता चल गया कि मैं उसकी तलाश में हूं?" मोना चौधरी ने सख्त स्वर में कहा।

"हैरानी है। उसे कैसे पता चल गया?" सपन चड्ढा की आवाज कानों में पड़ी।

मोना चौधरी ने उखड़े अंदाज में फोन बंद कर दिया।

"ये काम छोड़ दो बेबी। तुम्हारा और देवराज चौहान का आमने-सामने पड़ने का अंजाम खतरनाक है।"

"मैं इस बार उसे खत्म कर दूंगी।" मोना चौधरी ने दांत किटकिटाए—"वो नहीं बचने वाला मेरे हाथों से। इस मौके को मैं हाथ से नहीं जाने दूंगी।"

"बात को समझो बेबी, तुम्हारी जिद की वजह से हमें पूर्वजन्म की दुनिया में न प्रवेश करना पड़ जाए!"

"डर लगता है पूर्वजन्म में जाने से?"

"वहां हर बार ऐसे हादसे सामने आते हैं कि...।"

"तुम दोनों खुद को, मुझसे दूर रखो।" मोना चौधरी ने सपाट स्वर में कहा—"ये मेरा मामला है। मैं देवराज चौहान को खत्म करके रहूंगी। जाने क्यों, जब भी उसका नाम मेरे सामने आता है, तूफान-सा उठ खड़ा होता है, मेरी जिंदगी में।"

"मोना चौधरी। तुम्हें इस काम से पीछे हट जाना...।"

"कभी नहीं।" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

महाजन और पारसनाथ ने मोना चौधरी को बहुत समझाया।

परंतु वो अपने इरादे पर टिकी रही। पक्की रही।

आखिरकार वो उखड़े मन से वहां से चली गई।

महाजन और पारसनाथ की नजरें मिलीं।

"मैं पहले ही जानता था कि मोना चौधरी नहीं मानेगी।" पारसनाथ ने कहा।

"जैसे भी हो, बेबी को इस रास्ते पर जाने से रोकना होगा।" महाजन बेचैन था।

"मुझे नहीं लगता कि ऐसा हो पाएगा।"

"ऐसा करना जरूरी है पारसनाथ।" महाजन ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा—"हम देवराज चौहान को समझाने की चेष्टा कर सकते हैं।"

पारसनाथ अजीब-से ढंग से मुस्करा पड़ा।

"क्या हुआ?"

"मोना चौधरी अपनी होकर हमारी बात नहीं मान रही तो देवराज चौहान क्यों हमारी बात सुनेगा?"

"लेकिन हमें कोशिश अवश्य करनी चाहिए।" महाजन बोला—"देवराज चौहान अपना कोई पता छोड़ गया है?"

"नहीं।"

"ओह, तुम्हें उसका फोन नम्बर जरूर ले लेना चाहिए था। जाने वो दिल्ली में कहां है। वो किस जगह पर हो सकता है या किसी होटल में भी। हम दोनों उसे ढूंढ़ते हैं। तुम डिसूजा को भी इसी काम पर लगा दो।" महाजन ने कहा और सामने रखा गिलास उठाकर एक ही सांस में खाली करके उठता कह उठा—"देवराज चौहान की कोई खबर मिले तो बताना, वैसे अक्सर वो होटल वगैरह में ठहरने के लिए सुरेंद्र पाल नाम का इस्तेमाल करता है।"

"मैं अभी डिसूजा को इसी काम पर लगा देता हूं। परंतु आशा नहीं कि देवराज चौहान मिल जाए।"

"कोशिश करो। मैं भी कोशिश करता हूं।" कहने के साथ ही महाजन बाहर निकलता चला गया।

▭ ▭

जगमोहन को आधे घंटे में ही होश आ गया था।

वहां धूप का धुआं फैला था। उस धुएं में पोतेबाबा की आकृति को मौजूद होने का एहसास न हुआ।

जगमोहन उठ बैठा। सिर पर हाथ फेरा।

'सामने वाले से निबटने के दांव-पेच भी जानता है साला।' जगमोहन बड़बड़ाया।

जगमोहन ने कमरों का—किचन का चक्कर लगाया।

परंतु पोतेबाबा की मौजूदगी का कहीं भी एहसास न हुआ।

वापस सोफे पर आ बैठा।

पोतेबाबा के बारे में सोचा तो यही महसूस हुआ कि वो कोई शातिर है। आसानी से पकड़ में नहीं आने वाला। उसके पीछे पड़ा है कि उसे, उसके इरादे से हटा दे। जथूरा को अपना मालिक कहता है।

जथूरा?

पोतेबाबा का कहना है कि उसका जथूरा पर एहसान है, इसलिए वो उसे कुछ नहीं कहता।

जगमोहन ने सिर को झटका दिया, ये सोचकर कि वो किन खयालों में उलझा रहा है। क्योंकि वो न तो पोतेबाबा को जानता था और न ही जथूरा को। पोतेबाबा का कहना है कि पूर्वजन्म से आया है। इस वक्त जगमोहन को पूर्वजन्म की कोई बात याद नहीं आ रही थी। जगमोहन उठ खड़ा हुआ। वो ये सब नहीं सोचना चाहता था।

इस मौके पर देवराज चौहान की कमी महसूस कर रहा था जगमोहन। जो कि दिल्ली में था। परंतु ये सब बताकर वो देवराज चौहान को डिस्टर्ब नहीं करना चाहता था। यही सोचता था कि देवराज चौहान कभी भी लौट सकता था।

यही वो पल थे कि जगमोहन के मस्तिष्क में बिजली कौंधी।

वो दोनों हाथों से सिर थामे सोफे पर बैठा। आंखें खुद-ब-खुद ही बंद होती चली गईं।

फिर उसके मस्तिष्क में एक कमरे का दृश्य उभरा। कमरे में बहुत कम रोशनी थी। दरवाजे, खिड़कियां बंद थे। उसकी आंखों के सामने कुछ चेहरे उभरे। एक युवक का, औरत का, युवती का और पचपन-साठ बरस के आदमी का चेहरा। कमरे की हालत देखकर जाने क्यों डर-सा लग रहा था। फर्श पर, दीवारों पर, सिंदूर ही सिंदूर बिखरा था।

हर तरफ लाली थी। कमरे के बीचोबीच ईंट लगाकर हवनकुंड बना रखा था, जिसमें रखी चंदन की लकड़ी सुलग रही थी, उसका धुआं कमरे में भरा था। बूढ़ा-बूढ़ी और युवती बैठे थे, जबकि कच्छा पहने युवक के हाथ में चाकू था। उसके गले में अजीब-सी मालाएं थीं, माथे पर चंदन का और सिंदूरी रंग का अव्यवस्थित तिलक लगा हुआ था।

"अब मेरी सिद्धि पूर्ण होने जा रही है। सिर्फ नरबलि की जरूरत है।" वो युवक दबे स्वर में गुर्रा उठा और चाकू हाथ में घुमाकर उन तीनों को देखा—"बोल कौन देगा अपनी बलि?"

बूढ़ा-बूढ़ी और युवती के चेहरे पर भय के भाव उभरे।

"ये बुढ़िया अपनी बलि देगी। बहुत उम्र भोग ली है इसने।" कहकर वो बुढ़िया की तरफ झपटा।

बुढ़िया डर से चीखकर बोली।

"ये क्या कह रहा है सतनाम? मैं तेरी मां हूं।"

"चुप कर बुढ़िया। मेरी मां तो काली है। मेरी सिद्धि पूरी होने वाली है। मां काली को जीतने की सिद्धि पूरी होते ही, काली मां की शक्तियां मेरे में आ जाएंगी। रात सपने में आकर काली मां ने यही कहा था।" सतनाम नाम के युवक ने कहते हुए अपनी मां की बांह पकड़ी और खींचा। ईंटों के हवनकुंड के पास ले आया।

वो बूढ़ी औरत चीखी।

"तू पागल हो गया है।" बूढ़े आदमी ने गुस्से से कहा—"क्या तू अब अपनी मां की जान लेगा?"

"ये बलि है, नरबलि।" युवक ठहाका लगाकर हंसा।

"कमीने।" वो आदमी उठता हुआ बोला—"अभी तेरे को बताता हूं—मैं तुझे...।"

क्रोध में वो युवक पर झपटा।

तभी युवक ने चाकू उसके पेट में घुसेड़ दिया।

वो आदमी चीखा।

उधर बैठी युवती भी भय से चीख उठी।

"भैया—ये क्या कर रहे हो?"

"चुप कर। काली मां प्रसन्न हो जाएगी। दो-दो बलि मिल रही है काली मां को।" उसने दांत पीसकर कहा और हाथ में थामा खून से रंगा चाकू उस बूढ़ी औरत के गले पर चला दिया।

बूढ़ी औरत तड़पकर नीचे जा गिरी।

आदमी पहले ही चाकू लगने से, नीचे गिरा पड़ा था।

ये वहशी खेल देखते ही युवती चीखी और तेजी से दरवाजे की तरफ दौड़ी।

परंतु युवक ने झपटकर उसे पकड़ा और उसके मुंह पर हाथ रख दिया।

युवती तड़पी। उसकी आंखें जैसे फटकर बाहर को आ रही थीं।

"तू कहां जाती है? तीसरी बलि मैं तेरी दूंगा। काली मां की शक्तियों को मैं सिद्ध कर लूंगा। फिर...।"

युवती किसी तरह अपने होंठों से उसका हाथ हटाकर बोली।

"छोड़ दो मुझे।" वो रो पड़ी—"मैं तेरी बहन हूं—मैं...।"

"तेरा ही तो भला कर रहा हूं मैं।"

"म...मेरा भला?" वो कांपी।

"हां। तेरा रिश्ता दो बार टूट चुका है। मैं मां काली की शक्तियों को सिद्ध कर लूंगा तो फिर सबको अपने इशारों पर नचाऊंगा। बहुत बड़े घर में तेरी शादी करूंगा। तू रानी बनकर राज करेगी। तू...।"

"तुम तो मुझे मार रहे...?"

"पगली, मार नहीं रहा। बलि दे रहा हूं। मेरी सिद्धि पूरी होते ही, मम्मी-पापा और तू फिर से जिंदा हो जाओगे। बस, कुछ देर की तो बात है, उसके बाद तो सुख ही सुख है।" युवक ने कहा और फुर्ती से युवती के गले पर चाकू चला दिया।

जगमोहन के मस्तिष्क में एक घर दिखाई दिया। बाहरी गेट। गेट के भीतर एक अखबार पड़ा था रबड़ लगा, जिस पर 2 तारीख छपी थी। गेट के पास नाम की पट्टी लगी थी, उस पर 'भंडारी निवास' लिखा था।

तभी जगमोहन के मस्तिष्क में कौंधती बिजली शांत पड़ती चली गई।

फिर जैसे सब कुछ सामान्य होता चला गया।

उसे लगा जैसे मस्तिष्क में छोटा-सा तूफान उठा था, जो कि थम गया।

जगमोहन ने सिर से दोनों हाथ हटा लिए।

आंखें खोल लीं।

हर तरफ निगाह मारी, सब ठीक लगा उसे।

परंतु कुछ भी ठीक नहीं था।

आने वाले वक्त की भयानक तस्वीर उसका मस्तिष्क देख चुका था।

एक बेटा सिध्दि के पागलपन में अपने मां-बाप और बहन की जान लेने जा रहा था। वो जैसे खुद को काली मां की शक्तियों का रूप समझ रहा था। उसे लग रहा था कि उसने भगवान को पा लिया है, सिर्फ नरबलि की जरूरत है।

वो अखबार दो तारीख का था। रबड़ लगा अखबार था तो इसका मतलब सुबह का वक्त था वो। गेट के पास नाम की प्लेट लगी थी जिस पर भंडारी निवास लिखा था।

आज एक तारीख थी।

दो तारीख आने में रात भर का वक्त था और दिन के कुछ घंटे।

उसे कुछ करना होगा।

वो इस तरह पागलपन के शिकार उस युवक के हाथों बे-गुनाहों को नहीं मरने देगा।

उस युवक का नाम सतनाम था।

अगले ही पल जगमोहन चौंका। भंडारी निवास मुम्बई में कहां पर पड़ता है, इस बात का तो उसके मस्तिष्क में एहसास नहीं हो सका था। उस मकान का पता तो उसे मालूम नहीं था।

ओह, इस बार उसके मस्तिष्क को हादसे के ठिकाने का एहसास क्यों नहीं हुआ?

ऐसी स्थिति में वो कैसे रोक पाएगा इस हादसे को?

पोतेबाबा ये ही तो चाहता था कि हादसों को रोकने का क्रम वो एक बार न करे तो उसके द्वारा शुरू हुआ ये सिलसिला फिर कमजोर पड़ता चला जाएगा।

उस घर का पता कैसे लगाए?

"जग्गू।"

जगमोहन फौरन चिंहुककर खड़ा हो गया। ये पोतेबाबा की आवाज थी। आसपास देखा।

कुछ दूरी पर धूप के धुएं में उसे पोतेबाबा की कंधों और छाती की आकृति दिखाई दी।

"तू फिर आ गया?" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा।

"अब क्या करेगा तू?" पोतेबाबा की आवाज उसे सुनाई दी।

"अब...क्या मतलब?"

"तेरे को ये तो पता चल गया कि जथूरा द्वारा रचा गया हादसा कौन-सा होने जा रहा है।"

"हां, पता चल गया।"

"परंतु ये हादसा कहां होगा—ये नहीं पता तेरे को। अब उस हादसे को कैसे रोकेगा?"

जगमोहन के होंठ सिकुड़े।

"तेरे को कैसे पता कि मुझे हादसे वाला घर नहीं पता?"

पोतेबाबा हौले-से हंस पड़ा।

"क्योंकि जथूरा की तरफ से हादसा तो तैयार करके छोड़ दिया गया, लेकिन हादसे का ठिकाना नहीं छोड़ा अभी। अभी तो तेरे तक हादसे की खबर पहुंचाने वाली शक्ति को भी नहीं पता चल सका कि ये सब कहां होगा।"

"इस वक्त हादसा कहां है?"

"इस दुनिया में पहुंच चुका है, परंतु उसके साथ पता-ठिकाना न होने की वजह से वो आकाश में मंडरा रहा है।"

"तू कहना चाहता है कि जथूरा ने जानबूझकर, हादसे के साथ पता नहीं छोड़ा कि मुझे मालूम न हो सके?"

"ठीक समझा तू।"

"फिर तो हादसा बेकार गया। वो काम कैसे करेगा, बिना पते के।"

"वक्त आने पर उस हादसे पर, पते-ठिकाने की छाया डाल दी जाएगी।" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।

"तब मेरे को पता चल जाएगा।"

"अवश्य पता चल जाएगा, परंतु तब तेरे पास वक्त कम होगा, उस हादसे को रोकने का।"

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"तू हादसे वाली जगह तक पहुंच भी नहीं सकेगा शायद, तब तक सब कुछ घट जाएगा।"

"आखिर तुम्हें ये सब करके मिलता क्या है?"

"ये जथूरा का कर्म है। यही सब करने के लिए तो उसने ताकतें हासिल की हैं। जथूरा हादसों का देवता है।"

"ये गलत है।"

"तुम ये कहते हो जग्गू। लेकिन जहां इतने लोग रहेंगे, वहां हादसे तो होंगे ही"

"सामान्य हादसे होंगे। जथूरा तो सोच-समझकर हादसों को तैयार करके भेजता है। ऐसा करना बंद कर दो।" जगमोहन ने सख्त स्वर में कहा—"ये सब करना इंसानों पर जुल्म करना है।"

"तुम्हें कब से इंसानों की चिंता होने लगी?" पोतेबाबा की आवाज में व्यंग आ गया था।

इस वक्त पोतेबाबा के चेहरे की आकृति धूप के धुएं में स्पष्ट नजर आने लगी थी।

"मुझे क्यों नहीं चिंता होगी, मैं भी इंसान हूं और उन्हीं के बीच रहता हूं।"

"तो तुम रोक लो हादसों को।"

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"तुम या वो शक्ति, जो तुम्हें पूर्वाभास करा रही है, जथूरा का मुकाबला नहीं कर सकते। जथूरा के पास बहुत चालाकियां हैं, बहुत कुछ है जथूरा के पास कि तुम सोच भी नहीं सकते।" पोतेबाबा के होंठ हिलते दिखे जगमोहन को।

धुआं वहां से हटता जा रहा था तो पोतेबाबा की आकृति भी जैसे हवा में गुम होती जा रही थी।

जगमोहन की गुस्से से भरी निगाह उसकी गुम होती आकृति पर थी।

"मैं हादसे वाली जगह पर, वक्त रहते पहुंच जाऊंगा।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा।

"वो कैसे जग्गू?"

"ये हादसा ऐसा नहीं है कि पांच मिनट में कराया जा सके।" जगमोहन बोला—"जथूरा का तैयार किया हादसा, पहले उस सतनाम नाम के युवक का मन बदलेगा। इसमें काफी वक्त लगेगा। फिर वो काली मां की सिद्धि पाने के लिए हवन की तैयारी करेगा। तरह-तरह का सामान लाएगा। सुबह के वक्त ये हादसा होगा तो जाहिर है कि आज दिन में ही वो सामान लाएगा। तैयारी करेगा। ये तभी होगा, जब हादसा मुनासिब वक्त के रहते, उस तक पहुंच जाए।"

पोतेबाबा के हंसने की आवाज आई।

अब उसकी आकृति नजर नहीं आ रही थी।

"नासमझ है तू।" पोतेबाबा की आवाज सुनाई दी।

"मैंने गलत क्या कहा?"

"तूने ये नहीं सोचा कि उस युवक का मन पहले ही बदला जा चुका हो। उसने जरूरत का सारा सामान पहले ही घर पर ला रखा हो और अपने इरादे पूरे करने के लिए वो मौके की तलाश में हो। यानी कि हादसा उसके मन पर सवार होगा तो वो तैयारी शुरू कर देगा, काली मां की ताकतों की सिद्धि पाने के लिए। अपने परिवार वालों को कहेगा कि वो घर के सुख के लिए हवन कर रहा है। इसलिए उसके साथ बैठें। हादसा दो घंटों में सब कुछ खत्म कर देगा वहां।"

"दो घंटे।" जगमोहन शब्दों को चबाकर बोला—"मुम्बई में कहीं भी पहुंचने के लिए दो घंटे बहुत हैं।"

"कम हैं। मुम्बई शहर बहुत लम्बा है। सफर करते रहो, खत्म नहीं होता।"

"तब रात या सुबह का वक्त होगा, जब मुझे हादसे की जगह के बारे में पता चलेगा तब ट्रेफिक कम होता है सड़कों पर। मैं पहुंच जाऊंगा।"

"भूल में है जग्गू। इस बार तू कुछ नहीं कर सकेगा।" पोतेबाबा के हंसने की आवाज आई।

तभी होंठ भींचे जगमोहन उधर झपटा, जिधर पोतेबाबा के होने का अंदाजा था।

परंतु जगमोहन लड़खड़ाकर रह गया।

पोतेबाबा हाथ नहीं आया।

"मुझे ढूंढ़ रहा है जग्गू?"

जगमोहन पलटा और कुछ दूरी पर पोतेबाबा की आधी-अधूरी आकृति को देखा।

"मेरे से तू मुकाबला नहीं कर पाएगा जग्गू।"

"क्योंकि तू डरपोक है।" जगमोहन गुर्राया—"डरकर भाग जाता...।"

"नहीं भागता—आ।"

जगमोहन ने दो पल उसकी आकृति को घूरा फिर सावधानी से आगे बढ़ने लगा।

पोतेबाबा की आकृति अपनी जगह पर ही रही।

"आ जग्गू। डरता क्यों है?" आकृति के होंठ हिले।

जगमोहन एकाएक वेग के साथ उसकी तरफ दौड़ा।

जगमोहन का इरादा उससे लिपटकर, उसे जकड़ लेने का था।

परंतु पोतेबाबा को उसने कम आंका था।

जगमोहन का शरीर आगे खड़े पोतेबाबा के हाथ से टकराया और लड़खड़ाकर थम गया। अगले ही पल उसके सिर पर हाथ का जोरदार प्रहार हुआ तो जगमोहन लुढ़ककर नीचे जा गिरा। सिर झनझना उठा था। तभी जगमोहन ने दूर होती कदमों की आहटें सुनीं।

वो समझ गया कि पोतेबाबा जा रहा है।

जगमोहन ने सिर को झटका दिया और उठ बैठा। हाथ से सिर को दबाया, जहां हाथ पड़ा था पोतेबाबा का।

'बहुत बड़ा कमीना है ये पोते बाबा।' जगमोहन बड़बड़ा उठा।

अगले ही पल उसकी सोच होने वाले हादसे की तरफ चली गई।

जगमोहन सोहनलाल के यहां पहुंचा।

फ्लैट की कॉलबेल बजाई तो कुछ पलों बाद दरवाजा खुला। शाम के छः बज रहे थे और सोहनलाल ने नाइट सूट पहना हुआ था। भीतर से टी.वी. चलने की आवाज आ रही थी।

"आ।" कहता हुआ सोहनलाल पीछे हटा तो जगमोहन भीतर प्रवेश कर गया।

सोहनलाल ने दरवाजा बंद किया।

"आज इधर का रास्ता कैसे भूल गया?" सोहनलाल बोला।

"यूं ही।" जगमोहन आगे बढ़कर सोफे पर जा बैठा।

सोहनलाल ने टी.वी. बंद करते हुए कहा।

"देवराज चौहान कैसा है?"

"ठीक है, दिल्ली में है। आजकल में आ जाएगा।"

"क्या लेगा—ठंडा—गर्म या...?"

"कॉफी।"

सोहनलाल ने सिर हिलाया और किचन की तरफ बढ़ गया।

जगमोहन ने पुश्त से सिर टिकाकर आंखें बंद कर ली।

पांच मिनट में ही सोहनलाल कॉफी बना लाया।

"ले।" सोहनलाल ने कॉफी का प्याला टेबल पर रखा और अपना लेकर सामने ही बैठ गया—"क्या बात है?"

"बात?" जगमोहन ने आंखें खोलकर उसे देखा।

"या तो तू थका हुआ है, या किसी उलझन में है। तेरा चेहरा बता रहा है ये...।"

जगमोहन ने कॉफी का प्याला उठाकर घूंट भरा।

सोहनलाल ने भी सिप ली।

"मैं एक-दो दिन से अजीब-से हालातों में फंसा पड़ा हूं।" जगमोहन बोला।

"मुझे बता क्या अजीब है?"

"तेरे को यकीन नहीं आएगा सुनकर।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"सुना तो सही।" सोहनलाल के होंठ सिकुड़े।

"मैं पूर्वजन्म के मामले में फंस चुका हूं।"

सोहनलाल के हाथ में थमा कॉफी का प्याला जोरों से हिला।

"पूर्वजन्म?" सोहनलाल हड़बड़ाया—"ये तू क्या कह रहा है?"

"मेरे सामने जो हालात हैं, उसी के हिसाब से कह रहा हूं। तुझे जथूरा नाम याद है पूर्वजन्म का?"

जगमोहन को देखते सोहनलाल ने गम्भीरता से इंकार में सिर हिलाया।

"पोतेबाबा?"

"ये भी नहीं। लेकिन हुआ क्या?" सोहनलाल ने व्याकुल भाव में पूछा।

जगमोहन सारी बातें बताता चला गया कि कैसे हादसों का पूर्वाभास उसे होने लगा है और अदृश्य होता कोई पोतेबाबा उसके पास आ रहा है। सारी बातें, सब कुछ बताया।

सोहनलाल ने पूरी बात सुनी। ठगा-सा उसे देखता रहा।

जगमोहन ने सतनाम वाले हादसे के बारे में भी बताया, जो होने वाला है।

सोहनलाल ने गोली वाली सिगरेट सुलगा ली।

"ये तो बहुत खतरनाक बातें बता रहे हो तुम।" सोहनलाल अजीब-से लहजे में कह उठा।

"मैंने पहले ही कहा था कि सुनकर तुम्हें यकीन नहीं आएगा।"

"यकीन तो आया, परंतु ये सब अजीब-सा है। बहुत ही अजीब।"

"विश्वास करने के काबिल नहीं?"

"हां, ये बातें मुझे कोई और कहता तो मैं विश्वास नहीं करता।" सोहनलाल ने कश लिया।

"मैंने जो कहा है सच कहा है।" जगमोहन गम्भीर था।

"जानता हूं।" सोहनलाल ने सिर हिलाया—"पोते बाबा ने जथूरा के बारे में कुछ नहीं बताया?"

"जो बताया, वो तुमसे कह दिया है।"

"एक बात मेरी समझ में नहीं आई।" सोहनलाल बोला।

"क्या?"

"हादसे तो मुम्बई में कदम-कदम पर होते हैं, हर सेकंड

कुछ-न-कुछ होता है, परंतु तुम्हें चुनिंदा हादसों का ही पूर्वाभास क्यों हो रहा है? बाकी हादसों का पूर्वाभास तुम्हें क्यों नहीं, हो रहा?"

"इसका जवाब मेरे पास नहीं है।"

"पोतेबाबा से नहीं पूछा?"

"नहीं, फिर वो मुझे बताएगा ही क्यों?" जगमोहन ने सोच-भरे स्वर में कहा—"वो नहीं चाहता कि मैं जथूरा के कामों में खलल डालूं। वो मुझे इस रास्ते से हटाने की चेष्टा कर रहा है।"

"और तुम हटना नहीं चाहते।"

"तू ही बता, क्या तेरे को पता हो कि कहीं कोई एक्सीडेंट में मरने वाला है तो तू उसे बचाएगा नहीं?"

"जरूर बचाऊंगा।"

"वो ही मैं कर रहा हूं।"

"पोतेबाबा के मुताबिक, तेरी भागदौड़ पूर्वजन्म के सफर की वजह बन सकती है।"

जगमोहन ने होंठ भींच लिए।

"पूर्वजन्म की यात्रा खतरनाक है। हम पहले भी कई बार ये दहशत भरा सफर कर चुके हैं और अब नहीं करना चाहते।"

जगमोहन चुप रहा।

"क्या तुम पूर्वजन्म का सफर करना पसंद करोगे जगमोहन?" सोहनलाल ने पूछा।

"नहीं। वो खतरनाक होता है।"

"ये तो हमारी बात हुई कि खतरनाक होता है, परंतु पोतेबाबा क्यों नहीं चाहता कि हम पूर्वजन्म का सफर करें। वो हमारे इस सफर को शुरू होने से पहले ही रोक देना चाहता है। तुम्हें इन कामों से हटाने पर लगा है?"

जगमोहन चुप रहा।

"इस बात की संभावना है कि हमारा सफर पोतेबाबा या जथूरा के लिए तकलीफदेह हो।"

"ये ही बात है। पोतेबाबा कुछ हद तक स्वीकार कर चुका है कि मैं पूर्वजन्म वाले हादसों के पीछे भागना छोड़ दूं तो मेरा पूर्वजन्म का सफर रुक सकता है और ऐसा होना मेरे और जथूरा दोनों के लिए बेहतर होगा।"

"तुम्हारे लिए तो पता नहीं, परंतु जथूरा के हक में ये अवश्य बेहतर होगा। तभी तो पोतेबाबा तुम्हें रोकने की कोशिश में है।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"तुम्हें इस बारे में देवराज चौहान से बात करनी चाहिए।" सोहनलाल ने कहा।

"वो दिल्ली में किसी काम में है। मेरी बात सुनकर परेशान हो जाएगा। मैं उसे डिस्टर्ब नहीं करना चाहता।"

"तुम इस वक्त खतरनाक हालातों में घिरे हुए हो।"

"जानता हूं।"

"तुम्हें देवराज चौहान से जरूर बात करनी चाहिए।"

"वो एक-दो दिन में आ जाएगा। तब करूंगा।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

सोहनलाल खामोश रहा। सोचों में रहा।

"पोतेबाबा के शरीर में इतनी ताकत है कि उस पर काबू नहीं पाया जा सकता। मैंने दो बार कोशिश की और दोनों बार असफल रहा।"

"हम दोनों मिलकर...।"

"नहीं, वो हम दो के काबू में भी नहीं आने वाला।"

"रुस्तम राव और बांकेलाल राठौर को बुला लेते हैं।" सोहनलाल ने कहा।

"शायद बात बने। लेकिन पोतेबाबा अदृश्य है। उसने अदृश्य होने की कोई दवा खा रखी है। वो हमें देख सकता है और हम उसे नहीं देख सकते। वो जान सकता है कि हम क्या कोशिश करने जा रहे हैं।"

"लेकिन हम कोशिश करेंगे।" सोहनलाल तेज स्वर में बोला—"अगर हमने पोतेबाबा को बंदी बना लिया तो, उससे बहुत कुछ जाना जा सकता है, जो हम नहीं जानते। हम पूरी तरह अंधेरे में हैं कि क्या होने वाला है।"

"पहले पोतेबाबा को हाथ तो आने दो।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

सोहनलाल ने फोन उठाया और नम्बर मिलाने लगा।

"किसे?" जगमोहन ने पूछा।

"रुस्तम राव को और...।"

"अभी रुको।" जगमोहन ने हाथ उठाकर कहा।

सोहनलाल ने फोन बंद कर दिया।

"क्यों?" सोहनलाल ने उसे देखा।

"ये काम कल सुबह के बाद करेंगे। पहले काली मां के बेवकूफ भक्त को देखना है।"

"सतनाम?"

"हां।"

"परंतु हम नहीं जानते कि वो कहां रहता है और...।"

"पता चल जाएगा। मुझे उस जगह के बारे में पूर्वाभास अवश्य होगा।"

सोहनलाल गम्भीर दिखा। बोला।

"मैं भी देखना चाहता हूं कि तुम्हारे पूर्वाभास का अंजाम कैसा होता है। सच में वो ही होगा, जो तुम महसूस कर चुके हो।"

"हां, वो ही होगा।" जगमोहन मुस्कराया—"मैं भुगत चुका हूं।"

"तो पोतेबाबा कहता है कि कोई शक्ति तुम्हें पूर्वाभास करा रही है।"

"हां और वो शक्ति जथूरा की दुश्मन है।"

"वो तुम्हारे सामने क्यों नहीं आती?"

"मैं नहीं जानता।" कहते हुए जगमोहन ने दीवार पर लगी घड़ी में वक्त देखा।

शाम के सात बज रहे थे।

"अगले बारह घंटों तक, सतनाम अपने मां-बाप और बहन को मार देगा।" जगमोहन ने कहा—"अखबार छः और सात के बीच तक बांट दिया जाता है। मैंने उस मकान के गेट के भीतर रबड़ लगा अखबार पड़ा देखा था।

"हम कुछ कर सकें, ये इस बात पर निर्भर है कि तुम्हें उस घर के बारे में पूर्वाभास हो जाए।"

"जब हादसे का पूर्वाभास हुआ है तो जगह का भी पूर्वाभास होगा।" जगमोहन ने दृढ़ स्वर में कहा—"पोतेबाबा बोलता है कि मुझे दो घंटे का वक्त मिलेगा और दो घंटों में मैं वहां तक नहीं पहुंच सकता।"

"वो तुम्हारा मनोबल तोड़ना चाहता होगा। तभी ऐसी बातें उसने तुमसे कीं।"

"ये हो सकता है।" जगमोहन ने सिर हिलाया—"तुम क्या मेरे साथ चलोगे?"

"हां, पक्का चलूंगा। मैं पूर्वाभास को सच होते, अपनी आंखों से देखना चाहता हूं।"

"ठीक है। मैं यहीं रहूंगा रात में।" जगमोहन बोला—"यहां से हम साथ ही...।"

"ऐसा तो नहीं कि पूर्वाभास तुम्हें सिर्फ अपने बंगले पर ही आए—यहां...।"

"पहली बार पूर्वाभास मुझे रमजान भाई के यहां हुआ था।

इसलिए ऐसा कुछ नहीं है। यहां भी सब ठीक रहेगा।" जगमोहन ने कहा और आंखें बंद कर लीं। उसके बाद काफी देर तक कमरे में खामोशी रही।

"मैं सोच रहा हूं कि पोतेबाबा को हमने बंदी बना लिया तो बहुत अच्छा होगा।" सोहनलाल कह उठा।

"इस बात की कोशिश अवश्य करेंगे। परंतु सफल होने में शक है। पोतेबाबा ताकतवर है।"

"इतना ताकतवर कि चार लोगों की पकड़ से बच निकले।"

"कह नहीं सकता।"

▭ ▭

रात के दस बज रहे थे।

देवराज चौहान होटल के कमरे में था कि उसका फोन बजने लगा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने कॉलिंग स्विच दबाकर फोन कान से लगाया।

"मैं लक्ष्मण दास, देवराज चौहान।" लक्ष्मण दास की आवाज कानों में पड़ी।

"कहो।"

"मोना चौधरी का कुछ पता चला?"

"नहीं।"

"वो तुम तक जल्दी ही पहुंचेगी। अभी सपन चड्ढा के मैनेजर से बात हुई। वो कह रहा था कि कल शायद वो मोना चौधरी के बारे में कुछ बताए। मैं उससे इस बारे में ज्यादा नहीं पूछ पाया।"

"कोई खबर मिले तो बताना।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बंद किया।

तभी दरवाजे पर थपथपाहट पड़ी।

देवराज चौहान उठा और दरवाजे के पास आ पहुंचा।

"कौन?"

पल-भर की खामोशी के बाद महाजन की आवाज कानों में पड़ी।

"नीलू महाजन।"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

मोना चौधरी का खास आदमी और यहां?

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ली और सावधानी से जरा-सा दरवाजा खोला।

महाजन को अकेले खड़ा पाया।

दोनों की नजरें मिलीं।

"अकेले हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां।" महाजन मुस्करा पड़ा।

"कहो।" वहीं खड़े देवराज चौहान ने कहा।

"भीतर आने को नहीं कहोगे?"

"मैं जानबूझ कर खतरे को बगल में नहीं बिठाता। मोना चौधरी ने तीन करोड़ में मेरे को मारने का काम हाथ में...।"

"पारसनाथ से पता चली ये बात। मैं तुमसे बात करने आया हूं। तुम्हें मारने नहीं आया।" महाजन बोला।

"कोई भरोसा नहीं। तुम्हारे पास कोई हथियार है तो निकाल दो।"

महाजन ने जेब से रिवॉल्वर निकाली।

"इसे कमरे के भीतर फेंक दो।"

महाजन ने ऐसा ही किया।

"भीतर आओ।" देवराज चौहान ने थोड़ा-सा और दरवाजा खोला।

महाजन भीतर प्रवेश कर आया।

महाजन पर निगाह रखे देवराज चौहान ने दरवाजा बंद किया और बोला।

"हाथ ऊपर करो। मैं तुम्हारी तलाशी लूंगा।"

महाजन ने दोनों हाथ ऊपर किए।

देवराज चौहान ने सतर्कता से उसकी तलाशी ली।

कोई हथियार नहीं मिला।

"ठीक है।" देवराज चौहान ने कहते हुए नीचे पड़ी उसकी रिवॉल्वर को ठोकर मारकर दूर किया और अपनी रिवॉल्वर जेब में रख ली।

महाजन ने हाथ नीचे किए और बोला।

"मैं तो सोच रहा था कि तुम नींद लेने के लिए बेड पर चल गए हो।"

"मुझ तक कैसे पहुंचे?"

"दोपहर से ही तुम्हें ढूंढ़ रहा था, जब तुम पारसनाथ से मिलकर गए थे तो पारसनाथ ने सारे हालात मुझे बताए। घंटा-भर पहले पारसनाथ के खास आदमी डिसूजा ने बताया कि तुम इस होटल में हो।" महाजन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम्हें ये खबर मोना चौधरी को देनी चाहिए थी।" देवराज चौहान मुस्कराकर बोला।

"मजे मत लो।" महाजन ने गहरी सांस ली।

"क्यों—मैंने क्या गलत कह दिया। तीन करोड़ में मोना चौधरी ने मुझे मारने का ठेका...।"

"गलत कर रही है बेबी।"

"तो ये बात तुम्हें मोना चौधरी को समझाने की कोशिश करनी चाहिए।"

"समझाया। मैंने और पारसनाथ ने, दोनों ने समझाया, परंतु तुम्हें लेकर वो गुस्से में है। जाने क्यों तुम्हारे नाम पर वो उछलती है।" कहते हुए महाजन ने देवराज चौहान को देखा—"वो पीछे हटने को तैयार नहीं।"

"मुझसे क्या चाहते हो?" देवराज चौहान ने कहते हुए सिगरेट सुलगाई।

"मैं चाहता हूं तुम ही समझदारी दिखा दो।"

देवराज चौहान की निगाह महाजन पर जा टिकी।

"तुम बेबी को चुनौती के तौर पर मत लो। उसे ढूंढ़ना छोड़ दो। मुम्बई चले जाओ।"

"उससे क्या होगा?"

"मुझे और पारसनाथ को वक्त मिल जाएगा कि हम बेबी को शांत कर सकें।"

"ऐसी कोई वजह नहीं कि मैं तुम्हारी बात न मानूं।" देवराज चौहान ने कहा।

"वजह बहुत खतरनाक है, तभी मैं तुम्हारे पास आया देवराज चौहान।" महाजन ने गम्भीर स्वर में कहा—"जब-जब भी तुम और बेबी आमने-सामने पड़े हो, हमें पूर्वजन्म की दुनिया में प्रवेश करना पड़ा और मैं पूर्वजन्म का सफर अब नहीं करना चाहता, वहां कंपा देने वाले अंजाने खतरे भरे होते हैं, जो कि मेरी समझ से बाहर होते हैं। वो खतरनाक दुनिया है। तुम कुछ दिन के लिए बेबी के सामने मत आओ। तब तक मैं बेबी को समझा लूंगा कि...।"

"तुमने कैसे सोच लिया कि मैं तुम्हारी बात मानूंगा।"

"तुम समझदार हो, मेरी बात को समझ...।"

"क्या मोना चौधरी समझदार नहीं है?" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

महाजन देवराज चौहान को देखने लगा।

देवराज चौहान ने कश लिया।

"मैं इस आशा के साथ तुम्हारे पास आया था कि तुम मेरी बात को मान जाओगे।"

"तीन करोड़ में मोना चौधरी मेरी हत्या करने वाली है। ये बात जानकर मैं छिप नहीं सकता।" देवराज चौहान बोला।

"ये जिद है तुम्हारी।"

"और मोना चौधरी—उसके बारे में तुम क्या कहोगे?"

"वो गुस्से में है, मैं उसे समझा लूंगा।"

"तो यहां पर तुम वक्त बर्बाद कर रहे हो, जाकर उसे समझाओ। तुम्हें मेरे पास नहीं आना चाहिए था।"

"समझो मुझे देवराज चौहान, तुम्हारा और बेबी का टकराव, हमेशा पूर्वजन्म की यात्रा का बहाना साबित हुआ है।" महाजन ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा—"क्या तुम्हें पूर्वजन्म की यात्रा करके खुशी होती है?"

"डर भी नहीं लगता।"

महाजन कसमसा उठा।

देवराज चौहान उठा और टहलने लगा। महाजन की तरफ से वो पूरी तरह सतर्क था।

"तुम भी बेबी की तरह बेवकूफ हो।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"तुम्हें मेरी बात मानकर पीछे हट जाना चाहिए।"

"ये सलाह मोना चौधरी को दो।"

"तुम मेरी बात की गम्भीरता नहीं समझ रहे—तभी...।"

"मैं तो इतना जानता हूं कि तुम्हें मोना चौधरी को समझाना चाहिए। मुझे नहीं। शुरुआत उसने की है। उसे चाहिए था कि वो पार्टी को इंकार कर देती कि मुझे मारने का काम हाथ में नहीं लेगी।"

"तुम्हारा जिक्र आते ही बेबी का गुस्सा जाने क्यों सातवें आसमान पर पहुंच जाता है। किसी की सुनती नहीं वो।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

तभी महाजन उठा और नीचे पड़ी अपनी रिवॉल्वर की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान ने अपनी रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली।

महाजन रिवॉल्वर उठा के पलटा तो देवराज चौहान के हाथ में रिवॉल्वर देखकर कह उठा।

"निश्चिंत रहो। मैं तुम्हें इस तरह मारने की सोच भी नहीं सकता।"

देवराज चौहान उसे देखता रहा।

महाजन ने रिवॉल्वर जेब में रखी और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। दरवाजा खोला। देवराज चौहान को देखा।

"मान जाओ।" महाजन कह उठा।

"मोना चौधरी को समझाओ। ये तुम्हारे लिए आसान रास्ता है।"

महाजन बाहर निकल गया।

देवराज चौहान ने आगे बढ़कर दरवाजा बंद कर दिया।

जगमोहन गहरी नींद में था। एकाएक उसकी नींद खुल गई। उसने आंखें खोलकर हर तरफ देखा। कमरे में नाइट ब्लब जल रहा था। मध्यम-सी रोशनी फैली थी। उसने दीवार पर टंगी घड़ी में वक्त देखा, साढ़े तीन बज रहे थे। वो समझ नहीं पाया कि उसकी नींद क्यों खुली। क्या कोई आहट या शोर हुआ था?

पास में सोए सोहनलाल को देखा। सब ठीक पाकर जगमोहन ने आंखें बंद कर लीं। ठीक इसी पल उसके मस्तिष्क में 'झमाका' सा हुआ। बिजली की तीव्र चमक कौंधी। फिर बंद आंखों के पीछे मस्तिष्क में 'लोअर परेल' का बोर्ड चमका। पास ही में लाल बत्ती थी। इस वक्त सड़क पर इक्का-दुक्का ही ट्रेफिक था। जगमोहन को लगा जैसे कोई उसे अपने साथ ले जा रहा हो। वो सड़क पर कुछ आगे गया तो पास की इमारत से एक गली सीधी जाती दिखी। जिसका ज्यादातर हिस्सा अंधेरे में डूबा था। उसे लगा कि कोई उसे खींचता हुआ गली के भीतर ले गया। गली से बाहर निकला तो पास ही उसने 'डॉ. मोसेस रोड' का बोर्ड लगा देखा।

वो सड़क पार कर गया। सामने मकानों की कतार बनी नजर आ रही थी। वो कुछ मकान आगे बढ़ा कि एकाएक ठिठक गया। सामने उसी मकान का गेट था जहां सतनाम ने सुबह होते ही अपने मां-बाप और बहन को काली मां के नाम पर मार देना था। वो ही मकान। जगमोहन ने स्पष्ट पहचान लिया था। एकाएक जगमोहन की आंखें खुल गईं। वो उठ बैठा। उसकी सांसें अनियंत्रित-सी थीं।

"सोहनलाल।" जगमोहन ने सोहनलाल को जोरों से हिलाया।

सोहनलाल ने तुरंत आंखें खोलीं। जगमोहन को देखा।

"क्या बात है?" सोहनलाल नींद में था।

"हमें चलना है अभी—फौरन।" जगमोहन बेड से उतरता हुआ कह उठा।

"कहां?"

"लोअर परेल, डॉ. मोसेस रोड पर वो घर है, जहां सतनाम अपने मां-बाप और बहन को मारने वाला है।"

"ओह, तो—तो तुम्हारे दिमाग में कुछ हुआ?" सोहनलाल पूरी तरह नींद से बाहर निकल आया।

"हां, मुझे उस घर का रास्ता दिखाया गया है। लोअर परेल हम कब तक पहुंच सकते हैं?" जगमोहन ने पूछा।

"एक घंटे में।"

"फिर तो हमारे पास वक्त है। फौरन चलने की तैयारी करो।"

☐ ☐

लाल बत्ती के पास 'लोअर परेल' का वो ही बोर्ड देखा जगमोहन ने।

"ठीक है, यहां से थोड़ा आगे चलो।" जगमोहन बोला—"बाईं तरफ गली है। कार वहां ले लेना।"

सोहनलाल ने ऐसा ही किया।

कार गली में प्रवेश कर गई।

"अब हमें गली से बाहर निकलना है।" जगमोहन बोला।

रात के इस वक्त हर तरफ सुनसानी छाई हुई थी। कभी-कभार ही कोई वाहन सड़क से निकल जाता था।

सोहनलाल कार को गली से बाहर ले आया।

"बस, यहीं रोक दो।" जगमोहन सड़क पार सामने मकानों की कतार देखता कह उठा—"पास ही वो मकान है।"

दोनों कार से बाहर निकले और सड़क पार करने लगे।

"तुम्हें मकान पता है कौन-सा है?" सोहनलाल ने पूछा।

"हां, मुझे लगा जैसे किसी ने मेरे साथ चलकर मुझे वो मकान दिखाया हो।"

"कितनी अजीब बात है।" सोहनलाल ने गहरी सांस लेकर कहा।

सड़क पार करने के बाद वे मकानों के सामने से आगे बढ़ने लगे।

जगमोहन एक कदम आगे था। वो कुछ उत्साह-आवेश में था।

जल्दी ही जगमोहन एक मकान के आगे ठिठका और उसके होंठों से निकला।

"ये ही है वो मकान।"

"सोच लो।"

"ये ही है, पक्का।" जगमोहन ने दृढ़ स्वर में कहते हुए सोहनलाल को देखा—"भीतर वो पाखंडी, पागल-सा होकर, अपनी धूनी रमाए बैठा, बलि देने की तैयारी कर रहा है।"

सोहनलाल के चेहरे पर अजीब-से भाव थे।

"वक्त क्या हुआ है?"

"4.45।" सोहनलाल ने घड़ी पर निगाह मारकर कहा।

"वक्त कम है हमारे पास।" जगमोहन बेचैनी से कह उठा—"हमें भीतर जाना है।"

सोहनलाल की निगाह सड़क के दोनों तरफ घूमी।

परंतु वहां कोई चौकीदार, कोई व्यक्ति न दिखा।

वो मकान अंधेरे में डूबा था, जैसे घर वाले गहरी नींद में हों।

“चल।” सोहनलाल ने कहा।

दोनों तेजी से आगे बढ़े और गेट फलांग कर भीतर कूद गए।

हर तरफ शांति थी।

दोनों ने उसी पल घर के भीतर प्रवेश करने वाले दरवाजे चैक किए।

सब बंद थे।

“कोई दरवाजा खोल सोहनलाल। हमें भीतर जाना है।” जगमोहन ने धीमे स्वर में कहा।

“तेरे को पक्का यकीन है कि यही वो घर है, जहां...।”

“हां—हां, तू बार-बार क्यों पूछता है?”

“यहां शांति है। कोई आवाज नहीं आ रही। इसलिए मुझे लगता है कि हम गलत घर में...।”

“तू दरवाजा खोल बेवकूफ।”

सोहनलाल के पास इस वक्त कोई औजार नहीं था। ताला खोलने का। उसने आसपास देखा, तभी उसे कपड़े सूखने डालने वाली एल्यूमीनियम की तार लगी दिखाई दी।

सोहनलाल ने पांच मिनट लगाकर तीन इंच का तार का टुकड़ा तोड़ा और फिर पास आकर दरवाजे के ‘की होल’ में डालकर, खास अंदाज से झटका दिया और साथ-ही-साथ हैंडिल दबाया।

दरवाजा खुलता चला गया।

दोनों दबे पांव भीतर प्रवेश कर गए।

“धुनाई न हो जाए।” सोहनलाल फुंसफुसाया—“छोटे चोरों की तरह दुम दबा के भागना न पड़ जाए।”

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा और आगे बढ़ गया।

उनके कदमों की आवाजें न के बराबर उठ रही थीं।

कुछ पलों में ही वो ड्राइंग रूम में खड़े थे। वहां अंधेरा था। परंतु सामने लॉबी में कम रोशनी का एक बल्ब जल रहा था। जगमोहन उस तरफ बढ़ गया। उलझन में फंसा सोहनलाल उसके पीछे था।

लॉबी में पहुंचते ही वे ठिठके।

बेहद मध्यम-सी आवाजें उनके कानों में पड़ीं।

दोनों की नजरें मिलीं।

सोहनलाल ने एक तरफ इशारा किया। वे उस तरफ बढ़े।

एक बंद दरवाजे के पास पहुंचकर ठिठके। उनकी सांसों में हवन

सामग्री की स्मैल पड़ी। सोहनलाल की आंखें सिकुड़ गईं। उसने जगमोहन का हाथ दबाया। जगमोहन ने दरवाजे पर कान लगाया।

"अब मेरी सिद्धि पूर्ण होने जा रही है। सिर्फ नरबलि की जरूरत है।" सतनाम की धीमी-गुर्राती आवाज जगमोहन ने सुनी—"कौन देगा अपनी बलि?"

दो पलों बाद पुनः उसकी आवाज सुनाई दी।

"ये बुढ़िया अपनी बलि देगी। बहुत उम्र भोग ली है इसने।"

"ये क्या कह रहा है सतनाम। मैं तेरी मां हूं।" औरत का तेज स्वर जगमोहन ने सुना।

वक्त कम था।

जगमोहन समझ गया कि सतनाम मौत का तांडव शुरू करने जा रहा है।

जगमोहन ने दरवाजे को धक्का दिया तो वो खुलता चला गया।

जगमोहन ने तेजी से भीतर प्रवेश किया।

परंतु भीतर का रहस्यमय माहौल देखते ही पल-भर के लिए ठिठका। कमरे में मध्यम-सा प्रकाश था। हर तरफ लाल-लाल सिंदूर बिखरा नजर आ रहा था, जैसे सिंदूर की होली खेली गई हो। दीवारों पर भी सिंदूर के छींटे थे। पूरे कमरे में धूप सामग्री का धुआं और स्मैल फैली थी। सतनाम लम्बा-सा चाकू थामे खड़ा था। नीचे ईंटों के हवनकुंड में, चंदन की लकड़ी पड़ी सुलग रही थी। एक तरफ पचास-साठ की उम्र के बीच के आदमी-औरत बैठे थे और पास ही 24 बरस की युवती बैठी थी।

इस तरह दरवाजा खुलता पाकर, किसी को भीतर आते पाकर वे सब चौंके। नजरें घूमीं।

सतनाम ने लाल-लाल आंखों से जगमोहन और पीछे खड़े सोहनलाल को देखा।

"कौन है तू?" सतनाम गुर्राया—"तू भीतर कैसे आ गया?"

"मुझे मां काली ने भेजा है।" जगमोहन ने उसके हाथ में थमे छुरे को देखा।

"क्या—मां काली ने भेजा है तुझे?" सतनाम बुरी तरह चौंका।

"हां, मां काली का कहना है कि वो सतनाम की भक्ति से बहुत प्रसन्न है और उसे जाकर कह दूं कि उसे सिद्धि दे दी गई है। बिना दिए ही उसकी बलि स्वीकार कर ली गई है।" जगमोहन पूर्ववतः स्वर में बोला।

"सच?" सतनाम खुश हो उठा—"काली मां की शक्तियों की सिद्धि मुझे मिल गई है।"

"अब तुम छुरा हवनकुंड में रख दो।" जगमोहन पुनः बोला।

सतनाम ने शंकित निगाहों से जगमोहन को देखा।

"तुम मां काली पर शक कर रहे हो।"

"नहीं मैं तो पूछ...।"

"छुरा हवनकुंड में रख।"

"मां काली कहां है?"

"बड़े मंदिर में, छुरा रख और मेरे साथ चल, मां काली आशीर्वाद देने के लिए तुझे बुला रही हैं।"

सतनाम ने फौरन छुरा रख दिया हवनकुंड में।

"चलो, मां काली के पास।"

बूढ़ा-बूढ़ी और युवती हैरानी से ये सब देख-सुन रहे थे।

"आ।"

"सतनाम जगमोहन और सोहनलाल के साथ कमरे से बाहर निकला।

लॉबी में आते ही जगमोहन ने जोरदार घूंसा सतनाम के पेट में मारा। वो कराहकर दोहरा हो गया तो जगमोहन ने उसके सिर के बाल पकड़े और जोरों का घूंसा उसके गालों पर लगाया। वो चीख उठा।

"मेरे लाल को क्यों मार रहे...।" सतनाम की मां ने तड़पकर आगे आना चाहा। उसकी बहन भी आगे आने को हुई।

परंतु सोहनलाल ने उन्हें रोक दिया।

"आगे मत बढ़ना।" जबकि सोहनलाल भी हैरान-परेशान था।

उधर जगमोहन सतनाम को पीटे जा रहा था।

"उसे मत मारो।" सतनाम का पिता कह उठा—"आखिर उसने क्या किया है?"

"वो आप तीनों की बलि देने वाला था। मार देता आप तीनों को।" सोहनलाल बोला।

"क्या कहते हो—वो हमारा बेटा है। हमें क्यों मारता?"

"चुप रहो। वो बलि के नाम पर तुम तीनों को मारने जा रहा था। मेरे दोस्त को इस बात का सपना आया और हम दौड़े चले आए। आप तीनों ही किस्मत वाले हैं, जो आप बच गए।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा।

तीनों की समझ में कुछ नहीं आया।

परंतु वो कुछ नहीं बोले।

"मुझे तो हैरानी है कि आप तीनों उसके इस काम में शामिल क्यों हो गए?"

"सतनाम।" बूढ़ा बोला—"सतनाम तो घर की शांति के लिए हवन कर रहा था। वो...।"

"चुप रहो बेवकूफ।" सोहनलाल ने गुस्से से कहा।

उधर जगमोहन सतनाम की ठुकाई करता गुस्से से कहे जा रहा था।

"बता, कौन-सी काली मां ने तेरे को कहा कि मुझे नरबलि या पशुबलि चाहिए। साले-कमीने, तुम जैसे पागल लोग ही उलटे काम करके भगवानों को बदनाम करते हैं। दुनिया भर का कोई भी भगवान किसी की जान लेकर खुश नहीं होता। और तू काली मां की शक्तियों की सिद्धि पा लेना चाहता है अपने मां-बाप और बहन की हत्या करके। ऐसे शक्तियां मिलने लगतीं तो दुनिया में कोई कमजोर न रहता और तुम जैसे घटिया लोग, एक दिन मां काली की भी बलि दे देते। ये तो अच्छा है कि भगवानों ने ताकतों को अपने हाथों में रखा है, अगर ये ताकतें इस जमीन पर आ जाएं तो एक दिन में ही तुझ जैसे इंसान पूरी दुनिया को बर्बाद करके रख दें।"

सोहनलाल ने आगे बढ़कर जगमोहन को रोका।

जगमोहन का चेहरा तप रहा था। पागल सा हो रहा था वो क्रोध में। हांफ रहा था वो।

"बस कर, वो मर जाएगा।" सोहनलाल ने जगमोहन को पीछे किया।

सतनाम बुरे हाल फर्श पर पड़ा कराह रहा था।

"बेटा।" उसकी मां तड़पकर उसके पास पहुंची और उसे संभालने लगी।

"आपका बेटा पागल है।" जगमोहन गहरी सांसें लेता कह उठा—"ये बीमारी है, भगवान की शक्तियों को पा लेने की। कई बेवकूफ लोगों को ये बीमारी हो जाती है, इसका इलाज कराओ। वरना ये किसी दिन खुद को मार लेगा या तुम सबको मार देगा।"

"सतनाम मेरे बेटे—उठ।" उसकी मां की आंखों से आंसू बह रहे थे।

जगमोहन ने सतनाम के पिता से कहा।

"अगर हम न आते तो ये अब तक तुम तीनों की हत्या कर चुका होता।"

"तुम्हें कैसे पता कि—सतनाम ऐसा करता।"

जगमोहन ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला फिर होंठ बंद कर लिए।

"तू जो करना चाहता था, वो हो गया?" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में पूछा।

जगमोहन ने हां में सिर हिलाया।

"फिर चल यहां से।"

जगमोहन ने सतनाम को देखा।

उसकी मां ने, अपने बेटे का सिर अपनी गोद में रख लिया था। उसे पुकार रही थी। तगड़ी ठुकाई हुई थी सतनाम की। होंठ-गाल फट गए थे। खून बह चुका था। पीड़ा से उसका शरीर भरा था। अब वो होश में था। काली मां की शक्तियां प्राप्त करने का बे-सिर-पैर का भूत उसके दिमाग से उतर चुका था।

"आपने भैया को बहुत ज्यादा मारा है।" वो युवती भीगे स्वर में कह उठी।

"इसे होश में लाने के लिए, ऐसा करना जरूरी था।" जगमोहन ने कहा और बाहर की तरफ बढ़ गया।

सोहनलाल उसके साथ चल पड़ा।

बाहर दिन का उजाला फैल चुका था।

बंद गेट के भीतर की तरफ रबड़ लगा आज का अखबार पड़ा था।

जगमोहन की निगाह उस अखबार पर पड़ी तो अजीब-से अंदाज में कह उठा।

"सोहनलाल, इसी अखबार ने मुझे बताया था, ये सब आज सुबह-सुबह होगा।"

▭ ▭

जगमोहन कार ड्राइव कर रहा था। सोहनलाल बगल में बैठा था।

"मेरा तो अभी भी दिमाग खराब हुआ पड़ा है।" सोहनलाल बोला।

"क्या मतलब?" जगमोहन बोला।

"तुम्हारे पूर्वाभास की बात कर रहा हूं। तुम्हारा पूर्वाभास तुम्हें हादसे के बारे में ही नहीं बताता, बल्कि जगह और वक्त तक का एहसास करा देता है। ये सब कितना आश्चर्यजनक है।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"सच में।" जगमोहन मुस्कराया।

"मैंने तुम्हारी बात सुनी तो अविश्वास नहीं किया परंतु सच मानने का भी मन नहीं कर रहा था। लेकिन अब ये सब देखा तो मेरे पास कहने को कुछ नहीं है। तुम सच हो और सही हो।"

"मैं परेशान हूं कि ये पूर्वाभास मुझे क्यों हो रहा है?"

"सच में परेशान होना चाहिए।" सोहनलाल की आवाज में गम्भीरता आ गई—"तुम्हें पोतेबाबा की इस बात को हल्के से नहीं लेना चाहिए कि अगर इसी प्रकार तुम जथूरा के हादसों को बेकार करते रहे तो, ये बस पूर्वजन्म के सफर की शुरुआत हो सकती है।"

"खबर होने के पश्चात मैं किसी को इस तरह मरने नहीं दे सकता। चुप बैठा रहूं, इस बात के लिए मेरा मन नहीं मानता।"

तभी पोतेबाबा की आवाज कानों में गूंजी।

"अभी भी वक्त है। मन को समझा ले, वरना बहुत पछताएगा।"

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

जबकि सोहनलाल तो जैसे उछल ही पड़ा। उसने कार के पीछे वाली सीट पर नजरें घुमाईं।

परंतु वहां कोई न दिखा।

"ये पोतेबाबा है?" सोहनलाल ने अचकचाकर जगमोहन को देखा।

"हां। ये ही पोते बाबा है। उसकी आकृति को देखना चाहता है तो सिगरेट सुलगा। धुएं में तू पोतेबाबा की आकृति देखेगा।"

सोहनलाल उसी पल सिगरेट निकालकर सुलगाने लगा।

"तेरे क्या हाल हैं गुलचंद?"

सोहनलाल पल भर के लिए हड़बड़ाया।

गुलचंद सोहनलाल के पूर्वजन्म का नाम था।

"तू मेरा नाम कैसे जानता है पूर्वजन्म का?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"मैं तो तुझे बहुत अच्छी तरह से जानता हूं।"

"कैसे?" सोहनलाल ने धुआं उगला और गर्दन पीछे घुमा ली।

कार में धुआं भरने लगा था।

जगमोहन का ध्यान कार चलाने पर था।

"मैं तेरे पूर्वजन्म से ही तो आया हूं, पहचाना नहीं मुझे, पोतेबाबा हूं मैं।"

"नहीं पहचाना।"

तभी सोहनलाल को धुएं में पोतेबाबा की आकृति दिखाई देने लगी। वो आकृति पीछे वाली सीट पर बैठी हुई थी। लम्बी दाढ़ी। पीछे को जाते सिर के बाल। गले में मालाएं। एक कान में कुंडल फंसा लटक रहा था।

"पोतेबाबा मुझे नजर आ रहा है जगमोहन।" सोहनलाल कह उठा।

"धुएं में उसकी आकृति।" जगमोहन बोला।

"वो ही, वो ही।" फिर सोहनलाल पोतेबाबा से बोला—"मैंने तुझे पहले कभी नहीं देखा। तेरा नाम भी नहीं सुना।"

"तो इस वक्त याद नहीं तेरे को पूर्वजन्म की।" पोतेबाबा की आकृति के होंठ हिलते दिखे सोहनलाल को।

"तू देख इसे।" सोहनलाल ने जगमोहन से कहा।

"कई बार देख चुका हूं।" जगमोहन कार चलाते बोला। पीछे न देखा।

सोहनलाल की निगाह पोतेबाबा की आकृति पर टिकी थी। वो कुछ हैरान सा था।

"क्यों जग्गू।" पोतेबाबा की आवाज उभरी—"तू मानता नहीं मेरी बात। जथूरा के कामों को खराब क्यों करता है?"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"मेरी बात को समझ जग्गू। पीछे हट जा। तू भी खुश, जथूरा भी खुश। वरना बुरा होगा। तेरे कदम पूर्वजन्म की यात्रा की ओर बढ़ रहे हैं और वहां पर जथूरा की ताकत देखकर तू कांप उठेगा। वहां जथूरा तुझे बख्शेगा भी नहीं। जथूरा अभी भी इसी चेष्टा में है कि तू मान जाए। वो झगड़ा नहीं करना चाहता।"

"मैं भी झगड़ा नहीं चाहता।" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा।

"तू उसके रास्ते में मत आ। कसम ले ले।"

"जथूरा को चाहिए कि वो इस दुनिया में हादसे की कोशिश बंद कर दे। मेरा रास्ता खुद-ब-खुद ही बदल जाएगा।"

"हादसों का देवता, हादसे कराने से कैसे पीछे हट सकता है?" पोतेबाबा की आकृति के होंठ हिलते दिखे।

"तो मैं भी अपने कर्म से पीछे कैसे हट सकता हूं?"

"तो तू जथूरा से झगड़ा करके ही रहेगा।"

"मैं जथूरा को नहीं जानता। उसे कभी देखा नहीं, तो मैं उससे झगड़ा क्यों करूंगा।"

सोहनलाल की निगाह एकटक धुएं में दिखाई दे रही, पोतेबाबा की आकृति पर टिकी थी। उसने आकृति को अपनी तरफ देखते पाया तो सतर्क हुआ। तभी पोतेबाबा के होंठ हिले।

"गुलचंद। जग्गू तेरी बात अवश्य मानेगा।"

"हुक्म कर।"

"इसे समझा कि ये जथूरा के कामों के बीच दखल मत दे। उसके हादसों को खराब न करे।"

"ये ऐसा कुछ नहीं कर रहा।" सोहनलाल ने सामान्य स्वर में कहा।

"तू मुझसे मजाक मत कर।"

"सच कह रहा हूं मैं।"

"जथूरा की दुश्मन शक्ति, पहले ही इसे जथूरा के द्वारा किए जाने वाले हादसों की झलक दिखला देती है और ये उन हादसों को रोक देता है।"

"बुरी बात है ये तो।"

"समझा इसे।"

"समझाऊंगा।" सोहनलाल के चेहरे पर संजीदगी के भाव दिखे—"इसे मैं ऐसा नहीं करने दूंगा।"

"सच कह रहा है।"

"हां।" सोहनलाल ने सिर हिलाया—"तू मुझे दोपहर तक का वक्त दे।"

"तब तक तू क्या कर देगा?"

"इसे समझा दूंगा। तू इसके बंगले पर ही आना। मैं वहीं मिलूंगा। तब तू खुद ही जगमोहन से बात करके देख लेना।"

"मुझे विश्वास नहीं आ रहा।" पोतेबाबा के स्वर में संदेह के भाव थे।

"किस बात का?"

"कि तेरे जैसा मक्कार सच बात कह रहा है।"

"मक्कार, तूने ये कैसे सोच लिया कि मैं मक्कार हूं।" सोहनलाल की आंखें सिकुड़ीं।

"पूर्वजन्म में तू यही सब तो करता था। तुझे याद नहीं मेरी, वरना ये बात तू न पूछता।"

"हममें क्या रिश्ता था पूर्वजन्म में?" सोहनलाल ने पूछा।

"हम दोस्त थे। एक साथ कहीं छिपकर नशा किया करते थे। तूने ही मुझे नशे की आदत लगवाई थी। उसके बाद तू देवा के रंग में रंगता चला गया और मैं जथूरा की सेवा में चला गया था।" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी।

"तो हम दोस्त थे।" सोहनलाल ने सिर हिलाया।

"हां।"

"तो तेरे को उसी दोस्ती का वास्ता।" सोहनलाल गम्भीर था—"दोपहर बाद आना और जगमोहन को बदले हुए देख लेना। मैं इसे ठोक-पीटकर समझा दूंगा। देखता हूं कैसे नहीं मानता मेरी बात। मैं इसे हर बार सीधा कर देता हूं।"

"तू जरूर धोखा देगा गुलचंद। तेरी कमीनगी मैं कई बार भुगत चुका...।"

"वो पूर्वजन्म की बातें थीं।"

"तेरे लिए।" पोतेबाबा के होंठ हिले—"मेरे लिए तो वो ही जन्म है। सब कुछ वो ही है।"

"तू तो बूढ़ा हो गया दिखता है।" सोहनलाल मुस्कराया।

"उम्र भी तो बहुत हो गई। लेकिन अभी मेरी उम्र खत्म नहीं होने वाली। बहुत जीना है मैंने।"

तभी जगमोहन ने सड़क के किनारे कार रोक दी फिर गर्दन घुमाकर पोतेबाबा से बोला।

"एक बात तो बता।"

"पूछ जग्गू।"

"जथूरा के दो-चार हादसे तो होते न होंगे, फिर मुझे सिर्फ दो-चार हादसों के बारे में ही क्यों पता चलता है।"

पोतेबाबा ने फौरन कुछ नहीं कहा। कुछ खामोशी के बाद बोला।

"तू ठीक कहता है, तुम्हारे हिसाब से 24 घंटों में जथूरा के सेवक हजारों हादसे तैयार करके इस दुनिया में भेजते हैं और वे सब सफल रहते हैं। लेकिन तेरे को चंद खास हादसों का ही पता चलता है।"

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि।" पोतेबाबा गम्भीर स्वर में कह उठा—"जो शक्ति तुझे हादसों का एहसास करा रही है, वो जानती है कि कौन-कौन से हादसे पूर्वजन्म में प्रवेश करने के लिए, चाबी की तरह इस्तेमाल किए जा सकते हैं। सीधी तरह यूं कह ले कि कुछ चुनिंदा हादसों को होने से तू रोकेगा तो तेरा पूर्वजन्म में जाने का रास्ता खुल जाएगा।"

"समझा।"

"वो शक्ति चाहती है कि तू पूर्वजन्म में प्रवेश करे और जथूरा से झगड़ा करे। इसी वजह से ये सब हो रहा है। जथूरा ने मुझे भेजा है तुझे समझाने के लिए। अगर एक बार भी तू हादसे को रोकने की कोशिश नहीं करता तो जथूरा की दुश्मन शक्ति का घेरा बेकार होता चला जाएगा। फिर तू पूर्वजन्म में प्रवेश नहीं कर सकेगा। इसी कारण तेरे से कहा था कि तू सिर्फ एक बार पीछे हट जा। उसके बाद सब ठीक हो जाएगा। जथूरा की दुश्मन शक्ति तेरा बुरा कर रही है जग्गू।"

"अच्छा—वो कैसे?"

"तू जथूरा के सामने, धूल भी नहीं और वो तेरे को जथूरा से टक्कर लेने के लिए उकसा रही है। जथूरा तेरे को मार देगा जग्गू।"

"ये बात है तो जथूरा को क्यों चिंता हो रही है, मेरे पूर्वजन्म में आ जाने की। वो तो मेरे से ताकतवर है।"

"जथूरा को तेरी चिंता है।"

"मेरी चिंता?"

"हां, तेरा एहसान है उस पर। इसलिए वो नहीं चाहता कि तू उसके रास्ते में आए और मर जाए।"

"फिर तो जथूरा मेरा भला चाहता है।" जगमोहन व्यंग भरे स्वर में कह उठा।

"दिल से वो तुम्हारा भला चाहता है। तभी तो वो चाहता है कि तू रास्ता बदल ले और तेरा उसका टकराव न हो।"

"धन्यवाद देना जथूरा को मेरी तरफ से कि वो मेरा खैरखाह है।" जगमोहन तीखे स्वर में बोला।

उसी पल सोहनलाल कह उठा।

"बातें मत कर पोतेबाबा। तू दोपहर को आना। तब तक मैं जगमोहन को समझा चुका होऊंगा।"

"ठीक है, दोपहर को आऊंगा।"

"कार से निकल।" जगमोहन बोला—"अब तेरी यहां जरूरत नहीं।"

"जग्गू तू बेइज्जती करने वाले अंदाज में मेरे से बात करता है।" पोतेबाबा की आवाज उभरी और पिछला दरवाजा खुलता दिखा।

"सच मान। अभी मैं बहुत इज्जत से तेरे से बात कर रहा हूं।"

पोतेबाबा की आवाज नहीं आई और दरवाजा बंद होता दिखा।

जगमोहन ने पुनः कार आगे बढ़ा दी।

सोहनलाल ने कश लेकर पीछे वाली सीट की तरफ धुआं फेंका।

परंतु पोतेबाबा की आकृति नहीं दिखी। वो कार से उतर चुका था।

"वो अदृश्य था। कितनी अजीब बात है।" सोहनलाल बोला—"उसका अदृश्य होना खतरनाक है। वो कुछ भी कर सकता है।"

जगमोहन चुप रहा।

"सब कुछ देखने-सुनने के बाद भी मुझे तेरे हालातों पर यकीन नहीं आ रहा।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"मेरे हालात अब तेरे बनने जा रहे हैं।" जगमोहन मुस्करा पड़ा।

"वो कैसे?"

"तूने पोतेबाबा को दोपहर को बुलाया है कि...।"

"उस पर काबू जो पाना है।" सोहनलाल गम्भीर हो गया।
"ओह, ये बात तो मैं भूल ही गया था।"
"रुस्तम राव और बांके से बात करता हूं।" सोहनलाल ने कहा और फोन निकालकर नम्बर मिलाने लगा।
सोहनलाल ने फोन कान से लगा लिया। दूसरी तरफ बेल जा रही थी।
"हैलो।" सोहनलाल के कानों में बांकेलाल राठौर की आवाज पड़ी—"कोनों बोल्ले है?"
"सोहनलाल।" सोहनलाल के होठों पर मुस्कान उभरी।
"तम। नशाखोर।"
"हां—मैं ही।"
"थारी सिगरेटों में नशों वाली गोली का का हाल हौवे?"
"बढ़िया है। रुस्तम कहां है?"
"छोरो इधर-उधर हौवे। बोत शैतान हो गयो वो ईब। थारा चाल-चलन कैसो हौवे?"
"वैसा ही है।"
"म्हारो देवराज चौहानो ठीको हौवे का?"
"हां।"
"सब ठीको हौवो, कोई मरो ना।"
"नहीं।"
"फिरो फोनो बंद कर दयो। का जरूरत हौवे बातों करके पैसों खराब करने की।"
"जगमोहन मेरे साथ है।"
"म्हारा आशीर्वाद उसो के सिर पर मारियो।"
"हमें तुम्हारी और रुस्तम राव की जरूरत है।"
"म्हारो से ब्याह करने का प्रोग्राम हौवे का?"
"तुम रुस्तम राव को लेकर देवराज चौहान के बंगले पर आ जाओ।"
"मण्डप वहीं पे सजा के रखियो का?" बांकेलाल राठौर की आवाज में गम्भीरता आ गई—"बात का हौवे?"
"तुम रुस्तम राव को लेकर पहुंचो सब जान जाओगे।"
"इसो का मतलब खैर न हौवे।"
"अभी कुछ पता नहीं।"
"लो। छोरा आ गयो। बातें मारो ले, उसी के साथ।"
दो पल बीते कि सोहनलाल के कानों में रुस्तम राव की आवाज पड़ी।

"क्यों बाप, कैसा चल रईला है?"

"मैं ठीक हूं रुस्तम। तुम बांके के साथ देवराज चौहान के बंगले पर आ जाओ।"

"गड़बड़ होईला क्या?"

"शायद।"

"देवराज चौहान और जगमोहन भी उधर होईला बाप?"

"जगमोहन होगा, देवराज चौहान मुम्बई से बाहर है। तुम बांके के साथ आ रहे हो न?"

"अपुन पक्का पौंचेला बाप। नाश्ता भी उधर ही करेला।"

"हम इकट्ठे ही नाश्ता करेंगे। साथ में लेते आना।"

"बांके को...।"

"हां और नाश्ता भी।" सोहनलाल ने कहा और फोन बंद कर दिया—"वो कुछ देर में बंगले पर पहुंच जाएंगे।"

जगमोहन ने सिर हिलाया।

"मेरे खयाल में हम पोतेबाबा को बंदी बना लेंगे।

"देखते हैं।" जगमोहन बरबस ही मुस्करा पड़ा।

शाम के 3.30 बजे थे।

जगमोहन और सोहनलाल कुछ देर पहले ही नींद से उठे थे।

नहा-धोकर उन्होंने कपड़े बदले।

जगमोहन सोहनलाल को धूप देता कह उठा।

"इसे जला दो। हाल में, बेडरूम में, किचन में। ताकि इसके धुएं में पोतेबाबा की आकृति से उसकी मौजूदगी का स्पष्ट एहसास पा सकें। धूप को इस तरह रखना कि इसका धुआं हर तरफ जाए।"

सोहनलाल धूप जलाने में व्यस्त हो गया।

दस मिनट बाद इस काम से फारिग हुआ।

अब हर जगह धूप की स्मैल फैली हुई थी। धुआं वहां भरने लगा था। जगमोहन कॉफी बना लाया था। दोनों कॉफी के प्याले थामे सोफों पर आ बैठे थे। सोहनलाल बोला।

"देवराज चौहान का कोई फोन नहीं आया?"

"नहीं।" जगमोहन कॉफी का प्याला रखता कह उठा—"उससे बात करता हूं।"

जगमोहन ने फोन निकालकर देवराज चौहान का नम्बर मिलाया।

"यहां के हालात उसे बताओगे?" सोहनलाल ने पूछा।

"नहीं। मैं उसे व्यर्थ में चिंता में नहीं डालना चाहता।"

नम्बर लग गया। देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"तुम दिल्ली में ही हो?" जगमोहन ने पूछा।

"हां। एक-दो दिन तक वापस जा जाऊंगा। वहां सब ठीक है?" उधर से देवराज चौहान ने पूछा।

"सब ठीक है। लेकिन तुम दिल्ली में किस काम को कर रहे हो?"

"आकर बताऊंगा।"

"मेरी जरूरत हो तो आ जाता हूं।"

"नहीं। तुम्हारी जरूरत नहीं है।"

बात करके जगमोहन ने फोन बंद किया।

"एक-दो दिन तक आने को कह रहा है।" जगमोहन ने सोहनलाल से कहा।

"पोतेबाबा नहीं आया अभी तक।" सोहनलाल बोला—"मैंने उसे दोपहर में आने को कहा था।"

"मैं तो दोपहर में ही आ गया था।" पोतेबाबा की आवाज उन्हें सुनाई दी।

जगमोहन और सोहनलाल की निगाहें आवाज की तरफ घूमीं।

चंद कदमों की दूरी पर, सोफे पर बैठे पोतेबाबा की धुएं में आकृति का आभास हुआ।

"तो तुम यहां हो।" सोहनलाल मुस्कराया।

आकृति का सिर हिला।

धुआं जब वहां ज्यादा होता तो आकृति स्पष्ट नजर आती। कम होता तो आकृति टूटी-फूटी सी दिखाई देती।

"जग्गू को समझा लिया गुलचंद?" पोतेबाबा की आकृति के होंठ हिलते दिखे।

"हां—बात की। तेरी खातिर की।"

"मेरी खातिर?"

"पूर्वजन्म में हम दोस्त हुआ करते थे। हम एक साथ नशा किया करते थे। दोस्ती का कुछ तो खयाल रखना है कि नहीं?"

"तेरे शब्दों में चालाकी की महक है।"

"ऐसा कुछ नहीं है।"

"जग्गू माना कि जथूरा के कामों को रोकने की चेष्टा नहीं करेगा?" पोतेबाबा की आकृति के उसे होंठ हिलते दिखे।

"माना, लेकिन ये भी कुछ कहता है।"

"क्या?"

"पूछ लो।" सोहनलाल ने जगमोहन की तरफ इशारा किया।

जगमोहन पोतेबाबा की आकृति की तरफ देखते कह उठा।

"मैं जथूरा से मिलना चाहता हूं।"

"ये सम्भव नहीं।"

"तो ये भी सम्भव नहीं कि मैं तुम्हारी बात मान जाऊं।" जगमोहन ने कहा।

"क्यों? क्यों मिलना चाहते हो तुम जथूरा से?"

"ये सब बातें ही करनी हैं उससे। मुझे तुझ पर विश्वास नहीं। क्योंकि मैं तुझे जानता नहीं। पूर्वजन्म का मुझे कुछ भी याद नहीं। क्या पता जथूरा नाम की आड़ में मुझसे कोई खेल खेल रहा हो।"

"मैं खेल क्यों खेलूंगा?"

"तो जथूरा से मेरी बात करा।"

"यकीन मान जग्गू, ये सम्भव ही नहीं है।" पोतेबाबा समझाने वाले स्वर में बोला।

"क्यों?"

"जथूरा इस वक्त, इस दुनिया में प्रवेश नहीं कर सकता। जब ग्रहों की खास चाल आती है तो वो इस दुनिया में प्रवेश करता है। ये उसके बस में भी नहीं है कि, जब चाहा, तब वो इस दुनिया में आ जाए।"

जगमोहन सतर्क हुआ। परंतु नजरें आकृति पर ही रहीं।

सोहनलाल ने उसी पल इस तरह आंखें बंद कर लीं, जैसे आराम करने का इरादा हो।

पोतेबाबा की पीठ की तरफ से बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव दबे पांव पोतेबाबा की आकृति की तरफ बढ़ रहे थे। उन दोनों के हाथों में नायलोन का खुला जाल थमा था। दोनों ने एक-एक तरफ के, दो-दो सिरे थाम रखे थे। वे दोनों मात्र सात-आठ कदम दूर थे अब।

"तो तुम मुझे उसके पास ले जाओ।" जगमोहन बोला—"ताकि मैं...।"

"असम्भव।" पोतेबाबा की आकृति के होंठ हिले।

"क्या मतलब?"

"तुम्हारा इस वक्त पूर्वजन्म की जमीन पर पहुंच जाना बहुत गलत होगा। तुम्हें वहां जाने से रोकने के लिए ही तो मैं भागदौड़ कर रहा हूं, वरना तुम जिस रास्ते पर बढ़ रहे हो, वो पूर्वजन्म के प्रवेश द्वार तक ही जाता है।"

"मतलब कि तुम मेरी बात पूरी नहीं कर सकते?"

"सम्भव ही नहीं है। कतई नहीं।" पोतेबाबा की आवाज में स्पष्ट इंकार था।

सोहनलाल ने आंखें खोलीं।

बांकेलाल राठौर और रुस्तक राव अब मात्र ढाई-तीन कदमों की दूरी पर थे।

"सम्भव होता तो मैं अवश्य मानता।"

"किसी तरह कोई रास्ता बना लो। सम्भव करने का कोई रास्ता निकाल लो।"

"इस बारे में दोबारा मत कहो। नहीं हो सकता ये।"

"तो जगमोहन फिर तुम्हारी बात नहीं मानेगा। जथूरा के कामों को खराब करता रहेगा।"

"ऐसा है तो भुगतेगा—ये बच नहीं पाएगा जथूरा के कहर से...।"

यही वो पल थे कि जिन्होंने वहां का माहौल पूरी तरह बदल दिया।

रुस्तम राव और बांकेलाल राठौर ने चादर की तरह फैलाकर थाम रखा वो जाल, पीछे से आकर पोतेबाबा की सोफे पर बैठी आकृति के ऊपर डाला और उसके किनारे पूरी ताकत के साथ सोफे के साथ जकड़ दिए।

सोहनलाल जल्दी उठा और पहले से ही एक तरफ रखी नायलोन की मोटी डोरी उठा लाया और सोफे के गिर्द जाल में रस्सी फंसाते हुए डोरी को कसता चला गया।

पोतेबाबा की आकृति छटपटाई।

परंतु वो आजाद नहीं हो सका। पोतेबाबा ने खास कोशिश भी न की आजाद होने की।

सोफे पर मौजूद जाल ऊपर तक उठा हुआ था, जिसकी वजह से, वहां किसी के बैठे होने का आभास होता था। सोहनलाल डोरी बांधकर फारिग हुआ।

पोतेबाबा जाल के बीच सोफे पर बंध चुका था।

"तुम अदृश्यो हो के, म्हारे को डरावे हो।" बांकेलाल राठौर अपनी मूंछों पर हाथ फेरता कह उठा—"अंम थारे को 'वड' दयो।"

जाल में फंसी पोतेबाबा की आकृति के होंठ मुस्कराते दिखे।

"तुम भंवर सिंह।" पोतेबाबा की आवाज उभरी।

"आं हम। मालूम पड़ो तम पीछे के जन्म वालो हो।"

पोतेबाबा का सिर हिला और रुस्तम राव को देखा।

"तुम त्रिवेणी हो। वही त्रिवेणी, जिसका ब्याह पेशीराम की बेटी के साथ हुआ था।" (ये सब बातें विस्तार से जानने के लिए पढ़ें अनिल मोहन के पूर्व प्रकाशित उपन्यास—**'जीत का ताज'**, **'ताज के दावेदार'** व **'कौन लेगा ताज'**।)

"हां बाप आपुन वो ही होएला।" रुस्तम राव गम्भीर स्वर में बोला—"तुम कौन होईला?"

"पोतेबाबा।"

"आपुन ने नेई पेईचाना तेरे को बाप।"

"मैं गुलचंद का दोस्त हुआ करता था, फिर जथूरा की सेवा में चला गया।"

"ओ 'बड' दवागें जथूरा को।" बांकेलाल राठौर अपनी मूंछों पर हाथ फेरता कह उठा।

"आपुन जथूरा को भी नेई जानेला बाप।"

"पूर्वजन्म की बातें इस वक्त तुम लोग भूले हुए हो।" पोतेबाबा के होंठ हिले।

"तम म्हारे को दिखो क्यों ना?" बांकेलाल राठौर ने पूछा।

"मैंने सोने के कलश वाली दवा खा रखी है। उस दवा को जो भी खाता है, वो अदृश्य हो जाता है।"

"म्हारे को दे।"

"वो दवा इस तरह किसी को नहीं दी जा सकती। वैसे भी दवा इस वक्त मेरे पास नहीं है।"

"फिर ठीको कैसे होवे?"

"चांदी के कलश वाली दवा खाकर।"

"यो सोनो-चांदो के कलश क्या होवे?"

"हमारी दुनिया में एक गुप्त जगह पर एक साथ सोने और चांदी के कलश रखे हुए हैं। वहां पर हर कोई नहीं पहुंच सकता। कुछ खास लोगों की पहुंच ही उन कलशों तक है। उन्हीं कलशों के बीच वो दवा रखी जाती है। उस दवा को कलशों के नाम से पहचाना जाता है।" पोतेबाबा का स्वर बेहद शांत था।

"थारो का होवे ईब पोतेबाबा। थारो को तो इसो तरहो, गायबो की मुद्रा में ही बांध के रखो अंम और सुबह-शामो डण्डा बजायो थारे पर। तम म्हारे जगमोहन को परेशानो करो हो।"

"मैं तो जग्गू का भला करना चाहता...।"

"आपुन सब जानेला बाप।" रुस्तम राव बोला—"बोल असली मामला क्या होईला?"

"असल बात वो ही है, जो मैं तुम लोगों को बता चुका हूं।"

"इसो को 'वडना' ही पड़ो हो। यो शराफत से न मानो हो।"

पोतेबाबा की आकृति ने सोहनलाल से कहा।

"गुलचंद। मुझे पहले ही शक था कि तू मेरे से अवश्य कोई धोखेबाजी करेगा।"

"अपना भला चाहता है तो तू सारी बात हमें सच-सच बता दे। हम तेरे को आजाद कर देंगे।"

"आजाद?" पोतेबाबा की आकृति के होंठ मुस्कराते दिखे—"मैं कैद ही कहां हुआ जो तू मुझे आजाद करेगा। तूने अभी पोतेबाबा की ताकतों को पहचाना ही कहां है। मैं जथूरा का खास सेवक यूं ही तो नहीं बन गया।"

"थारी अकड़ अभी तक अकड़ी रही हो।" बांकेलाल राठौर ने पुनः मूंछों पर हाथ फेरा—"अंम थारी अकड़ के 'वड' दयो।"

पोतेबाबा ने बांकेलाल को देखा और मुस्करा पड़ा फिर उसके होंठों से न समझ में आने वाले मंत्र निकले।

चंद सेकंडों तक और अगले ही पल उस पर पड़ा वो जाल उछलकर दूर जा गिरा।

पोतेबाबा खड़ा हो गया।

बांकेलाल राठौर हड़बड़ाकर बोला।

"छोरे ये क्या हो गये हो। यो तो जालो को तिनके की तरह बिखेरो हो।"

"बाप, ये गड़बड़ वाला चक्कर होईला।"

सबकी निगाह धुएं की वजह से नजर आ रही, पोतेबाबा की आकृति पर थी।

"जग्गू।" पोतेबाबा ने गम्भीर स्वर में कहा—"अब ये तो स्पष्ट हो गया कि तुम मेरी बात नहीं मानोगे।"

"नहीं मानूंगा।"

"तो इसका अंजाम पूर्वजन्म की तुम्हारी यात्रा पर खत्म होगा और वहां जथूरा के सेवक तेरे को मार देंगे। ये बात तो तू जानता ही है कि वहां हथियारों से लड़ाई नहीं लड़ी जाती। वहां शक्तियों का बोलबाला है।"

"मैं तेरी बातों से डरने वाला नहीं।"

"मैं तेरे को आगाह कर रहा हूं, डरा नहीं रहा। मैं जानता हूं तू डरने वालों में से नहीं है।"

जगमोहन की एकटक निगाह पोतेबाबा की आकृति पर थी।

"अभी भी वक्त है संभल जा।"

"बाप।" रुस्तम राव बांकेलाल राठौर से बोला—"धमकी दे रिएला है।"

"थारी यो हिम्मत, 'वड' दवांगे पोतो बाबे को।" कहने के साथ ही बांकेलाल राठौर पोतेबाबा की आकृति की तरफ झपटा।

"नहीं।" जगमोहन ने रोकना चाहा।

परंतु तब तक बांकेलाल राठौर पोतेबाबा की आकृति के पास पहुंच चुका था।

तभी सबने पोतेबाबा की रेखाओं जैसी बांह को आगे बढ़ते देखा। फिर देखा पोतेबाबा ने उसकी बांह को पकड़ा और एक तरफ झटक दिया। बांकेलाल लड़खड़ाकर तीन-चार कदम दूर जा गिरा।

"मार दयो म्हारे को।" बांकेलाल राठौर संभालता कह उठा—"यो पोतेबाबा तो बोत पॉवरफुल हौवे।"

रुस्तम राव की नीली आंखों में क्रोध के भाव उभरे। वो सावधानी से पोतेबाबा की तरफ बढ़ने लगा।

पोतेबाबा की धुएं की आकृति में होंठ मुस्कराहट में फैलते दिखे।

तभी जगमोहन आगे बढ़ा और रुस्तम राव की बांह थाम ली।

"रहने दो। उसकी तरफ मत जाओ।" जगमोहन बोला।

"आपुन देखेगा कि इसमें कितना दम होईला।" रुस्तम राव गुर्रा उठा।

"मैं देख रहा हूं, इसमें दम है। इसके शरीर की ताकत को मैं देख चुका हूं।"

"आपुन भी चैक करेला बाप।"

"नहीं, तुम...।"

तभी सबकी निगाह बांकेलाल राठौर पर ठहर गई।

बांकेलाल राठौर के हाथ में रिवॉल्वर दबी नजर आ रही थी।

"थारे में बोत ताकतो हौवे, पर म्हारी रिवॉल्वरों थाड़ी खोपड़ी खोल दयो पोतोबाबा।"

पोतेबाबा के होंठ मुस्कराहट के रूप में फैले रहे।

"गोली मत चलाना।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"क्यों, यो थारा बाप लगो के?" बांकेलाल राठौर ने कड़वे स्वर में कहा।

"मेरी तरफ से बम का गोला मारो। मुझे क्या?" जगमोहन सकपकाकर कह उठा।

तभी बांकेलाल राठौर ने ट्रेगर दबाया।

एक बार, दो बार, तीन बार।

परंतु ट्रेगर दबा ही नहीं।

गोली चली ही नहीं।

"यो रिवॉल्वर तो औरत की तरहो धोखा देवे, औरत भी मौके पर आकर दगो दे जावें।" उसने पुनः रिवॉल्वर का ट्रेगर दबाना चाहा।

परंतु कोई फायर नहीं हुआ।

"छोरे।" बांकेलाल राठौर ने भिंचे स्वर में कहा—"जरो तम ट्राई करो। खोपड़ी में फायर करो हो।"

जगमोहन ने उसी पल रुस्तम राव की बांह छोड़ दी।

रुस्तम राव ने रिवॉल्वर निकाली और पोतेबाबा की आकृति की तरफ करके ट्रेगर दबा दिया।

एक बार, दो बार, तीन बार।

परंतु ट्रेगर नहीं दबा।

"थारो भी नेई दबो हो। म्हारो भी नेई दबो हो।" बांकेलाल राठौर ने अपने हाथ में दबी रिवॉल्वर का ट्रेगर पुनः दबाना चाहा।

कोई फायदा नहीं हुआ।

फिर पोतेबाबा की आवाज उसके कानों में पड़ी।

"कोई और कोशिश हो तो वो भी कर सकते हो।"

"अब नहीं तो फिर सही, लेकिन कभी तो तुम हमारे चंगुल में फंसोगे।" जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा।

"तुम लोग कभी भी मुझे नहीं फांस सकते। साधारण इंसान हो तुम सब। मुझ पर किसी हथियार का असर नहीं होगा। मैं खुद को सुरक्षित करके ही, इस दुनिया में आया हूं। यहां कोई भी मेरा मुकाबला नहीं कर सकता।"

"अम थारे को 'वड' दवांगे।" बांकेलाल राठौर गुर्रा उठा।

"जग्गू इससे तेरे को समझ आ जानी चाहिए कि जथूरा की ताकत क्या है। उसके एक सेवक का तुम लोग कुछ नहीं बिगाड़ पा रहे तो, उसका क्या बिगाड़ोगे। वो तुम्हें चींटी की तरह मसल देगा।" पोतेबाबा ने हंसकर कहा।

"अंम थारे बाप को भी 'वड' दवांगे।"

पोतेबाबा ने जगमोहन से कहा।

"सोच लेना जग्गू। अच्छा ये ही है कि तुम जथूरा के कामों को खराब मत करो। उसके रास्ते से हट जाओ।" कहने के साथ ही पोतेबाबा की आकृति पलटती दिखाई दी और दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

अगले ही पल वो आकृति आंखों के सामने से गायब हो गई।

वहां पर धुआं नहीं था, जिसमें फंसकर, पोतेबाबा की आकृति झलकती। खामोशी सी आ ठहरी वहां।

"छोरे।" बांकेलाल राठौर ने गहरी सांस लेकर अपनी रिवॉल्वर जेब में रखते कहा—"तमंचे को रख लयो भीतर। गोली चलो तो म्हारी छाती के भीतरो जा धंसो। ठंडो-ठंडो रख लयो भीतरो।"

रुस्तम राव ने रिवाल्वर जेब में रख ली।

"बोत बुरो हौयो। पोतो बाबा हाथों में आकर भी निकल गयो।"

रुस्तम राव गम्भीर था।

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

"हम पोतेबाबा पर काबू नहीं पा सकते।" सोहनलाल बोल पड़ा।

"सच में नहीं पा सकते।"

"वो ताकतें रखता है, जबकि हम उसे अभी तक हल्के ले रहे थे।"

"और वो हमें रोकने की चेष्टा कर रहा है।" जगमोहन बोला—"हम पर अपनी ताकतें इस्तेमाल नहीं कर रहा।"

"क्यों?"

"इसकी वजह वो ही जानता होगा कि अपनी शक्तियां वो हम पर इस्तेमाल क्यों नहीं कर रहा। वो हम सब के पूर्वजन्म के नाम जानता है। इसलिए उसकी कही हर बात को सच मानना होगा। उस पर गोली चलाने लगो तो वो रिवॉल्वरों के ट्रेगर जाम कर देता है। उसे जाल फेंककर कैद करो तो अपनी ताकतों से वो जाल को बेकार कर देता है। उसे पकड़ने की चेष्टा करो तो सामने वाले को इस तरह छटक देता है, जैसे वो खिलौना हो।" जगमोहन का स्वर गम्भीर था।"

"तो वो तुम पर अपनी ताकत क्यों नहीं आजमा रहा?"

"पता नहीं, क्यों?"

"वो चाहे तो तुम्हें आसानी से खत्म कर सकता है।" सोहनलाल ने कहा—"परंतु ऐसा नहीं कर रहा वो।"

जगमोहन सिर हिलाकर रह गया।

"आपुन उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते बाप।" रुस्तम राव बोला—"वो पौंचा हुआ है।"

"छोरे म्हारी तो बेईज्जती हो गयो। म्हारे को पकड़ोकर इस तरहों उछाल दयो कि अम खिलौना हौवो।" बांकेलाल राठौर अपनी मूंछों पर हाथ फेरता कह उठा—"वो बात ही पॉवरफुल हौवे। पर अंम उसी को 'वड' दयो।"

रुस्तम राव ने जगमोहन से बोला।

"तुम्हें जथूरा द्वारा किए जाने वाले हादसों का पूर्वाभास कौन कराईला बाप?"

"मैं नहीं जानता।" जगमोहन बोला—"पोतेबाबा कहता है कि वो जथूरा की कोई दुश्मन शक्ति है।"

"और तुम्हें उस दुश्मन शक्ति का नेई पता होईला?"

"नहीं।"

"रगड़ा है बाप। आपुन चारों का इकट्ठा हो जाना साबित करेला बाप कि पूर्वजन्म का सफर पक्का होईला।"

"ये जरूरी नहीं।" सोहनलाल बोला।

"जरूरी होईला बाप। तभी तो आपुन लोग मिलेला।"

"छोरे थारी बात फिट हौवे म्हारो दिमागो में।" बांकेलाल राठौर ने गम्भीर स्वर में कहा।

"देवराज चौहान को दिल्ली से बुलाईला बाप।"

"नहीं, मैं उसे परेशान नहीं करना चाहता।" जगमोहन ने इंकार में सिर हिलाया।

"परेशानी की बात नेई, ये जरूरी होईला।"

"छोरा ठीको ही कहो हो। देवराज चौहानो को बुला लयो। मामलो बोत गड़बड़ो हौवो।"

जगमोहन ने सोहनलाल को देखा।

"मेरे ख्याल में तो देवराज चौहान को अब तक बुला लेना चाहिए था।" सोहनलाल कह उठा।

"ठीक है, तुम सबकी यही मर्जी है तो मैं देवराज चौहान को फोन पर सारे हालात बता देता हूं। उसके बाद...।"

जगमोहन अपनी बात पूरी न कर सका।

उसी पल उसके मस्तिष्क में बिजली कौंधी। दोनों हाथों से उसने सिर थाम लिया। आंखें बंद होती चली गईं फिर उसके मस्तिष्क में कुतुबमीनार चमका। उसके बाद राजीव चौक (कनॉट प्लेस) का मैट्रो स्टेशन दिखा। राजीव चौक के नाम की पट्टी लगी हुई थी। मोना चौधरी आती दिखी, जो कि सैंट्रल पार्क के रास्ते की तरफ से आ रही थी। उसने पीली टी-शर्ट और घुटनों को ढांपती पैंसिल पैंट पहनी हुई थी। चैकिंग प्वाइंट से पार करके आगे बढ़ी फिर उसने विंडो से यात्रा का टोकन लिया और स्टेशन के भीतरी हिस्से में पहुंच गई। सामने बड़ी-सी घड़ी पर 11.30 का वक्त हो रहा था। सामने ही द्वारका जाने वाली ट्रेन आई। लोग चढ़ रहे थे। एनाउंसर की रुक-रुककर आवाजें आ रही थीं। परंतु मोना चौधरी की निगाह हर तरफ घूम रही थी फिर वो ठीक सामने जाती सीढ़ियों की तरफ बढ़ी। तभी जगमोहन ने अपने को देखा। बीस कदम पीछे वो सावधानी से मोना चौधरी के पीछे जा रहा था। उसका एक हाथ जेब में था। सीढ़ियां चढ़ती मोना चौधरी हर तरफ देख रही थी, परंतु पीछे आते जगमोहन को न देख सकी थी। सीढ़ियां चढ़कर स्टेशन के बीच बने छोटे-से पुल पर पहुंची मोना चौधरी और दाईं तरफ इंद्रप्रस्थ की तरफ जाने वाली मैट्रो की दिशा में बढ़ी। ठीक इसी पल जगमोहन

की बगल से कोई तेजी से निकला और आगे बढ़ता चला गया। वो उसके और मोना चौधरी के बीच में आ गया था। फिर जगमोहन ने बीच में आ जाने वाले व्यक्ति को रिवॉल्वर निकालते देखा। दो पल में हुआ ये सब। जगमोहन समझ गया कि वो ही व्यक्ति मोना चौधरी पर गोली चलाने जा रहा है। जगमोहन ने फुर्ती से रिवॉल्वर निकाली कि गोली चलाने वाले व्यक्ति पर फायर कर सके कि तभी मोना चौधरी के आगे, सोहनलाल इस तरफ आता दिखाई दिया। वो हाथ के इशारे से जगमोहन को मना कर रहा था कि गोली मत चलाए। वो चीखकर भी कुछ कह रहा था।

और जगमोहन के मस्तिष्क में उठी बिजली शांत पड़ती चली गई।

वो दोनों हाथों से सिर को थामे वैसे ही खड़ा रहा।

बांकेलाल रुस्तम राव के पास आ गया।

सबकी निगाह जगमोहन पर थी।

"छोरे। यो का हो गयो म्हारे जगमोहन को?"

"इसी तरह इसे पूर्वाभास होईला बाप।"

"थारो को कैसो पतो?"

"सुबह जगमोहन बताईला कि पूर्वाभास के टाइम, ये सब होईला।"

"ईब इसो को का पूर्वोभासो हो गयो हो?"

"ये बताईला बाप।"

जगमोहन ने सिर से हाथ हटाए और गहरी सांस लेकर आंखें खोल दीं। चेहरे पर पसीना चमक रहा था। वो आगे बढ़ा और सोफे पर जा बैठा। उसके चेहरे पर अजीब से भाव नजर आ रहे थे।

"का हो गयो थारे को?" बांकेलाल राठौर पास बैठता कह उठा—"बुरो सपणें देखो हो का?"

"कुतुबमीनार। राजीव चौक का मैट्रो स्टेशन।"

"दिल्ली।" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"हां।" जगमोहन ने गम्भीरता से सिर हिलाया—"समय 11.30। वहां मोना चौधरी दिखी। कोई मोना चौधरी को गोली मारने जा रहा है। गोली मारने वाला उसके पीछे था। मेरे पास से ही वो निकला था—तुम-तुम भी वहां थे सोहनलाल।"

"मैं?"

"हां तुम भी वहीं थे। तुम...।"

"यो तो ऐसो सबो कुछ बतायो जैसो फिल्म में देखो हो।" बांकेलाल राठौर कह उठा।

"हां। वो फिल्म ही थी, जो मेरे मस्तिष्क में देखी।" जगमोहन व्याकुल-धीमे स्वर में कह उठा।

"तारीख कौन-सी है?" सोहनलाल ने पूछा।

"तब मुझे वहां लगी घड़ी दिखी थी। 11.30 हुए थे उस घड़ी में। स्टेशन में बहुत लोग थे। वो दिन का वक्त था। इस वक्त शाम हो रही है, इसका मतलब वो कल का दिन है। आने वाला कल का दिन।" जगमोहन बोला।

"ओह।"

"वो...वो मोना चौधरी को मारने जा रहा था। हमें...हमें दिल्ली जाना होगा।" जगमोहन कह उठा।

"आज रात की फ्लाइट से चलते हैं। मैं टिकटें बुक करा लेता हूं।" सोहनलाल बोला—"तुम मोना चौधरी को मरने से बचाना चाहते हो?"

"हां, क्योंकि मोना चौधरी को मारना, जथूरा की कोशिश है और जथूरा की कोशिश को मैंने नाकाम करना है।" जगमोहन गम्भीर स्वर में कह उठा—"वैसे मुझे मोना चौधरी से ऐसा कोई मतलब नहीं, वो जिंदा रहें या मरें। परंतु मैं उसे इसलिए बचाऊंगा कि उसकी हत्या के बारे में मेरे को पहले ही पता चल गया है।"

"मोन्नो चौधरी से मिल्ले बोत देर हो गई म्हारे को, क्यों छोरे?"

"हां बाप।" रुस्तम राव के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"तुम जाने क्यों मुझे रोक रहे थे उस पर गोली चलाने को।" जगमोहन बोला—"वो कौन था?"

"मुझे क्या पता, अभी वो वक्त आया नहीं कि तुम्हें बता सकूं वो कौन था।" सोहनलाल ने कहा।

"वो मेरे पास से निकला था।" जगमोहन होंठ सिकोड़कर कह उठा—"मैं उसका चेहरा नहीं देख सका। पीठ ही देखी...।"

"म्हारी बात सुन।" बांकेलाल ने कहा—"थारे को सोहनलालो रोको हो, गोली चलाने से।"

"हां।"

"ईब अपणों दिमाग में भर लयो कि थारो को उसो पर गोली नेई चलानी।"

"मैं भी कुछ ऐसा ही सोच रहा हूं। सोहनलाल नहीं चाहता कि मैं उस पर गोली चलाऊं तो अवश्य कोई बात होगी। लेकिन मैं उसे कुछ न कहूंगा तो वो मोना चौधरी पर गोली चला देगा। जथूरा का हादसा सफल हो जाएगा।"

"यो बात तो होवे ही।"

"ये सब बातें।" सोहनलाल ने कहा—"मौके पर सोची जानी चाहिए। इस वक्त कोई फायदा न होगा।"

"मुझे मोना चौधरी से पहले ही बात कर लेनी चाहिए। मैं उसके पीछे नहीं रहूंगा।"

"उससे क्या होगा?"

"मैं मोना चौधरी को सतर्क करूंगा कि कोई उसे मारने की कोशिश करने वाला है।"

"वो थारी बात की परवाह न करो हो।"

"मेरे ख्याल में वो मेरी बात गम्भीरता से सुनेगी। मैं उसे मैट्रो स्टेशन की उन सीढ़ियों की तरफ ही नहीं जाने दूंगा। जहां उस पर गोली चलाई जानी है। मैं उस वक्त मोना चौधरी की जगह ही बदल दूंगा।"

"अंम भी थारे संग दिल्ली चलो हो।"

"बेशक चलो।" जगमोहन ने कहा—"हमें ये हादसा हर हाल में रोकना है।"

"कोशिश तो पूरो करो हो अंम—आगे भगवान मालिको हौवे।"

सोहनलाल ने खामोश बैठे रुस्तम राव से कहा।

"तुम क्यों चुप हो रुस्तम?"

"बाप, आपुन को कुछ ठीक नेई लग रेईला।"

"क्या मतलब?"

"इधर आपुन सब लोगों का इकट्ठा होना। उधर कल मोना चौधरी के पास पौंचना। पोतेबाबा ठीक कहेला कि आपुन लोग पूर्वजन्म की धरती पर फिर जाईला। आपुन लोग नई मुसीबत में फंसेला बाप।"

"तुम पोतेबाबा की बात पर भरोसा कर रहे हो।" सोहनलाल ने कहा।

"क्यों नेई करेला बाप।"

"हम उसे नहीं जानते—वो।"

"उसे पूरी तरह झूठा मत समझेला बाप। आधी बातें तो वो सच कहेला ही।"

"छोरे। तू पूर्वोजन्मो के सफर की परवाह क्यों करेला। इधर जथूरा को 'वड' देगा अंम।"

"मैं रुस्तम की बात से सहमत हूं।" जगमोहन ने कहा—"मेरी हरकतें पूर्वजन्म के सफर की तैयारी हो सकती हैं। लेकिन इस बारे में हमें ज्यादा नहीं सोचना है। हमें सोचना है कल के बारे में। मोना चौधरी को बचाने के बारे में।"

"मैं प्लेन में टिकटें बुक कराता हूं। ट्रेवल एजेंसी वाला अपना यार है। उसे कहता हूं।" सोहनलाल ने कहा।

"म्हारी भी करा लयो। भूलो मत जाइयो।"

□ □

मोमो जिन्न ने अंगड़ाई ली और सामने बैठे लक्ष्मण दास को देखा।

लक्ष्मण दास उसे ही देख रहा था।

चार फुटा मोमो जिन्न उठा और टहलने लगा फिर कह उठा।

"जथूरा महान है। वो अद्भुत है। उसकी शक्तियां असीमित हैं। उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। उसके द्वारा रचित हादसे क्रूरता का सबसे बड़ा उदाहरण हैं। वो बहुत तरक्की करेगा और भी आगे जाएगा।"

"तुम क्या कह रहे हो। मेरी तो समझ में कुछ भी नहीं आ रहा।" लक्ष्मण दास बोला।

"तू सिर्फ इतना कह कि जथूरा महान है।"

"क्यों कहूं?"

"कह।" मोमो जिन्ने ने उसे घूरा।

"जथूरा महान है।"

"शाबास।" मोमो जिन्न मुस्कराया—"जथूरा का सेवक बनने के सारे गुण तुझमें मौजूद हैं। मैं तुझे अपने साथ जथूरा की नगरी में ले जाऊंगा। वहां तुझे किले के प्रवेश द्वार की नौकरी दिलवाऊंगा। एक तरफ बैठा तू ये ही कहा करेगा कि जथूरा महान है। खुश हो जाएगा जथूरा, तुझ जैसा सेवक पाकर।"

"ये क्या नौकरी हुई। मैं यहीं खुश...।"

"तू मेरा गुलाम है।" मोमो जिन्न गुर्रा उठा—"जो मैं कहूंगा, वो तू मानेगा, वरना तेरी जान ले लूंगा।"

लक्ष्मण दास ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

अगले ही पल मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा।

"शाम के पांच बज रहे हैं।" लक्ष्मण दास कह उठा—"देवराज चौहान मेरे फोन का इंतजार कर रहा होगा। मैंने कल उसे फोन करके कहा था कि सुबह उसे मोना चौधरी की खबर दूंगा। परंतु अब तो शाम हो गई।"

"जल्दी मत कर। वरना देवा को तेरे पे शक हो जाएगा।"

"ओह।"

फिर लक्ष्मण दास ने मोमो जिन्न को देखा जो एकाएक ठिठक पड़ा था और आंखें बंद करके इस तरह सिर हिलाने लगा जैसे किसी की बात सुन रहा हो।

आधा मिनट यही सब रहा फिर मोमो जिन्न आंखें खोलकर बोला।

"तेरे लिए फरमान आ गया है।"

"फरमान? कहां से आ गया?"

"जथूरा के सेवक ने अभी मुझसे बात की। वो कहता है कि तू देवा को फोन पर कह, कल सुबह 11.30 पर मिन्नो राजीव चौक के मैट्रो स्टेशन पर आएगी।"

"देवराज चौहान को ये बात कह दूं?"

"कह।"

"मोना चौधरी कल वहां न पहुंची तो देवराज चौहान मेरी गर्दन पकड़ लेगा।"

"वो आएगी।"

लक्ष्मण दास ने तुरंत सामने रखा फोन उठाया और देवराज चौहान के नम्बर मिलाने लगा।

मोमो जिन्न उसके सामने कुर्सी पर आ बैठा।

लक्ष्मण दास घबराया हुआ था। मोमो जिन्न से उसे घबराहट होती थी, परंतु ये था कि पीछा छोड़ने को तैयार नहीं था। बात-बात पर उसे गुलाम कह रहा था। लक्ष्मण दास सोचता था कि इतना सब कुछ होने के बाद भी ये पीछा छोड़ दे तो बड़ी बात होगी। अच्छी-भली जिंदगी बीत रही थी, ये जाने कहां से आ गया।

दूसरी तरफ बेल होने लगी। फिर देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"देवराज चौहान, मैं लक्ष्मण दास।" लक्ष्मण दास जल्दी से बोला—"अभी सपन चड्ढा के मैनेजर का फोन आया था।"

"कोई नई बात?"

"मोना चौधरी कल किसी से मिलने राजीव चौक मैट्रो स्टेशन पहुंचेगी। दिन के 11.30 बजे।"

"मैट्रो स्टेशन के भीतर के बाहर?"

"भीतर के बाहर?" कहते हुए लक्ष्मण दास ने मोमो जिन्न को देखा तो मोमो जिन्न ने भीतर का इशारा किया—"स्टेशन के भीतर।" लक्ष्मण दास फौरन कह उठा—"ये तुम देख लेना कि वो कहां पर होगी।"

"खबर पक्की है?"

"मेरे खयाल में तो पक्की है। सपन चड्ढा का मैनेजर झूठ क्यों कहेगा। मेरे से पैसे लेता है खबर देने के।"

"ठीक है।" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"उसे मार देना।" लक्ष्मण चड्ढा कह उठा।

"तुम्हारा काम हो जाएगा। निश्चिंत रहो।" कहने के साथ ही उधर से देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया था।

लक्ष्मण दास ने फोन बंद करके रखा। मोमो जिन्न को देखा।

"तेरे गुण रोज के रोज बढ़ते जा रहे हैं, देखना एक वक्त ऐसा आएगा, तू जथूरा का महान सेवक बन जाएगा।"

लक्ष्मण दास खामोश रहा।

"चलता हूं, तेरे यार सपन चड्ढा से भी बात करनी है। घूम जा।"

लक्ष्मण दास उठा और घूमते हुए खड़े-खड़े चक्कर काटा, जब सामने को देखा तो मोमो जिन्न को वहां से गायब पाया। लक्ष्मण दास ने लम्बी सांस ली फिर फोन उठाकर सपन चड्ढा के नम्बर मिलाने लगा।

☐ ☐
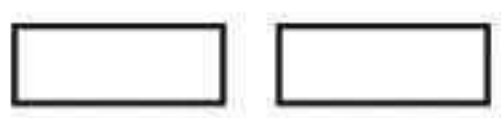
सपन चड्ढा दिन-भर से ही घर में था। क्योंकि मोमो जिन्न ने उसे कहीं भी जाने को मना किया था। मन-ही-मन मोमो जिन्न को ढेरों गालियां देता, सपन चड्ढा उखड़ा हुआ था कि उसका फोन बजा।

"हैलो।"

"सपन, मैं लक्ष्मण दास।"

"तू।" सपन चड्ढा ने लम्बी-गहरी सांस ली—"किस मुसीबत में फंसा दिया तूने।"

"मुसीबत, मतलब कि मोमो जिन्न?"

"वो ही तो, उसी की बात कर रहा हूं।"

तभी सपन चड्ढा के पास तीन इंच का मोमो जिन्न प्रकट हुआ और बातें सुनने लगा।

"मैंने भी उसी के वास्ते तेरे को फोन किया है। अभी वो मेरे पास था, अब तेरे पास आने वाला है।"

"मेरे पास, जाने इस मुसीबत से कब पीछा छूटेगा। हमें गुलाम कहता है।" सपन चड्ढा बोला—"दिल तो करता है कि पकड़कर इसे इतना मारूं कि उठने के काबिल ही न रहे।"

तीन इंच के मोमो जिन्न ने उसे देखते हुए गर्दन हिलाई।

"मेरे से देवराज चौहान को फोन करवाया कि मोना चौधरी कल सुबह 11.30 बजे राजीव चौक मैट्रो स्टेशन पहुंचेगी।"

"ऐसे कैसे वो पहुंचेगी?"

"मुझे क्या पता कि मोमो जिन्न के मन में क्या है?" लक्ष्मण दास की आवाज कानों में पड़ी।

"इससे पीछा छुड़ाने की कोई तरकीब बता।"

"मैं क्या बताऊं, फंसा पड़ा हूं। कुछ कहता हूं तो धमकी देता है, कि नंगा करके सड़क पर घुमा देगा।"

"क्या पता धमकी यूं ही हो। तू एक बार विद्रोह करके देख।"

"तू कर ऐसा, मुझमें तो हिम्मत नहीं है।"

"मुझमें हिम्मत होती तो तेरे को करने को क्यों कहता। कहता है मैं हमेशा के लिए उसका गुलाम हूं।"

"मुझे भी ऐसा ही कहता है। उल्लू का पट्ठा।"

तीन इंच के मोमो जिन्न ने पुन सिर हिलाया।

"अब क्या करें?"

"वो जो कहता है, करेंगे और मौके का इंतजार भी करेंगे कि कब उसकी गर्दन तोड़ने का मौका हमें मिले।"

"वो बहुत चालाक है।"

"हरामी है साला।"

"कोई रास्ता सोच, इसके हाथों से बचने का। मैं उसे और नहीं सह सकता।"

"मुझे कोई रास्ता मिला तो बताऊंगा। तू भी सोचता रह बंद करता हूं। वो आने वाला होगा।" कहकर सपन चड्ढा ने फोन बंद किया और वो बड़बड़ा उठा—'मोमो जिन्न को तो सबक सिखाऊंगा।'

उसी पल तीन इंच का मोमो जिन्न बड़ा होता चार फुट का हो गया।

उस पर नजर पड़ते ही सपन चड्ढा उछल पड़ा।

"तुम?" उसके होंठों से निकला।

"मैं उल्लू का पट्ठा हूं।" मोमो जिन्न प्यार से बोला।

"म...मैंने कब कहा?" सपन चड्ढा हड़बड़ाया।

"तू मेरी गर्दन तोड़ेगा।"

"तु...तुमने गलत सुना है।"

"अपने यार को बोलता है कि मेरे से विद्रोह करे। भड़काता है उसे।"

"म...मैंने नहीं कहा।" सपन चड्ढा का चेहरा सफेद हो गया।

"तू मुझे सबक सिखाएगा।"

"व...वो तो यूं ही गुस्से में कह दिया था।"

"मैं—मुसीबत हूं।"

सपन चड्ढा उसे देखता रहा। कुछ कह न सका। घबराया हुआ था वो।

मोमो जिन्न आगे बढ़ा और कुर्सी पर बैठता, प्यार-भरे स्वर में कह उठा।

"तेरे को शिक्षा देनी पड़ेगी।"

"शिक्षा?" सपन चड्ढा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"हां, तेरे में दूसरों के लिए आदर भाव जरा भी नहीं है, जबकि मैं सोचता था कि तेरे में जथूरा का सेवक बनने की काबिलीयत है।"

"मैं जथूरा का सेवक क्यों बनूंगा। मेरा अपना बिजनेस है। मैं...।"

"जथूरा महान है। उसका सेवक बनना अपने आप में गर्व की बात है।"

सपन चड्ढा फंसे अंदाज में मोमो जिन्न को देखता रहा।

"बोल, जथूरा महान है।"

"होगा।" सपन चड्ढा ने बेचैनी से पहलू बदला—"मुझे क्या?"

"जो मैंने कहा है बोल, वरना नंगा करके अभी बाहर सड़क पर घुमाऊंगा।" मोमो जिन्न गुस्से से कह उठा।

"ज...जथूरा महान है।" सपन चड्ढा जल्दी से कह उठा।

"इंसान तू बुरा नहीं। तेरे को पढ़ाने की जरूरत है। धीरे-धीरे सीख जाएगा तू।"

सपन चड्ढा चुप।

"मिन्नो को फोन कर।"

"म...मोना चौधरी को?"

"हां। वो ही। उसे कह कि तेरे को पता चला है देवा कल 11.30 पर राजीव चौक के मैट्रो स्टेशन आएगा।"

"क्या मतलब?"

"देवा और मिन्नो में झगड़ा करवाकर, एक को खत्म करवाना है।"

"क्यों?"

"ऐसा होते ही जथूरा पर मंडराने वाले खतरे के बादल हट जाएंगे। नहीं तो बहुत बड़ा खतरा आने वाला है।"

"कैसा खतरा?"

मोमो जिन्न ने सपन चड्ढा को घूरा।

"करता हूं।" सपन चड्ढा ने कहकर जल्दी से अपना फोन उठाया।

"तू सवाल बहुत पूछता है। एक बार तेरे को नंगा करके, बाहर सड़क पर...।"

"कर तो रहा हूं फोन। तू ऐसी बात क्यों करता है?"

जल्दी ही सपन चड्ढा की मोना चौधरी से बात हो गई।

"कहो।" मोना चौधरी की आवाज कानों में पड़ी।

"मोना चौधरी, मुझे पता चला है कि कल 11.30 पर देवराज चौहान राजीव चौक मैट्रो स्टेशन पर होगा।"

"कहां पर?"

"ये तो पता नहीं, परंतु खबर पक्की है कि देवराज चौहान 11.30 पर वहां आएगा।"

"ठीक है। मैं उसे ढूंढ़ लूंगी।" मोना चौधरी का कठोर स्वर कानों में पड़ा—"वो बचेगा नहीं कल के बाद।"

सपन चड्ढा ने फोन बंद किया। गहरी सांस ली और मोमो जिन्न से बोला।

"अब तो खुश है न—मैंने फोन कर दिया।"

"मैं कभी भी खुश या दुखी नहीं होता।"

"क्यों?"

"क्योंकि मेरी कोई इच्छा नहीं है। जथूरा ने मेरी इच्छाशक्ति को खत्म कर रखा है। मैं सिर्फ जथूरा का सेवक हूं और मैंने जो भी करना है जथूरा की खातिर करना है। वो मेरा मालिक है। जथूरा महान है।"

"तूने जो कहा मैंने कर दिया, अब तो मुझे छोड़ दे।"

"तू मेरा गुलाम है। जिस पर मेरी छाया पड़ जाती है, वो मेरा गुलाम बन जाता है। तू अब मुझसे दूर नहीं जा सकता।"

"तूने तो वादा किया था कि इस काम के बाद तू मुझे छोड़ देगा।"

"तू बेवकूफ है जो मेरे वादे पर विश्वास कर लिया। मेरे पास इच्छा नहीं तो वादा कैसा?"

"मतलब कि तेरे शब्दों की कोई कीमत नहीं?"

"मुझे सिर्फ जथूरा ही नजर आता है। मेरे कानों में उसका आदेश रहता है। बस, यही मेरा जीवन है।"

"तू कमीना है।"

"मैंने पहले ही कहा है कि तेरे में शिक्षा की कमी है, इंसान तू बुरा नहीं।"

सपन चड्ढा जवाब में दांत पीसकर रह गया।

जगमोहन, रुस्तम राव, बांकेलाल राठौर और सोहनलाल दिल्ली पहुंचे।

रात के 10.45 हो रहे थे।

"करोलबाग के होटल में चलते हैं।" सोहनलाल बोला—"वहां का मैनेजर मुझे पहचानता है।"

"म्हारे होतो हुए तंम होटल में ठहरो। म्हारी मूंछों कटवाओगे क्या?" बांकेलाल राठौर बोला—"थारे को पूसा रोड की शानदार कोठी में रुकवाओ। उधर नौकर भी हौवो और नौकरानी भी।"

वे लोग पूसा रोड, कोठी पर पहुंचे तो 11.45 हो रहे थे।

"आपुन तो अब जमके नींद मारेला बाप।" रुस्तम राव बोला।

कोठी में नौकर थे। उनकी जरूरतों को पूरा करने लग गए।

जगमोहन सोहनलाल के पास आकर गम्भीर स्वर में कह उठा।

"मैं सोच रहा हूं कि मोना चौधरी से रात में ही मिलकर उसे सतर्क कर दूं।"

"उसका ठिकाना कहां है?" सोहनलाल ने अजीब निगाहों से उसे देखा।

"पारसनाथ का रेस्टोरेंट जानता हूं। उसके माध्यम से मोना चौधरी से बात की जा सकती है।"

"मुझे ये ठीक नहीं लगता।" सोहनलाल ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"क्यों?"

"मोना चौधरी तेरी बात पर जरा भी विश्वास नहीं करेगी, बल्कि वो तेरी हंसी उड़ाएगी।"

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"कल देखेंगे कि राजीव चौक, मैट्रो स्टेशन पर क्या किया जा सकता है।" सोहनलाल बोला।

"लेकिन मैं एक बार पारसनाथ से मिलना चाहता हूं। मोना चौधरी मेरी बात का बेशक यकीन न करे, परंतु सतर्क तो हो जाएगी।"

"कोशिश बेकार होगी। फिर भी तुम जो करना चाहते हो, कर लो। मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।"

जगमोहन और सोहनलाल पारसनाथ के रेस्टोरेंट पहुंचे तो रात के 12 बज रहे थे। रेस्टोरेंट बंद किया जा रहा था। उन्हें डिसूजा मिल गया, जो एक टेबल पर बैठा खाना खा रहा था। एक कर्मचारी उन्हें वहां तक छोड़ गया। खाना खाते डिसूजा ने उन्हें देखा तो उसकी निगाह जगमोहन पर जा टिकी।

"मैंने तुम्हें कहीं देखा है।" डिसूजा बोला।

"जरूर देखा होगा। मैं जगमोहन हूं।"

"देवराज चौहान का साथी?" उसके होंठों से निकला। वो सतर्क दिखने लगा था।

जगमोहन ने सिर हिलाया।

"ये?" डिसूजा का इशारा सोहनलाल की तरफ था।

"सोहनलाल।"

"नाम सुन रखा है। लेकिन रात के इस वक्त तुम यहां क्यों आए हो?"

"पारसनाथ से मिलना है।"

"अब तो मुलाकात नहीं हो सकती।" डिसूजा ने इंकार में सिर हिलाया—"सर तो नींद में हैं।"

"नींद में हैं तो उठा दो। मुझसे ड्रामा मत करो।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

"काम क्या है?"

"तुमसे नहीं कहा जा सकता। पारसनाथ को खबर करो कि हम मिलना चाहते हैं।"

डिसूजा ने जेब से फोन निकाला और नम्बर मिलाते हुए वहां से दूर हो गया।

बीस सेकंड में ही बात करके पास आ गया और खाने पर पुनः बैठता हुआ कह उठा।

"कुछ खाना हो तो कह दो।"

"नहीं।"

दो मिनट ही बीते कि पारसनाथ आता दिखा। उसने नाइट सूट पहन रखा था।

जगमोहन और सोहनलाल खड़े हो गए।

पास आकर पारसनाथ ने दोनों से हाथ मिलाया और खोज भरी निगाहों से उन्हें देखा।

"तुम दोनों को यहां देखकर मुझे अजीब सा लग रहा है।" पारसनाथ बोला।

"ज्यादा अजीब तो नहीं लगना चाहिए।" जगमोहन ने कहा—"तुमसे खास बात करनी है।"

"आओ, उस तरफ टेबल पर बैठते हैं।"

तीनों एक टेबल पर जा बैठे।

पारसनाथ दोनों से, ये सोचकर सतर्क था कि ये देवराज चौहान का फैलाया कोई चक्कर न हो।

"तुम नाइट सूट के पायजामे में रिवॉल्वर रखकर नींद लेते हो।"

"आधी रात को तुम जैसे मेहमान आएं तो, रिवॉल्वर को साथ रख लेना ठीक होता है।" पारसनाथ बोला।

"मैं तुमसे बात करने आया हूं। निश्चिंत रहो मेरी तरफ से।"

पारसनाथ जगमोहन और सोहनलाल को देखने लगा।

"मैं इन दिनों अजीब सी स्थिति में फंसा हुआ हूं।" जगमोहन गम्भीर स्वर में कह उठा—"मुम्बई से सीधा, तुम्हारे पास ही आ रहा हूं। जो बात मैं तुमसे करना चाहता हूं, उसके लिए, सब बताना जरूरी है, तभी तुम मेरी बात समझोगे।"

पारसनाथ का पूरा ध्यान जगमोहन पर था।

"कुछ दिनों से मुझे पूर्वाभास हो रहा है। होने वाली घटनाओं, या यूं कहो कि हादसों या एक्सीडेंट का आभास मुझे पहले ही हो जाता है और इस तरह मैं पहले कई बुरे हादसों को रोक चुका हूं।"

"ये कैसे सम्भव है।"

"सम्भव है। चूंकि तुम भी पूर्वजन्म से ही हमसे सम्बंध रखते हो, इसलिए मेरी बात को ज्यादा जल्दी समझ सकोगे। हमारे पूर्वजन्म में कोई जथूरा नाम का व्यक्ति था। वो अब उसी दुनिया में हादसों का देवता बन चुका है। जथूरा ही हमारी दुनिया के हादसों को रचकर, यहां भेज देता है और जैसा हादसा उसने रचा होता है, वैसा ही हो जाता है।"

"हैरानी है।"

"परंतु उसके कुछ खास हादसों का आभास मुझे हो रहा है और मैं उन हादसों को रोके जा रहा हूं। मैं ऐसा न करूं, इसके लिए जथूरा ने पोतेबाबा नाम के अपने सेवक को मेरे पास भेजा हुआ है, जो मुझे समझा रहा है कि मैं जथूरा के रास्ते में न आऊं, उसके हादसों को खराब न करूं। वो स्पष्ट नजर नहीं आता। कहता है कि उसने अदृश्य होने की दवा खा रखी है। परंतु वहां धुआं फैला दो तो उसमें फंस कर उसकी आकृति नजर आने लगती है। मैंने दो बार उससे मुकाबला

करके उसे पकड़ना चाहा, परंतु वो बेहद ताकतवर है, मैं उसका कुछ न बिगाड़ सका। उसके बाद मैंने सोहनलाल, बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव के साथ मिलकर उसे जकड़ लिया, परंतु वो अपनी शक्तियों के सहारे एक पल में ही आजाद हो गया। पोतेबाबा हर तरफ से ही बे-पनाह ताकत रखता है।"

"और वो तुम्हें रोकना चाहता है कि जथूरा के जिन हादसों का तुम्हें एहसास होता है, उन्हें तुम रोको नहीं।"

"हां—ठीक समझे।"

"तो वो तुम्हें क्यों नहीं खत्म कर देता?"

"इसके जवाब में पोतेबाबा कहता है कि जथूरा पर मेरा कोई एहसान है, इसलिए जथूरा मुझे नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता। पोतेबाबा बार-बार मुझे चेतावनी दे रहा है कि मैं जिन-जिन हादसों को रोके जा रहा हूं, उसकी वजह से मैं पूर्वजन्म में प्रवेश कर सकता हूं, जहां जथूरा से मेरा सामना होगा और मैं जथूरा का मुकाबला नहीं कर सकता। मारा जाऊंगा। जबकि जथूरा चाहता है कि पूर्वजन्म में मेरा प्रवेश ही न हो। ये झगड़ा ही न हो।"

"तो तुम ही पीछे क्यों नहीं हट जाते?"

"पारसनाथ।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला—"अगर तेरे को पता हो कि फलानी-फलानी जगह पर कोई हादसा होने वाला है तो क्या तू उसे होने देगा या रोकने की चेष्टा करेगा।"

क्षण भर खामोश रहकर पारसनाथ बोला।

"रोकने की चेष्टा करूंगा।"

"वो ही मैं कर रहा हूं।"

"लेकिन ये तो तेरे को अब पता ही है कि तेरी भाग-दौड़ तेरे को पूर्वजन्म के सफर पर ले जाएगी। ऐसे में तेरे को पीछे हटकर खामोश बैठ जाना चाहिए। क्योंकि पूर्वजन्म में प्रवेश कर जाने का मतलब है मौत का खेल शुरू।"

"मैं जथूरा को हमारी दुनिया में होने वाले हादसों को रचने दूं। वो खामखाह लोगों की जान लेता रहे?"

"ये तेरी सोच है—जो तू ठीक समझे कर। परंतु मैं इतना जानता हूं कि जब-जब भी पूर्वजन्म का सफर हुआ है, वो सफर हम सबने मिलकर पूरा किया है। पूर्वजन्म में प्रवेश होने के रास्ते जरूर अलग-अलग रहे हैं, परंतु मंजिल एक ही रही। ऐसे में तुम अकेले कैसे पूर्वजन्म का सफर शुरू कर सकते हो।" पारसनाथ ने कहा।

"मैं अकेला नहीं हूं। हम सब इकट्ठे होते जा रहे हैं।" जगमोहन बेहद गम्भीर था।

"हम सब कैसे इकट्ठे हो रहे हैं?"

"हालात ऐसे बने कि मुझे सोहनलाल, रुस्तम राव और बांकेलाल राठौर को बुलाना पड़ा। उसके बाद अब तुम्हारे पास आ गया।"

"लेकिन तुम मेरे पास क्यों आए?"

"जाना तो मुझे मोना चौधरी के पास चाहिए, परंतु उसका ठिकाना नहीं जानता तो तुम्हारे पास आया।"

"बात क्या है?"

"कुछ घंटे पहले मुम्बई में पूर्वाभास हुआ कि दिल्ली के राजीव चौक के मैट्रो स्टेशन पर कल 11.30 बजे कोई मोना चौधरी को गोली मारने जा रहा है।" जगमोहन ने कहा।

पारसनाथ की आंखें सिकुड़ीं।

"अब तुम क्या कहते हो कि मैं मोना चौधरी को मरने दूं।"

"तो तुम्हें वो भी दिखा होगा जिसने मोना चौधरी को शूट...।"

"उसकी पीठ मैंने देखी। वो मेरे पास से ही निकला था, तब मैं मोना चौधरी को उस खतरे से बचाने के लिए, उसके पीछे था। लेकिन ये नहीं जानता कि बचा सका कि नहीं। वो मोना चौधरी को गोली मारने जा रहा था। तब पीछे से मैंने उस पर फायर करना चाहा कि तभी मोना चौधरी के सामने की तरफ से आता सोहनलाल चीखकर मुझे गोली चलाने को मना कर रहा है। ये बहुत उलझा हुआ पूर्वाभास था। समझ में नहीं आता कि सोहनलाल मुझे क्यों फायर न करने को कह रहा था। कोई खास ही वजह रही होगी कि सोहनलाल मुझे...।"

"वो वजह मैं जानता हूं।" पारसनाथ गम्भीर-खुरदरे स्वर में कह उठा।

"क्या वजह?"

"मोना चौधरी पर गोली चलाने वाला देवराज चौहान है।"

जगमोहन चिहुंक उठा।

सोहनलाल के मस्तिष्क को भी तीव्र झटका लगा।

"क्या कह रहे हो?" जगमोहन के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"ये कैसे सम्भव है?" सोहनलाल व्याकुलता से बोला।

"तो तुम दोनों को यहां के हालातों का पता नहीं।" पारसनाथ ने अपने गालों पर हाथ फेरा।

"यहां के हालात, क्या हुआ है यहां के हालातों को?" जगमोहन के माथे पर बल पड़े।

"मोना चौधरी ने तीन करोड़ में देवराज चौहान को मारने की सुपारी ली है।" पारसनाथ ने बताया।

"ओह।"

सोहलाल के चेहरे पर बेचैनी झलक उठी।

"ये बात देवराज चौहान को पता चल गई। वो भी दिल्ली में ही है। कल मेरे पास आया था।"

"क्यों?"

"मोना चौधरी का पता पूछने, या फिर मैं मोना चौधरी को बता देता कि देवराज चौहान यहां है।"

"तो—तुमने क्या किया?"

"मैंने कुछ भी नहीं किया। क्योंकि मैं देवराज चौहान और मोना चौधरी को आमने-सामने नहीं पड़ने देना चाहता था। लेकिन अब हालात ये हैं कि देवराज चौहान और मोना चौधरी, दोनों ही एक-दूसरे की तलाश में हैं। मैंने महाजन को बुलाकर उसे सारे हालातों से वाकिफ कराया। हम दोनों ने मोना चौधरी को समझाने की चेष्टा की, परंतु वो नहीं मानी। फिर महाजन ने किसी तरह देवराज चौहान को तलाश किया, उससे बात की कि वो पीछे हट जाए। परंतु वो भी नहीं माना।"

"सब।" सोहनलाल के होंठों से निकला—"सब इकट्ठे होते जा रहे हैं, ये जरूर पूर्वजन्म की तैयारी है।"

"मुमकिन है।" पारसनाथ गम्भीर स्वर में बोला फिर जगमोहन से कहा—"तुम देवराज चौहान को क्यों नहीं समझाते?"

"वो नहीं मानेगा। ये मोना चौधरी का मामला है।" जगमोहन ने होंठ भींचकर कहा—"कोई फायदा नहीं होगा।"

कुछ पल उनके बीच खामोशी रही। फिर पारसनाथ बोला।

"कभी ऐसा हुआ है कि तुम्हारा पूर्वाभास कभी गलत निकला हो?"

"ऐसा कभी नहीं हुआ। पूर्वाभास का वक्त तक ठीक निकलता है।" जगमोहन ने दृढ़ स्वर में कहा।

पारसनाथ के होंठ भिंच गए।

तभी डिसूजा पास आ पहुंचा।

"सब ठीक है।" पारसनाथ ने डिसूजा से कहा—"किसी को कॉफी और स्नैक्स लाने को कहो।"

डिसूजा चला गया।

"सवाल ये पैदा होता है कि इन हालातों में हम क्या करें। क्या करना चाहिए?" जगमोहन ने उखड़े स्वर में कहा।

"देवराज चौहान और मोना चौधरी को सामने नहीं पड़ने देना चाहिए।" सोहनलाल ने कहा।

"ज्यादा देर तक हम इस बात को नहीं रोक सकते। कल 11.30 बजे, राजीव चौक मैट्रो स्टेशन। दोनों सामने पड़ जाएंगे।"

"मैं महाजन को बुला लेता हूं। इन बातों में उसका होना भी जरूरी है।" पारसनाथ ने फोन निकालते हुए कहा—"शायद हम सब मिलकर कोई बढ़िया फैसला ले सके।"

"ये तो पक्का है कि ये हालात हम सबको पूर्वजन्म के सफर की तरफ धकेल रहे हैं।" सोहनलाल होंठ भींचे कह उठा—"सबका एक साथ इकट्ठे होते चले जाना, इसी बात की तरफ इशारा करता है कि हम बहुत बड़ी मुसीबत में फंसने जा रहे हैं।"

नम्बर लग गया। पारसनाथ महाजन से बात करने लगा।

□ □

राजीव चौक, मैट्रो स्टेशन।

11.20 बजे।

मोना चौधरी ने सेंट्रल पार्क की तरफ से, मैट्रो स्टेशन में प्रवेश किया। टोकन लिया और बैरियर पार करके खुले हॉल में आ पहुंची। दाईं तरफ द्वारका जाने वाली मैट्रो अभी-अभी आई थी। लोग मैट्रो में प्रवेश करते जा रहे थे। सामने ऊपर जाने वाली सीढ़ियां नजर आ रही थीं। मोना चौधरी ठिठकी-सी, हर तरफ नजरें घुमाने लगी।

उसे देवराज चौहान की तलाश थी।

सपन चड्ढा ने कहा था कि देवराज चौहान साढ़े ग्यारह बजे राजीव चौक मैट्रो स्टेशन पर होगा। उससे ये पूछना भूल गई थी कि ये बात उसे कैसे पता चली? मोना चौधरी ने वहां लगी डिजीटल घड़ी में वक्त देखा। 11.25 होने जा रहे थे। मोना चौधरी बेहद सतर्क थी। देवराज चौहान कभी भी, नजर आ सकता था।

नजरें देवराज चौहान को तलाश कर रही थीं।

अगले ही पल वो चौंकी। आंखें सिकुड़ती चली गईं।

उसकी आंखें धोखा नहीं खा सकती थीं। वो सोहनलाल ही था। देवराज चौहान का खास बंदा। सोहनलाल उससे दस कदमों की दूरी पर से निकलकर एक तरफ जा रहा था। साथ ही वो फोन पर बात करने में व्यस्त था। उसने मोना चौधरी की तरफ नहीं देखा था। मोना चौधरी इतने में ही सतर्क हो चुकी थी।

इसका मतलब खबर सही थी कि देवराज चौहान यहां आने वाला है। सोहनलाल पर नजर रखकर देवराज चौहान तक आसानी से पहुंच सकती है।

इस विचार के साथ ही मोना चौधरी सावधानी से, सोहनलाल के पीछे लग गई।

सब ठीक हो रहा है।" फोन पर जगमोहन की आवाज, वहां से निकलते सोहनलाल पर पड़ रही थी—"मोना चौधरी तेरे को देख चुकी है, वो सतर्क सी दिखने लगी है। ऐसे ही चलता रह तू।"

"मेरे पीछे आई कि नहीं?" सोहनलाल ने चलते हुए फोन पर पूछा।

"अभी नहीं, लेकिन वो तेरे पीछे जरूर आएगी। वो सोचेगी कि तेरे द्वारा देवराज चौहान तक पहुंच सकती...मोना चौधरी तेरे पीछे चल पड़ी है। हमारी योजना कामयाब रही। उसे, उसी तरफ ले आ, जिधर तेरे को कहा था। पलटकर पीछे जरा भी मत देखना। फोन को इसी तरह कान से लगाए रख। मैं फोन बंद कर रहा हूं।"

सोहनलाल ने फोन कान से लगाए रखा और आगे बढ़ता रहा।

एकाएक मोना चौधरी को अपने पीछे धीमी आहट उभरी।

उसने पलटना चाहा कि तभी उसकी कमर से रिवॉल्वर आ लगी।

मोना चौधरी चौंकी।

उसकी निगाह हर तरफ घूमी तो उसे एहसास हुआ कि इस वक्त वो मैट्रो स्टेशन के सुनसान हिस्से में पहुंच चुकी है। ओह, तो ये सब चाल थी। सोहनलाल को चारे के तौर पर, उसके सामने किया गया और वो जाल में फंस गई।

तभी उसने सामने जाते सोहनलाल को ठिठकते फिर पलटते देखा।

सोहनलाल से उसकी नजरें मिलीं।

सोहनलाल मुस्कराया और मोना चौधरी की तरफ बढ़ने लगा।

मोना चौधरी ने पलटना चाहा कि तभी जगमोहन की शांत आवाज मोना चौधरी के कानों में पड़ी।

"हिलना मत।"

"तुम—जगमोहन।"

"खामोश रहो।"

तब तक सोहनलाल पास आ गया था और मोना चौधरी की तलाशी के लिए हाथ आगे बढ़ाए।

"मुझे हाथ मत लगाना।"

"तो।" सोहनलाल ठिठका—"अपना हथियार निकालकर मुझे दे दो।"

"तुम लोग, बचोगे नहीं।" मोना चौधरी गुर्राई।
सोहनलाल उसे देखता रहा।
दांत पीसते हुए मोना चौधरी ने रिवॉल्वर निकालकर उसे दी।
सोहनलाल रिवॉल्वर जेब में रखता पीछे हो गया।
जगमोहन ने उसकी कमर से रिवॉल्वर हटाई और वापस रख ली।
गुस्से से भरी मोना चौधरी पलटकर जगमोहन को देखते कह उठी।
"ये क्या हरकत है?"
"तुम देवराज चौहान को मारने यहां आई हो।" जगमोहन शांत था।
"हां, लेकिन तुम्हें कैसे पता, क्या तुम मुझे शूट करोगे?" मोना चौधरी ने कड़वे स्वर में कहा।
"नहीं। मैं तुम्हें और देवराज चौहान को रोकने आया हूं।"
"देवराज चौहान को रोकने?"
"वो भी यहां कहीं है, तुम्हें मारने के लिए।"
"मुझे मारने के लिए, ये कैसे हो सकता है?" मोना चौधरी के होंठों से निकला।
"मैं नहीं जानता, लेकिन तुम दोनों एक-दूसरे को मारने के लिए यहां हो।"
"ये बात तुम्हें कैसे पता है?"
जगमोहन ने स्टेशन की घड़ी को देखा, जहां 11.35 हो रहे थे।
जगमोहन मुस्करा पड़ा। हादसे का 11.30 का वो वक्त निकल चुका था।
"सोहनलाल, रिवॉल्वर वापस दे दे।"
सोहनलाल ने रिवॉल्वर मोना चौधरी को दे दी।
मोना चौधरी उलझन में दिखी। रिवॉल्वर वापस रख ली।
"तुम लोगों की हरकत मेरी समझ में जरा भी नहीं आई।" मोना चौधरी के माथे पर बल दिखे।
"अभी समझ में आ जाएगा। मैं अभी आता हूं।" जगमोहन ने कहा और आगे बढ़ गया।
मोना चौधरी ने सोहनलाल को देखा।
"वो कहां गया है?"
"देवराज चौहान को लेने।"
मोना चौधरी का चेहरा कठोर हो गया।

"तुम लोग कर क्या रहे हो?"

"जगमोहन आकर बताएगा।"

"तुम नहीं बता सकते?"

"मैं कुछ नहीं जानता।" सोहनलाल ने कहा और मुंह फेर लिया।

"मैं जा रही हूं। मेरा यहां रुकना जरूरी नहीं...।"

मोना चौधरी के शब्द अधूरे ही रह गए। सामने से पारसनाथ और महाजन को आते देखा।

मोना चौधरी अजीब-सी नजरों से उन्हें देखने लगी।

वो पास आ गए।

"कैसी हो बेबी?" महाजन बोला।

"ये सब क्या हो रहा है?" मोना चौधरी की आवाज में तीखापन आ गया।

"जगमोहन बताएगा।"

"तो तुम सब साथ हो।" मोना चौधरी बोली—"तुम दोनों का, इन लोगों के साथ होना हैरानी पैदा करता है।"

"भले के लिए ही हम एक-दूसरे के साथ हैं।"

"तो तुम लोग इस कोशिश में हो कि मैं देवराज चौहान को शूट न करूं।"

"हम इस कोशिश में भी हैं कि देवराज चौहान भी तुम्हें शूट न करे बेबी।"

"मैं उसे अब तक गोली मार चुकी होती।"

"शांत हो जाओ, हम सब कुछ ठीक करने की...।"

"तुमने गलत किया इस तरह।"

"मोना चौधरी।" पारसनाथ खुरदरे स्वर में कह उठा—"ये पूर्वजन्म से वास्ता रखती बातें हैं।"

"पूर्वजन्म?" मोना चौधरी चौंकी—"क्या कहना चाहते हो?"

"जगमोहन के कहे मुताबिक जथूरा ने ही ये हादसा रचा है।"

"जथूरा, ये कौन है?"

"पूर्वजन्म का शख्स है। जगमोहन ही पूरी बात बताएगा। परंतु तुम्हें यहां पाकर हमें जगमोहन की कही बातों पर पूरा विश्वास हो गया है। उसी ने बताया था कि तुम 11.30 पर यहां होओगी।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा कि...।"

"जगमोहन को वापस आ लेने दो। वो सब कुछ बताएगा।"

मोना चौधरी के चेहरे पर बेचैनी नजर आ रही थी।

जगमोहन पर निगाह पड़ते ही देवराज चौहान के मस्तिष्क को तीव्र झटका लगा।

इतने में ही जगमोहन पास आ पहुंचा।

"तुम—यहां?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"तुम्हारे लिए ही आया हूं।" जगमोहन गम्भीर था।

"तुम्हें कैसे पता कि...।"

"तुम यहां मोना चौधरी को मारने आए हो?"

"हां।" देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े—"तुम्हें कैसे पता?"

"मेरे साथ आओ, उधर।"

जगमोहन देवराज चौहान को लेकर चल पड़ा।

देवराज चौहान ने महसूस किया कि कुछ खास ही बात है।

"कुछ बात करोगे कि असल बात क्या...।"

"एक बार फिर पूर्वजन्म में जाने का खेल शुरू हो गया है।" जगमोहन ने कहा।

"ओह, कैसे?"

"तुम्हारी और मोना चौधरी की लड़ाई, उसी खेल का हिस्सा है। जथूरा तुम दोनों में झगड़ा कराकर, अपना मतलब साधना चाहता है। ये तो अच्छा हुआ कि मुझे पूर्वाभास होने लगा।"

"पूर्वाभास—ये तुम कैसी बातें कर...।"

"मैं तुम्हें सब बताता हूं। वहां मोना चौधरी भी है, उसी के सामने बताऊंगा।"

"मोना चौधरी? उसने मुझे मारने के लिए तीन करोड़ की सुपारी ली है। वो...।"

"मोना चौधरी को मैंने और सोहनलाल ने मिलकर रोक दिया है। अब उसका दिमाग ठीक है।"

"सोहनलाल भी है।" देवराज चौहान ने मुस्कराकर गहरी सांस ली—"कोई बात थी तो तुम मुझसे फोन पर बात...।"

"मैंने तुमसे इसलिए फोन पर बात नहीं की कि तुम जो काम कर रहे हो, वो पूरा कर लो। मुझे नहीं मालूम था कि तुम मोना चौधरी के फेर में पड़ो हो। पता होता तो तुम्हें पहले ही सावधान कर चुका होता।"

"तुम बहुत कुछ कह रहे हो और मैं समझ नहीं पा रहा।"

"वो देखो सामने—मोना चौधरी।"

देवराज चौहान ने मोना चौधरी, महाजन, पारसनाथ और सोहनलाल को देखा।

वे उनके पास जा पहुंचे।

देवराज चौहान को पास आया पाकर मोना चौधरी के होंठ भिंच गए।

"इन लोगों ने तुम्हें बचा लिया देवराज चौहान।" मोना चौधरी कठोर स्वर में कह उठी—"वरना अब तक मैंने तुम्हें शूट कर देना था।"

देवराज चौहान ने मोना चौधरी को देखा। कहा कुछ नहीं।

उसके बाद जगमोहन सारी बातें बताता चला गया।

☐ ☐

जगमोहन की बातें देवराज चौहान और मोना चौधरी ने सुनीं।

पूरी तरह सुनीं।

"मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं।" मोना चौधरी कह उठी।

"विश्वास, करो, मैं सही...।"

"मैं देवराज चौहान को मारने के लिए तैयार हो गई। तुम्हारी बातों से ये कैसे साबित होता है कि ये जथूरा का काम है।"

"यहां ऐसा होने वाला है, मुझे पूर्वाभास हो गया...।"

"मैं नहीं मानती इस बात को। तुम्हारे पूर्वाभास को।"

"तुम ये सोचो कि मुझे कैसे पता चला कि राजीव चौक के मैट्रो स्टेशन पर ये सब होने वाला है।"

"सपन चड्ढा से बात बाहर गई होगी कि...।"

"बेबी।" महाजन बोला—"तुम्हें किसने बताया कि देवराज चौहान 11.30 पर यहां आएगा?"

"सपन चड्ढा ने बताया।"

महाजन ने देवराज चौहान को देखकर पूछा।

"और तुम्हें किसने बताया कि मोना चौधरी यहां मिलेगी?"

"लक्ष्मण दास ने। उसी ने मुझे बताया था कि मोना चौधरी मेरी जान लेना चाहती है।"

"क्या ये दोनों एक-दूसरे को जानते हैं?" महाजन ने पूछा।

"दोनों दोस्त थे।" देवराज चौहान बोला—"परंतु अब इनमें दुश्मनी है।"

"तुम्हें ये बात किसने कही?"

"लक्ष्मण दास ने।"

"लेकिन।" सोहनलाल कह उठा—"इन दोनों की बातों से तो ये जाहिर है कि इन दोनों ने ही देवराज चौहान और मोना चौधरी को यहां भेजा। ताकि ये एक-दूसरे को मार सकें। खून-खराबा हो।"

सब एक-दूसरे को देखने लगे।

कुछ पल खामोशी रही।

"इसका मतलब सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास मिलकर कोई खेल खेल रहे हैं।" मोना चौधरी के दांत भिंच गए।

"लक्ष्मण दास मेरा पुराना जानकार है।" देवराज चौहान ने कहा—"वो ऐसा क्यों करेगा?"

"इस बात का जवाब तो वो ही देगा।"

"मैं अभी सपन चड्ढा से...।" मोना चौधरी ने कहना चाहा।

"मोना चौधरी।" पारसनाथ बोला—"हम लोग जहां भी जाएंगे, इकट्ठे जाएंगे। ताकि सबको पता चले कि असल बात क्या है।"

□ □
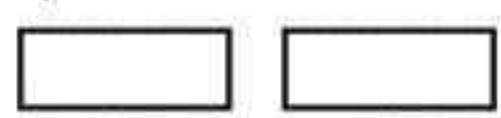
सपन चड्ढा सोफे पर अधलेटा था। चेहरे पर उखड़ेपन के भाव थे और वो मोमो जिन्न को टहलते हुए देख रहा था। मोमो जिन्न ने उसे देखा और हंसकर बोला।

"मुझे गालियां दे रहा है।"

"उससे क्या होगा।" सपन चड्ढा ने गहरी सांस ली।

"अब तू समझदारी की बातें करने लगा है।"

"वहां क्या मोना चौधरी ने देवराज चौहान को मार दिया होगा?" सपन चड्ढा ने पूछा।

"अभी खबर आ जाएगी।"

"आ जाएगी, कौन देगा खबर?"

मोमो जिन्न ने सपन चड्ढा को घूरा फिर कह उठा।

"तू सवाल बहुत पूछता है। कम बोला कर। काम की बात किया कर। बोलना ही हो तो कह, जथूरा महान है।"

सपन चड्ढा चुप रहा।

"कह।"

"जथूरा महान है।"

"तेरी आवाज में उत्साह नहीं है। कोई गुण नहीं तुझमें कि तू जथूरा का सेवक बन...।"

मोमो जिन्न कहते-कहते ठिठका फिर आंखें बंद करके इस तरह सिर हिलाने लगा जैसे किसी की बात सुन रहा हो।

सपन चड्ढा की नजरें मोमो जिन्न पर ही रहीं।

"जग्गू ने।" मोमो जिन्न के होंठ हिले।

मोमो जिन्न सिर हिलाने लगा।

"जग्गू का कोई इंतजाम कर—उसे...।"

मोमो जिन्न फिर जैसे बात सुनने लगा।

"तो जग्गू पर इस वक्त जथूरा की शक्ति काम नहीं कर रही।"

उधर से कहे गए शब्द मोमो जिन्न फिर सुनने लगा।

सपन चड्ढा हैरान था कि वो किससे बात कर रहा है।

"तो अब जथूरा इन सब पर कालचक्र फेंकेगा कि ये आपस में ही लड़ मरें। ठीक है।" मोमो जिन्न ने कहा फिर आंखें खोलकर सपन चड्ढा से बोला—"सब गड़बड़ हो गया।"

"क्या मतलब?" सपन चड्ढा के माथे पर बल पड़े।

"पता चल जाएगा अभी तेरे को।" मोमो जिन्न हंसा—"जा, मैंने तेरे को अपनी गुलामी से आजाद किया।"

"आजाद किया?"

"विश्वास नहीं आ रहा?"

"न...नहीं।"

"विश्वास रख। अब तू मेरे किसी काम का नहीं रहा। जब कभी जरूरत पड़ी तो तेरे पास अवश्य आऊंगा।"

"सिर्फ मेरे पास—लक्ष्मण दास के पास नहीं?"

"उसके पास भी आऊंगा, जब उसकी जरूरत पड़ी। पहले तुम देवा-मिन्नो से खुद को तो बचा लो।"

"खुद को बचा लो। क्या कहना चाहता है तू?"

उसी पल मोमो जिन्न सपन चड्ढा की आंखों के सामने से गायब हो गया।

सपन चड्ढा ठगा सा उस खाली जगह को देखता रहा। मोमो जिन्न की बातों का मतलब समझने की चेष्टा करने लगा, परंतु समझ नहीं पाया। उसने जल्दी से पास रखा फोन उठाया और नम्बर मिलाया।

"हैलो।" लक्ष्मण दास की आवाज कानों में पड़ी।

"वो चला गया।" सपन चड्ढा तेज स्वर में कह उठा।

"मोमो जिन्न?"

"हां, वो ही, कहता है कि जरूरत पड़ी तो फिर आएगा। और भी अजीब बातें कह रहा था।"

"क्या?"

"कहता था, सब गड़बड़ हो गया, हम देवा-मिन्नो से पहले खुद को बचा लें—ऐसी ही बातें।"

"इन बातों का क्या मतलब हुआ?"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। तू मेरे पास आ जा।"

"तेरे पास?"

"जाने क्यों घबराहट हो रही है। मोमो जिन्न ने मेरा बुरा हाल कर रखा है।"

"मेरा भी तो बुरा हाल है।"

"आ रहा है मेरे पास?"

"पता नहीं, देखता हूं।"

सपन चड्ढा ने फोन बंद किया फिर दीवार पर लगी घड़ी में वक्त देखा, 12 बज रहे थे। उसे अभी तक इस बात पर विश्वास नहीं आ रहा था कि मोमो जिन्न उसके पास से चला गया है। फिर भी उसने खुद को आजाद सा महसूस किया जैसे कि किसी ने उसे बंदी बना रखा हो और अब बंदी ना हो।

सपन चड्ढा उठा। नहा-धोकर कपड़े बदले। एक बजने को हो गया था। नौकर को लंच लगा देने को कहकर ड्राइंग रूम में पहुंचा कि कदमों की आहटें उसके कानों में पड़ीं।

फिर सपन चड्ढा कांपता सा गया।

देवराज चौहान, मोना चौधरी, जगमोहन, सोहनलाल, पारसनाथ और महाजन उसके सामने थे।

सपन चड्ढा का चेहरा फक्क पड़ गया। जबकि वो मोना चौधरी के अलावा किसी को जानता नहीं था।

मोना चौधरी ने उसे कड़वी नजरों से देखा फिर आगे बढ़ी और उसके पास पहुंच गई।

"क्या हाल है तेरा?" मोना चौधरी ने शब्दों को चबाकर पूछा।

"ठ...ठीक है।"

"घबरा क्यों गया मुझे देखकर?"

"न...नहीं तो।" सपन चड्ढा ने होंठों पर जीभ फेरी।

"ये तो तूने मुझे बताया ही नहीं कि तेरे को कैसे पता चला कि देवराज चौहान 11.30 बजे, राजीव चौक मैट्रो स्टेशन पहुंचेगा।"

"म...मोमो जिन्न ने कहा ऐसा कहने को।"

"मोमो जिन्न?" मोना चौधरी के दांत भिंच गए—"ये कौन है?"

"मोमो जिन्न....है।"

"सीधी तरह जवाब दे।" मोना चौधरी गुर्राई।

"म...मोमो जिन्न ही तो है वो। ठीक कह रहा हूं मैं।" सपन चड्ढा घबराया-सा कह उठा—"वो दैवीय ताकतों का मालिक लगता था। कभी चार फीट का हो जाता था तो कभी तीन इंच का। मुझसे कहता था कि मैं कहूं जथूरा महान है।"

"जथूरा!"

सब चौंके।

एक-दूसरे को देखा।

"कौन जथूरा?"

"पता नहीं, उसे वो अपना मालिक कहता था। मैंने वो ही किया, जो उसने कहा। न करता तो जाने मेरे साथ क्या सलूक करता।"

तभी जगमोहन कह उठा।

"अब ये तो साबित हो गया कि मैंने जो कहा, वो सच है। इन सबके पीछे पूर्वजन्म का जथूरा रहा है।"

"और क्या कहता था मोमो जिन्न?" मोना चौधरी ने पूछा।

"वो कहता था कि देवा और मिन्नो में झगड़ा करवाकर, एक को खत्म करवाना है।"

मोना चौधरी ने गहरी सांस ली।

"तुममें और लक्ष्मण दास में कोई झगड़ा नहीं?" देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं। मुझे और लक्ष्मण को मोमो जिन्न ने मजबूर किया, ये सब करने को। हमारी कोई गलती नहीं।" सपन चड्ढा ने परेशान स्वर में कहा—"उसकी बात को इंकार करो तो वो नंगा करके सड़क पर घुमाने की धमकी देता था।"

"वो तुम्हें कहां मिला?" महाजन ने पूछा।

सपन चड्ढा ने गहरी सांस लेकर कहा।

"बहुत खतरनाक ढंग से वो हमें मिला। हमारे नाम जानता था, ये जानता था कि लक्ष्मण दास देवराज चौहान को जानता है। हमारे बारे में सब कुछ जानता था। उसने हमें जैसे अदृश्य बंधन में जकड़ लिया था।"

"मिला कहां?"

सपन चड्ढा ने बताया।

"उसकी और बातें बताओ।"

"क्या बताऊं, घंटा-भर पहले यहां था वो, कह रहा था सब गड़बड़ हो गया। फिर खड़े-खड़े ऐसे बोलने लगा जैसे किसी से बात कर रहा हो। उन बातों में दो बार उसने जग्गू का नाम लिया, फिर जैसे किसी से कह रहा हो कि जथूरा अब इन पर कालचक्र फेंकेगा कि ये आपस में लड़ मरें। मेरे को तो समझ नहीं आ रहा कि ये सब क्या हो रहा...।"

तभी वहां लक्ष्मण दास ने प्रवेश किया।

देवराज चौहान को वहां पाकर घबरा उठा।

"आ लक्ष्मण, तू इन सबको मोमो जिन्न के बारे में बता, ये मोना चौधरी है।"

"य...ये देवराज चौहान।" लक्ष्मण दास घबराए स्वर में कह उठा—"मेरी कोई गलती नहीं देवराज चौहान। मोमो जिन्न बहुत

ही खतरनाक है। उसने हमें ये सब करने को मजबूर कर दिया था।"

देवराज चौहान ने सपन चड्ढा से पूछा।

"कालचक्र क्या है?"

"मैं नहीं जानता। मोमो जिन्न के मुंह से ही सुना था ये, तो मैंने बता दिया।"

देवराज चौहान गम्भीरता से उसे देखता रहा।

"हम नई मुसीबत में फंसने जा रहे हैं।" पारसनाथ कह उठा।

"जथूरा जो झगड़ा करवाना चाहता था देवराज चौहान और मोना चौधरी में उसमें असफल रहा। अब वो कालचक्र नाम का कोई नया रास्ता इस्तेमाल करने जा रहा है कि हममें झगड़ा हो।" महाजन ने कहा।

"अगर हम आपस में तय कर लें कि किसी भी हालत में हमें झगड़ा नहीं करना है तो जथूरा को मात दे सकते हैं।" पारसनाथ बोला।

"ये कहने की बात है, जब हालात बनेंगे तो कोई भी पीछे नहीं हटेगा।" सोहनलाल ने कहा।

"ये तो कोशिश कर सकते हैं कि झगड़ा ज्यादा न बढ़े।"

जगमोहन ने मोना चौधरी को देखा।

"मोना चौधरी, बेहतर होगा कि तुम आने वाले हालातों में होश कायम रखो और देवराज चौहान को अपना दुश्मन न समझो।"

"मैं नहीं जानती क्यों—देवराज चौहान का नाम सुनते ही मैं पागल हो जाती...।"

"उस हालत में तुम्हें महाजन और पारसनाथ की बात माननी चाहिए।"

"अबकी बार मैं सतर्क रहूंगी।"

"सोचने की बात तो ये है कि जथूरा क्यों हममें झगड़ा कराना चाहता है।" देवराज चौहान ने कहा।

"वो चाहता है कि हम पूर्वजन्म का सफर न करें।" जगमोहन बोला—"पोतेबाबा के द्वारा जथूरा कब से मेरे पीछे पड़ा है, परंतु मैं उसकी बात नहीं मान रहा। इसलिए नहीं कि मेरी कोई जिद है, सिर्फ इसलिए कि मैं होने वाले हादसों को टालना चाहता हूं। इस तरह उसकी नहीं चली तो अब वो हममें झगड़ा कराने के लिए कुछ करने जा रहा है।"

"तो हमें क्या करना चाहिए?" महाजन ने सबको देखा।

"हम सतर्क रहने के अलावा कर ही क्या सकते हैं। ध्यान रखेंगे कि आपस में झगड़ा न करें।"

कोई कुछ न बोला।
"हमें चलना चाहिए। जगमोहन बोला—"रुस्तम राव और बांके पूसा रोड के बंगले में मेरा इंतजार कर रहे होंगे।"
"वो भी साथ हैं?" मोना चौधरी के होंठों से निकला।
"हां।"
"उन्होंने भी हर बार पूर्वजन्म का सफर किया है। सबका एक साथ इकट्ठे होना खतरनाक है।" मोना चौधरी कह उठी।
फिर वो सब चले गए।
सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास की सांस में सांस आ गई।
"बच गए चड्ढा।"
"सस्ते में बचे। देवराज चौहान और मोना चौधरी से बचे और मोमो जिन्न से भी पीछा छूट गया।"
"मुझे तो अब भी यकीन नहीं आ रहा।"
"ऐसा मत कह, मुझे यकीन आ रहा है।" सपन चड्ढा ने जैसे खुद को तसल्ली दी।
"मोमो जिन्न ने तेरे से कहा कि वो फिर नहीं आएगा?" लक्ष्मण दास ने पूछा।
"हां, ऐसा ही बोला, लेकिन ये भी कहा कि जरूरत पड़ी तो वो फिर भी आ सकता है।"
"ओह।"
"लेकिन वो सब पूर्वजन्म की बातें क्यों कर रहे थे?"
"क्या पता?"
"पागल तो नहीं थे वे सब।"
"ऐसा मत कह। सब खतरनाक थे वे। अवश्य कोई बात है जो हमारी समझ से बाहर है।"
"हां, ये भी हो सकता है।"
"मोमो जिन्न उनमें झगड़ा क्यों करवाना चाहता है, वो क्यों चाहता है कि सब मरें।"
"कोई तो बात होगी।"
"मोमो जिन्न सीधे-सीधे उन पर हाथ क्यों नहीं डाल देता।"
"पागल हो जाऊंगा, इन बातों के बारे में सोचकर। हम बच गए यही बहुत है। साला वो ठिगना जिन्न मेरे से कहता था कि मैं कहूं जथूरा महान है।" सपन चड्ढा ने बुरा सा मुंह बनाकर कहा।
"मेरे से भी कहता था। उल्लू का पट्ठा। लेकिन ये जथूरा है कौन?"

"किसी इलाके का बदमाश होगा।"

"बदमाशों के पास मोमो जिन्न जैसे जिन्न थोड़े ही होते हैं।"

"छोड़ इन बातों को। सब कुछ भूल जा। पूर्वजन्म का सफर, मेरी तो समझ से बाहर है। खाना लग गया होगा।"

"मुझे भी भूख लगी...सपन—वो देख—मोमो जिन्न।" लक्ष्मण दास चीखते जैसे स्वर में बोला।

सपन चड्ढा की निगाह उस तरफ गई।

सोफे के पास ही तीन इंच का मोमो जिन्न खड़ा नजर आ रहा था। दोनों को अपनी सांसें रुकती-सी लगीं।

उनके देखते ही देखते मोमो जिन्न बड़ा होकर चार फीट का हो गया।

"तो मैं उल्लू का पट्ठा हूं।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा सकपकाए।

"तुम दोनों को शिक्षा की जरूरत है। वैसे हो तुम दोनों ही काम के।"

"त...तुम फिर आ गए।" सपन चड्ढा घबराए स्वर में बोला।

"क्यों नहीं आऊंगा। अपने गुलामों के पास आने के लिए मुझे किसी की इजाजत नहीं।"

"तुमने तो कहा था कि तुम हमें आजाद कर रहे...।"

"ये भी तो कहा था कि जरूरत पड़ी तो फिर आऊंगा।"

"त...तो जरूरत पड़ गई?" लक्ष्मण दास हड़बड़ा कर बोला।

"हां। जरूरत खत्म कहां हुई है। अभी तो मामला शुरू हुआ है। तुमने सब कुछ उन्हें बता दिया।"

"म...मैंने कुछ नहीं बताया—लक्ष्मण से पूछ लो।"

"मैं यहीं था, सब सुन रहा था।"

"तुम हमारा पीछा क्यों नहीं छोड़ते?"

"अभी तो तुम दोनों ने मेरे बहुत काम करने हैं। पीछा कैसे छोड़ दूं। बोलो, जथूरा महान है।"

सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास की नजरें मिलीं।

"बोलो।" मोमो जिन्न का स्वर कठोर हो गया।

"जथूरा महान है।" दोनों एक साथ बोले।

"खूब, इसी तरह धीरे-धीरे मैं तुम दोनों को जथूरा का खास सेवक बना दूंगा। जथूरा सच में महान है। उसकी ताकतों की कोई सीमा नहीं। उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। वो हमेशा ही जीतता आया है—बोलो।"

"जथूरा महान है।"
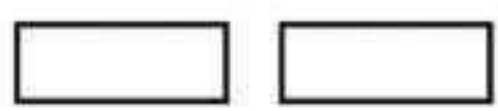
वापस मुम्बई।

बंगले पर।

सोहनलाल, बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव जा चुके थे।

मोना चौधरी, महाजन और पारसनाथ दिल्ली रह गए थे।

"यहां के हालातों के बारे में तुम मुझे बता देते तो मैं मोना चौधरी के रास्ते से हट जाता।" देवराज चौहान बोला।

"मैंने सोचा तुम्हें डिस्टर्ब क्यों करूं, इसलिए नहीं बताया।" जगमोहन ने कहा।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाकर कश लिया।

"जथूरा तुम्हें और मोना चौधरी को लड़वाकर, किसी एक को खत्म कराने पर आमादा है।"

"मेरे विचार में हमें पूर्वजन्म के सफर की तैयारी कर लेनी चाहिए।" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"क्यों?"

"जथूरा खामोश नहीं बैठने वाला, अबकी बार वो कोई खास पैंतरा इस्तेमाल करेगा।"

"कालचक्र।" जगमोहन कह उठा—"ये कालचक्र जाने क्या बला है जो...।"

"इतना सब कुछ होने के बाद जथूरा कालचक्र का इस्तेमाल कर रहा है तो यकीनन वो कुछ खास ही होगा।" देवराज चौहान ने कश लेते हुए गम्भीर स्वर में कहा—"हमें जथूरा की चालों से सतर्क रहना चाहिए।"

"नहीं रह सकते। क्योंकि उसके पास ताकतें हैं, वो...।"

"अब हम सब अलग-अलग हो चुके हैं, जो कि अच्छी बात है।"

"जथूरा की याद है तुम्हें?"

"नहीं।"

"पोतेबाबा की भी याद नहीं?"

"नहीं।"

तभी जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

सिगरेट के धुएं में उसे हाथ की उंगलियां पल भर के लिए दिखाई दी थीं।

"उधर धुआं फेंको।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"क्या?" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"उधर धुआं फेंको। उधर, वहां शायद पोतेबाबा है। वो आ चुका है।" जगमोहन व्याकुल स्वर में बोला।

देवराज चौहान ने ऐसा ही किया।

अगले ही पल धुएं में पोतेबाबा की आकृति चमकती चली गई।

देवराज चौहान के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे, उस आकृति को देखकर।

"य...ये पोतेबाबा है।"

पोतेबाबा का दाढ़ी वाला चेहरा मुस्करा पड़ा।

"मैं धूप लाता हूं। उसके धुएं में इसकी आकृति आधी-अधूरी नजर आती रहेगी।" कहकर जगमोहन चला गया।

"कैसा है तू देवा?" पोतेबाबा की आवाज सुनाई दी। आकृति सोफे की तरफ बढ़ गई।

अगले ही पल आकृति धुएं से बाहर थी। नजर आनी बंद हो गई।

देवराज चौहान ने पुनः कश लेकर सोफा चेयर पर धुआं फेंका तो वहां बैठा पोतेबाबा दिखा।

"देवा को पोतेबाबा का सलाम।"

देवराज चौहान उसे देखता रहा।

"पहचाना मुझे?" पोतेबाबा की आकृति के होंठ हिले।

"नहीं।"

"तीसरा जन्म है तुम्हारा। जन्मों की यादों के पीछे खो चुकी हैं तुम्हारी यादें। लेकिन तुम्हें कभी भी सब कुछ याद आ सकता है।"

"क्यों याद आ सकता है?"

"क्योंकि अब पूर्वजन्म से तुम्हारे तार जुड़ते जा रहे हैं, तभी तो तुम मेरे से बात कर रहे हो।"

"तुम हकीकत में कौन हो?"

"जथूरा का सबसे खास सेवक।"

"मैं जथूरा को भी नहीं जानता।"

"मैं अपने मुंह से तेरे को जथूरा की याद नहीं दिलाऊंगा। अपने बारे में मैं इतना ही कहूंगा कि मैं गुलचंद का यार हुआ करता था।"

"सोहनलाल का?"

"हां, उसके बाद जथूरा की सेवा में चला गया और आज जथूरा का खास हूं।"

देवराज चौहान पोतेबाबा की आधी-अधूरी नजर आ रही आकृति को देखे जा रहा था।

तभी जगमोहन मोटी-सी धूप जलाकर वहां ले आया था। उसमें उठता धुआं वहां फैलने लगा। धूप को उसने पास टेबल पर रख

दिया। अब धुएं में पोतेबाबा की आकृति बहुत हद तक स्पष्ट नजर आने लगी थी।

"क्या बात हुई?" जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"अभी तो कुछ खास बात नहीं हुई।" देवराज चौहान ने कहा फिर पोतेबाबा से बोला—"तुम चाहते क्या हो?"

"मैं जग्गू से चाहता था कि जथूरा के कामों में दखल न दे। उसके हादसों को न रोके। जथूरा की कोई दुश्मन शक्ति जग्गू को जथूरा के द्वारा कराए जाने वाले हादसों का पूर्वाभास करा रही है। वो शक्ति हादसों की इस तरह की कड़ी से पूर्वाभास जग्गू को करा रही है कि तम लोग पूर्वजन्म की यात्रा करने पर मजबूर हो जाओ।"

"तुम्हें या जथूरा को इसमें क्या परेशानी है?"

"तुम लोगों की इस बार की पूर्वजन्म की यात्रा जथूरा के महल पर जाकर खत्म होगी। जथूरा से झगड़ा होगा तुम सबका और जथूरा नहीं चाहता कि ऐसा झगड़ा हो। वो नहीं चाहता कि जग्गू को कुछ हो।"

"बकवास है।" जगमोहन बड़बड़ा उठा।

"जगमोहन को कुछ होने में जथूरा को क्या तकलीफ है।" देवराज चौहान ने तीखे स्वर में पूछा।

"जथूरा पर जग्गू का कोई एहसान है। वो नहीं चाहता कि जग्गू उससे टक्कर ले और जान गंवा बैठे।"

"तुम जथूरा से कह दो कि वो जगमोहन की चिंता न करें।" देवराज चौहान बोला।

"अवश्य कहूंगा देवा। तुम क्यों नहीं मानते मेरी बात?"

"क्या—बोलो?"

"जग्गू को जथूरा के मामलों में दखल देने से मना कर दो।"

"मैं जथूरा के हक में कोई काम क्यों करूं। वो हमारी दुनिया में हादसे तैयार करके भेजता है। लोगों को खामखाह मौत के मुंह में भेजता है जो कि गलत बात है। तुम जथूरा को ये सब करने को मना कर दो।"

"ये सम्भव नहीं। हादसों का देवता है जथूरा। वो अपने कर्म से पीछे कैसे हट सकता है?"

"तो हम भी अपने कर्म से पीछे नहीं हट सकते।"

"मैं तुम्हें अमूल्य पत्थर दूंगा। जिसकी कीमत इस दुनिया में बहुत है।" पोतेबाबा के होंठ हिलते दिखे।

"नहीं चाहिए हमें तुमसे कुछ।"

"सोच लो देवा।" पोतेबाबा गम्भीर हो उठा—"जथूरा का तुम बाल भी बांका नहीं कर सकते।"

"हमें कुछ नहीं करना जथूरा का।"

"मेरी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारे और जथूरा के रास्ते एक होते चले जाएंगे। फिर झगड़ा तो होगा ही।"

"इस बारे में जथूरा को सोचना चाहिए।"

"जथूरा कह रहा था कि देवा समझदार है, वो जरूर तेरी बात मान जाएगा।"

देवराज चौहान ने कड़वी निगाहों से पोतेबाबा की आकृति को देखा फिर कह उठा।

"जथूरा से कह देना कि देवराज चौहान बहुत बड़ा बेवकूफ है।"

"अवश्य कहूंगा कि तुमने ऐसा कहा। परंतु तुम लोग जथूरा के कहर से बच नहीं सकते।"

"जथूरा को इस तरह पीछे नहीं पड़ना चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा।

"जग्गू नहीं मानता जथूरा की बात। तू नहीं मानता तो कहर तो बरपेगा ही।"

देवराज चौहान के चेहरे पर कठोरता आ ठहरी।

तभी जगमोहन बोला।

"अब तुम क्या करने वाले हो। मोमो जिन्न ने सपन चड्ढा के सामने कालचक्र का जिक्र किया था।"

"हां कालचक्र अब तुम सब पर फेंका जाने वाला है। जथूरा के कालचक्र से कोई नहीं बच सका अब तक। जथूरा कालचक्र का इस्तेमाल ही तब करता है जब सामने वाला उसकी बात न माने।"

"कालचक्र है क्या?" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"अभी नहीं बताऊंगा। आने वाले वक्त में खुद ही तुम लोगों को एहसास हो जाएगा।" पोतेबाबा हंस पड़ा—"तुम लोग अपने को बहुत बड़े समझते हो, लेकिन कालचक्र में फंसकर पिस जाओगे। पागल हो जाओगे।"

"उल्लू का पट्ठा।" जगमोहन कुढ़कर बोला।

"अब मैं तेरी बात का बुरा नहीं मानूंगा जग्गू।"

देवराज चौहान सोच-भरे स्वर में कह उठा।

"जथूरा हादसों का देवता है।"

"हां देवा।" पोतेबाबा की रेखाओं वाली आकृति के होंठ हिलते दिखे।

"तो वो हमें मारने के लिए कोई भी हादसा रच सकता है।"

"नहीं, जथूरा की शक्तियां तुम लोगों पर तब तक असर नहीं करेंगी, जब तक तुम लोग पूर्वजन्म में प्रवेश नहीं करते।"

"तो कालचक्र कैसे असर करेगा हम पर—वो भी तो...।"

"वो कालचक्र जथूरा का अपना नहीं है। सोबरा का कालचक्र है वो। सोबरा ने कभी वो कालचक्र जथूरा पर काबू पाने के लिए फेंका था, परंतु जथूरा ने उस कालचक्र को अपनी ताकतों के सहारे कैद कर लिया। अब उसी कालचक्र पर जथूरा नई कहानी रचकर, तुम सबके नाम पर छोड़ने जा रहा है। बचेगा कोई भी नहीं।"

"कालचक्र छोड़ने पर क्या होगा?"

"ये नहीं बताऊंगा।" पोतेबाबा हंसा—"तुम लोग भुगतोगे तो समझ जाओगे।"

"बताने में क्या हर्ज है?"

"मेरा बहुत-सा वक्त खराब होगा। अभी भी वक्त है, कालचक्र से बच सकते हो।" पोतेबाबा बोला।

"कि जगमोहन जथूरा के रचे हादसों में दखल न दें।"

"ठीक समझे।"

"हम तुम्हारी या जथूरा की कोई बात नहीं मानेंगे।" देवराज चौहान ने दृढ़ स्वर में कहा।

तभी जगमोहन कह उठा।

"सोबरा कौन है?"

"नहीं जानते, ओह तुम लोगों को तो अभी कुछ भी याद नहीं आया। सोबरा जथूरा का भाई है। परंतु दोनों में कभी नहीं बनी। दोनों एक-दूसरे पर वार करते रहते हैं। दोनों के पिता जगन्नाथ के पास शक्तियों वाली कुछ चाबियां थीं, जिन्हें जगन्नाथ के मरते ही जथूरा ने हासिल कर लिया और अब सोबरा उन शक्तियों वाली चाबियों को पाना चाहता है।"

"तो हमेशा की तरह वहां पर अपने ही झंझट पहले से चालू हैं।" जगमोहन ने कहा।

"ये तो हर दुनिया में चलते रहते हैं। तो मैं जाऊं?"

"तुम आए ही क्यों थे?"

"एक बार बात करने। ये सोचकर कि शायद देवा कोई ठीक फैसला ले ले। परंतु कोई फायदा नहीं हुआ।"

देवराज चौहान कठोर निगाहों से पोतेबाबा की आकृति को देखे जा रहा था।

"जथूरा गलत कदम उठा रहा है।" देवराज चौहान कह उठा।

"वो तुम लोगों को पूर्वजन्म में नहीं आने देना चाहता और तुम लोगों के कर्म, तुम्हारे कदम पूर्वजन्म की तरफ बढ़ा रहे हैं।"

दो पल खामोशी रही।

फिर पोतेबाबा की आकृति को सोफे से उठते देखा। उसके बाद वो धुएं के दायरे से दूर होते हुए गायब हो गया।

देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"मेरे खयाल में खतरनाक मामला शुरू होने वाला है, जाने कैसा है कालचक्र?" जगमोहन बोला।

देवराज चौहान कुछ कहने लगा कि तभी जेब में मौजूद मोबाइल बज उठा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने मोबाइल निकालकर बात की।

"कहां हैं आप?" नगीना की मीठी आवाज कानों में पड़ी।

"जगमोहन के पास बंगले पर।" देवराज चौहान ने गहरी सांस लेकर कहा।

"आ रहे हैं, मैंने खाना तैयार कर रखा है। जगमोहन को भी साथ ले आइए।"

"कुछ देर में आता हूं न।" कहकर देवराज चौहान ने मोबाइल बंद कर दिया।

"नगीना भाभी का फोन था?" जगमोहन ने पूछा।

"हां, उसने खाना तैयार कर रखा है। तुम्हें भी बुला रही है।" देवराज चौहान ने कहा।

"फिर तो मैं जरूर जाऊंगा।" जगमोहन मुस्कराया।

"जथूरा के कालचक्र के बारे में हमें गम्भीर हो जाना चाहिए।" देवराज चौहान बोला—"वो हमें मुसीबत में डाल...।"

"कभी-कभी सोचता हूं कि जथूरा के रास्ते से हट जाऊं, परंतु जब होने वाले हादसे का पूर्वाभास होता है तो उस तरफ भाग जाता हूं।"

देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"क्या हुआ?" जगमोहन ने पूछा।

"ये पूर्वजन्म का मामला है। तुम इससे बचे नहीं रह सकते। ये जब-जब शुरू हुआ, हमें पूर्वजन्म में प्रवेश करना पड़ा।"

जगमोहन ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला कि उसी पल उसके मस्तिष्क में बिजलियां कौंधीं। उसने दोनों हाथों से सिर थाम लिया। आंखें बंद होती चली गईं। मस्तिष्क में बिजलियां चमक रही थीं।

"क्या हुआ?" देवराज चौहान उसकी बदलती हालत पर चौंका।

"चुप रहो।" जगमोहन के होंठों से कठिनता से ये शब्द निकले।

परंतु उस आवाज को सुनकर देवराज चौंक पड़ा।

वो आवाज जगमोहन की नहीं थी।

देवराज चौहान वहीं खड़ा हैरानी से, जगमोहन को देखता रहा।

एकाएक जगमोहन के मस्तिष्क में चमकती बिजलियां थम गईं। सब कुछ शांत नजर आने लगा। उसके मस्तिष्क ने देखा कि वो जगह बेहद शांत है। हरे-भरे पेड़ों से भरी जगह। वहां चट्टानें भी थीं, जमीन भी थी। कुछ दूर छोटी-सी बस्ती बनी नजर आ रही थी। वहां छांव भी थी, धूप भी थी। हवा में नमी थी। उसके कान पानी की छपाक-छपाक सुन रहे थे। फिर उसने समुद्र की लहरों को देखा जो किनारें पर आतीं और वहां आपस में टकराकर आवाज करतीं और झाग बनाती लुप्त हो जातीं। ये समुद्र के किनारे कोई जगह थी, परंतु शोर-शराबे से दूर। वहां के नजारे जगमोहन का मस्तिष्क देख रहा था कि तभी धूप में एक चट्टान पर पड़ा उसे कोई दिखा वो औंधे मुंह पड़ा हुआ था। जगमोहन को लगा जैसे वो उसके पास जा पहुंचा हो। वो कोई युवती थी। गुलाबी सूट पहने थी। दुपट्टा उसके गले में फंसा था। उसके सिर के बाल कंधे तक लम्बे थे, जो कि इस वक्त अस्त-व्यस्त थे।

जगमोहन को लगा कि जैसे वो उसे पहले भी कहीं देख चुका है।

वो औंधी पड़ी बेहोश जैसी लग रही थी।

जगमोहन को लगा जैसे वो उसके बेहद करीब पहुंच गया हो। उसका कंधा पकड़कर उसे हिला रहा हो। परंतु उसके हिलाने का युवती पर कोई असर नहीं हुआ तो उसने युवती को सीधा किया। उसके चेहरे पर नजर पड़ते ही वो चौंका। वो नगीना थी जो कि इस वक्त गहरी बेहोशी में थी।

अगले ही पल जगमोहन का मस्तिष्क शांत होता चला गया।

दिमाग में उठा तूफान—बिजलियां थम गई थीं।

जगमोहन गहरी-गहरी सांसें लेने लगा।

उसने आंखें खोलीं। सिर पर रखे दोनों हाथ हटा लिए।

देवराज चौहान की निगाह एकटक जगमोहन पर थीं।

"जगमोहन।" देवराज चौहान बोला—"क्या हुआ तुम्हें—तुम...।"

"नगीना भाभी।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"क्या मतलब?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"मुझे पूर्वाभास हुआ है। नगीना भाभी खतरे में है। हमें जल्दी-से नगीना भाभी के पास पहुंचना होगा।" जगमोहन तेज स्वर में बोला।

"लेकिन तुमने क्या देखा था।"

"रास्ते में बताऊंगा।" जगमोहन कहता हुआ बाहर की तरफ दौड़ा।

देवराज चौहान भी उसके पीछे चल पड़ा।

"जब तुम्हें कुछ हुआ था तो मैंने तुम्हें पुकारा।" देवराज चौहान उसके पीछे बढ़ता कह उठा—"तब तुमने मुझे चुप रहने को कहा, लेकिन उस वक्त तुम्हारे होंठों से निकली आवाज तुम्हारी आवाज नहीं थी।"

"चुप रहो, मुझे पहले नगीना भाभी को बचाना है। मुझे लगता है जथूरा ने अपना कालचक्र छोड़ दिया है।"
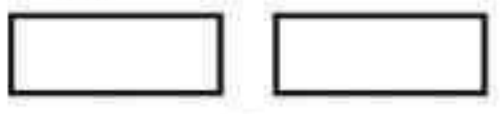
शाम के 7.30 बजे थे।

उस पार्क में बच्चे और औरतें मौजूद थे। धीरे-धीरे अंधेरा होता जा रहा था। बच्चे और औरतें घर जाने लगे थे। वो बूढ़ी सी, पतली औरत बैंच पर चश्मा लगाए बैठी थी। सत्तर बरस की उसकी उम्र होगी। बाल पूरे सफेद थे। चूहे की पूंछ की तरह, पतली-सी चुटिया बनी, गर्दन से जरा ही नीचे थी। पास में पांच फीट की लाठी रखी थी, जिसे थामकर वो चलती थी।

वो बूढ़ी औरत भी घर जाने को सोचने लगी थी।

उसी पार्क के ऊपर रुई जैसा बाल के साईज का सफेद गोला तैर रहा था, जिस पर किसी की नजर नहीं गई थी। ज्योंही अंधेरा होना शुरू हुआ, पार्क के लोग धीरे-धीरे घर जाने लगे तो वो रुई का गोला सफेद-सी आकृति में बदला और नीचे आकर वो आकृति बूढ़ी औरत के सिर पर मंडराने लगी।

ऐसे अंधेरे जैसे समय में उस आकृति को देख पाना आसान नहीं था।

फिर वो आकृति जैसे बूढ़ी औरत के सिर में समाती चली गई।

बुढ़िया के मस्तिष्क को कुछ असुविधा-सी हुई। वो उठ खड़ी हुई। आस-पास उसने देखा। पास रखी लाठी उठा ली। एक-दो बार उसने सिर पर हाथ फेरा। फिर कह उठी।

"कौन है?" स्वर बूढ़ा ही था।

"मैं—भौरी।"

बुढ़िया को लगा जैसे उसके कान में कोई फुसफुसाया है।

"भौरी कौन?"

"भौरी।" इस बार फुसफुसाहट में चंचलता आ गई थी।

"तू मेरे अंदर क्यों आ गई?" बूढ़ी औरत के होंठ से निकला।

"काम है।"

"क्या?"
"तेरे से नहीं, कहीं और काम है। लेकिन उस काम के लिए मुझे शरीर भी तो चाहिए, सो तेरा ले लिया।"
"चली जा। मैं तुझे अपना शरीर इस्तेमाल न करने दूंगी।"
"सोच ले। तू बूढ़ी हो चुकी है। मैं तेरे को जवान बना दूंगी।"
"जवान?"
"खूबसूरत भी।"
"झूठ बोलती है तू। मैं बूढ़ी हो चुकी हूं। तू भला मुझे कैसे जवान बना सकती है?"
"ऐसी जवान बना दूंगी कि मर्द तेरे पे मरेंगे। तू बच्चे जन सकेगी। बोल बना दूं?"
"बना।"
"तेरे शरीर में रहकर मेरे को कोई काम करना है। वो तू मुझे करने देगी।"
"जवान बनने के बाद?"
"हां। इस हाल में तो तू मेरे काम की नहीं। तेरी हां है तो कह, तेरे को जवान बना दूं।"
"मैं क्यों मना करूंगी, जवान बनने से।" बुढ़िया कह उठी।
"रंगीन मिजाज है तू। इस उम्र में भी जवान होकर, मजे लेने के सपने देखती है तू।"
"तूने ही तो कहा है कि तू मुझे जवान बना देगी। मैं तेरे को बुलाने तो नहीं गई। नहीं बना सकती तो जा।"
"भौरी बड़े कमाल की है। तू अपना नाम तो बता।"
"कमला रानी।"
"मैं तेरे को जवान बना रही हूं। थोड़ी-सी तकलीफ होगी। तू घबराना नहीं।"
"तकलीफ—मैं बूढ़ी तकलीफ नहीं सह सकती।"
"वो तू मुझ पर छोड़ दे। तेरे को कुछ नहीं होगा। भौरी का हाथ अब तेरे पर है।"
अगले ही पल बूढ़ी औरत के पूरे शरीर में दर्द की लहर दौड़ी।
उसने चीखने के लिए मुंह खोला, परंतु चीख जैसे गले में ही घुटकर रह गई।
"सब्र रख।" भौरी की फुसफुसाहट उसे सुनाई दी।
तब तक पार्क में अंधेरा छा चुका था।
एकाएक बूढ़ी औरत ने अपने शरीर में अजीब सा बदलाव महसूस किया। अजीब-सी सनसनाहट शरीर में दौड़ती चली गई।

फिर सब कुछ थम गया। बूढ़ी औरत ने लाठी छोड़ी और अपने शरीर को टटोल-टटोल कर देखने लगी।

वो सच में जवान हो गई थी।

परंतु अंधेरे के कारण, वो खुद को देख नहीं पा रही थी।

"जवान हो गई हूं। जवान हो गई।" बूढ़ी का स्वर भी अब जवानी से भर गया था।

"देखा भौरी का कमाल।"

"त...तू सच में मेरे लिए भगवान बनकर आई है। भला हो तेरा जो तूने...।"

"अब तू जवान है, जवान की तरह बात कर। बुजुर्गों की तरह आशीर्वाद देना छोड़ दे।"

"आह, घर जाकर मैं अपने बेटे को हैरान कर दूंगी कि वो...।"

"तू घर नहीं जाएगी।"

"क्यों?"

"भूल गई तूने मेरे से वादा किया था कि मेरा काम करेगी।"

"न करूं तो?"

"मैं तेरे को फिर बूढ़ी बना दूंगी। तेरी जान ले लूंगी। बहुत खतरनाक हूं मैं। भौरी है मेरा नाम।"

कमला रानी कांप उठी।

"म...मेरी जान मत लेना।"

"तो अपना वादा निभा।"

"वो तो ठीक है, परंतु मेरे घर वाले मेरा इंतजार करेंगे। मुझे ढूंढ़ेंगे।"

"तेरी परवाह किसी को नहीं है। तू घर न गई तो वो सोचेंगे बूढ़ी से जान छूटी। वैसे भी तू क्या समझती है कि तेरे घर वाले तेरे को पहचान लेंगे। वो तेरे को नहीं पहचानेंगे। तेरे को घर में नहीं घुसने देंगे।"

"ये तू क्या कह रही है?"

"सही कह रही हूं। अब तू अपनी बहू-बेटी से ज्यादा जवान है और मैंने तेरा चेहरा भी बदल दिया है।"

"चेहरा भी बदल दिया—कैसे?" कमला रानी हैरान सी कह उठी।

"जिस चेहरे को मैंने अपनी आंखों में बसाकर मंत्र पढ़ा तेरे लिए, तू उसी के चेहरे जैसी जवान हो गई। तेरे शरीर का एक-एक हिस्सा उस जैसा हो गया। कुछ ही देर में तेरी आवाज भी उसी की तरह हो जाएगी।"

"मैं किसके जैसी हो गई?"

"मोना चौधरी के जैसी। उसकी हर चीज, हर अदा, सब कुछ तेरे में आ चुकी है।"

"ये...ये नहीं हो सकता।"

"मैंने कर दिया है।"

"ओह, मोना चौधरी है कौन?"

"तूने अब मेरे साथ ही रहना है। धीरे-धीरे तेरे को सब पता चल जाएगा।"

"मैं कब तक तेरे साथ रहूंगी?"

"जब तक मैं तेरे से काम नहीं ले लेती।"

"ये कब तक चलेगा। एक-दो दिन...।"

"महीना-दो महीने भी लग सकते हैं। याद रख मैंने तुझे जवानी दी है, भरपूर शरीर दिया है। बेहद खूबसूरत चेहरा दिया है। तेरे को मेरा एहसान याद रखना चाहिए और मेरा कहना मानते रहना है। तभी तेरी जवानी सुरक्षित है। क्या तू चाहती है कि तू पहले की तरह फिर बूढ़ी हो जाए। लाठी पकड़कर चले?"

"न...नहीं चाहती।" कमला रानी ने कांपकर कहा।

"तो मेरी हर बात मानती रहना।"

"मानूंगी। लेकिन तू असल में है कौन?"

"मैं सोबरा के कालचक्र का छोटा-सा हिस्सा हूं और अब कालचक्र उसके भाई जथूरा के इशारे पर काम कर रहा है।"

"मैं समझी नहीं।"

"कालचक्र पर जथूरा का कब्जा है अब। कालचक्र अब वो ही करेगा, जो जथूरा का आदेश होगा।"

"मैं अब भी नहीं समझी।"

"तू कुछ मत समझ।" भौरी उसके कानों में कह उठी—"तू अब मेरी दुनिया में आ चुकी है। जरूरत के मुताबिक मैं तेरे भीतर वो सब चीजें डाल दूंगी, कि तू सब कुछ समझकर, मेरे मुताबिक काम करे। चल अब चलें।"

"कहां?"

"अब मेरी कमला रानी भौरी के लिए अपना पहला काम करेगी।"

कमला रानी चल पड़ी।

"तेरा नाम मोना चौधरी है। बाकी सब बातें मैं अभी तेरे दिमाग में डाल देती हूं, जिसकी तुझे जरूरत पड़ेगी।"
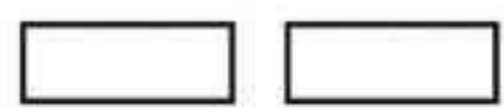
उस छोटे से बंगले की रोशनियां रोशन थीं।

नगीना नौकरानी सत्या के साथ किचन में व्यस्त थी। वो खुश थी कि देवराज चौहान और जगमोहन पहुंचने वाले हैं। किचन खाने के सामानों की महक से महक रहा था।

"जल्दी कर सत्या, कोई चीज छूट न जाए।" नगीना कह उठी।

"कुछ नहीं छूटेगा बीवी जी। मुझे सब याद है।"

उसी पल कॉल बेल बजी।

"लो।" नगीना के होंठों से निकला—"वो आ गए।"

"आप दरवाजा खेलिए बीवीजी, मैं इधर का सारा काम ठीक से संभाल लूंगी।"

नगीना किचन से बाहर निकली और मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़ गई। उसके चेहरे पर खुशी चमक रही थी। कई दिन से देवराज चौहान को देखा नहीं था उसने।

नगीना ने खुशी-खुशी दरवाजा खोला।

अगले ही पल वो बुरी तरह चौंकी। सिटपिटा-सी गई भीतर ही भीतर। सामने मोना चौधरी खड़ी थी।

जींस की पैंट और स्कीवी पहने। परफ्यूम की महक नगीना की सांसों से टकराई।

"तुम?" नगीना के होंठों से निकला।

"हैरान हो गई नगीना।" मोना चौधरी कह उठी—"देवराज चौहान का इंतजार कर रही है।"

"तुझे कैसे पता?" नगीना ने नागवार स्वर में कहा।

"मुझे तो सब खबर रहती है। इस वक्त तू देवराज चौहान के लिए तरह-तरह के पकवान बना रही है।"

नगीना मोना चौधरी को देखती रही फिर बोली।

"तेरे-मेरे बीच ऐसा कोई रिश्ता नहीं कि तू मेरे से कोई मजाक कर सके।"

"मुझे भीतर आने को नहीं कहेगी?"

"जरूरत नहीं समझती।" नगीना ने शुष्क स्वर में कहा।

"हम दोनों में पूर्वजन्म का रिश्ता है नगीना।"

"तू मेरे पास किसलिए आई है?" नगीना बोली।

"काम है। लेकिन तू तो मुझे भीतर ही आने को नहीं कह रही। क्या, मैं यहीं खड़ी बात करूंगी?"

"हां।"

"नाराज क्यों है मुझसे?"

"तू मेरे पति को जान से मारने की, कई बार कोशिश कर चुकी है।" नगीना ने तीखे स्वर में कहा।

मोना चौधरी हौले-से हंसी।

"तू अभी भी बीती बातों को दिल से लगाए बैठी है।"

तभी सत्या वहां आ पहुंची।

"बीवीजी काम हो गया।" अगले ही पल सत्या मोना चौधरी को दरवाजे के बाहर खड़ी देखकर ठिठकी।

"तू जा सत्या, मैं मोना चौधरी से बात कर रही हूं।"

सत्या चली गई।

"नगीना।" मोना चौधरी धीमे स्वर में बोली—"तू मुझे नहीं जानती, मैं भौरी हूं।"

"भौरी?" नगीना के माथे पर बल पड़े—"तू जो भी है चली जा यहां से। देवराज चौहान आने वाला है और...।"

इसी पल नगीना की सांसों से भीनी-भीनी सुगंध टकराई।

नगीना के होश गुम होने लगे।

इससे पहले कि नगीना नीचे गिरती, मोना चौधरी ने उसे थामा, कंधे पर लादा और तेजी से गेट की तरफ बढ़ गई। तभी कमला रानी के कानों में भौरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"क्यों, कैसा लगा कमला रानी?"

"अच्छा लगा। ये काम मेरे लिए नया है। क्या सच में मेरे में इतनी ताकत आ गई है कि किसी को उठा सकूं?"

"उठा तो रखा है, तू खुद ही देख ले।" भौरी मुस्कराई।

"जाना कहां है?"

"फिक्र मत कर। मैं तेरे साथ हूं। अब तो तूने मेरे साथ रहकर हर पल मौज ही करनी है। अब तू सच में रानी बन गई है। मेरा हुक्म मानती रह और रानी बनकर जिंदगी बिता।"

□ □

देवराज चौहान और जगमोहन नगीना वाले बंगले पर पहुंचे।

गेट खुला था।

प्रवेश दरवाजा भी खुला दिखा।

"भाभी।" जगमोहन तेज स्वर में पुकारते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

देवराज चौहान उसके पीछे था।

"भाभी।" जगमोहन ने पुनः ऊंचे स्वर में पुकारा।

सत्या किचन से निकलकर उसके सामने आ गई।

"जगमोहन भैया, आप—नमस्कार।" सत्या कह उठी।

"भाभी कहां है?"

सत्या ने भीतर प्रवेश कर चुके देवराज चौहान को भी देखा और कह उठी।

"बीवीजी, अभी तो यहीं थीं, दरवाजे पर मोना चौधरी मैडम से बात कर रही...।"

"मोना चौधरी?" जगमोहन चौंका।

देवराज चौहान के माथे पर बल उभर आए।

"बीवीजी ने ही कहा था कि वो मोना चौधरी से बात कर रही है, जब मैंने उन्हें बुलाया तो।"

"तुमने मोना चौधरी को देखा था?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां।" सत्या ने बाहर नजर मारी—"आप बीवीजी से पूछ लीजिए—वो...।"

"वो नजर नहीं आ रही यहां।"

"भीतर होगी।"

"होती तो मेरे पुकारने पर आ गई होती।" जगमोहन ने व्याकुलता में कहा।

"मैं देखती हूं।" कहने के साथ ही सत्या भीतर चली गई।

देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"मुझे हैरानी है कि मोना चौधरी यहां थी।" जगमोहन बोला।

"मुझे यकीन नहीं आता कि वो नगीना के पास आएगी। उसे नगीना के बंगले का पता नहीं चल सकता।"

"लेकिन वो यहां थी। सत्या उसका नाम लेकर कह रही है।"

देवराज चौहान के होंठों में कसाव आ गया।

सत्या जल्दी ही लौट आई।

"बीवीजी तो बंगले में नहीं हैं।" वो बोली।

"मुझे बताओ कि मोना चौधरी देखने में कैसी लग रही थी—उसका हुलिया।"

"मैंने जरा सा तो देखा था उसे। मैंने सोचा वो बीवीजी की कोई पहचान वाली...।"

"तुम उसका हुलिया बताओ।"

सत्या ने हुलिया बताया।

ठीक मोना चौधरी का हुलिया।

"वो ही थी।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"लेकिन हुआ क्या?"

"भाभी कहीं गायब हो गई है, मोना चौधरी से बातें करते-करते। कहीं चली गई है।"

"आओ बाहर देखें।" देवराज चौहान ने कहा।

देवराज चौहान और जगमोहन बाहर निकलते चले गए।
बीस मिनट बाद वे लौटे।
"नगीना आई सत्या?" देवराज चौहान ने पूछा।
"नहीं जी।"
देवराज चौहान कुर्सी पर जा बैठा।
जगमोहन बेचैनी से चहलकदमी करने लगा।
"मुझे हैरानी है कि मोना चौधरी, नगीना के पास यहां आई और फिर दोनों ही गायब हो गए।" देवराज चौहान बोला।
"भाभी खतरे में है। मैंने पूर्वाभास में, भाभी को अजीब सी जगह पर बेहोश पड़े देखा था। मैं जानता हूं कि मेरा पूर्वाभास गलत नहीं हो सकता। हर बार वो सही निकला है।" जगमोहन बोला।
"मैं मोना चौधरी को नहीं छोड़ूंगा।" देवराज चौहान का चेहरा कठोर हो चुका था।
जगमोहन ने ठिठककर देवराज चौहान को देखा।
कुछ पल देवराज चौहान को देखने के बाद व्याकुल स्वर में कह उठा।
"ये जथूरा की चाल है।"
देवराज चौहान ने सख्त नजरों से जगमोहन को देखा।
"मोना चौधरी इस तरह नगीना के पास आकर गड़बड़ नहीं कर सकती, फिर भाभी भी कम नहीं है। कुछ बात तो है।"
"नगीना के पास मोना चौधरी आई और उसके बाद नगीना गायब हो गई।"
"हां, ऐसा हुआ है, परंतु ये सब जथूरा की चाल है, हमें कालचक्र को नहीं भूलना चाहिए। हम जानते हैं कि जथूरा हम सब को लड़वाने की चेष्टा कर रहा है। पोतेबाबा ने भी ये बात स्वीकारी है।" जगमोहन होंठ भींचकर बोला—"हमें सब्र के साथ काम लेना है। जथूरा की चाल को पहचानना है कि...।"
देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।
जगमोहन ने उसे देखा।
"तुम सब्र के साथ काम लो।" देवराज चौहान ने कड़वे स्वर में कहा—"मैं मोना चौधरी को देखता हूं।"
"जल्दबाजी मत करो।" जगमोहन और भी ज्यादा परेशान हो उठा।
"ये तो स्पष्ट है कि नगीना के गायब होने के पीछे मोना चौधरी का हाथ है।"
"हां लेकिन।"
"अब क्या तुम ये कहना चाहते हो कि वो मोना चौधरी होकर भी मोना चौधरी नहीं थी।"

"ये नहीं कहना चाहता।"

"तो?"

"मैं समझने की चेष्टा कर रहा हूं कि जथूरा कैसी चाल चल रहा है?"

"वो कोई भी चाल नहीं चल रहा। नगीना के गायब होने के पीछे मोना चौधरी है, मैं ये जानता हूं।"

"मैं इंकार नहीं करता, परंतु ये भी कहता हूं कि इन सब हरकतों के पीछे जथूरा काम कर रहा है।"

"मैं नहीं मानता।"

"तुम्हें मानना पड़ेगा।" जगमोहन ने तेज स्वर में कहा—"पोते बाबा ने स्पष्ट कहा है कि जथूरा अब हम सबके लिए कालचक्र छोड़ेगा। हम सबमें झगड़ा करवा देगा, ताकि हम लड़ मरें और पूर्वजन्म के सफर के काबिल न रहें। जथूरा हमें पूर्वजन्म के सफर से रोकना चाहता है, शायद हमारा वो सफर उसके लिए, नुकसान से भरा है। हम पहले ही तय कर चुके हैं कि हम सब्र से काम लेंगे और झगड़ा नहीं करेंगे। अब तुम बे-सब्र हुए जा रहे हो।"

"नगीना मेरी पत्नी है।"

"मेरी भी भाभी है वो। मुझे उसकी चिंता है।"

"जितनी मुझे है, उतनी चिंता तुम्हें नहीं हो सकती जगमोहन।" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर कहा।

जगमोहन ने देवराज चौहान की आंखों में झांका और गम्भीर स्वर में बोला।

"हो सकता है कि मुझे तुमसे भी ज्यादा चिंता हो।"

"तुम मुझे समझो—मैं...।"

"मैं सब समझ रहा हूं, तभी तो शांत हूं।"

"क्या मतलब?"

"जो जथूरा चाहता है, उसे होने से रोक रहा हूं।"

देवराज चौहान जगमोहन को देखने लगा।

"जथूरा चाहता है कि हम झगड़ें।" जगमोहन ने पुनः कहा—"और हम ऐसा करेंगे नहीं।"

"और नगीना?" देवराज चौहान का चेहरा क्रोध से भरा हुआ था।

"उसके बारे में कोई रास्ता निकालते हैं कि उसे तलाश कर सकें। तुम्हारे पास मोना चौधरी का फोन नम्बर है?"

"नहीं।"

"मेरे पास पारसनाथ का नम्बर है।" जगमोहन बोला—"मैं अभी उससे बात करता हूं।"
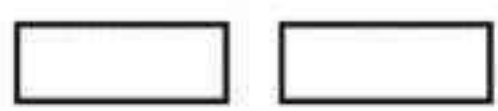
दिल्ली!

मोती नगर का एक फ्लैट।

बूढ़ा और बूढ़ी औरत वहां रहते थे। पैंसठ-सत्तर बरस की उनकी उम्र रही होगी। बूढ़ा रंगीन मिजाज था और इस उम्र में भी पीने-पिलाने का शौक छूटा नहीं था, जबकि उसकी पत्नी उसकी पीने की आदत से चिढ़ती थी। इस वक्त रात के दस बज रहे थे कि घर में तू-तू, मैं-मैं हो रही थी। बूढ़ा एक पैग लगा चुका था और दूसरा गिलास भर रखा था जबकि उसकी पत्नी बोले जा रही थी।

"पांव मौत के दरवाजे पर पड़े हैं और तुम्हें पीने की पड़ी है बूढ़े।" वो बोली—"भगवान का नाम ले ले थोड़ा सा। सारे पाप धुल जाएंगे। ऊपर वाले से डर, जाकर उसके सामने खड़े होना है।"

"मैं क्यों डरूं।" बूढ़ा घूंट भरता कह उठा—"मैंने कोई पाप नहीं किया।"

"नहीं किया?"

"जरा भी नहीं।"

"ज्यादा बड़बड़ मत कर। जवानी के दिनों में तू रातों को गायब रहता था।"

"वो तो दोस्तों के साथ पीने के चक्कर में रात निकल जाती...।"

"मैं सब जानती हूं।" वो हाथ नचाकर बोली।

"क्या जानती है।" बूढ़ा मजे लेता कह उठा—"मैं भी तो जानूं?"

"मेरा मुंह मत खुलवा।"

"खोल दे, मैं डरता नहीं हूं।" नशे में बूढ़ा शेर हो रहा था।

"वो जो तेरे आफिस में काम करती थी, तू उसके आदमी के साथ पीता था।"

"तो क्या हो गया। मोना की बात कर...।"

"वो ही, वो ही कलमुंही। उसके घर बैठकर पीता था तू। उसके आदमी को ज्यादा पिलाकर टुन्न कर देता था और बाद में उस कलमुंही के साथ मजे लेता था और सुबह लटका मुंह लेकर मेरे पास आता था।"

"तेरे को ये किसने कहा?"

"उसी कलमुंही के आदमी ने एक बार बताया था।"

"वो तेरे को कहां मिला?"

"मिल गया था एक बार। वो अपनी कलमुंही से बहुत दुखी

था। बेचारा, मुझे तो उसका चेहरा याद आता है, जब वो सारी बात मुझे बता रहा था।" उसकी बीवी ने खा जाने वाले स्वर में कहा।

बूढ़े ने गिलास होंठों से लगाया और एक ही सांस में खाली कर दिया।

"साली, क्या चीज थी वो भी।" बूढ़ा बड़बड़ा उठा।

"उस कलमुंही की बात कर रहा है।"

"मैं तो गिलास में पड़ी शराब की बात कर रहा हूं।"

"हां...हां, मैं सब जानती हूं।"

"जवानी के दिन भी क्या दिन थे।"

"क्यों नहीं होंगे। इधर-उधर मुंह मारने को जो मिल जाता था।" बूढ़ी जल-भुनकर बोली।

"मुंह तो मैं अब भी मार लूं।" बूढ़े ने आह भरी।

"अब तो तू गैस का पिचका गुब्बारा है। गाय की लात पड़ी तो पूरा फूट जाएगा।"

"बहुत हिम्मत बाकी है अभी।"

"मुझे तो नजर नहीं आती।"

"तुझ जैसी बूढ़ी को देखकर तो, सारा मूड खराब हो जाता है।"

"हीरो है न तू जो मुझे बूढ़ी कहता है।"

"तुझे क्या मैं तो अपने को भी बूढ़ा कहता हूं। जवानी के दिन भी क्या दिन थे। जिधर दिल चाहा उड़ जाओ।"

"मैं तो तेरी आदतों से तंग, कब का तेरे को तलाक दे देती।"

"तो दिया क्यों नहीं?"

"रहने दे, कहानी मत पूछ, नहीं तो तेरे को दुख होगा।"

"नहीं होगा, तू बता।" बूढ़े ने नशे में सिर हिलाकर कहा।

"क्यों अपनी रात की नींद खराब करता है। नशा भी उतर जाएगा।" बूढ़ी मुंह बनाकर बोली।

"ये बात है तो ठीक है, कल बता देना।" कहकर बूढ़ा उठा। जोरों से डगमगाया।

"हजम नहीं होती तो मत पिया कर।"

"क्यों नहीं हजम होती, बाहर का चक्कर लगाकर आता हूं, फिर एकदम हल्का हो जाऊंगा।"

"पियक्कड़ कहीं का।"

बूढ़ा घर का दरवाजा खोलकर बाहर निकला तो पीछे से बूढ़ी बोली।

"घर का रास्ता मत भूल जाना। नम्बर याद है न घर का।"

"तेरे को कैसे भूल सकता हूं मेरी जान।"

"जा-जा, गैस के पिचके गुब्बारे।"

बूढ़ा खुली हवा में पहुंचा और तारों भरे चमकते आसमान को देखकर आह भरी, इतने में ही वो जोरों से लड़खड़ाया, परंतु संभल कर अपने से बड़बड़ा उठा।

"आज नशा हो गया लगता है। ज्यादा ले ली।" फिर टहलने के अंदाज में आगे बढ़ गया। अपनी तरफ से तो उसे लग रहा था कि वो सही चल रहा है, परंतु चाल में स्पष्टतया लड़खड़ाहट थी।

पास में ही छोटा सा पार्क था, वो पार्क में प्रवेश कर गया।

कुछ लोग वहां टहल रहे थे।

वो आगे बढ़ा और एक बैंच पर जा बैठा।

मध्यम सी हवा चल रही थी। उसने आंखें बंद कर लीं। दस-बारह मिनट तक वो ऐसे ही बैठा रहा और जवानी के दिनों को याद करने लगा कि जिंदगी का असली मजा तो तब था।

एकाएक उसके सिर को तीव्र झटका लगा।

वो हड़बड़ाया। उसने आंखें खोलीं।

उसे ऐसा लगा जैसे कोई उसके सिर में प्रवेश कर आया हो। उसके दिमाग में बैठ गया हो।

"कौन हो?" उसके होंठों से निकला। उसने सिर पर हाथ फेरा।

"मैं शौहरी हूं।" लगा जैसे उसके कान में कोई फुसफुसाया हो।

"शौहरी?" बूढ़े के होंठों से निकला।

"हां।"

"लेकिन तू मेरे सिर में क्यों आ गया?"

"तेरी सोचों को पढ़कर, जवानी की बहुत याद आ रही है तुम्हें?"

"बहुत।" बूढ़े ने गहरी सांस ली—"वो दिन, भुलाए नहीं भूलते।"

"लेकिन अब तो तू बूढ़ा हो गया।"

"हां।"

"जवान कैसे होगा?"

"नहीं हो सकता। लेकिन तू है कौन जो मेरे से बातें कर रहा है।" बूढ़े ने कहा।

"मैं शौहरी हूं। सोबरा के कालचक्र का मामूली-सा अंश हूं। परंतु वो कालचक्र जथूरा के कब्जे में है। अब कालचक्र जथूरा के ही इशारे पर काम कर रहा है। मैं नहीं जानता कि अब मेरा मालिक सोबरा है कि जथूरा।"

"सोबरा—जथूरा कौन हैं?"
"भाई हैं, परंतु पक्के दुश्मन।"
"कहां रहते हैं ये—कौन से इलाके में?"
"तू नहीं जानता उस जगह को।"
"क्यों?"
"ये पूर्वजन्म की वो दुनिया है, जिसके बारे में वो ही जानकारी रख सकता है, जो कभी उससे जुड़ा रहा हो।"
"अजीब बात है।"
"साधारण बात है।"
"मेरे से क्या चाहता है तू?"
"सोच रहा हूं तू क्या सच में जवान होना चाहता है?"
"हां, लेकिन अब कहां हो पाऊंगा?"
"मैं तेरे को जवान बना दूं तो?"
बूढ़ा नशे में हंस पड़ा।
"क्यों मेरे से मजाक करता है।"
"मैं सच कह रहा हूं। तेरे को एकदम कड़क मूंछों वाला जवान बना दूंगा।"
"पागल है।" बूढ़ा बड़बड़ाया।
"पागल नहीं मैं, मैं तेरे को सच कहा रहा हूं, तू हां बोल, अभी जवान बनाता हूं तेरे को।"
"बना।"
"मेरा क्या फायदा होगा?"
"फायदा—तेरे को क्या फायदा चाहिए?"
"जवान बनकर तू मेरे लिए काम करेगा। मेरा हुक्म मानेगा।"
"तेरा गुलाम बन जाऊं मैं?"
"नहीं। जब मुझे तेरे से काम होगा, तू काम करेगा, नहीं काम होगा तो मौज-मस्ती करना। पैसे मैं दूंगा तेरे को।"
"कितने?"
"जो तू कहेगा, जितने तू मांगेगा।"
"मैं तो बहुत ज्यादा मांग लूंगा।"
"मैं दूंगा।"
"तू मजाक कर रहा है मेरे से?"
"नहीं, सच कह रहा हूं, आजमा के देख ले।"
"ठीक है। बना मेरे को जवान। मैं तेरी नौकरी करूंगा, जैसा कि तूने कहा है।"
"जवान बनने के बाद तू अपनी पत्नी के पास नहीं जाएगा।

वैसे भी वो तेरे को पहचानेगी नहीं। क्योंकि मैं अपनी जरूरत के मुताबिक तेरा चेहरा भी बदल दूंगा। जवानी और नया चेहरा। तेरे को मजा आएगा।"

"मुझे औरतें मिलेंगी?"

"बहुत।"

"तू देगा?"

"नहीं, तेरे को अपना इंतजाम खुद करना होगा। मैं तेरे को पैसे दूंगा।"

नशे में बूढ़े का दिमाग तेजी से चल रहा था।

"तू मेरे पास ही क्यों आया?"

"क्योंकि बूढ़े इन बातों में जल्दी फंस जाते हैं। जवान होने की तमन्ना किसमें नहीं होती। हम बूढ़ों को जवान बनाते हैं और वो जवान बनकर हमारे लिए काम करते हैं।" उसके कानों में फुसफुसाहट जारी थी।

"तेरी बातें मेरी समझ में नहीं आ रहीं।"

"जितनी समझ आ रही हैं, तू उससे ही काम चला। बता, तेरे को जवान बना दूं?"

"मानूंगा। तू मुझे जवान बना के दिखा।"

"ठीक है। तेरे को दो मिनट के लिए तकलीफ होगी। सह लेना।"

"तू क्या करने वाला है मेरे साथ?"

"अभी समझ जाएगा।"

अगले ही पल उसके शरीर में पीड़ा भरती चली गई।

उसने छटपटाकर चीखना चाहा।

परंतु ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके होंठों पर हाथ रख दिया हो।

उसने अपने शरीर में कई बदलाव महसूस किए।

सब कुछ दो मिनट में ही हो गया।

"देख ले अब अपने को।" कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"ये...ये मुझे क्या हो गया था। तूने क्या किया?" बूढ़ा बैंच से उठता कह उठा।

"तेरे को जवान बना दिया।"

बूढ़ा अपने को टटोलने लगा।

चेहरे पर हाथ फेरा तो मूंछें थीं। कद भी कुछ लम्बा हो गया था।

"मजा आया।" शौहरी के हंसने वाली फुसफुसाहट सुनाई दी।

"म...मैं सच में जवान हो गया हूं।"

"हां। रोशनी में जाकर अपने को देख ले। तेरा नाम क्या है?"

"जवाहर मखानी।"

"मखानी, हूं।"

"मैं...मैं किसके जैसा बन गया हूं?"

"भंवर सिंह जैसा, जिसका इस जन्म में बांकेलाल राठौर नाम है।"

"बांकेलाल राठौर?"

"मैं अभी तेरे में बांकेलाल राठौर की सारी चीजें डाल देता हूं कि सामने वाला तुझे बांकेलाल राठौर ही समझे।"

"सारी चीजें—क्या मतलब?"

"उसका बोलने का ढंग, चाल-ढाल। उसकी ताकत। सब कुछ तेरे में आ जाएगा।"

"तू ऐसा क्यों कर रहा है। मुझे बांकेलाल राठौर जैसा क्यों बना रहा है?"

"बांकेलाल राठौर बनकर जो तेरे को काम करने हैं। मेरे काम ही ऐसे हैं।"

"लेकिन।"

"कुछ पल चुप रह।"

फिर मखानी पर जैसे अजीब-सा नशा सवार होता चला गया।

आधा मिनट ही ये सब रहा, फिर वो सामान्य हो गया।

"शौहरी।" मखानी के होंठों से निकला—"यो म्हारे को का हो गयो हो?"

"बन गया तू बांकेलाल राठौर, लेकिन एक कमी है।"

"म्हारे को बता, का कमी होवे?"

"तेरा दिमाग अभी, बांकेलाल राठौर जैसा नहीं है, वो भी कर देता हूं।"

"तंम का जादूगरो होवे।"

"नहीं, मैं कालचक्र का मामूली-सा अंश हूं। अब मैं तेरा दिमाग बदलता हूं।"

अगले ही पल मखानी के मस्तिष्क में सितारे जैसी रोशनी चमकी।

मखानी चकराकर बेंच पर जा बैठा।

फिर वो सामान्य हालत में आ गया।

"अब ठीक है। अब तेरे में दो दिमाग हैं। जवाहर मखानी का और बांकेलाल राठौर का।"

"हां, मुझे अजीब-सा महसूस हो रहा है। मेरे दिमाग में बहुत

कुछ आ रहा है। देवराज चौहान, जगमोहन, थापर, मोना चौधरी, महाजन, पारसनाथ और भी बहुत कुछ...।"

"तू बांकेलाल राठौर जैसी भाषा में बात कर।"

"ठीको। म्हारो जैसो कहो, वैसो ही बातो करो।" मखानी बोला—"वो देखो, म्हारी बूढ़ी पार्क में आयो हो म्हारी तलाश में।"

मखानी की नजरें पार्क के छोटे से प्रवेश गेट पर थीं। जहां से उसकी पत्नी ने भीतर प्रवेश किया था।

"अब वो तुम्हारी पत्नी नहीं है।"

"लगो हो उसो ने म्हारे को पैचान लयो हो। वो इधर ही आयो हो।"

"वो तुम्हें नहीं पहचान सकती। तुम अब बांकेलाल राठौर हो।"

बूढ़ी पास आकर कह उठी।

"बेटा, तुमने यहां बूढ़े से आदमी को देखा है, व...वो कुछ नशे में था।"

"म्हारे से बोल्लो हो।" मखानी ने पूछा।

"हां, तुमने कहीं उस बूढ़े को देखा हो।"

"मरो पड़ो हो कंई पे वो। म्हारे को का।"

"क्या?" बूढ़ी अचकचा उठी।

"वो स्वर्ग सिधार गयो। ईब वो कम्भी वापस नेई आयो हो।"

"तेरे मुंह में भूसा।" बूढ़ी गुस्से में कह उठी—"तू मेरे आदमी को मार रहा है।"

"अंम ही थारा बूढ़ा होवे।"

"भाग यहां से।" बूढ़ी पलटते हुए बोली—"मैं भी किस पागल से बात करने लगी।" वो चली गई।

"मैंने तेरे को कहा था कि वो तेरे को नहीं पहचानेगी।"

"अंम भी, एक बारो चैक करो हो उसो को।" मखानी ने कहा।

"अब तू काम के लिए तैयार हो जा।"

"अम्भी?"

"हां। तेरे को नए कपड़े दिलवा देता हूं और समझा देता हूं तूने अब क्या काम करना है और कैसे करना है।" शौहरी की फुसफुसाहट जवाहर मखानी के कानों में पड़ी।

☐ ☐
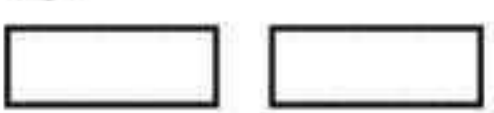
बांकेलाल राठौर टैक्सी से उतरा तो रात के ग्यारह बज रहे थे। टैक्सी वाले को पैसे देकर पारसनाथ के रेस्टोरेंट की तरफ बढ़ गया, जो कि सामने था। रेस्टोरेंट में अब काफी हद तक शांति थी। ज्यादा भीड़ नहीं थी। दस-बारह टेबलें ही भरी हुई थीं। भीतर पहुंचकर बांकेलाल राठौर ने मूंछों पर हाथ फेरकर हर तरफ देखा।

तभी एक तरफ खड़ा डिसूजा, बांकेलाल राठौर की तरफ बढ़ने लगा।
"मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट, बांकेलाल राठौर के कानों में पड़ी—"वो जो तुम्हारी तरफ आ रहा है, वो डिसूजा है और...।"
"अम जाणो हो उसो को शौहरी।"
"ये तो अच्छी बात है।"
तभी डिसूजा पास आ पहुंचा। मुस्कराकर बोला।
"आप बांके साहब हैं, देवराज चौहान की पहचान वाले।"
"म्हारी यादों हौवे थारे को?"
"मैं आपको कैसे भूल सकता हूं।" डिसूजा ने कहा—"आप डिनर के लिए यहां आए हैं तो आपको शानदार खाना...।"
"म्हारे को रोटी की जरूरत न हौवे।" बांकेलाल राठौर पेट पर हाथ फेरकर बोला—"पारसनाथो किधर हौवे?"
"ऊपर हैं, काम है तो उन्हें बुला देता...।"
"अंम ही ऊपरो जावे।"
पल भर के लिए डिसूजा हिचकिचाया फिर बोला।
"एक मिनट रुकिए।" कहकर वो काउंटर की तरफ चला गया।
"ईब पूछो हो पारसनाथो से।" बांकेलाल राठौर हड़बड़ाया।
उसी क्षण शौहरी की फुसफुसाहट उसके कानों में पड़ी।
"मालूम है तेरे को क्या करना है, कैसे बात...।"
"सबो कुछ मालूम हौवे।" बांकेलाल राठौर कह उठा।
"तुम्हें घबराना जरा भी नहीं है तुम...।"
"अंम क्यों घबरावो हो। अंम इस वक्तो बांकेलाल राठौर हौवे। वो ही दिमाग, वो ही शरीर, वो ही ताकत।"
"खूब।" शौहरी की हंसी कानों में पड़ी—"मैंने तुम्हें चुनकर अच्छा किया।"
"मखानी, बोत काम का हौवे शौहरी।"
तभी डिसूजा पास आकर मुस्कराकर बोला।
"आप उस खाली टेबल पर बैठिए। सर, अभी आ रहे हैं।"
"तो म्हारे को वो ऊपरो न बुलावे हो। कोई बातो ना।" बांकेलाल राठौर सिर हिलाता टेबल की तरफ बढ़ गया।
डिसूजा उसके साथ रहा।
बांकेलाल राठौर बैठा तो डिसूजा ने पूछा।
"आप क्या लेना पसंद करेंगे?"
"तंम म्हारी खातिरदारी करो हो। ठीको, म्हारे को लस्सी चाहियो। मक्खनों का गोला डालो के।"

"अभी हाजिर करता हूं।" कहने के साथ ही डिसूजा चला गया।

"कैसा लग रहा है मखानी?" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"बोतो बढ़िया। म्हारे को विश्वास न आयो कि अंम जवान हो गया हो।"

"अभी तो तुमने जवानी का मजा लूटना है।"

"सच्ची में। कोई छोकरी है क्या?"

"बता दूंगा, बात तुझे करनी होगी।"

"सबो कुछ अंम ही करो हो। तबो थारी जरूरतो न हौवे।" बांकेलाल राठौर न दांत फाड़े।

"मैं तेरे को जिंदगी का भरपूर मजा दिलाऊंगा।"

"धन्यवादो थारा।"

"ये काम बढ़िया ढंग से करना।"

"तंम म्हारे को बारो-बारो काये को ये बात कहो हो। अंम थारा कामो बढ़िया करो हो।"

"खुश हो मखानी।" शौहरी की हंसी उसके कानों में पड़ी।

"म्हारी जवानो वापस आ गयो। अंम बोत खुशो हौवे। मन्ने जिंदगी में कम्भी मूंछें न रखो हो, ईब तो म्हारी मूंछें भी हौवो हो। म्हारे को सबो कुछ बोत जंचो हो। थारो शुक्र हौवो।"

"शुक्रिया कैसा। तुम मेरा काम करो, मैं तुम्हारा काम करूंगा। मैं भी खुश तुम भी खुश।"

"मैं तो थारे से ज्यादो खुशो हूं।"

"पारसनाथ आ रहा है।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

बांकेलाल राठौर ने देखा पारसनाथ को आते।

पारसनाथ पास पहुंचा। बांकेलाल राठौर ने बैठे-बैठे उससे हाथ मिलाया।

पारसनाथ उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया।

तभी वेटर बड़ा गिलास लस्सी का सामने रख गया।

बांकेलाल राठौर पारसनाथ को देख रहा था।

"आज सुबह ही हम मिले थे।" पारसनाथ बोला—"मैंने तो सोचा था कि तुम मुम्बई चले गए हो।"

"अंम मुम्बई से ही वापसो आयो हो।" बांकेलाल राठौर का स्वर तीखा हो गया।

"मुम्बई से वापस—मेरे पास क्यों?"

"नगीना भाभी किधर हौवे?"

"नगीना?" पारसनाथ की आंखें सिकुड़ीं।

"थारी मोन्नो चौधरो उसी को मुम्बई से ले उड़ो।"

"नहीं।"

"यो हौवे पारसनाथो।" बांकेलाल राठौर का स्वर कठोर हो गया।

"ये नहीं हो सकता।"

अगले ही पल बांकेलाल राठौर का घूंसा पारसनाथ के गाल पर पड़ा।

कुर्सी पर बैठा पारसनाथ थोड़ा-सा लड़खड़ाया फिर संभला।

पारसनाथ के चेहरे पर हैरानी के स्पष्ट भाव उभरे।

डिसूजा फौरन पास आ पहुंचा। पारसनाथ ने डिसूजा को हाथ से रुकने का इशारा किया। उसकी नजरें एकटक बांके पर थीं। पारसनाथ ने अपना गाल मसला और शांत स्वर में कह उठा।

"देवराज चौहान की पत्नी नगीना को कोई ले गया?"

"हां।" बांकेलाल राठौर के दांत भिंचे थे।

"तुम कहते हो कि उसे मोना चौधरी ले गई।"

"हां।"

"कौन कहता है?"

"नगीना की नौकरानी सत्यो बोले हो। वो मोन्नो चौधरी को देखे हो।"

"ये नहीं हो सकता।"

बांकेलाल राठौर का हाथ फिर घूमा।

परंतु पारसनाथ सतर्क था। उसने उसी पल बांकेलाल का हाथ थाम लिया।

"होश में रहो।" पारसनाथ कठोर-खुरदरे स्वर में कह उठा—"मत भूलो तुम कहां पर हो इस वक्त।"

"तंम म्हारे को डरावे हो?" बांकेलाल राठौर गुर्राया।

"समझा रहा हूं। अपने को संभालो वरना आज के बाद कोई तुम्हें देख भी नहीं पाएगा।"

"तंम म्हारे को धमकी दयो हो। अंम थारो को 'वड' दयो पारसनाथो।" बांकेलाल राठौर गुर्राया।

पारसनाथ ने उसका हाथ छोड़ते हुए कहा।

"अब अपने पर काबू रखना। वरना...।"

"थारी वरनों की अंम परवाह न करो हो। तंम म्हारे को मोन्नो चौधरी का पतो दयो, अंम उसो को वडेगा।"

पारसनाथ ने फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

"किसो मारो हो फोन्नो को?"

"मोना चौधरी से बात कर रहा हूं।"

"उसो बोल्लो, सीधी तरहो नगीना भाभी को वापस दे दयो, वरनो अंम उसो को 'वड' दयो।"

फोन लग गया। मोना चौधरी की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"मेरे सामने बांकेलाल राठौर बैठा है।" पारसनाथ कह उठा—"उसका कहना है कि तुमने नगीना को उठा लिया है।"

"नगीना को?" मोना चौधरी की आवाज कानों में पड़ी।

"हां। क्या तुम मुम्बई में हो?"

"नहीं, मैं तो अपने फ्लैट पर हूं दिल्ली में। शाम को बाहर भी नहीं निकली। बांके ये बात कहता है?"

"वो कह रहा है। गुस्से में है।"

"मैंने ये काम नहीं किया।"

पारसनाथ ने फोन बंद किया और बांकेलाल राठौर से बोला।

"मोना चौधरी कहती है कि उसने ये सब नहीं किया।"

"म्हारे को बेवकूफ बनायो हो।" बांकेलाल राठौर ने गुस्से से कहा और रिवॉल्वर निकाल ली।

उसकी ऊंची आवाज पर कइयों ने इधर देखा।

पारसनाथ के होंठ भिंच गए।

डिसूजा ने रिवॉल्वर निकाली और बांकेलाल राठौर की तरफ कर दी।

"रिवॉल्वर वापस रखो।" डिसूजा गुर्राया।

बांकेलाल राठौर ने डिसूजा के रिवॉल्वर पर हाथ रखकर उसे पीछे किया।

"तंम इधर से चलो जायो। म्हारे को पारसनाथ से बात करने दयो।"

डिसूजा खड़ा रहा।

पारसनाथ के चेहरे पर कठोरता सिमटी पड़ी थी।

"पारसनाथो, मोन्नो चौधरी झूठो बोल्लो हो। नगीनो उसे पासो हौवो हो, म्हारे को...।"

तभी पारसनाथ का फोन बजने लगा।

"बातों कर, यो मोन्नो चौधरी का फोनो हौवे। ईब वो थारे से कहो कि नगीनो उसो के पास हौवे।"

"हैलो।" पारसनाथ ने बांके को घूरते बात की।

"पारसनाथ, मैं जगमोहन बोल रहा हूं दिल्ली से।"

पारसनाथ की आंखें सिकुड़ीं।

"कहो।"

"मोना चौधरी यहां से नगीना को ले गई है।" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

पारसनाथ के माथे पर बल नजर आने लगे।

"बांकेलाल राठौर इस वक्त मेरे सामने बैठा है और वो भी यही बात कह रहा है।"

"क्या कहते हो?" जगमोहन की चौंकी आवाज, पारसनाथ ने सुनी।

"इसमें हैरान होने की क्या बात है जगमोहन?"

"ये नहीं हो सकता। भला बांके तुम्हारे पास और वो भी यही बात कह रहा है।"

"इस बारे में मैंने मोना चौधरी से बात की है। वो कहती है ये काम उसने नहीं किया।"

"उसने किया है ये काम। नगीना उसके पास है।"

"नहीं है।"

"नगीना की नौकरानी सत्या ने मोना चौधरी को देखा है। नगीना ने मोना चौधरी का नाम लेकर बात की।"

"ये गलत है।"

"ये सही है। मोना चौधरी से मेरी बात कराओ।"

"वो यहां नहीं है। उसका फोन नम्बर, मैं तुम्हें नहीं दे सकता।"

पल भर की खामोशी के बाद जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"बांके से मेरी बात बराओ।"

पारसनाथ ने बांके की तरफ फोन बढ़ाया।

"जगमोहन से बात करो।"

बांकेलाल राठौर ने फोन थामा और बात की।

"हैलो।"

"तुम वहां क्या कर रहे...।"

"मोन्नो चौधरी नगीनो भाभी को उठा लयो, अंम इधरो...।"

"तुम्हें ये बात किसने कही कि भाभी को मोना चौधरी ले गई है।" उधर से जगमोहन ने पूछा।

"म्हारे को पतो हौवे।"

"कैसे पता चली ये बात?"

"बादो में बतायो थारो को। ईबो म्हारे को पारसनाथ से बातों कर लेने दयो।"

"तुम उससे कोई बात नहीं करोगे। वापस आ जाओ।"

"अंम...।" बांकेलाल राठौर ने कहना चाहा।

"रुस्तम से बात कराओ।"

"छोरो म्हारे पासो न हौवे।"

"किधर है वो?"

"वो मुम्बई में बिजी हौवे। तंम म्हारे को पूछने दो कि नगीना को किधर रखो हो, मोन्नो चौधरी।"

"बांके तुम...।"

बांकेलाल राठौर ने फोन बंद कर दिया। टेबल पर रखा। रिवॉल्वर अभी भी पारसनाथ की तरफ थी।

"बोल्लो, म्हारे को नगीनो भाभी की जरूरत हौवे, मोन्नो चौधरी से पूछो कि...।"

"मोना चौधरी के पास नहीं है नगीना।"

उसी पल बांके ने पास खड़े डिसूजा की टांग पर गोली चला दी।

फायर का तेज धमाका हुआ।

डिसूजा की चीख गूंजी। वो टांग थामे नीचे बैठता चला गया।

पारसनाथ ने उसी पल, बांकेलाल राठौर पर छलांग लगा दी।

वहां बैठे लोगों की चीखें गूंजीं।

पारसनाथ और बांकेलाल राठौर, दोनों आपस में भिड़े नीचे गिरते चले गए।

"तंम म्हारे को पकड़ो हो।" बांकेलाल राठौर ने अपने ऊपर पड़े पारसनाथ को दूर उछाल फेंका।

पारसनाथ फौरन संभला।

रिवॉल्वर बांके के हाथ से छूट चुकी थी।

पारसनाथ तेजी से बांकेलाल राठौर पर झपटा। बांके ने उसे घूंसा मारा, जिसे रोककर पारसनाथ ने जूते की जोरदार ठोकर उसके पेट में मारी।

बांके चीखकर पीछे को हुआ।

पारसनाथ ने नीचे पड़ी बांके की रिवॉल्वर उठा ली। खतरनाक हो चुका था पारसनाथ का चेहरा।

बांकेलाल राठौर भी सुलग रहा था।

"अगर मोना चौधरी ने नगीना को उठाया होता तो मैं तेरे को पक्का गोली मार देता बांके। लेकिन मामला कुछ और है। मोना चौधरी ने नगीना को नहीं उठाया। तेरे को गलतफहमी है, इसलिए तेरे को जाने दे रहा हूं।"

"अंम थारे को 'वड' दयो।" बांकेलाल राठौर गुर्राया।

"निकल जा यहां से।"

"अंम फिर आयो हो।" बांकेलाल राठौर ने दांत भींचकर कहा और बाहर की तरफ बढ़ गया।

पारसनाथ उसे तब तक देखता रहा, जब तक कि वो बाहर न निकल गया।

वहां खाना खाने वाले लोग घबराकर पहले ही जा चुके थे। पारसनाथ ने डिसूजा को चैक किया। खतरे से बाहर थी उसकी हालत। गोली मांस को छीलती निकल गई थी।

□ □

"मखानी।" कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी—"तूने तो कमाल कर दिया।"

"तो मैंने बढ़िया काम किया।" बांकेलाल राठौर मुस्कराया।

"नि:संदेह।"

"अब बता लड़की कहां मिलेगी मुझे?"

"अभी काम बाकी है।"

"क्या मुझे दोबारा पारसनाथ के पास जाना होगा?"

"नहीं। महाजन के पास जाना है। इसी तरह का झगड़ा उससे करना है। उससे थोड़ा ज्यादा झगड़ा करना।"

"समझ गया। लेकिन महाजन कहां है, मैं नहीं जानता।"

"मुझे सब पता है। चल मैं तेरे को वहां ले चलता हूं।"

□ □

फोन बंद होते ही जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान की निगाह पहले से ही जगमोहन पर थी, वो बोला।

"क्या हुआ?"

"मेरा दिमाग खराब हो रहा है। कुछ समझ में नहीं आ रहा।" जगमोहन बोला—"बांके इस वक्त पारसनाथ के पास है और उससे पूछ रहा है कि नगीना भाभी को, मोना चौधरी ने कहां रखा है।"

"बांके को कैसे पता कि मोना चौधरी ने नगीना को उठाया है।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"ये ही तो दिमाग खराब करने वाली बात है।"

"कुछ देर पहले तो नगीना को मोना चौधरी ले गई है। ये बात बांके को पता चल गई। बांके पारसनाथ के पास भी पहुंच गया, जबकि वो दिन में, हमारे साथ ही मुम्बई पहुंचा। ये सब कैसे हो सकता है।"

"ये हो रहा है। एक और अजीब बात है, बांके और रुस्तम एक साथ ही जाते हैं, लेकिन पारसनाथ के पास बांके अकेला गया है।"

देवराज चौहान ने सत्या को बुलाकर पूछा।
"बांकेलाल राठौर यहां आया था?"
"मैं नहीं जानती, इस नाम वाले को।" सत्या बोली।
"मूंछों वाला है वो।" देवराज चौहान ने बांके का हुलिया बताया।
"ये आदमी तो यहां कभी नहीं आया।" सत्या ने कहा।
"तुम जाओ।"
"खाना लगा दूं?" सत्या ने पूछा।
"नहीं।"
सत्या चली गई।
जगमोहन हाथ में थमे फोन का नम्बर मिलाता बोला।
"रुस्तम से पूछता हूं, वो बताएगा कि ये बात बांके को कैसे पता चली कि नगीना भाभी को मोना चौधरी ले गई।"
देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।
"पारसनाथ कहता है कि उसने मोना चौधरी से पूछा है, ये काम मोना चौधरी ने नहीं किया।"
"झूठ बोलती है मोना चौधरी।" देवराज चौहान गुर्रा उठा—"सत्या झूठ नहीं कह सकती कि यहां मोना चौधरी आई थी। नगीना ने ही सत्या से कहा कि वो मोना चौधरी से बात कर रही है।"
"लेकिन मोना चौधरी मुम्बई में है।"
"ये सम्भव नहीं हो सकता।"
"हां, ये सम्भव हो ही नहीं सकता।" जगमोहन ने परेशान स्वर में कहा।
"बांकेलाल राठौर इतनी जल्दी पारसनाथ के पास कैसे पहुंच गया। उसे कैसे पता चला गया कि मोना चौधरी ने नगीना को...।"
तभी फोन लग गया।
"हैलो।" रुस्तम राव की आवाज जगमोहन के कानों में पड़ी।
"रुस्तम।" जगमोहन ने कहा—"बांके को कैसे पता चला कि मोना चौधरी ने नगीना भाभी को उठा लिया है।"
पल भर की खामोशी के बाद रुस्तम राव की आवाज कानों में पड़ी।
"क्या बोला बाप, आपुन समझेला नेई।"
जगमोहन ने अपनी बात फिर दोहराई।
"तुम्हारा मतलब कि नगीना दीदी को, मोना चौधरी ने उठाईला है बाप?" रुस्तम राव की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम्हें नहीं पता?"

"नेई बाप। अम्भी तुमसे ही पता चलेला है। आपुन अम्भी...।"

"बांके दिल्ली कब गया?"

"बाप तो तुम्हारे साथ ही मुम्बई पौंचेला है। आने के बाद नींद मारेला है। अम्भी तक उठा नहीं।"

"क्या कह रहे हो। बांकेलाल राठौर तुम्हारे पास है?"

"सामने बाप—खुर्र-खुर्रा रईला है।"

"बात करा।"

"बाप से।"

"हां, बात करा।" जगमोहन तेज स्वर में बोला।

देवराज चौहान के होंठ भिंच चुके थे। नजरें जगमोहन पर थीं।

"रुस्तम कहता है कि बांके दिल्ली से आने के बाद, अभी तक नींद ले रहा है।"

"ये नहीं हो सकता।" देवराज चौहान के भिंचे होंठों से निकला।

"मैं भी तो यही कहता हूं कि नहीं हो सकता। बांके अभी तो दिल्ली में, पारसनाथ के पास था।" जगमोहन अजीब-से स्वर में बोला।

तभी फोन द्वारा बांके की नींद से भरी आवाज जगमोहन के कानों में पड़ी।

"म्हारी नींद के दुश्मन तंम क्यों बनो हो। मन्ने थारी का भैंस खोली क्या?"

"तुम दिल्ली में हो?"

"ओह अंम किधर हौवे। थारे साथो तो विमान में बैठोकर मुम्बई पौंचो हो। टिकट भी थारी ही लगो हो।"

"मतलब कि कुछ देर पहले तुम पारसनाथ के पास नहीं थे?" जगमोहन अचकचाया।

"पारसनाथों के पासो। अंम उधर क्यों हौवे। अंम तो इधर, सपणें देखो है कि म्हारी गुरदासपुरो वाली ने चार बच्चों...।"

"बांके।"

"बोल्लो।"

"मैंने कुछ देर पहले तुमसे बात की, जब तुम पारसनाथ के पास थे।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"अंम दो जगहों, एक साथो कैसे हौवे?"

"मैंने तुमसे बात की।"

"छोरे से पूछ लयो। अंम तो इधरो ही नींदो मारो हो। बात का हौवे। थारी प्राबलमों का हौवे?"

"मोना चौधरी नगीना भाभी को, उसके बंगले से उठाकर ले गई है।"

"कबो?"

"थोड़ी देर पहले।"

"अंम मोन्नो चौधरी को 'वड' दयो।" बांकेलाल राठौर की गुर्राहट कानों में पड़ी।

"लेकिन मुझे कुछ गड़बड़ लग रही है।"

"का?"

"मैंने अभी तुमसे बात की और तुम कहते हो कि मैं नींद ले रहा था।"

"पक्को।"

"अगर तुम रुस्तम के पास मौजूद न होते तो मैं तुम्हारी बात पर कभी यकीन नहीं करता।" जगमोहन गम्भीर स्वर में कह रहा था—"कहीं पारसनाथ तो तुम्हारे पास नहीं, मुम्बई में?"

"पारसनाथो?" बांके की आवाज कानों में पड़ी—"म्हारे को थारी खोपड़ी खराब हो गयो लागे हो।"

"शायद।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"भाभी किधर हौवे ईब?"

"पता नहीं।"

"अंम अम्भी पौंचो हो।"

"बंगले पर आना। हम भी वहीं पहुंच रहे हैं।"

"ईब किधरो हो?"

"नगीना भाभी के बंगले पर।" जगमोहन ने कहा और फोन बंद करके देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान को भी अपना दिमाग हिला सा लग रहा था वो बोला।

"क्या तुम्हें पक्का यकीन है कि पारसनाथ ने, बांके से ही तुम्हारी बात कराई थी?"

"मैं धोखा खाने वाला नहीं। वो बांकेलाल राठौर ही था।" जगमोहन ने कहा।

"तो फिर अभी तुमने किससे बात की?"

"बांके से।"

"तुम्हारा मतलब कि दो बांके हैं। एक दिल्ली में और एक मुम्बई में।"

जगमोहन ने होंठ भींच लिए।

"पारसनाथ से फिर बात करो।"

जगमोहन पारसनाथ का नम्बर मिलाने लगा।

"ये सब अजीब हो रहा है।" देवराज चौहान ने कहा—"ऐसा नहीं होना चाहिए। हम कहीं पर गलती कर रहे हैं।"

"हम कहीं भी गलती नहीं कर रहे। जो सामने है, वो ही बात कर रहे हैं।"

नम्बर लग गया। जगमोहन बोला।

"बांके अभी भी तुम्हारे पास है पारसनाथ?"

"नहीं।" पारसनाथ का कठोर स्वर जगमोहन के कानों में पड़ा।

"क्या हुआ तुम्हें?" उसके बदले स्वर पर जगमोहन ने पूछा।

"वो मेरे आदमी को, टांग पर गोली मारकर गया है, डिसूजा को और मैंने उसे सही-सलामत जाने दिया।"

जगमोहन ने गहरी सांस लेकर कहा।

"गलत किया उसने। बहुत गलत किया, लेकिन हम बहुत परेशान हैं।"

"क्यों?"

"मोना चौधरी, नगीना भाभी को...।"

"मोना चौधरी ने ऐसा कुछ नहीं किया। मैंने बात कर ली है उससे। नगीना कहां पर थी?"

"मुम्बई—बंगले पर।"

"और मोना चौधरी दिल्ली में है।"

"ये कैसे सम्भव है। नौकरानी सत्या ने मोना चौधरी को देखकर, उसका हुलिया बयान किया है।"

"मुझ पर विश्वास करो। मोना चौधरी दिल्ली में है।"

"एक और परेशानी है। बांके अभी तुम्हारे पास था?" जगमोहन ने पूछा।

"हां।"

"तुम्हें यकीन है कि वो बांके ही था?"

"पूरा यकीन है कि वो बांके था, परंतु तुम अजीब-सा सवाल क्यों पूछ रहे हो?"

"क्योंकि बांके मुम्बई में है, मैंने अभी उससे बात की है।"

"ये कैसे हो सकता है?" उधर से पारसनाथ का अजीब-सा स्वर कानों में पड़ा।

"मैंने ठीक कहा है।"

"तुम्हारा मतलब कि दो बांके और दो मोना चौधरी नजर आ रही हैं।"

इस तरफ तो जगमोहन ने ध्यान नहीं दिया था। वो चौंका।

"ये ही बात, ये ही बात है।"

"क्या हो रहा है ये सब?"

"जथूरा का कालचक्र हो सकता है ये। जथूरा हममें झगड़ा कराना चाहता है।"

"ओह।"

"इधर नकली मोना चौधरी ने नगीना को गायब कर दिया, उधर नकली बांके ने तुम्हारे आदमी को गोली मारी।"

"मुझे घूंसा भी मारा।"

"तो झगड़े की पूरी कोशिश की गई।"

"ऐसा ही समझ लो, परंतु मुझे विश्वास नहीं आ रहा था कि मोना चौधरी और बांके के डुप्लीकेट भी हैं कहीं।"

"ये जथूरा का कारनामा है। वो नकली चेहरे वालों से ऐसी हरकतें करा रहा है कि हम झगड़े...।" जगमोहन बोला—"लेकिन हमने बचकर रहना है। हमने झगड़ा नहीं करना है।"

"ज्यादा देर बचकर नहीं रहा जा सकता, जथूरा की इस चाल से।" पारसनाथ का स्वर कानों में पड़ा।

"बच्चों जैसी बातें मत करो, पारसनाथ।"

"मैंने सही कहा है।"

"तुम इस बारे में मोना चौधरी से बात करो। उसे सतर्क कर दो कि वो इस तरह के किसी मामले में, झगड़े में न पड़े।"

"कोई कब तक रुकेगा?"

"मोना चौधरी ने नगीना भाभी को उठा लिया। हम हालातों को समझकर रुके हुए हैं कि नहीं। इस तरह तुम लोग भी सब्र रख सकते हो, ये हमारी कमजोरी ही होगी कि जानते-बूझते हम जथूरा की चालों में आ जाएं।"

पारसनाथ की आवाज नहीं आई।

"सुन रहे हो तुम मेरी बात?"

"मैं मोना चौधरी से बात करता हूं।" पारसनाथ का गम्भीर स्वर कानों में पड़ा।

"करो। मेरा फोन नम्बर तुम्हारे फोन में आ गया है। जरूरत पड़ने पर मुझसे बात करना।"

उधर से पारसनाथ ने फोन काट दिया था।

जगमोहन देवराज चौहान से बोला।

"दो बांके और दो मोना चौधरी का वजूद है इस वक्त।"

"ये कैसे सम्भव है?"

"जथूरा के पास शक्तियां हैं, वो ही ये सब कुछ कर रहा है। हममें और मोना चौधरी में, झगड़ा कराना उसकी इस वक्त की मुख्य जरूरत है। जथूरा नहीं चाहता कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश करें।

वो यहीं पर हमसे झगड़ा कराकर, खून-खराबा करवा देना चाहता है। खासतौर से मोना चौधरी या तुममें से वो एक को मरवा देना चाहता है। तुम दोनों में से एक के मरने पर, ग्रहों की वो शक्तियां खत्म हो जाएंगी, जो कि पूर्वजन्म की बुरी ताकतों पर भारी पड़ती हैं। मुझे पूरा यकीन है कि जथूरा अभी और कमाल दिखाएगा।"

"मुझे नगीना की चिंता है।" देवराज चौहान बोला।

"भाभी की चिंता मुझे भी है, परंतु ये बात हमें हर वक्त याद रखनी है कि जथूरा अपना खेल शुरू कर चुका है और हमें उसके खेल के मोहरे नहीं बनना है। सोच-समझकर उसकी चाल का जवाब देना है।" जगमोहन अपने शब्दों पर जोर देकर बोला।

"नगीना कहां होगी?"

"मुझे नहीं मालूम, परंतु पूर्वाभास ने मुझे जो दिखाया था, उसके हिसाब से उसे इस वक्त कहीं पर बेहोश पड़े होना चाहिए।"

"अगर ये जथूरा का खेल हे तो हम नगीना को नहीं ढूंढ़ सकते।"

"जथूरा नगीना भाभी की जान नहीं लेगा।"

"ये तुम कैसे कह सकते हो?"

"जथूरा तब तक हम लोगों में से किसी की जान नहीं ले सकता, जब तक कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश न कर जाएं। हमारी जान लेने के लिए जथूरा की शक्तियां यहां काम नहीं करतीं। ऐसा पोतेबाबा ने कहा था।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाई।

"चलो, हमें बंगले पर पहुंचना है। बांके और रुस्तम वहां पहुंचने वाले होंगे। हम सब मिलकर कोई रास्ता निकालेंगे कि नगीना भाभी को वापस लाया जा सके और जथूरा के कालचक्र का कोई जवाब दें। लेकिन मुझे चिंता इस बात की है कि जथूरा कोई नई चाल न चल दे और बड़ी मुसीबत खड़ी हो जाए, जिसका हम जवाब न दे सकें।"

देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।

"सत्या।" जगमोहन ने पुकारा—"दरवाजा बंद कर लो।"

फौरन ही सत्या वहां आ गई।

"लेकिन बीवीजी तो...।"

"हम उन्हें ढूंढ़ रहे हैं, वो जल्दी वापस आ जाएगी।" जगमोहन ने कहा।

सत्या की आंखें भर आईं।

"बीवीजी कितनी खुश थी कि आप दोनों उनके साथ खाना खाएंगे। वो तो...।"

जगमोहन देवराज चौहान का हाथ पकड़े बाहर निकल गया।

"ये है सामने नील सिंह यानी कि आज के महाजन का घर।" मखानी के कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी—"परंतु यहां पर तुझे जगमोहन के रूप में जाना है।"

"जगमोहन के रूप में। लेकिन मैं तो बांकेलाल राठौर बना...।"

"उसकी तू फिक्र मत कर। मैं तेरा रूप अभी बदल देता हूं।"

"ऐसा हो सकता है।"

"क्यों नहीं हो सकता। कालचक्र की शक्तियां हमारे साथ हैं। मैं तेरा दिमाग भी जगमोहन जैसा बना दूंगा।"

"दर्द होगा।"

"थोड़ा-सा। पहले जितना नहीं।"

अगले ही पल मखानी को अपने शरीर में तीव्र सिहरन दौड़ती महसूस हुई। कुछ पीड़ा भी।

मखानी ने पीड़ा को आसानी से सह लिया।

उसने अपने शरीर में कुछ बदलाव महसूस किए।

अब वो जगमोहन के रूप में था।

"य...ये मैं तो बदल गया। मेरी मूंछें कहां गईं?" मखानी अपने चेहरे को छूता कह उठा।

"जगमोहन की मूंछें नहीं हैं। तेरे को मूंछें पसंद हैं तो मैं बाद में तुझे फिर बांके बना दूंगा।"

"मैं ऐसा भी ठीक हूं, लेकिन मेरा अपना असली चेहरा क्या है?" मखानी ने पूछा।

"तेरा अपना चेहरा कोई भी नहीं है, तू दूसरों के चेहरों में ही जिएगा।"

"ओह। कोई बात नहीं। जवान तो रहूंगा। मुझे लड़की मिलनी चाहिए।"

"जरूर मिलेगी। अब मैं तेरा दिमाग बदलकर जग्गू जैसा कर रहा हूं। उसके बाद तू नील सिंह से मिलेगा। उससे जो बातें करनी हैं, वो भी तेरे दिमाग में भर देता हूं।"

"जल्दी कर। उसके बाद मैं लड़की के पास...।"

"इसके बाद तुझे मिन्नो के पास भेजूंगा फिर तेरे को शानदार लड़की भी दिलवा दूंगा।"

"वादा।"

"शौहरी का वादा।"

"ठीक है। जल्दी से मेरा दिमाग बदल। मैं काम खत्म करके फारिग हो जाना चाहता हूं।"

मखानी ने स्विच पर उंगली रखी तो भीतर बेल बजने की आवाज गूंजी।

दो पल उसने इंतजार किया।

रात के बारह बज रहे थे।

दरवाजा खुला, महाजन दिखा। जगमोहन को सामने पाकर चौंका।

"तुम?"

"हां मैं।" कहने के साथ ही जगमोहन ने जोरदार घूंसा उसके चेहरे पर मारा।

महाजन लड़खड़ाकर दो-तीन कदम पीछे हो गया।

जगमोहन भीतर आ गया। चेहरे पर क्रोध के सुलगते भाव नाच रहे थे।

"नगीना भाभी कहां है?" जगमोहन गुर्राया।

महाजन संभला। उसने जगमोहन को घूरा।

"तुमने अभी पारसनाथ से फोन पर बात की थी।"

"हां, की थी।"

"तुमने उसे कहा कि तुम मुम्बई में हो।"

"तो?"

"अब तुम दिल्ली में, यहां मेरे पास कैसे पहुंच गए?"

"फालतू बात मत कर, नगीना भाभी के बारे में बता।" जगमोहन तेज स्वर में बोला।

"इसका मतलब तुमने पारसनाथ से गलत कहा कि तुम मुम्बई में हो। तुम दिल्ली में ही हो। बांके भी यहीं था। पारसनाथ को तुमने गलत खबर दी। दो बेबी और दो बांके होने की बात गलत है।"

"तो तू समझ गया।"

महाजन का चेहरा कठोर होने लगा।

"तो ये सब चाल है तुम लोगों की।"

"हमें नगीना भाभी वापस चाहिए।"

"वो हमारे पास नहीं है।"

"मोना चौधरी ने उसे मुम्बई से, उसके बंगले से उठाया है।"

"ये बात गलत है। बेबी दिल्ली में ही है।"

"तो तू शराफत से नहीं बताएगा।" जगमोहन गुर्राया।

महाजन के दांत भिंच गए।

तभी भीतर से राधा की आवाज आई।

"क्या बात है नीलू। कौन है?"

महाजन और जगमोहन एक-दूसरे को घूरे जा रहे थे।

"ये मेरा घर है।" महाजन ने कठोर स्वर में कहा।

"मुझे नगीना भाभी वापस चाहिए—वो...।"

"मुझसे झगड़ा करके तू गलती कर रहा है जगमोहन।" महाजन ने दांत पीसकर कहा।

"ये ही बात मैं तेरे से कहना चाहता...।" जगमोहन का चेहरा क्रोध में तप रहा था।

"होश में आ, नगीना को बेबी ने नहीं उठाया।"

"तो नहीं मानेगा तू?" जगमोहन ने दांत किटकिटाए।

"बेवकूफ, भूल गया तू, तूने ही कहा था कि जथूरा हममें झगड़ा करवाने की चेष्टा...।"

"तो इसका ये मतलब नहीं कि मोना चौधरी नगीना भाभी का अपहरण कर लें।"

"ये सब नहीं किया बेबी ने।"

तभी जगमोहन उछला और तीर की भांति महाजन से जा टकराया।

महाजन खुद को संभाल न सका और नीचे जा गिरा। अगले ही पल खड़ा हुआ और गुस्से से भरा जगमोहन पर झपट पड़ा। एक घूंसा जगमोहन के पेट में और दूसरा उसके चेहरे पर मारा।

जगमोहन खुद को संभाल न सका और दोहरा होता चला गया।

महाजन ने उसके सिर के बाल पकड़कर चेहरा ऊपर किया और घुटना उसके चेहरे पर मारा।

जगमोहन हल्की-सी चीख के साथ पीछे को जा गिरा। संभला। महाजन को खूनी निगाहों से देखा। उसके होंठों से खून बह निकला था। सिर के बाल बिखर गए थे।

"डर गया मखानी।" उसके कानों में शौहरी की फुसफुसाहट गूंजी—"घबरा मत, जग्गू में बहुत दम है। महाजन इस वक्त तेरा मुकाबला नहीं कर सकता। तू इसे मार-मार के बुरा हाल कर दे।"

अगले ही पल जगमोहन के होंठों से गुर्राहट निकली और वो उछलकर खड़ा हो गया।

"मैं तुझे जिंदा नहीं छोडूंगा महाजन।" जगमोहन ने दांत किटकिटाकर कहा।

तभी वहां राधा ने कदम रखा।

वो एक पल में ही माहौल को भांप गई। फौरन दोनों के बीच आकर जगमोहन से बोली।

"क्यों रे, तू मेरे नीलू से झगड़ा करता है। मेरे से मुकाबला कर, मैं ही तेरे हाथ-पांव तोड़ दूंगी।"

"बीच में से हट जा राधा।" महाजन गुर्राया।

"नहीं—मैं...।"

"सुना नहीं, हट—जा।" महाजन गुस्से से चीखा।

राधा महाजन की तरफ पलटकर ऊंचे स्वर में बोली।

"क्यों हट जाऊं। मैं क्या कम हूं। इस जैसों को तो मैं ही सीधा कर दूं।"

महाजन ने खतरनाक अंदाज में जगमोहन को आगे बढ़ते देखा तो, उसने राधा की बांह पकड़कर एक तरफ कर दिया उसे। उसके होंठों से धीमी-धीमी गुर्राहट निकल रही थी।

अगले ही पल महाजन ने जगमोहन पर छलांग लगा दी।

दोनों के जिस्म आपस में टकराए और नीचे जा गिरे। फर्श पर ही दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए। जिसे मौका मिलता, वो ही दूसरे को मार देता। घबराई राधा भागकर झाड़ू ले आई और गुस्से से भरी जब भी उसे मौका मिलता, वो जगमोहन के सिर पर झाड़ू मार देती और जो मुंह में आए बोले जा रही थी।

एकाएक जगमोहन ने महाजन को एक तरफ उछाला और फुर्ती से खड़ा होकर राधा को देखा।

"मैं तेरे को छोडूंगी नहीं।" राधा तलवार की तरह झाड़ू हिलाती कह उठी।

जगमोहन ने राधा की झाड़ू एक हाथ से पकड़ी और जोरदार घूंसा उसके चेहरे पर मारा।

राधा के होंठों से चीख निकली और वो पीछे जा गिरी।

"जगमोहन—ऽ-ऽ-ऽ।" महाजन गला फाड़कर चीखा और उस पर झपट पड़ा।

दोनों पागलों की तरह भिड़ गए। राधा आधी बेहोशी की हालत में नीचे पड़ी थी। उसके मुंह से खून निकल रहा था।

अगले पांच मिनट में ही जगमोहन और महाजन के चेहरे खून से भर चुके थे।

"बस, ठीक है मखानी।" जथूरा की फुसफसाहट कानों में पड़ी—"निकल यहां से। इसे बेहोश करके साथ ले लेना।"

जगमोहन ने महाजन को जोरों से धक्का दिया तो महाजन दूर जा गिरा।

"मैं तेरे को, पारसनाथ और मोना चौधरी को छोडूंगा नहीं। मार दूंगा सबको।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"तू यहां से जिंदा बचकर नहीं जा सकता जगमोहन।"
राधा अब कुछ-कुछ होश में आ रही थी। वो बोली।
"इसके हाथ-पांव तोड़ दे नीलू।"
तभी जगमोहन ने छोटा सा टेबल उठाया और महाजन पर झपट पड़ा। महाजन कुछ समझ नहीं पाया और टेबल उसके सिर पर आ लगा। महाजन की आंखों के सामने लाल-पीले तारे चमके और वो बेहोश होकर नीचे गिरने लगा तो जगमोहन ने उसे थामा और कंधे पर लादकर दरवाजे की तरफ बढ़ा।
"नीलू को कहां ले जा रहा है। रुक—मैं तेरा खून पी जाऊंगी।" राधा चीखी। उसकी हालत खास बेहतर नहीं थी।
राधा फौरन उसके पास आ पहुंची।
अगले ही पल जगमोहन का जोदार चांटा उसके गाल पर पड़ा तो वो चीखकर नीचे जा गिरी।
"मोना चौधरी से कहना, मैं उसे छोडूंगा नहीं। जगमोहन नाम है मेरा।"
जगमोहन दरवाजा खोलकर बाहर निकला और महाजन को लादे अंधेरे में आगे बढ़ गया।
"मखानी तूने तो कमाल कर दिया।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी।
"सच में।"
"जथूरा की कसम, तूने तो मेरा दिल जीत लिया।"
"तू बातें बहुत करता है शौहरी, लेकिन मेरे काम की बात नहीं करता।"
"तेरे काम की?"
"लड़की।"
"बस एक काम और। फिर तेरे को ऐसी शानदार लड़की दिलाऊंगा कि तू पागल हो जाएगा।"
"सच कहता है।"
"शौहरी तेरे से झूठ क्यों बोलेगा।"
"इसका क्या करूं?"
"नीचे रख दे।"
मखानी ने बेहोश महाजन को नीचे अंधरे में एक तरफ डाल दिया।
मखानी ने शौहरी को बुदबुदाते सुना।
अगले ही पल उसने एक नई आवाज सुनी।
"मुझे कैसे याद कर लिया शौहरी।" स्त्री की आवाज थी।
"कोई बहाना तो मिला तुझे याद करने का।"

"कभी बिना बहाने के भी याद कर लिया कर। क्या तेरा दिल नहीं करता।"

"करता है।"

"भौरी बता रही थी कि तू फुर्सत में भौरी के साथ मिलने वाला है। ये सच है।"

"हां, वो मुझे पसंद है।"

"मैं उससे ज्यादा सुंदर हूं।"

"सवाल सुंदरता का नहीं, पसंद का है। लेकिन तेरे से भी मिलूंगा। इस वक्त काम कर।"

"बोल।"

"ये नील सिंह बेहोश है। इसे वहीं पहुंचाना है, जहां नगीना को पहुंचाया है।"

"समझ गई।"

"चल मखानी।" शौहरी ने मखानी से कहा।

"ये।" उसने महाजन की तरफ इशारा किया।

"इसे वास्मा ठिकाने पर पहुंचा देगी।"

"वास्मा वो ही जिससे तू बात कर रहा था?"

"हां।"

मखानी वहां से चल पड़ा।

"वास्मा नील सिंह को कहां ले जाएगी?"

"ये तेरे जानने वाली बात नहीं है।"

"तू भी रंगीन मिजाज है मेरी तरह। वो तेरे को मिलने के लिए कह रही थी।"

"इन बातों की तरफ ध्यान मत दे। अपने काम को पूरा कर। तेरे को लड़की नहीं चाहिए क्या?"

"क्यों नहीं चाहिए। बता अब क्या करना है?"

"यहीं रह। नील सिंह की पत्नी मिन्नो को सारे हालात बताएगी, तो मिन्नो जरूर यहां आएगी।"

"तो।"

"तेरे को मिन्नो से मार-पिटाई करनी है, फिर भाग जाना है।"

"भाग जाना है?"

"हां। तेरे में इस वक्त जगमोहन की ताकतें हैं और जगमोहन मिन्नो से जीत नहीं सकता। इसलिए भाग चलना है। तेरे को ये दिखाना है, तू इन सब के पीछे पड़ चुका है। किसी को नहीं छोड़ेगा।"

"समझ गया। मिन्नो को कुछ कहना भी है तो बता दे।"

"कहना है, सुन ले कि उससे कैसे बात करनी है।"

मोना चौधरी ने महाजन के घर के बाहर कार रोकी फिर उतरकर तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ी।

तभी अंधेरे में छिपा बैठा जगमोहन मोना चौधरी पर झपट पड़ा।

मोना चौधरी खुद को संभाल न पाई और नीचे जा गिरी। तुरंत ही उछलकर खड़ी हुई। अंधेरे में भी उसने सामने खड़े जगमोहन को पहचाना और उसके दांत भिंचते चले गए।

जगमोहन गुर्राहट भरे स्वर में कह उठा।

"मैं जानता था कि राधा तेरे को फोन करेगी, तू यहां आएगी। मैं तेरा ही इंतजार कर रहा था मोना चौधरी।"

"महाजन कहां है?" मोना चौधरी गुर्राई।

"तू उसे पाना चाहती है तो नगीना भाभी को मेरे हवाले कर दे।"

"नगीना मेरे पास नहीं है। मैंने उसका अपहरण नहीं किया।" मोना चौधरी ने गुस्से से कहा।

"झूठ बोलती है कमीनी।"

"जगमोहन।" मोना चौधरी गुर्रा उठी—"जुबान को लगाम दे और महाजन को मेरे हवाले कर।"

"नगीना भाभी और महाजन की अदला-बदली कर ले।"

"मैं तेरे को कैसे समझाऊं कि मैंने नगीना के साथ कुछ नहीं किया है।"

"तेरा ये हरामीपन मेरे साथ नहीं चलेगा मोना चौधरी।"

उसी पल मोना चौधरी ने जगमोहन पर छलांग लगा दी।

जगमोहन सतर्क था, उसने फुर्ती से खुद को बचाया।

मोना चौधरी के पांव जमीन पर पड़े। वो ठिठककर पलटी और जगमोहन को घूरने लगी।

"तूने कहा था कि जथूरा हम लोगों में झगड़ा करवाने की चेष्टा करेगा।"

"सपन चड्ढा ने बताई थी ये बात। मोमो जिन्न ने उससे कही थी।"

"तो तू समझता क्यों नहीं कि ये जथूरा की ही कोई चाल है।"

"तेरे को किसने कहा?"

"क्योंकि मैंने नगीना का अपहरण नहीं किया, मैं दिल्ली में ही थी। नगीना मुम्बई में थी।"

"तेरे को किसने बताया कि नगीना मुम्बई में थी?"

"पारसनाथ ने। उसका फोन आया था। तुमने भी तो पारसनाथ

से बात की। तुमने पारसनाथ को बताया कि तुम मुम्बई में हो, जबकि हकीकत में तुम लोग दिल्ली में ही हो। बांके ने पारसनाथ के पास पहुंचकर झगड़ा किया।"

"नगीना भाभी मुझे न मिली तो मैं तुम सबको मार दूंगा।"

"पागल मत बन।" मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा।

जगमोहन ने उसी क्षण रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली।

मोना चौधरी का चेहरा बेहद कठोर हो गया।

"अकेला है तू?" मोना चौधरी गुर्राई।

"तेरे लिए काफी हूं।"

"मतलब कि इस वक्त तेरे को अच्छा-बुरा समझाने वाला कोई नहीं।" शब्दों को चबाकर मोना चौधरी ने कहा।

"तूने कई बार कोशिश की देवराज चौहान को मारने की।"

"तो?"

"वो भी हिसाब अब पूरा हो जाएगा। मैं सारी की सारी गोलियां तेरे शरीर में उतार दूंगा। बचना चाहती है तो नगीना को...।"

"ठीक है। चल मेरे साथ।" मोना चौधरी कह उठी।

"कहां?"

"जहां मैंने नगीना को रखा हुआ है। उसे तेरे हवाले कर देती हूं।"

"अब आई रास्ते पर, पहले तो नखरे दिखा रही थी।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा—"रिवॉल्वर देखकर अकल आ गई।"

मोना चौधरी वहां खड़ी जगमोहन को देखती रही।

अंधेरा था उनके बीच।

"तू कार चलाएगी। मैं रिवॉल्वर लेकर पीछे बैठूंगा।" जगमोहन ने कहा।

मोना चौधरी कार की तरफ बढ़ी।

रिवॉल्वर थामे जगमोहन भी कार की तरफ बढ़ा।

अंधेरे का फायदा उठाते हुए मोना चौधरी ने जूते की जोरदार ठोकर उसकी रिवॉल्वर पर मारी। रिवॉल्वर अंधरे में कहीं दूर जा गिरी। मोना चौधरी ने सिर की ठोकर, उसके चेहरे पर मारी।

जगमोहन चीखा।

मोना चौधरी ने ताबड़तोड़ घूंसे जगमोहन पर बरसा दिए।

जगमोहन नीचे जा गिरा। हांफने लगा।

मोना चौधरी उसकी छाती पर पांव रखकर, गुर्रा उठी।

"तो तू मुझे मारेगा।"

"मैं तुझे जिंदा नहीं...।"

मोना चौधरी ने जूते की ठोकर उसके चेहरे पर मारी।

जगमोहन पुनः चीखा।

"अब मैं तुझे बहुत बुरी मौत दूंगी।" एकाएक मोना चौधरी गुर्राई—"तुझे...।"

उसी क्षण जगमोहन ने मोना चौधरी की टांग पकड़ी और तीव्रता से झटका दिया।

मोना चौधरी लड़खड़ाकर नीचे जा गिरी।

जगमोहन फुर्ती से खड़ा हुआ और पलटकर भागते हुए चीखा।

"मैं फिर आऊंगा मोना चौधरी। तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा। बुरी मौत मारूंगा तुझे।"

जगमोहन वहां से भागता चला गया।

"अब भाग मत।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी—"मिन्नो तेरे पीछे नहीं आ रही।"

जगमोहन ने दौड़ना बंद किया और चलने लगा।

"मखानी, तूने तो बहुत बढ़िया काम किया।"

"अभी और काम तो नहीं हैं?"

"नहीं।"

"तो लड़की ला।"

"पूछता हूं।" फिर शौहरी की आवाज कानों में पड़ी—"भौरी, कमला रानी क्या कर रही है?"

"एक काम लेने जा रही हूं। उसे देवा के बंगले पर भेज रही हूं, जहां भवर सिंह और त्रिवेणी भी हैं।"

"ये काम निबट जाए तो बताना। मखानी को लड़की चाहिए।"

"समझ गई। लेकिन इतनी दूर से कमला रानी, मखानी को कैसे मिलेगी?"

"तेरी शक्तियां कब काम आएंगी। तू तो पलों में कमला रानी को दिल्ली पहुंचा देगी।"

"तू शरारती हो गया है शौहरी।"

"मैं मखानी को खुश रखना चाहता हूं। कमला रानी भी खुश हो जाएगी।"

"मेरे को कब खुश करेगा तू?"

"इन कामों से फुर्सत मिले, तब ही तो मिल पाऊंगा तेरे से।"

"तेरे से मिलने का दिल बहुत कर रहा है।"

"जल्दी मिलेंगे।"

मखानी बोल पड़ा।

"ये भौरी थी?"

"हां।"

"मेरी बात की आड़ में तू अपनी खिचड़ी पका रहा है।"

"मेरे पास वक्त कहां। बहुत काम करने हैं।"

"ये कमला रानी कौन है?"

"वो ही लड़की, जिसका इंतजाम तेरे लिए कर रहा हूं।"

"इस लड़की के नाम से तो लगता है कि इसकी उम्र सौ साल से कम नहीं होगी।" मखानी ने शिकायती स्वर में कहा।

"एकदम कड़क है, मिन्नो को देखा अभी तूने—वो कैसी है?"

"बढ़िया—मजेदार।"

"कमला रानी, मिन्नो के रूप में ही मिलेगी तुझसे। समझा क्या?" कहकर शौहरी हंस पड़ा।

□ □

मोना चौधरी ने महाजन के घर के भीतर प्रवेश किया।

ड्राइंग रूम सारा अस्त-व्यस्त दिखा।

एक कुर्सी राधा बैठी नजर आई। उसका होंठ सूजा हुआ था। मोना चौधरी को देखते ही उसकी आंखें छलक आईं। वो उठी और दौड़कर मोना चौधरी से जा लिपटी।

"मोना चौधरी, वो नीलू को बेहोश करके अपने साथ ले गया।" राधा की आंखों से आंसू बह निकले।

मोना चौधरी का चेहरा बेहद कठोर हो गया। उसने राधा को अपने से अलग किया।

"तुम्हें जगमोहन ने मारा है।" मोना चौधरी गुर्राई।

"हां। वो अपना नाम जगमोहन ही बता रहा था, कौन था वो?" राधा ने भर्राए स्वर में कहा।

"हौसला रखो, सब ठीक हो जाएगा।" मोना चौधरी की आंखें गुस्से से जल रही थीं।

"नीलू को...।"

"वो भी वापस आ जाएगा। जगमोहन मरेगा मेरे हाथों से। बुरी मौत मरेगा।" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

"क्या तुमने किसी नगीना को उठाया है, वो नगीना की मांग कर रहा था।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। जगमोहन का दिमाग खराब हुआ पड़ा है।" मोना चौधरी ने कहा और फोन निकालकर पारसनाथ का नम्बर मिलाने लगी। दूसरी बारी की कोशिश पर नम्बर लगा।

"हैलो।" पारसनाथ की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम सितारा को, राधा के पास भेज दो पारसनाथ।"

"क्यों?" उधर से पारसनाथ का उलझन-भरा स्वर आया।

"जगमोहन यहां झगड़ा करके, महाजन को बेहोश करके अपने साथ ले गया।"

"ये कैसे हो सकता है?"

"क्यों नहीं हो सकता?" मोना चौधरी के दांत भिंच गए।

"जगमोहन मुम्बई में है, वो...।"

"उसने झूठ कहा तुमसे। सब कुछ झूठ कहा। जगमोहन, बांके और बाकी सब भी दिल्ली में ही हैं। जगमोहन अभी यहां से गया है। जब मैं आई तो जगमोहन ने मुझे मारना चाहा। वो नगीना को पूछ रहा था।"

"ओह।"

"लेकिन बाद में भाग गया।"

"भाग गया। वो भागने वालों में से नहीं है मोना चौधरी।" पारसनाथ की आवाज कानों में पड़ी।

"न भागता तो मारा जाता।"

"मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा। ये सब अजीब बातें हो रही हैं। बांके मेरे पास अकेला आया। उधर जगमोहन अकेला दिखा। जबकि वो झगड़ा करने आया था तो उसे साथ में किसी को रखना चाहिए था।"

"मेरे खयाल में वे सब अपने-अपने तौर पर नगीना की तलाश कर रहे हैं।"

"तो तुम मानती हो कि नगीना गायब है।"

"जरूर होगी। तभी तो देवराज चौहान के साथी हमारे पीछे पड़ रहे हैं।"

"तुमने ये सोचा है कि वो हमारे पीछे क्यों पड़ रहे हैं?" पारसनाथ का आने वाला स्वर गम्भीर था।

"क्योंकि उन्हें शक है कि नगीना को हमने उठाया...।"

"तुमने।"

"हां, मैंने नगीना का अपहरण किया है।"

"वो ऐसा क्यों कह रहे हैं?"

मोना चौधरी के होंठ भिंच गए।

"जवाब दो मोना चौधरी। क्या वो हमसे झगड़ा करना चाहते हैं, इसलिए ऐसा कर रहे हैं?"

"ये बात नहीं हो सकती।"

"तो वे लोग तुम्हारा ही नाम क्यों ले रहे हैं?"

मोना चौधरी ने कुछ नहीं कहा।

"इस मामले में अवश्य कुछ रहस्य है। हमें जथूरा को नहीं भूलना चाहिए, जिसके बारे में सपन चड्ढा ने बताया था। जथूरा किसी कालचक्र का इस्तेमाल कर रहा है, हम लोगों में झगड़ा करवाने के लिए और अब झगड़ा ही हो रहा है। तुमने नगीना का अपहरण किया है या नहीं, बात ये नहीं, बात ये है कि देवराज चौहान की तरफ से कहा जा रहा है कि तुमने, उसकी पत्नी को उठाया है और ये बात वो लोग खामखाह तो कहेंगे नहीं। हमें, इस मामले की तह तक पहुंचाना चाहिए।"

मोना चौधरी के क्रोध भरे चेहरे पर सोच के भाव उभरे। फिर बोली।

"जब तक हम लोग देवराज चौहान के लोगों से बात न करें, तब तक तह तक नहीं पहुंचा जा सकता।"

"तुम ठीक कहती हो। मैं जगमोहन को फोन करके देखता हूं। महाजन को भी वापस मांगता है।"

"मुझे नहीं लगता कि वो इन हालातों में तुम्हारे फोन की परवाह करेगा।"

"देखता हूं।"

"सितारा को यहां भेजो। उसके आने तक मैं राधा के पास हूं।" मोना चौधरी ने गम्भीर, गुस्से भरे स्वर में कहा और फोन बंद कर दिया।

देवराज चौहान और जगमोहन बंगले पर पहुंचे तो, पांच मिनट बाद बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव भी आ गए।

"अंम मोन्नो चौधरी को 'वड' दयो। वो म्हारी भाभी को उठा ले गयो हो।" बांकेलाल राठौर गुस्से में था।

"हालात बिगड़े हुए और समझ से बाहर हैं।"

"कैसे बाप?" रुस्तम राव कठोर स्वर में बोला।

"पारसनाथ का कहना है कि बांके उसके रेस्टोरेंट पहुंचा। उससे वहां झगड़ा किया। उसके आदमी डिसूजा को गोली मारी।"

"नेई बाप। बाप तो उधर खुर्राटे मारेला था।"

"सत्या कहती है कि नगीना भाभी मोना चौधरी से बात कर रही थी फिर भाभी गायब हो गई। बात करने पर पारसनाथ कहता है कि मोना चौधरी दिल्ली में है। मुम्बई में नहीं। ऐसे में हम किस बात पर यकीन करें और किस पर नहीं। पारसनाथ को हम ये नहीं कह सकते कि वो दोनों बातें झूठ कह रहा है। उसकी एक बात को हम सच मानें तो भी गड़बड़ है। दोनों बातें सच मानें

तो हमें मानना पड़ेगा कि इस वक्त दो बांके और दो मोना चौधरी मौजूद हैं। एक-एक दिल्ली में। एक-एक मुम्बई में। मतलब कि यकीन के साथ कुछ भी कहना कठिन है कि...।"

"पारसनाथ इस तरह का झूठ बोलकर बच नहीं सकता।" देवराज चौहान ने कहा।

"क्या कहना चाहते हो?" जगमोहन ने उसे देखा।

"मेरे खयाल में पारसनाथ झूठ नहीं कह रहा।" देवराज चौहान गम्भीर था।

"तो तुम मानते हो कि दो-दो मोना चौधरी और बांके...।"

"लेकिन ये भी कैसे मुमकिन है।" देवराज चौहान बोला।

"जथूरा की शक्तियां, क्या इस बात को मुमकिन नहीं कर सकतीं?" जगमोहन ने गम्भीरता से कहा।

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

"शायद ये सब कुछ होना ही, जथूरा का कालचक्र है। वो हममें झगड़ा करा रहा है।"

"म्हारे को जथूरा मिल जावे तो अंम उसो को 'वड' दयो।" बांकेलाल राठौर गुर्राया।

"आपुन उसको बोत मारेला।"

तभी जगमोहन का फोन बजा।

"हैलो।" जगमोहन ने बात की।

"जगमोहन। मैं पारसनाथ बोल रहा हूं।" पारसनाथ की आवाज कानों में पड़ी।

"ओह—कहो।"

"ये तुमने अच्छा नहीं किया।"

"क्या?" जगमोहन के माथे पर बल पड़े—"अच्छा नहीं किया?"

"महाजन को तुम उठाकर ले गए। राधा को भी मारा और मोना चौधरी की जान लेनी चाही।"

सन्न रह गया जगमोहन।

"मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि नगीना को मोना चौधरी ने नहीं उठाया। तुम्हें मेरी बात का भरोसा करना चाहिए था।"

"तुमने क्या कहा कि मैंने क्या किया है?" जगमोहन ने गहरी सांस लेकर पूछा।

"तुम भी जानते हो कि...।"

"तुम कहो, मैं तुम्हारे मुंह से फिर सुनना चाहता हूं।" जगमोहन की आंखें सिकुड़ी हुई थीं।

"तुम महाजन के घर गए। उससे नगीना के बारे में पूछा।

झगड़ा किया फिर उसे बेहोश करके अपने साथ ले गए। इस दौरान तुमने महाजन की पत्नी राधा को भी मारा।”

“मैंने मारा?”

“हां, तुमने। कुछ देर बाद मोना चौधरी वहां पहुंची तो रिवॉल्वर निकालकर तुमने उसकी जान लेनी चाही। जबकि हममें ये बात तय थी कि जथूरा हमारा झगड़ा करवाने की चेष्टा करेगा, परंतु हमें नहीं झगड़ना है। अच्छा यही होगा कि तुम महाजन को आजाद कर दो।” पारसनाथ का स्वर गम्भीर और कठोर था।

देवराज चौहान, बांके, रुस्तम की नजरें जगमोहन पर थीं।

“तुम्हारे कहे मुताबिक, मैंने जो-जो किया, उसके लिए मुझे दिल्ली में होना चाहिए।” जगमोहन बोला।

“तुम दिल्ली में ही हो।”

“नहीं, मैं मुम्बई में हूं और तुम अपना कोई आदमी मेरे पास भेजकर, अपनी तसल्ली कर सकते हो।”

“ये बात मुझे मोना चौधरी ने बताई है, तो क्या वो झूठ कह रही है?” पारसनाथ की आवाज कानों में पड़ी।

जगमोहन ने कहने के लिए मुंह खोला कि चुप रह गया। फिर गम्भीर स्वर में बोला।

“शायद वो सच कह रही है।”

“क्या मतलब?”

“जिस तरह बांके और मोना चौधरी दो जगह मौजूद थे, इसी तरह मैं भी—मैं भी अब दो जगह मौजूद हो गया हूं।”

“तुम्हारा मतलब कि वो तुम नहीं थे?”

“नहीं।”

“तो कौन था वो?”

“जथूरा कोई चाल चल रहा है कि हममें झगड़ा हो।” जगमोहन सोचों में डूबा कह उठा—“अब मैं यकीनी तौर पर कह सकता हूं कि मोना चौधरी ने नगीना भाभी का अपहरण नहीं किया। तुम्हारे रेस्टोरेंट में पहुंचकर तुमसे झगड़ा करने वाला बांके, बांके नहीं था और मैं—वो नहीं जिसने महाजन और मोना चौधरी से झगड़ा किया। से सब गहरी चाल है हम में झगड़ा करवाने की। ये तो अच्छा है कि मेरी तुमसे बात हो रही है। हम लोग गलतफहमी में नहीं पड़े।”

“मैं तुम्हारी बात समझ रहा हूं, लेकिन फिर भी...।”

“मैं अब भी कहता हूं कि हमें जथूरा के इस खतरनाक खेल से सावधान रहना है।” जगमोहन कह उठा।

"ये सब होता रहा तो कोई कब तक चुप बैठेगा। कभी तो झगड़ा होगा ही।"

"हम समझदार बनकर चलेंगे तो, सब कुछ ठीक रह सकता है।" जगमोहन बोला—"मोना चौधरी अब कहां है?"

"वो, महाजन की पत्नी राधा के पास है। मेरी पत्नी सितारा राधा के पास गई है, वहां पहुंचने ही वाली होगी।"

"मोना चौधरी को ये सब बातें समझाओ। उसे शांत रखो।"

"सुबह बात करूंगा मोना चौधरी से।"

"कोई नई बात हो तो मेरे से अवश्य बात कर लेना। हममें गलतफहमी नहीं होनी चाहिए।"

"मुझे महाजन की चिंता हो रही है।"

"हमें भी नगीना की चिंता है। जथूरा उनकी जान का नुकसान नहीं कर सकता। ये तो मैं जानता हूं।"

बात खत्म हो गई।

जगमोहन ने फोन बंद करके देवराज चौहान, बांके और रुस्तम राव को देखा।

"अब मेरा हमशक्ल भी नजर आने लगा है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मामला खतरनाक होता जा रहा है।" देवराज चौहान ने कहा।

"मेरे हमशक्ल ने महाजन की पत्नी को मारा। महाजन को ले गया और मोना चौधरी को भी मारा है।"

"यो तो घनी गम्भीर बातो होवे।"

"अफसोस तो इस बात का है कि हम जथूरा के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते और वो सब कुछ करने को आजाद है।" जगमोहन ने कहा।

"जथूरा इन हरकतों में हमें उलझा रहा है, ताकि हम परेशान होकर मोना चौधरी से झगड़ा करें और जान-माल का नुकसान हो।" देवराज चौहान ने कहा—"जथूरा बहुत ही शातिर चालें चल रहा है। वो पूरी कोशिश कर रहा है कि हम पूर्वजन्म की यात्रा न कर पाएं।"

"हम जथूरा को कामयाब नहीं होने देंगे।"

"येई चलेगा तो जथूरा सफल हो जाएगा बाप। हममें कम्भी भी कोई गलती करेला और...।"

"हम गलती नहीं करेंगे।" जगमोहन ने दृढ़ स्वर में कहा।

"गलती हो जाईला बाप और पता भी नहीं, लगेईला।"

"रुस्तम ठीक कहता है। हमारे चेहरों में, या फिर उनके चेहरों

में कोई कुछ करे, तो दूसरा कभी भी क्रोध में हरकत में आ सकता है।"

जगमोहन ने होंठ भींचकर देवराज चौहान को देखा।

तभी कॉल बेल बजी।

चारों चौंके। आधी रात हो रही थी। कौन आ सकता है इस समय?

"मैं देखता हूं।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकाली और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

दरवाजे के पास पहुंचकर ठिठका देवराज चौहान।

सबकी निगाह उस पर थी।

"कौन है?" देवराज चौहान ने दरवाजे के पास मुंह ले जाकर पूछा।

"मैं, लक्ष्मण दास।"

देवराज चौहान ने आवाज को पहचाना, वो लक्ष्मण दास की ही आवाज थी।

रिवॉल्वर सतर्कता से थामे, देवराज चौहान ने दरवाजा खोला।

पोर्च में जल रही रोशनी में लक्ष्मण दास दिखा।

फिर सपन चड्ढा नजर आया।

परंतु उनके पीछे नजर पड़ते ही देवराज चौहान बुरी तरह चौंका।

वो मोना चौधरी थी।

"तुम?" देवराज चौहान के होंठों से निकला। उसने रिवॉल्वर वापस जेब में रख ली।

"मैं तुमसे मिलना चाहती थी।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में बोली—"लेकिन तुम्हारा पता-ठिकाना नहीं जानती थी, इसलिए लक्ष्मण दास को किसी तरह तैयार किया कि वो मुझे तुम तक ले आए तो ये साथ में सपन चड्ढा को भी ले आया।"

देवराज चौहान अभी भी हक्का-बक्का था। पीछे हटकर, उसने तीनों को भीतर आने का रास्ता दे दिया।

तीनों भीतर आ गए।

देवराज चौहान ने दरवाजा बंद किया और पलटा।

मोना चौधरी को सामने पाकर, जगमोहन, बांके और रुस्तम राव चिहुंक पड़े।

"तुम?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"बाप।" रुस्तम राव, बांके से कह उठा—"घोटाला होईला।"

बांकेलाल राठौर मूंछों पर हाथ फेरते मोना चौधरी को देखने लगा।

मोना चौधरी ने उलझन-भरे ढंग से तीनों को देखा फिर पलटकर देवराज चौहान को देखा, इसके साथ ही बोली।

"तुम लोग मुझे यहां देखकर इतने परेशान-हैरान क्यों हो?"

"तुम मोना चौधरी नहीं हो।" जगमोहन दांत भींचकर बोला।

मोना चौधरी के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे।

"मैं मोना चौधरी नहीं हूं—कितनी अजीब बात है कि तुम कह रहे...।"

"तुम उसकी हमशकल हो, जथूरा की कोई चाल हो।" जगमोहन का स्वर बेहद सख्त था।

"क्या कह रहे हो?" मोना चौधरी हक्की-बक्की थी।

"मोना चौधरी इस वक्त दिल्ली में है—वो...।"

"मैं मोना चौधरी हूं।"

"नहीं। तुम मोना चौधरी नहीं हो।" जगमोहन ने दृढ़ स्वर में कहा।

"मैं तुम्हारे सामने खड़ी हूं और तुम कहते हो कि मैं, मैं नहीं हूं। मैं दिल्ली में हूं।"

"हां। यही मैंने कहा। असली मोना चौधरी दिल्ली में है। अभी पारसनाथ से मेरी बात हुई है।"

"क्या बकवास कर रहे हो।" मोना चौधरी के माथे पर बल पड़े—"मैं दिल्ली से, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के साथ आठ बजे की फ्लाइट पर चली थी। ये बात तुम इन दोनों से पूछ सकते हो।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने तुरंत सिर हिलाया।

"मोना चौधरी ठीक कह रही है।" सपन चड्ढा बोला।

"कितनी अजीब बात है कि मोना चौधरी सामने खड़ी है और तुम कहते हो कि ये मोना चौधरी नहीं है।" लक्ष्मण दास कह उठा।

जगमोहन कुछ कहता, उससे पहले ही देवराज चौहान ने कहा।

"तुम हमसे क्यों मिलना चाहती थीं?"

"बांके की वजह से।" मोना चौधरी ने बांकेलाल राठौर को देखा—"इसने पारसनाथ के यहां जो किया वो...।"

"तुम्हें पारसनाथ ने बताया नहीं कि वो बांके का हमशक्ल था।"

"बताया, ये भी बताया कि मेरी हमशक्ल ने नगीना का अपहरण किया है। लेकिन मुझे इन बातों पर विश्वास नहीं। तुम लोग बांके की गलत हरकत को दबाने के लिए, नया बहाना सुना रहे हो।" मोना चौधरी ने तीखे स्वर में कहा।

"तुम्हारा मतलब कि हम गलत कह रहे हैं।" देवराज चौहान ने चुभते स्वर में कहा।

"हां।"

"फिर तो हमें तुमसे नगीना की वापसी की बात करनी चाहिए, जो तुम्हारे पास है।"

"मैंने ये काम नहीं किया। नगीना का अपहरण मैं क्यों करूंगी?" मोना चौधरी कह उठी।

"हमारे पास आंखों देखे गवाह हैं।"

"गवाह झूठे हैं।"

"वो सच्चे हैं। नगीना की नौकरानी सत्या ने तुम्हें नगीना के साथ बातें करते देखा, फिर तुम दोनों गायब हो गईं।"

"मैं नगीना से मिली ही नहीं। मुझे नहीं मालूम वो किधर रहती है।"

"हम सत्या को झूठा नहीं मान सकते, जिसने तुम्हें अपनी आंखों से देखा, तुम्हारा हुलिया बताया। नगीना ने सत्या से भी कहा कि वो मोना चौधरी से बात कर रही है।" देवराज चौहान एक-एक शब्द चबाकर बोला।

"तुम गलत कह रहे हो देवराज चौहान, वो मैं थी ही नहीं।" मोना चौधरी ने कहा।

"दूसरी हो सकती है।"

"वो दूसरी ही होगी।"

"वो ही तो हम कह रहे हैं कि इस वक्त दो मोना चौधरी और दो बांके, सुनने को मिल रहे हैं। पारसनाथ से जिस बांके ने झगड़ा किया वो नकली था। बांके तो यहां पर हमारे पास था तब।"

मोना चौधरी के होंठ भिंच गए।

"ये असली मोना चौधरी नहीं है।" जगमोहन ने कहा और फोन निकाल कर पारसनाथ के नम्बर मिलाने लगा।

"बकवास मत करो। मैं मोना चौधरी ही हूं।"

"अभी पता चल जाता है।" जगमोहन ने सतर्क स्वर में कहा।

"छोरे, यो मामलो तो घनो उलझो गयो।" बांकेलाल राठौर बोला।

"बाप, अपनी खोपड़ी घूमेला है।" रुस्तम राव ने गहरी सांस लेकर कहा।

"दिखो तो यो मोन्नो चौधरो ही।"

"ये ही तो झमेला हेईला कि ये मोना चौधरी दिखेला है।"

जगमोहन की पारसनाथ से बात हुई।

"मोना चौधरी कहां है?" मोना चौधरी पर नजर मारते जगमोहन ने पूछा।

"अभी सितारा का फोन आया था कि वो राधा के पास पहुंच गई है।" पारसनाथ की आवाज कानों में पड़ी—"सितारा के पहुंचने तक मोना चौधरी, राधा के पास ही थी। उसके बाद चली गई।"

"ये कब की बात है?"

"अभी की।"

"अब तुम्हें ये जानकर खुशी होगी कि मोना चौधरी अभी-अभी हमारे पास आई है।"

"क्या?"

"दिल्ली से मुम्बई वो पलक झपकते ही पहुंच गई। साथ में सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास भी हैं।"

"ये नहीं हो सकता।"

"हुआ पड़ा है ये।" जगमोहन तीखे स्वर में बोला—"मोना चौधरी कहती है कि वो आठ बजे वाली फ्लाइट से दिल्ली से चली।"

"पैसेंजर लिस्ट से सच्चाई पता चल सकती है।"

"अब तुम किसे असली मोना चौधरी कहोगे। दिल्ली वाली को या मुम्बई वाली को।"

पारसनाथ की आवाज नहीं आई।

तभी मोना चौधरी जगमोहन की तरफ बढ़ते कह उठी।

"मुझे बात करने दो, पारसनाथ से।"

जगमोहन ने फोन मोना चौधरी को थमा दिया।

"पारसनाथ।" मोना चौधरी फोन पर बोली—"क्या हो रहा है ये सब?"

"मेरा तो दिमाग खराब हो चुका है।"

"हुआ क्या?"

"घंटा-भर पहले तुमने ही मुझे फोन पर कहा था कि जगमोहन, राधा को घायल करके, महाजन को बेहोश करके ले गया और उसने तुम्हें भी मारने की चेष्टा की। तुमने सितारा को, राधा के पास भेजने को कहा तो मैंने...।"

"मैंने आठ बजे लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के साथ मुम्बई की फ्लाइट पकड़ी थी। कुछ देर पहले ही देवराज चौहान के पास पहुंची हूं। मैं तुम्हें कैसे फोन कर सकती हूं। जगमोहन मुझे कैसे मारने की कोशिश कर सकता है। बकवास कर रहे हो तुम?"

"मैं सही कह रहा हूं मोना चौधरी। तुमने ही मुझे फोन किया था।"

"नहीं, वो मैं नहीं थी।"

"तो कौन था वो?"

"ये तुम पता करो। मेरा फोन भी मेरे पास है। मालूम करो तुम्हें फोन करने वाली कौन है?"

"वो ही होगी, जिसने नगीना का अपहरण किया।"

मोना चौधरी का चेहरा कठोर हो गया।

"ढूंढ़ो उसे और खत्म कर दो।"

"ये सब जथूरा कोई चाल चल रहा है। जो हम सबमें झगड़ा करवाना चाहता है।"

"तुम उस मोना चौधरी की खबर लो।"

"अभी जाता हूं मैं।"

मोना चौधरी ने फोन बंद करके जगमोहन को दिया और बोली।

"मैं ही असली मोना चौधरी हूं। वो कोई बहरुपिया है। पारसनाथ कुछ ही देर में उसे तलाश कर लेगा।"

"हमें नहीं मालूम तुम बहरुपिया हो या दूसरी।"

मोना चौधरी ने कड़वी मुस्कान के साथ जगमोहन से कहा।

"इस बात का यकीन तुम्हें दिलाने की जरूरत नहीं समझती।"

"हमें तो जरूरत है।"

"क्यों?"

"क्योंकि नकली मोना चौधरी के पास नगीना अभी है।"

"मैं नकली नहीं, असली हूं।" फिर वो लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा से बोली—"चलो, हमें वापस दिल्ली जाना है। जिस काम के लिए मैं मुम्बई आई थी, उसकी अब जरूरत नहीं रही। बांके के बहरुपिये ने, पारसनाथ के यहां झगड़ा किया, ये जान गई हूं मैं।"

"और।" जगमोहन बोला—"मैंने जो महाजन के यहां किया—वो।"

"वो तुम्हारा बहरुपिया था, जो महाजन को ले गया। मैं उसे ढूंढ़ निकालूंगी। अगर ये काम जथूरा कर रहा है तब वो बचेगा नहीं। हमें पूरी कोशिश करनी है कि इन हालातों के बीच, हममें झगड़ा पैदा न हो।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में कह उठी।

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

मोना चौधरी लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के साथ बाहर निकल गई।

चुप्पी-सी आ ठहरी वहां।

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगाकर कश लिया।

"यो तो अजीब बातों हो रईयो हो।" बांकेलाल राठौर ने गम्भीर स्वर में कहा—"एक-दूसरो के नकली चेहरो सामनो आ रहो हो। अंम किसो पर भरोसो करो हो। यो तो खोपड़ी खराबो करनो वालो बातो हौओ हो।"

देवराज चौहान ने कश लिया। आंखों में गहरी सोच के भाव थे।

"सच में दिमाग खराब हो रहा है।" जगमोहन बोला।

"क्यों बाप?" रुस्तम राव देवराज चौहान से कह उठा—"तुम क्या सोचते हो?"

"हम इन हालातों को समझते हुए भी, ज्यादा देर तक अपने पर काबू नहीं रख सकते।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये क्या कहते हो?"

"मैं ठीक कह रहा हूं। जथूरा ऐसी शानदार चालें चल रहा है कि समझते हुए भी हम कोई रास्ता नहीं चुन सकते। इसका अंत झगड़े पर ही आकर खत्म होगा और वो अपनी कोशिश में सफल हो जाएगा।" देवराज चौहान ने कश लिया।

"हम सतर्क रहकर...।"

"ज्यादा देर सतर्कता का दामन नहीं पकड़े रह सकते। कभी भी कोई भी घटना, किसी का दिमाग खराब कर सकती है और कुछ भी हो सकता है।"

"देवराज चौहानो ठीको बोल्लो हो।"

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"हमारे पास देखते रहने के अलावा, करने को कुछ नहीं है। देखते रहो। सब्र का बांध टूटे तो दूसरे पर झपट पड़ो। बस यही होगा।"

"मैं ये नहीं होने...।"

एकाएक जगमोहन के मस्तिष्क में बिजलियां कौंधीं। उसने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया। आंखें बंद होती चली गईं। बिजली के तेज धमाके बज रहे थे उसके दिमाग में, फिर सब कुछ शांत होता चला गया। उसके बाद जगमोहन के मस्तिष्क में वो ही जगह देखी, जो वो पहले देख चुका था। वहां नगीना को उसी मुद्रा में बेहोश पड़े देखा, परंतु चंद कदमों के फासले पर, अब महाजन भी वहां बेहोशी की मुद्रा में पड़ा हुआ था। वहां की हर जगह शांत थी। समुद्र की लहरों का शोर कानों में पड़ रहा था। चट्टानों से भरी पथरली जमीन। लम्बे, हवा से हिलते पेड़। नीचे पत्थरों को छोड़कर, हर जगह घास नजर आ रही थी। एक तीन फुटा, घास में से कच्चा रास्ता, एक तरफ जा रहा था।

फिर जगमोहन सामान्य होता चला गया।

देवराज चौहान, रुस्तम राव और बांके की नजरें जगमोहन पर थीं।

"का हो गयो थारो को, सिरो दर्दो से फटो जावो का?"

जगमोहन ने दोनों हाथ सिर से हटाए, आंखें खोलीं और देवराज चौहान को देखा।

"महाजन, नगीना भाभी के पास बेहोश पड़ा देखा। मैंने पूर्वाभास में देखा है अभी-अभी।"

"तो जथूरा हमें इस तरह ले जाकर एक जगह इकट्ठा कर रहा है।" देवराज चौहान बोला।

"यही लगता है।"

"वो कौन सी जगह है?"

"मैं समझ नहीं पाया। लेकिन समुद्र के किनारे चट्टानों-भरी पथरीली जमीन है। वहां घास भी है, पेड़ भी, पगडंडी भी।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं नहीं जानता कि वो जगह कहां पर है।"

"छोरो समझो का?"

"समझेला है बाप।"

तभी जगमोहन के कानों में पोतेबाबा की फुसफुसाहट गूंजी।

"बहुत देर से तेरे से बात नहीं हुई जग्गू।"

जगमोहन चौंककर पलटा।

कुछ भी नजर नहीं आया।

"पोतेबाबा।" जगमोहन के भिंचे होंठों से निकला।

"लगता है तू भी मेरे बिना उदास हो गया जग्गू।"

"तू कमीना है।" जगमोहन ने दांत पीसकर कहा।

पोतेबाबा के हंसने का स्वर गूंजा।

"पोतेबाबा आ गयो छोरो।"

"नजर नेई आरेला बाप।"

तभी देवराज चौहान ने सिगरेट का धुआं आवाज की तरफ फेंका।

अगले ही पल पोतेबाबा की आकृति सी नजर आई। चेहरे की आकृति। धुएं की लकीरों जैसी।

"ये सब जथूरा का फेंका कालचक्र है।" पोतेबाबा की आवाज सबने सुनी—"इससे कोई बच नहीं सकता।"

"जथूरा का कालचक्र हमारे सामने फेल हो जाएगा।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

"ऐसा कभी नहीं हो सकता। अभी भी वक्त है। मान जा, पीछे हट जा। जथूरा के हादसों में दखल न दे।"

"जो बात नहीं हो सकती, वो कह ही मत।"

"तुम सब का बुरा वक्त आने वाला है। एक वक्त ऐसा आएगा कि तुम लोग अपनी परछाईं पर भी शक करने लगोगे कि वो भी तुम्हारी है कि नहीं। इतने तंग आ जाओगे कि एक-दूसरे की जान लिए बिना नहीं रह पाओगे।"

"तंम तो दूर बैठो के मजे लियो हो।"

"जग्गू, जथूरा नहीं चाहता है कि तुम पूर्वजन्म की यात्रा करो। मामूली सी तो बात है। तुम लोग क्यों...।"

"मुझे पूर्वाभास कौन करा रहा है पोतेबाबा?" जगमोहन ने पूछा।

"ये पता चल जाता तो जथूरा कब का इस मामले को खत्म कर देता। परंतु उसका पता नहीं चल रहा।"

"हमें कैसे पता कि पूर्वजन्म को कौन-सा रास्ता जाता है। जथूरा तो खामखाह डर रहा है।" जगमोहन मुस्कराकर बोला।

"जो तुम्हें पूर्वाभास करा रहा है, वो तुम लोगों को पूर्वजन्म में प्रवेश करने वाले रास्ते पर ले जाएगा।"

"ऐसा होगा?"

"हां।"

"तो तुम्हें पहले से ही पता है कि ये सब होने वाला है तो हमें रोक क्यों रहे हो?" जगमोहन ने कहा।

"इसलिए कि अगर तुम मान जाओ तो ये सफर रोका जा सकता है। या देवा या मिन्नो में से एक मर जाएं तो पूर्वजन्म की यात्रा हमेशा-हमेशा के लिए रुक जाएगी। तुम लोगों की पूर्वजन्म की यात्रा जथूरा के हक में अच्छी नहीं रहेगी। इसलिए रोका जा रहा है तुम सबको। अगर जथूरा ने तुम लोगों की ये यात्रा रोक दी तो जथूरा बहुत ज्यादा शक्तिशाली हो जाएगा।"

"तड़प रहा होगा जथूरा, हमें रोकने को।"

"कोशिश तो वो कर ही रहा है। मान जाओ जग्गू। फायदे में रहोगे।"

"नगीना कहां है?"

"नगीना और नील सिंह सुरक्षित हैं। एक जगह पर दोनों बेहोश पड़े हैं तुम...।"

यही वो वक्त था, जब देवराज चौहान ने फुर्ती से रिवॉल्वर निकाली और जहां पोते बाबा के खड़े होने का अहसास था, उस तरफ करके गोली चला दी।

तेज धमाका गूंजा फिर सब कुछ शांत हो गया।

दो पलों तक तो कोई स्वर ही न उभरा।

"तुमने अपनी कोशिश कर ली देवा।" पोतेबाबा का मुस्कराता स्वर सबके कानों में पड़ा।

देवराज चौहान के होंठों से गहरी सांस निकली फिर कह उठा।

"तो गोली तेरे को नहीं लगी।"

"लगी। इस तरह जैसे तुम लोगों को छोटा-सा कंकर लगता है, वैसे मुझे गोली लगी। तुम क्या समझते हो कि तुम्हारे ये मामूली से खिलौने मेरा अहित कर सकेंगे? नहीं, तुम लोग मेरे को नुकसान नहीं पहुंचा सकते। मैं हर तरफ से सुरक्षित होकर, इस दुनिया में आया हूं।"

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर जेब में रख ली।

"देवा की इस हरकत से जाहिर है कि तुम लोग, मेरी बात न मानकर अपना खेल ही चालू रखना चाहते हो। मर्जी तुम लोगों की। बुरा भुगतोगे तुम लोग। जथूरा का कालचक्र तुम लोगों को कहीं का नहीं छोड़ेगा।"

"अंम थारी चुटियो को पकड़कर घुमायो पोतो बाबे।"

"तुम लोग मामूली इंसान हो मेरे सामने। जाता हूं, अब भुगतना तुम लोग।"

उसके बाद पोतेबाबा की आवाज नहीं आई।

चुप्पी-सी आ ठहरी वहां।

"हम लोगों के पास करने को कुछ नहीं है।" देवराज चौहान बोला—"और जथूरा अपने मन की किए जा रहा है।"

☐ ☐

जगमोहन से बात करने के बाद पारसनाथ ने उसी पल सितारा को फोन किया।

"मेरे बिना दिल नहीं लग रहा परसू।" उसकी आवाज सुनने पर, उधर से सितारा ने मजाक में कहा।

"मोना चौधरी कहां है?"

"वो तो मेरे आते ही चली गई। बेचारी राधा की हालत खराब है। मुंह सूजा हुआ है। महाजन का पता चला?"

"अभी नहीं। मोना चौधरी ने कुछ कहा कि वो किधर जा रही है?"

"ऐसी तो कोई बात नहीं हुई। क्यों क्या बात है। उसे फोन कर ले, कोई काम है तो।"

पारसनाथ ने फोन काट दिया।

जगमोहन के पास मोना चौधरी ने कहा था कि उसका फोन भी उसके पास है। इसलिए पारसनाथ मोना चौधरी को फोन न करना चाहता था। वो कपड़े चेंज करके, कार पर मोना चौधरी के फ्लैट पर पहुंचा। रात के दो बज रहे थे। हर तरफ सुनसानी छाई हुई थी। पारसनाथ ने दरवाजे पर पहुंचकर कॉलबेल दबाई।

फौरन ही दरवाजा खुला। सामने मोना चौधरी थी।

"तुम?" उसे देखते ही मोना चौधरी के होंठों से निकला फिर पीछे हट गई।

उसे गहरी निगाहों से देखते पारसनाथ ने भीतर प्रवेश किया।

मोना चौधरी अभी तक बाहरी कपड़ों में थी।

"जगमोहन को हमें जल्दी ही ढूंढ़ना है पारसनाथ।" मोना चौधरी बोली—"वो महाजन के साथ जाने क्या सलूक करे।"

पारसनाथ खामोश रहा।

मोना चौधरी ने उसे देखा फिर कह उठी।

"कोई खास बात है पारसनाथ?"

"नहीं। खास नहीं। तुम्हारा मोबाइल कहां है?"

"मोबाइल?" मोना चौधरी के माथे पर बल पड़े—"वो सामने टेबल पर रखा है।"

पारसनाथ आगे बढ़ा और मोना चौधरी ने मोबाइल उठाया। उलट-पलटकर देखा। फिर अपना फोन निकाला और मोना चौधरी के फोन के नम्बर मिलाने लगा। मोना चौधरी की अजीब-सी निगाह पारसनाथ पर थी।

"क्या बात है पारसनाथ?"

तभी मोना चौधरी का फोन बज उठा।

पारसनाथ के होंठ भिंच गए। उसने फोन काटा और वापस टेबल पर रखकर मोना चौधरी को देखा।

मोना चौधरी उसे ही देख रही थी।

"कौन हो तुम?"

"मैं?" मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े—"तुम मुझे पूछ रहे हो कि मैं कौन हूं?"

"हां, तुम्हीं से...।"

"तुम्हें क्या हो गया है पारसनाथ?"

"जवाब दो।" पारसनाथ का खुरदरा चेहरा सपाट था।

"मैं—मैं मोना चौधरी हूं।"

"इस बात का यकीन दिला सकती हो?" पारसनाथ ने सपाट स्वर में पूछा।

"यकीन?" मोना चौधरी हैरत से भर गई—"तुम्हें ये यकीन दिलाना होगा कि मैं मोना चौधरी हूं?"

"हां।"

"क्या तुम मुझे यकीन दिला सकते हो कि तुम पारसनाथ हो?"

दोनों ने एक-दूसरे की आंखों में झांका।

"मुझे राधा का फोन आया और उसने बताया कि जगमोहन महाजन को बेहोश करके कंधे पर डालकर ले गया है। मैं तुरंत महाजन के घर पहुंची तो, बाहर अंधेरे में मैंने जगमोहन को अपने इंतजार में पाया। मेरा उससे झगड़ा हुआ। उसने रिवॉल्वर निकालकर मुझे मारना चाहा, लेकिन बाजी पलट गई। वो भाग गया। मैं राधा के पास भीतर पहुंची तो राधा ने मुझे सब कुछ बताया, तब मैंने तुम्हें फोन करके, सितारा को, राधा के पास भेजने को कहा। सितारा आई तो मैं यहां आ गई। अब तुम यहां आकर मुझसे सबूत मांग रहे हो कि क्या मैं सच में मोना चौधरी हूं।"

पारसनाथ ने सिगरेट सुलगाकर कश लिया फिर गम्भीर स्वर में बोला।

"मैंने घंटा भर पहले मोना चौधरी से बात की है। वो मुम्बई में जगमोहन के पास थी, उसके साथ लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा भी थे। वो आठ बजे की फ्लाइट से, दोनों के साथ मुम्बई गई थी। उसका कहना है कि उसका फोन भी उसके पास है।"

"फ...फोन तो मेरे पास है, फिर उसके पास कैसे हो सकता है?" मोना चौधरी बोली।

"जो हुआ वो तुम्हें बता रहा हूं।"

"तुम्हारा मतलब कि महाजन को ले जाने वाला जगमोहन नहीं था। राधा झूठ बोल रही है?"

"राधा झूठ क्यों बोलेगी?"

"तो फिर मुम्बई में जगमोहन कैसे हो सकता है। वो तो दिल्ली में...।"

"वो मुम्बई में भी है।" पारसनाथ की चुभती निगाह मोना चौधरी पर थी—"मैंने जगमोहन से भी बात की।"

"तुम पागल हो।"

"अभी तो नहीं हुआ।" पारसनाथ मुस्करा पड़ा—"अब तक के हालातों का निचोड़ है कि ये सब खेल, जथूरा की चाल है, वो हममें और देवराज चौहान में झगड़ा कराना चाहता है। मुझसे लड़ने वाला बांके नकली था। महाजन को उठा ले जाने वाला जगमोहन नकली था। परंतु मोना चौधरी कौन-सी असली है, ये मैं समझ नहीं पा

रहा हूं। जथूरा हमें उलझा रहा है और हम उलझते जा रहे हैं।" पारसनाथ के स्वर में गम्भीरता थी।

मोना चौधरी मुस्कराकर कह उठी।

"मैं अपने फ्लैट पर हूं। मेरा फोन मेरे पास है। इसी से तुम्हें यकीन कर लेना चाहिए कि मैं ही...।"

"मैं आसानी से यकीन करके धोखा नहीं खाना चाहता। इस तरह मैं जथूरा के खेल का मोहरा नहीं बनना चाहता।"

"मोहरा तो तुम बन रहे हो, मुझ पर शक करके।" मोना चौधरी बोली।

"सपन चड्ढा के बंगले पर फोन करो।" पारसनाथ बोला।

मोना चौधरी ने आगे बढ़कर फोन उठाया और सपन चड्ढा के बंगले का नम्बर मिलाने लगी।

बेल हुई। होती रही। मोना चौधरी ने फोन कानों से लगाए रखा।

पारसनाथ गम्भीर मुद्रा में टहलता कश लेता रहा।

"हैलो।" उधर से नींद भरा, नौकर का स्वर कानों में पड़ा।

"सपन साहब से मेरी बात कराओ।" मोना चौधरी बोली।

"मालिक से? लेकिन आप कौन हैं?"

"मोना चौधरी।"

"कमाल है। वो आपके साथ तो गए थे। सेठजी के दोस्त भी साथ में थे और अब आप...।"

मोना चौधरी ने फोन बंद करके कहा।

"सपन चड्ढा, मेरे साथ वहीं गया है।"

"अब समझीं तुम कि मुझे ये जानना है कि असली तुम हो या वो?"

"मैं हूं पारसनाथ, मुझे पहचानो, मैं...।"

"कहने भर से कुछ नहीं होता।"

"तो कैसे होता है?" मोना चौधरी का स्वर उखड़ गया।

"ऐसी कोई बात जिससे मुझे यकीन हो सके कि...।"

"तुम ही कहते हो कि ये सब चालें जथूरा चल रहा है और तुम ही उसकी चाल में फंसकर मुझे मोना चौधरी नहीं मान रहे।"

पारसनाथ कुछ कहने लगा कि उसका फोन बजा।

पारसनाथ ने स्क्रीन पर आया नम्बर देखा तो उसकी आंखें सिकुड़ गईं।

ये मोना चौधरी के मोबाइल फोन का नम्बर था।

पारसनाथ ने टेबल पर पड़े मोना चौधरी के मोबाइल फोन पर

नजर मारी। मोना चौधरी को देखा जो कि उसे ही देख रही थी। पारसनाथ ने कॉलिंग स्विच दबाकर फोन कान से लगाया।

"हैलो।"

"पारसनाथ।" मोना चौधरी की आवाज कानों में पड़ी—"हमें दिल्ली की टिकट मिल गई है। कुछ ही देर में फ्लाइट यहां से निकल जाएगी। मैं एयरपोर्ट से सीधे तुम्हारे पास आऊंगी। ताजा हालातों पर बात करनी है। बहुत कुछ अजीब-सा हो रहा है।"

"तुम अपने फ्लैट पर आना।" मोना चौधरी पर निगाह मारकर पारसनाथ बोला—"मैं तुम्हें वहीं मिलूंगा।"

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"ठीक है। महाजन का कुछ पता चला?"

"अभी तो नहीं।"

"मैं तीन घंटों तक पहुंच जाऊंगी। फिर बात करते हैं।" उधर से मोना चौधरी ने फोन बंद कर दिया।

पारसनाथ ने फोन जेब में रखते हुए कहा।

"तुम समझ ही गई होगी कि मै मोना चौधरी से बात कर रहा था।"

"मैं हूं मोना चौधरी।"

"सुबह तक वो यहां पहुंचेगी मैं भी रहूंगा और चाहूंगा कि जब वो आए तो तुम बाथरूम में चली जाना। पहले मैं उससे अकेले में बात करूंगा। मैं नहीं चाहूंगा कि वो तुम्हें देखे।" पारसनाथ ने ठोस स्वर में कहा।

"यकीन मानो पारसनाथ, मैं मोना चौधरी हूं—असली। वो झूठी है, फ्रॉड है, वो।"

"वो भी आ रही है, उसकी भी सुन लेने दो मुझे। मुझे आशा है कि जब तुम दोनों को आमने-सामने कराऊंगा तो असली-नकली का रहस्य खुल जाएगा।" पारसनाथ ने सपाट स्वर में कहा।

"तुम जथूरा की चालों में फंसते जा रहे हो पारसनाथ। तुम...।"

"खामोश रहो। मैं तुम्हारी बातों में फंसने वाला नहीं।" पारसनाथ ने पुनः सपाट स्वर में कहा।

□ □

मोना चौधरी, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा एयरपोर्ट से बाहर निकले तो दिन का उजाला फैलना शुरू हो गया था। मोना चौधरी दोनों से कह उठी।

"तुम लोग जाओ। मैं टैक्सी से चली जाऊंगी।" कहकर वो टैक्सी स्टैंड की तरफ बढ़ गई।

सपन चड्ढा की कार पार्किंग में खड़ी थी।
“तुम मेरे साथ ही चलो लक्ष्मण। मेरे बंगले पर ही नींद लेना फिर खाना खाकर जाना।”
“जैसी तुम्हारी इच्छा।”
दोनों पार्किंग की तरफ बढ़ गए।
“मोना चौधरी, देवराज चौहान किस मामले में फंसे हैं, क्या तेरे को समझ आ रहा है?” लक्ष्मण दास ने पूछा।
“पूर्वजन्म का मामला है, परंतु मुझे ठीक से समझ में नहीं आ रहा।”
“समझ में तो मुझे भी नहीं आ रहा।”
“मैं तो मोमो जिन्न के बारे में सोच रहा हूं कि वो कब हमारा पीछा छोड़ेगा। उसने तो सच में हमें अपना गुलाम बना लिया है।”
“मुझे नहीं पता था कि जिन्न ऐसे होते हैं।”
“इससे भी खतरनाक होते होंगे। पहले कभी हमारा वास्ता, किसी जिन्न से तो पड़ा नहीं कि...।”
“सपन।” लक्ष्मण दास ने टोका।
“हां।” सपन चड्ढा ने चलते-चलते उसे देखा।
“हम दोनों खिसक लेते हैं। मोमो जिन्न को पता ही नहीं चलेगा कि हम कहां गए। जब सब ठीक हो जाएगा तो...।”
“उसने हमें पकड़ लिया तो नंगा करके सड़कों पर घुमाएगा।”
“ये उसकी खोखली धमकी है।”
“अगर उसने ऐसा कर दिखाया तो?”
लक्ष्मण दास ने गहरी सांस ली। फिर कुछ नहीं कहा उसने।
दोनों पार्किंग में खड़ी, अपनी कार तक पहुंचे और चल पड़े।

□ □

सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास बंगले पर पहुंचे।
गेट पर दरबान मौजूद था। दूसरा नौकर लॉन में पौधों को पानी देता दिखा। कार को पोर्च में लाकर छोड़ा और भीतर प्रवेश कर गए। सपन चड्ढा ने कहा।
“मैं चाय-कॉफी के लिए कहता...।”
“मैं तो सोऊंगा।”
“ठीक है ऊपर कमरे में चलते हैं। एक ही कमरे में सोएंगे।”
पहली मंजिल पर सपन चड्ढा लक्ष्मण दास के साथ अपने बेडरूम में पहुंचा तो दोनों ही ठिठक गए।
सामने चार फीट का मोमो जिन्न दिखा।
मोमो जिन्न कमरे में टहल रहा था तो कभी एक तरफ रखी

खाली कुर्सी पर बैठ जाता। वो परेशान लग रहा था। उसने दोनों को देखा, परंतु जैसे अपनी परेशानी में व्यस्त रहा।

सपन चड्ढा और लक्ष्मण दास की नजरें मिलीं।

"इसे क्या हो गया है?" लक्ष्मण दास धीमे स्वर में बोला।

"ये कमीना तो हमें देखते ही हम पर सवार हो जाता है, अब बात भी नहीं कर रहा।"

"कुर्सी की कील चुभ गई होगी कूल्हे में। तभी तो चहलकदमी कर रहा है।"

"मजाक मत कर, जरूर कोई बात है।"

"मैं नींद लेने अपने ही बंगले पर चला जाता तो ठीक रहता। वहां ये तो नहीं मिलता।"

"क्या पता तब ये वहां होता।"

"फिर तू तो चैन की नींद ले पाता। मुझे नहीं लगता कि ये हमें सोने देगा। तू बात कर इससे।"

"मैं? इससे बात करना तो मुसीबत मोल लेने जैसा है।"

"मुसीबतों में तो हम पहले ही फंसे पड़े हैं। तू बात कर।" लक्ष्मण दास बोला।

"मोमो जिन्न।" सपन चड्ढा ने पुकारा।

मोमो जिन्न एकाएक ठिठका और दोनों को इस तरह देखा जैसे अभी उन्हें देखा हो। उसके बाद कुर्सी पर जा बैठा। बोला तब भी नहीं कुछ। चेहरे पर सोचें थीं।

"तबीयत खराब हो तो क्रोसीन दूं?" सपन चड्ढा कह उठा।

"ठीक हूं मैं।" मोमो जिन्न व्याकुल स्वर में बोला।

"मुझे तो तुम ठीक नहीं लग रहे। क्या परेशान हो?"

"हां।"

"क्यों? तुम तो जिन्न हो, तुम्हें क्या परेशानी आ सकती है।" लक्ष्मण दास ने कहा।

"तुम्हें किसने कहा कि जिन्न को परेशानी नहीं होती।" मोमो जिन्न के माथे पर बल पड़ गए।

"म...मैंने किसी किताब में पढ़ा था।"

"गलत लिखा था उस किताब में। जिन्न के सामने भी इंसानों की तरह परेशानियां आती हैं।"

"तुम्हें क्या परेशानी आ गई?"

"बहुत परेशानी है। जाने क्यों—मेरी इच्छाएं जागने लगी हैं।"

"इच्छाएं जागने लगी हैं?" सपन चड्ढा ने कहकर, लक्ष्मण दास को देखा।

"इच्छाएं जागने वाली बात जरूर खास है, तभी तो तुम परेशान हो।" लक्ष्मण दास कह उठा।

"हां, ये बात मुझे बहुत परेशान कर रही है।"

"वजह क्या है?"

"जथूरा अपने गुलामों की इच्छाओं को खत्म कर देता है कि उसके गुलाम की कोई इच्छा ही न बचे और जो उससे बगावत न सके। सिर्फ उसके बारे में सोचे, उसके लिए ही बेहतर काम करे।" मोमो जिन्न गम्भीर स्वर में कह रहा था—"आज तक का इतिहास है कि जथूरा द्वारा खत्म कर दी गई इच्छाओं का दोबारा जन्म नहीं होता। लेकिन मेरी इच्छाओं का मेरे मन में जन्म हो रहा है। मेरे मन में चाहत उठ रही है इंसानों की तरह कि मैं अच्छे कपड़े पहनूं। अच्छा खाऊं। मेरा भी घर-परिवार हो। मैं अपनी मर्जी करूं। कोई मुझे हुक्म न दे।"

"मेरे पास ऐसे कपड़े हैं जो तुम्हें पूरे आ जाएंगे।" सपन चड्ढा जल्दी ही कह उठा।

मोमो जिन्न ने सपन चड्ढा को घूरा।

"म...मैंने कुछ गलत कह दिया क्या?"

"बात कपड़ों की नहीं है।" मोमो जिन्न गम्भीर स्वर में बोला—"बात ये है कि मेरे मन में इच्छा उठनी ही नहीं चाहिए। ये बात अगर जथूरा को पता चल गई तो वो मुझे मंत्र पढ़कर, फौरन जलाकर खाक कर देगा।"

"फिर तो तुम खतरे में हो।"

"मैं जानना चाहता हूं कि ऐसा कौन कर रहा है।"

"क्या मतलब?"

"मेरे मन में इच्छा जगी नहीं, जगाई गई है। ये किसी शक्ति की शरारत है। उसने जानबूझकर ऐसा किया है।"

"किसने किया है?"

"मैं नहीं जानता। परंतु वो शक्ति जो भी है, जथूरा की दुश्मन है। ऐसा करके वो जथूरा का काम खराब करना चाहती है।"

"तुम उसे ढूंढ़ नहीं सकते? तुम तो जिन्न हो, मिनटों में उसका पता लगा सकते हो।"

"वो बड़ी शक्ति है, जिसने मेरे मन में इच्छाएं जाग्रत की। ऐसी ताकतों की तरफ हम नजर उठाकर भी नहीं देख सकते। ये ताकतें हम जिन्नों से बहुत दूर होती हैं।" मोमो जिन्न ने गम्भीरता से कहा।

लक्ष्मण दास ने सपन चड्ढा से कहा।

"ये कितनी अजीब बातें कह रहा है।"

"हमें क्या ये इसकी समस्या है।"

"इसकी समस्या के साथ हमारी समस्या भी जुड़ी हुई है। इसने हमें गुलाम बना रखा है।"

"अब ऐसा नहीं है।" मोमो जिन्न बोला।

"क्या मतलब?"

"मेरे मन में साधारण इंसान जैसी इच्छाएं जगाई गई हैं और इंसान कभी भी दूसरे को गुलाम नहीं बनाता। दोस्त बनाता है। अब तुम मेरे दोस्त हो।" मोमो जिन्न सोच-भरे स्वर में कह उठा।

"परंतु रहोगे हमारे पास ही?"

"जथूरा ने जो काम मुझे सौंपा है, उससे मैं पीछे नहीं हट सकता। पीछे हटा तो जथूरा जान जाएगा कि मेरे शरीर का सिस्टम ठीक नहीं चल रहा। शायद उसे ये भी पता चल जाए कि मेरे में इच्छाएं जाग्रत हो गई हैं। मैं मरना नहीं चाहता। इसलिए जथूरा को ऐसा दिखावा करते रहना जरूरी है कि मैं उसका काम कर रहा हूं।"

"फिर तो तुम भारी मुसीबत में हो।" सपन चड्ढा बोला।

"सच में।" मोमो जिन्न ने परेशानी से कहा।

"हम तुम्हारे लिए कुछ कर सकते हैं?"

"अभी मुझे किसी काम का आदेश नहीं मिला, जब मिलेगा तो...।"

"जथूरा आदेश देता है तुम्हें?"

"नहीं। इस वक्त कालचक्र काम कर रहा है। मुझे भौरी और शौहरी आदेश देता है। जथूरा ने मेरी तारें कालचक्र के साथ जोड़ दी हैं। अब मुझे कालचक्र का हुक्म मानना पड़ रहा है। परंतु जब से मेरे मन में इच्छाएं जाग्रत हुई हैं, इन सब कामों से विद्रोह करने का मन कर रहा है। मेरी इच्छा नहीं कि मैं ये सब काम करूं।"

"नहीं करोगे तो जथूरा तुम्हें मार देगा।"

"हां, अपने को बचाने और उसे दिखाने के लिए मुझे काम करते रहना होगा। तुम दोनों मेरी मदद करना।"

"मदद—हम?"

"हां। जब मैं कोई काम करने को कहूं तो कर देना। इस तरह मैं जथूरा से बचा रहूंगा।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"ये मदद के लिए कह रहा है। पहले नंगा करके, बाहर घुमाने को कहता था।"

"इसके मन में इच्छाएं आ गई हैं। ये बदल गया लगता है।" लक्ष्मण दास बोला।

"तो क्या करें?"

"प्यार से मदद मांग रहा है तो कर देते हैं।"

"धन्यवाद।" मोमो जिन्न बोला—"तुम दोनों का ये मुझ पर एहसान होगा।"

"एक बात तो बता कि ये सब हो क्या रहा है, हम ज्यादा कुछ नहीं समझ पा रहे।"

"ये देवा और मिन्नो और उसके साथियों का पूर्वजन्म का कोई काम है, जो कभी अधूरा छूट गया था। इस जन्म में वो काम इन लोगों को पूरा करना है, तभी इनका जन्म सफल होगा और इनके झगड़े रुकेंगे।" मोमो जिन्न गम्भीर स्वर में बोला।

"थोड़ा खुलकर समझाओ।"

मोमो जिन्न कुछ पल चुप रहा फिर कह उठा।

"ये देवा और मिन्नो और इनके साथियों का तीसरा जन्म है। पहले जन्म में हालात कुछ ऐसे बिगड़े कि ये देवा और मिन्नो आपस में दुश्मन बन गए, जबकि इनकी शादी होने वाली थी।"

"पहले जन्म में?" लक्ष्मण दास ने पूछा।

"हां। परंतु हालात पलटे और दोनों में दुश्मनी हो गई। देवा की शादी मिन्नो की बहन बेला से हो गई।"

"बेला से, लेकिन अब तो नगीना, देवराज चौहान की पत्नी है।"

"बेला का ही दूसरा रूप है नगीना। दोनों एक ही तो हैं।"

"ओह।"

"देवा और मिन्नो की पहले जन्म में लड़ाई, पेशीराम (फकीर बाबा) की वजह से हुई। पेशीराम इधर की बात उधर, झूठ-सच लगाता रहा और दोनों में उठे झगड़े को बढ़ाता रहा। मिन्नो तो शुरू से ही बहुत गुस्से वाली रही है। सारा कसूर पेशीराम का था। पहले जन्म में नगरी तबाह हो गई, दोनों की लड़ाई की वजह से। देवा-मिन्नो, एक-दूसरे को मारकर स्वयं भी मर गए। इनके सारे साथी मारे गए। और भी बहुत जानें गईं।"

"बुरा हुआ।" सपन चड्ढा ने कहा।

"तब बड़ी शक्तियों के बीच तीव्र हलचल हुई। उन्होंने देवा और मिन्नो का जन्म इसलिए कराया था कि दोनों के ग्रह मिलकर, दुनिया के भले के बड़े-से-बड़े काम आसानी से कर सकते थे। परंतु पेशीराम ने दोनों की दुश्मनी कराकर, उन शक्तियों की सारी योजना पर पानी फेर दिया। ऐसे में उन बड़ी शक्तियों ने पेशीराम को श्राप दिया कि जब तक वो देवा और मिन्नो में दोस्ती नहीं कराएगा, उसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी। उसकी मृत्यु नहीं होगी।"

"कैसी अद्भुद सजा है।"

"हां। क्योंकि इंसान ज्यादा-से-ज्यादा देर जिंदा रहना चाहता है। मरना नहीं चाहता। परंतु एक वक्त ऐसा भी आता है कि जब दुनिया को देखकर, थक चुका इंसान मौत चाहने लगता है। पेशीराम को मिले श्राप की वजह से वो मर भी नहीं पा रहा। जबकि वो मोक्ष चाहता है अब। पेशीराम ने हर सम्भव चेष्टा की कि देवा और मिन्नो में दोस्ती हो जाए। लेकिन हर बार वो नाकामयाब रहा। पहले जन्म में अब तक वो उसी शरीर के साथ जी रहा है। लेकिन साथ-ही-साथ एक काम उसने बढ़िया किया कि तपस्या कर-करके, उसने कई शक्तियां हासिल कर लीं। विद्वान बन गया वो। ऐसा उसने इसलिए किया कि किसी तरह कोई रास्ता मिले देवा और मिन्नो में दोस्ती करा पाने का।"

"मिला रास्ता?"

"नहीं। बड़ी शक्तियों ने दूसरे जन्म में देवा और मिन्नो को पति-पत्नी बना दिया। जो कि एक-दूसरे पर जान देते थे। ऐसा इसलिए किया कि पेशीराम तीसरे जन्म में देवा और मिन्नो में दोस्ती करा पाने की तैयारी कर ले।"

"क्यों तीसरा जन्म खास है क्या?"

"बहुत ही खास। बड़ी शक्तियां चाहती हैं कि इस जन्म में सारे झगड़े मिट जाएं। क्योंकि देवा और मिन्नो को सात जन्म मिले हैं। तीन जन्म तो झगड़े में बर्बाद हो गए। अगले चार जन्म दोनों मिलकर दुनिया का ज्यादा-से-ज्यादा भला कर सके। ये तभी होगा, जब देवा और मिन्नो एक साथ काम करेंगे। दोनों के ग्रह ऐसे हैं कि मिलकर काम करें तो फौरन काम होते चले जाएंगे।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **अनिल मोहन** के पूर्व प्रकाशित उपन्यास **हमला, जालिम, जीत का ताज, ताज के दावेदार, कौन लेगा ताज, पहली चोट, दूसरी चोट, तीसरी चोट, महामाया की माया, देवदासी, इच्छाधारी, नागराज की हत्या, विषमानव, गुड्डी, सरगना, मास्टर, मंत्र**।)

"ये पूर्वजन्म में क्यों जाते हैं?"

"बताया तो—पहले के बिगड़े काम संवारने जाते हैं। जब देवा और मिन्नो में दोस्ती हो जाएगी तो पूर्वजन्म में बिगड़े काम खुद-ब-खुद ही ठीक होते चले जाएंगे। फिर इनको पूर्वजन्म में जाने की जरूरत नहीं रहेगी।" मोमो जिन्न कहता जा रहा था—"एक बात और अगर बार-बार देवा और मिन्नो पूर्वजन्म में जाकर, पहले बिगड़े सारे काम ठीक कर देते हैं तो तब भी इनमें दोस्ती हो जाएगी।

परंतु उसमें बहुत वक्त लग सकता है। पेशीराम पूरी कोशिश में लगा हुआ है कि देवा-मिन्नो में किसी प्रकार दोस्ती करा दे।”

“बहुत अजीब मामला है।”

“ये बड़ी शक्तियां कौन हैं?”

“जो मनुष्यों की दुनिया को कंट्रोल करती हैं। उनका भला करती हैं, बुरे कर्म वाले को सजा देती हैं और अच्छे कर्म वाले को फायदा देती हैं। इन शक्तियों के बारे में समझना आसान नहीं है।” मोमो जिन्न गम्भीर नजर आ रहा था।

“जथूरा कौन है?”

“जथूरा कभी साधारण इंसान हुआ करता था। शैतानी दिमाग था उसका। वो कोई बड़ा काम करना चाहता था। बड़ा बनना चाहता था। देवा और मिन्नो की मौत के बाद, पहले जन्म में, जब बड़ी शक्तियों का कंट्रोल उस नगरी से हट गया और हर कोई अपना मनचाहा काम करने को आजाद हो गया तो जथूरा ने शक्तियां पाने के लिए तपस्या शुरू कर दी। जब उसने तपस्या करके ताकतें हासिल कीं तो उसके भीतर का शैतान जाग उठा। बुराई के रास्ते पर चल पड़ा। हादसों को अपनी मुट्ठी में लेने के लिए तपस्या कर उसने यत्न करने शुरू कर दिए। जबकि ये बेहद कठिन काम था। परंतु जथूरा के इरादे पक्के थे। जिस तरह अच्छी शक्तियों के देवता होते हैं, उसी तरह बुरी ताकतों के भी देवता होते हैं। जथूरा ने हादसों को संभालने वाले देवता को प्रसन्न कर, उससे हादसों का कंट्रोल अपने हाथ में ले लिया। इस तरह धीरे-धीरे जथूरा स्वयं हादसों का देवता बन गया। आज जथूरा बेहिसाब ताकत हासिल कर चुका है।”

“ओह, कितनी अविश्वसनीय बातें जानने को मिल रही हैं।” लक्ष्मण दास ने कहा।

“इसमें इच्छाएं आ गई हैं, तभी तो ये प्यार से बातें कर रहा है।” सपन चड्ढा ने कहा—“वरना, ये तो हमें नंगा करके सड़कों पर घुमाने की कोशिश में था।”

मोमो जिन्न गम्भीरता से उसे देख रहा था।

तभी लक्ष्मण दास ने पूछा।

“जथूरा बहुत ताकतवर है?”

“बहुत।”

“देवा और मिन्नो से ज्यादा।”

“बहुत ज्यादा।”

“और जथूरा कोशिशें कर रहा है कि देवा और मिन्नो पूर्वजन्म में प्रवेश न कर सके।”

"ठीक कहा।"

"जथूरा डर क्यों रहा है देवा-मिन्नो से, उन्हें रोक क्यों रहा है। वो ताकतवर है और आसानी से दोनों को...।"

"जथूरा का डर जायज है।" मोमो जिन्न ने कहा।

"वो कैसे?"

"देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ पूर्वजन्म में प्रवेश करेंगे और...।"

"ये जरूरी तो नहीं?"

"बहुत जरूरी है। देवा और मिन्नो के ग्रह ही ऐसे हैं कि अगर एक पूर्वजन्म में प्रवेश करता है तो दूसरे के कदम खुद-ब-खुद ही पूर्वजन्म की धरती तक जाने वाले रास्ते की तरफ बढ़ जाएंगे। ग्रहों के दम पर वो दोनों ऐसे बंधे हैं कि उनमें से कोई अकेला पूर्वजन्म की यात्रा कर ही नहीं सकता।"

"ओह, नई बात पता चली।"

"जब देवा और मिन्नो एक साथ हो जाते हैं तो उनके ग्रह बहुत बलशाली हो जाते हैं। तब दोनों बड़ी-से-बड़ी ताकत को भी हरा देने की हिम्मत रखते हैं। ये बात जथूरा को अच्छी तरह पता है।"

"समझा।"

"इसलिए जथूरा देवा या मिन्नो में से एक को खत्म कर देना चाहता है कि दूसरा अकेला कुछ नहीं कर सकता। तब उसे किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचेगा। वो आसानी से सबका मुकाबला कर लेगा।"

"क्या पूर्वजन्म की दुनिया में जथूरा ही बचा है।"

"नहीं, वहां तो एक-से-एक खतरनाक शक्तियों के मालिक भरे पड़े हैं।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तो जथूरा ने कैसे सोच लिया कि देवा-मिन्नो पूर्वजन्म में प्रवेश करके, उससे ही झगड़ा करेंगे। वो दूसरे से भी तो...।"

"देवा-मिन्नो का झगड़ा जथूरा से ही होगा इस बार।"

"क्यों—कैसे?"

"जथूरा अपनी शक्तियों से जान चुका है कि देवा और मिन्नो उसी रास्ते पर आगे बढ़ेंगे, जो उसकी तरफ जाता है, तभी तो वो परेशान हुआ पड़ा है कि या तो उनका सफर न हो, हो तो पहले ही दोनों में से एक को मार दे। एक रास्ता और भी है जथूरा के पास कि देवा और मिन्नो का सफर रोक सके।"

"कौन-सा रास्ता?"

"जग्गू।"

"जग्गू?"

"इस जन्म में उसका नाम जगमोहन है। देवराज चौहान का खास।"

"जानता हूं उसे।" लक्ष्मण दास ने सिर हिलाया।

"जगमोहन के बारे में तुम क्या कहने वाले थे?" सपन चड्ढा बोला।

"जग्गू को जथूरा द्वारा रचित कुछ खास-खास हादसों का पूर्वाभास हो रहा है और जग्गू पहले ही हादसों वाली जगह पर पहुंचकर हादसों को रोक रहा है। अगर जग्गू पूर्वाभास के पश्चात, एक बार भी खामोश बैठा रहे और हादसों को रोकने की चेष्टा न करे तो, देवा-मिन्नो की पूर्वजन्म की यात्रा टल सकती है।"

"ऐसा कैसे?"

"कोई बड़ी शक्ति जग्गू को, उन खास-खास हादसों का पूर्वाभास करा रही है, जो कि योजना के तहत ही किया जा रहा है।"

"योजना के तहत?"

"हां। पूर्वाभास वाले उन खास हादसों की जगह पर जग्गू का पहुंचते जाना ही, देवा और मिन्नो के कदम पूर्वजन्म के प्रवेश द्वार की तरफ बढ़ा रहा है। जग्गू एक बार, पूर्वाभास वाले हादसे की जगह पर न पहुंचे तो सब कुछ जथूरा के हक में ठीक हो जाएगा। फिर देवा और मिन्नो की पूर्वजन्म की यात्रा न होगी।"

"ये तो बहुत आसान है।" लक्ष्मण दास बोला।

"कैसे?" मोमो जिन्न ने उसे देखा।

"जगमोहन को जबरन कोई बिठा ले उस वक्त, जब...।"

"ये सम्भव नहीं। ऐसा करना गलत हो जाएगा।" मोमो जिन्न ने अपनी लम्बी नाक को मसला।

"मैं समझा नहीं।"

"जथूरा देवा-मिन्नो या इनके साथियों पर किसी भी तरह का बल प्रयोग करेगा तो उसकी शक्तियां कम होने लगेंगी। जब तक ये लोग पूर्वजन्म में नहीं प्रवेश कर जाते, तब तक जथूरा बल का इस्तेमाल इन पर नहीं कर सकता। उसकी कोई शक्ति भी किसी पर कामयाब नहीं हो सकती।"

"तुम्हारा मतलब ये लोग पूर्वजन्म में प्रवेश करेंगे, तब जथूरा इन पर अपनी ताकत का इस्तेमाल कर सकता है।"

"हां। ये ही बात है।"

"तो क्या ये सब पूर्वजन्म में प्रवेश कर जाएंगे।"

"कह नहीं सकता। परंतु सितारों की चाल तो यही कहती है कि ये सब पूर्वजन्म में जल्दी ही प्रवेश कर जाएंगे।"

"ये बात जथूरा को पता है?"

"पता है। परंतु वो अपनी कोशिश तो करेगा कि ऐसा न हो।"

"जगमोहन को रोकने की जथूरा ने कोई कोशिश नहीं की?"

"की। जथूरा ने पोतेबाबा को भेजा हुआ है, जो कि जग्गू के करीब ही रहने की चेष्टा करता है और उसे रास्ते पर लाने की चेष्टा करता है कि वो जथूरा के हादसों में दखल न दे।"

"जग्गू माना?"

"माना होता तो इतना झंझट ही नहीं पड़ता। लेकिन देवा और मिन्नो के ग्रहों का ही असर है कि जो जग्गू को मानने नहीं दे रहे। पोतेबाबा जितना उसे कहता है, जगमोहन उतना ही दृढ़ हो जाता है।"

"वो पोतेबाबा को पकड़ क्यों नहीं लेता?"

"ये असम्भव है। पोतेबाबा साधारण नहीं है। वो महान जथूरा का सबसे खास सेवक है। बहुत बलशाली है। विद्वान है। ढेरों शक्तियों का मालिक है। उसका मुकाबला कर पाना इंसानों के बस में नहीं है।"

लक्ष्मण दास ने सिर हिलाया।

सपन चड्ढा गम्भीरता से उसकी बातें सुन रहा था।

"तुममें इच्छाएं कौन डाल रहा है?"

"बताया तो, जथूरा की कोई दुश्मन शक्ति है, जो मुझमें इच्छाएं डालकर मुझे नकारा कर रही है कि मैं जथूरा की सेवा ठीक से न करूं और उसके काम बिगाड़ता जाऊं।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?"

"ऐसा होना शुरू भी हो गया है। जब से मेरे मन में इच्छाएं जागनी शुरू हुई हैं, तब से मैं अपने बारे में सोचने लगा हूं। तुम लोगों को गुलाम बनाने की अपेक्षा, तुम्हारा दोस्त बन गया हूं। जो बात तुमसे नहीं कहनी चाहिए वो भी कर रहा हूं। क्योंकि मेरी इच्छा है कि मैं किसी का गुलाम न रहूं। खुद की मर्जी से काम करूं और नाम कमाऊं।"

दोनों चुप रहे।

"बातें बहुत हो गईं। अब मेरे लिए कुछ खाने का भी इंतजाम करो। भूख उठ रही है।"

"खाने का, लेकिन तुम तो खाते नहीं।"

"अब खाने की इच्छा मन में जागी है। जब मैं इंसान था तो रबड़ी और जलेबी बहुत चाव से खाता था।"

"तुम कभी इंसान भी थे?"

"हां। इंसान के बाद ही जिन्न बना जाता है। सीधे थोड़ा ना जिन्न बन जाते हैं।"

"तुम जिन्न कैसे बन गए?"

"मेरी पत्नी के चाहने वाले ने मुझे मारकर कुएं में फेंक दिया था। किसी को पता ही न चला कि मैं मर चुका हूं। सब यही सोचते रहे कि मैं कहीं चला गया। परंतु मेरी पत्नी जानती थी। उसकी मर्जी से ही तो उसके आशिक ने मुझे मारा था। मेरी लाश कुएं में पड़ी रही। लोग उसी कुएं का पानी पीते रहे। मरने के बाद मेरी आत्मा वहीं भटकती रही। मैं चिल्लाकर लोगों को बताता कि मेरी लाश कुएं में पड़ी है, उसे बाहर निकालो, परंतु मेरी आवाज को कोई भी सुन नहीं सकता था। मैं बहुत परेशान हो गया। मैं चाहता था कि मेरे शरीर का अंतिम संस्कार हो जाए तो मेरी आत्मा को शांति मिल जाए। परंतु मेरी आत्मा भटकती रही। कुएं के पास ही एक पेड़ पर मैं रहने लगा और धीरे-धीरे भूत बन गया। लेकिन मैंने किसी को तंग नहीं किया। बस, आते-जाते लोगों को देखा करता था, अब तो मैंने अपने उस शरीर की चिंता भी छोड़ दी थी, जो कुएं में पड़ा कब का गल चुका था। फिर एक दिन जथूरा के भेजे दो जिन्न उधर से निकल रहे थे। उन्होंने मुझे देखा तो मेरा हाल जान लिया। वे मुझे अपने साथ, पूर्वजन्म की दुनिया में ले गए और मेरे को जिन्न बनने की अच्छी शिक्षा दिलाई। तीस सालों में मैंने शिक्षा पूरी की और मैं जिन्न बन गया। तुमने याद दिला दिया, वरना मैं तो कब का भूल गया था कि मैं भी कभी इंसान हुआ करता था।"

लक्ष्मण और सपन ने एक दूसरे को देखा।

"मुझे भूख लगी है।" मोमो जिन्न कह उठा।

"जलेबी-रबड़ी खाओगे?"

"हां। बहुत जमाना बीत गया। खाई नहीं कभी। अब तो स्वाद भी भूल गया हूं।"

"सुबह का वक्त है, फिर भी कोशिश करता हूं कि कहीं से मिल जाए। नौकर को भेजता हूं।"

"सुनो।" मोमो जिन्न दोनों को देखता कह उठा—"ये बात किसी से कहना नहीं कि मुझमें इच्छाएं जाग गई हैं।"

"ये बात हम तक ही रहेगी।"

"जथूरा को पता लग गया तो वो मुझे मार देगा।"

"हम किसी से नहीं कहेंगे।"

सपन चड्ढा कमरे से बाहर निकल गया।

"मेरा मन कपड़े पहनने को कर रहा है। जैसे तुम लोगों ने कपड़े पहन रखे हैं।" मोमो जिन्न बोला।

"तुम तो जिन्न हो। जिस चीज को भी चाहो हासिल कर सकते हो।" लक्ष्मण दास बोला।

"हां वो तो है। मन से इच्छा करूं तो वो चीज फौरन मेरे पास आ जाएगी। परंतु अभी मेरी तारें जथूरा से जुड़ी हुई हैं। मेरी हरकतें जथूरा के जासूस पकड़ सकते हैं।"

"जथूरा के जासूस?"

"हां। यूं तो वो इस दुनिया में कम ही आते हैं। परंतु क्या भरोसा, कब क्या हो जाए।"

"ठीक है। कुछ देर ठहरो, अभी सपन आकर कपड़े देता है तुम्हें।"

"इच्छाएं जागने से कितना अच्छा लग रहा है। लगता है जैसे मेरे में जान आ गई हो। बिना इच्छाओं के तो इंसान मरों की तरह होता है।" मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा—"क्यों लक्ष्मण दास मैंने ठीक कहा न?"

"तुम गलत बात कह ही नहीं सकते।" लक्ष्मण दास ने जान छुड़ाने वाले ढंग में कहा।

तभी सपन चड्ढा भीतर प्रवेश करता कह उठा।

"मैंने नौकर को भेज दिया है, रबड़ी और जलेबी लाने के लिए—वो...।"

"यार इसे कपड़े दे।" लक्ष्मण चड्ढा ने कहा—"कहीं ये मेरे न उतार ले।"

▭ ▭

कॉलबेल की आवाज फ्लैट में गूंजी।

पारसनाथ ने उसी पल आंखें खोलीं। वो कुर्सी पर बैठा हुआ था। मोना चौधरी सामने सोफे पर लेटी हुई थी, वो भी उठ बैठी। पारसनाथ से नजरें मिलीं।

"उठो और बाथरूम या दूसरे कमरे में चली जाओ।" पारसनाथ ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मोना चौधरी मैं हूं।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मेरे लिए वो भी मोना चौधरी है और तुम भी।" पारसनाथ का स्वर सख्त हो गया। मोना चौधरी ने पारसनाथ को देखा फिर टेबल पर रखा अपना मोबाइल उठाते हुए दूसरे कमरे की तरफ बढ़ गई। पारसनाथ उसे तब तक देखता रहा, जब तक वो निगाहों से ओझल न हो गई। तभी बेल पुनः बजी।

पारसनाथ उठा और आगे बढ़कर दरवाजा खोला।

सामने मोना चौधरी खड़ी थी।

"आओ मोना चौधरी।" पारसनाथ ने शांत स्वर में कहा।

"तुमने दरवाजा कैसे खोल लिया।" मोना चौधरी ने भीतर आते हुए कहा—"मैं तो बंद करके गई थी।"

पारसनाथ दरवाजा बंद करके पलटा।

मोना चौधरी कुर्सी पर बैठती कह उठी।

"बहुत थक गई।" उसने गहरी सांस ली—"परंतु हालात बहुत बिगड़ चुके हैं। हमें इस मुद्दे पर बात करानी चाहिए।" एकाएक ही वो गम्भीर होती गई—"मैं अभी देवराज चौहान, जगमोहन, बांके और रुस्तम राव से...।"

"हमारी तब फोन पर बात हुई थी।" पारसनाथ की निगाह मोना चौधरी पर थी।

"हां, हुई थी।" मोना चौधरी ने पारसनाथ को देखा—"तुम दूसरी वाली मोना चौधरी से मिले?"

"नहीं।" पारसनाथ ने झूठ कहा—"राधा और सितारा ने उसे देखा।"

"और जगमोहन को किसने देखा?"

"राधा ने। महाजन ने, मोना चौधरी ने।"

"वो जगमोहन महाजन को ले गया?"

"हां।"

"परंतु वो मोना चौधरी मैं नहीं थी।" मोना चौधरी के दांत भिंच गए—"वो जगमोहन भी नहीं था। मेरी और जगमोहन की सूरत में वे दोनों बहरुपिए थे। शायद जथूरा के भेजे बहरुपिए। हमें पागल बना देना चाहता है जथूरा।"

"वो दोनों जथूरा के भेजे थे?" पारसनाथ ने मोना चौधरी की आंखों में झांका।

"तो और किसके भेजे होंगे—वो तो...।"

"अगर वो दोनों जथूरा के बहरुपिए थे तो उन्होंने आपस में झगड़ा क्यों किया?" पारसनाथ बोला।

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं। वो पारसनाथ को देखने लगी फिर बोली।

"क्या कहना चाहते हो पारसनाथ?"

"वो मोना चौधरी, वो जगमोहन अगर जथूरा के भेजे थे तो उन्होंने आपस में झगड़ा क्यों किया?"

मोना चौधरी के माथे पर बल नजर आने लगे। वो पारसनाथ को ही देख रही थी।

"तुम जगमोहन से मिली, वो देवराज चौहान, बांके और रुस्तम राव के पास था।"

"हां था।" मोना चौधरी ने सिर हिलाया।

"इसका मतलब वो असली जगमोहन था।"

"सही कहा।"

"फिर तुम नकली मोना चौधरी होनी चाहिए।"

"ये क्या कह रहे हो पारसनाथ?"

"गलत क्या कह दिया मैंने। ये तो तुम भी मानती हो कि जथूरा के बनाए मोना चौधरी और जगमोहन आपस में नहीं लड़ सकते। वह लड़े तो उनमें एक तो असली होना चाहिए।" पारसनाथ शांत स्वर में कह उठा।

"तुम ठीक कहते हो पारसनाथ, परंतु मैं असली मोना चौधरी हूं—मैं...।"

"ये बात तुम साबित नहीं कर सकती।"

"मैं मोना चौधरी हूं। इसमें साबित करने की क्या जरूरत है। तुम्हें क्या हो गया है पारसनाथ?"

तभी कमरे में छिपी खड़ी मोना चौधरी वहां आ पहुंची।

दोनों मोना चौधरी की नजरें मिलीं।

एक-दूसरे को देखा।

पारसनाथ सतर्क नजर आने लगा था।

"जरा भी फर्क नहीं।" कमरे से निकलकर आने वाली मोना चौधरी कह उठी—"बिल्कुल मेरे जैसी।"

"कौन हो तुम?" वहां पहले से खड़ी मोना चौधरी गुर्रा उठी।

"ये तुम बताओगी कि तुम कौन हो?"

पारसनाथ फौरन कह उठा।

"तुम दोनों एक-दूसरे को देखकर दुविधा में हो तो, मेरी दुविधा का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है। मुझे नहीं मालूम कि तुम दोनों में असली मोना चौधरी कौन-सी है। इसलिए मैं बीच में नहीं आऊंगा। इस बात का फैसला तुम दोनों को ही करना होगा।" पारसनाथ गम्भीर था—"तुम दोनों के फैसले के दौरान, मेरा यहां रहना भी ठीक नहीं।"

दोनों मोना चौधरी एक-दूसरे को खा जाने वाली निगाहों से देखी जा रही थीं।

"मैं जा रहा हूं।" कहने के साथ ही पारसनाथ आगे बढ़ा और दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया।

पारसनाथ अभी घर पहुंचा ही था कि मोना चौधरी का फोन आ गया।

"वो भाग गई।" मोना चौधरी की आवाज कानों में पड़ी—"पहले उसने लड़ाई की, जब हारने लगी तो भाग गई। वो ही नकली थी।"

"तुम कौन-सी हो?"

"मैं वही हूं पारसनाथ, जिससे तुम फ्लैट पर आकर मिले थे।"

"तुम्हारा मतलब कि मुम्बई से आने वाली नकली थी?"

"सही कहा तुमने।"

पारसनाथ के चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे।

"हमें महाजन की तलाश करनी चाहिए।"

"मुझे कैसे पता चले कि भागने वाली असली मोना चौधरी थी या तुम हो।" पारसनाथ बोला।

"मैं ही असली...।"

"मैं यकीन नहीं कर सकता।"

"तो कैसे करोगे।" उधर से मोना चौधरी ने गहरी सांस ली—"किसी पर तो यकीन करोगे ही।"

"मैं तुमसे फिर बात करूंगा।" पारसनाथ ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"पारसनाथ, ये वक्त बर्बाद करने लायक नहीं है। महाजन खतरे में है। वो...।"

"मुझे तो सारे हालात ही खतरे से भरे नजर आ रहे हैं।" पारसनाथ ने खुरदरे, चुभते स्वर में कहा।

"मुझे जगमोहन पर शक है पारसनाथ। जथूरा की आड़ में वो ही हमारे साथ खेल खेल रहा...।"

"अब मुझे किसी पर भरोसा नहीं रहा। कोई भी नकली हो सकता है। मैंने अपनी आंखों से दो-दो मोना चौधरी देखी हैं और मैं नहीं समझ पाया कि कौन-सी असली है। अब मुझे खतरे से भरे हालातों का एहसास हुआ है।"

"मैं ही मोना चौधरी हूं, तुम्हें कैसे समझाऊं।"

"सुबह बात करेंगे।"

"ठीक है, तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं तो न सही। अपने पर तो है। तुम महाजन को ढूंढो। मैं अपने तौर पर महाजन को तलाश करती हूं। जितनी देर होगी, महाजन उतना ही खतरे में फंसता चला जाएगा।"

"महाजन को जगमोहन ले गया है?"

"हां।"

"कौन-सा जगमोहन? एक ही वक्त में दो-दो जगमोहन हमें नजर आए। एक से मैं बात कर रहा था। वो मुम्बई में देवराज चौहान के पास था। दूसरा जगमोहन महाजन के पास आया और नगीना का पता पूछ रहा था। उससे तुम्हारा झगड़ा भी हुआ। अब तुम किसे असली जगमोहन मानती हो। पहले ये बात तो स्पष्ट हो।"

"जिससे मेरा झगड़ा हुआ, वो ही असली जगमोहन था।" मोना चौधरी की आवाज कानों में पड़ी—"वो ही...।"

"मेरे खयाल में असली वो था, जिससे मेरी बात हुई।"

मोना चौधरी की आवाज नहीं आई।

"जब तक मुझे ये न पता लगे कि महाजन को कौन ले गया है, तब तक उसे तलाश नहीं किया जा सकता।" पारसनाथ बोला—"मेरे खयाल में तुम ये बखूबी समझ रही हो कि मुझे किसी पर भरोसा नहीं। जब तक हालात ठीक न हों, मुझे फोन मत करना।"

"ये कैसे सम्भव है?"

पारसनाथ ने फोन बंद कर दिया। उसके चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी।

पारसनाथ ने अपनी पत्नी सितारा को फोन किया जो इस वक्त राधा के पास थी।

"हैलो।" सितारा की नींद से भरी आवाज कानों में पड़ी।

"नींद में हो।" पारसनाथ ने पूछा।

"अब नहीं हूं।" सितारा का सतर्क स्वर उसके कानों में पड़ा—"कहो।"

"राधा के पास हो?"

"हां, क्या बात है?"

"मोना चौधरी तो नहीं आई तुम्हारे पास?"

"नहीं।"

"तुम्हारे पास जो भी मोना चौधरी आए, वो नकली मोना चौधरी होगी। उसे भीतर मत आने देना, बेशक वो जो भी कहे।"

"समझ गई।"

"इस वक्त दो-दो मोना चौधरी, अलग-अलग जगहों पर नजर आ रही हैं।"

"ओह—ये कैसे हो रहा है?"

"बताऊंगा। इस वक्त तुम सतर्क रहना।" पारसनाथ ने फोन बंद किया और नींद लेने की तैयारी करने लगा। सुबह के आठ

बज रहे थे। रेस्टोरेंट के सफाई कर्मचारी आकर, अपने काम पर लग चुके थे। रेस्टोरेंट के किचन में भी, खाना बनाने का काम शुरू हो चुका था।

पांच मिनट ही बीते कि पारसनाथ के कानों में कदमों की आहटें पड़ीं।

उसने फौरन आंख खोली और उठ बैठा।

अगले ही पल पारसनाथ के होंठ सिकुड़ गए।

सामने मोना चौधरी खड़ी थी।

"तुम?" पारसनाथ के होंठों से निकला।

"मैं उसका मुकाबला नहीं कर सकी।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में कहते कुर्सी पर बैठ गई—"मुझे वहां से भागना पड़ा।"

"हैरानी है कि तुम मुकाबले से डरकर भाग खड़ी हुईं।" पारसनाथ बोला।

"मेरे खयाल में उसकी सहायता अदृश्य ताकतें कर रही हैं। वो जथूरा की बनाई मोना चौधरी है।" मोना चौधरी ने गहरी सांस लेकर कहा—"उसके एक घूंसे में, दस घूंसों जितना दम है।"

पारसनाथ ने सिगरेट सुलगाकर कश लिया।

"तो तुम कहना चाहती हो कि तुम असली मोना चौधरी हो।" पारसनाथ ने उसे घूरा।

मोना चौधरी ने अजीब-सी नजरों से पारसनाथ को देखा।

"तुम पागल तो नहीं हो।" मोना चौधरी ने तेज स्वर में कहा—"मैं असली मोना चौधरी हूं। क्या हो गया है तुम्हें?"

पारसनाथ मुस्करा पड़ा।

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"अभी मोना चौधरी का फोन आया।"

"मोना चौधरी?" मोना चौधरी के होंठों से निकला।

"जो इस वक्त फ्लैट में है। उसने बताया कि तुम उसका मुकाबला नहीं कर सकीं और भाग गईं। वो अपने को असली मोना चौधरी कह रही थी। उसे गायब हो चुके महाजन की भी बहुत चिंता हो रही थी।"

"वो कमीनी, जथूरा की कोई चाल है।" मोना चौधरी गुर्रा उठी।

"साबित करो कि वो जथूरा की चाल है और तुम असली हो।" पारसनाथ बोला।

"इस बात को साबित करने के लिए वक्त लगेगा।" मोना चौधरी बोली—"अभी हालात ठीक नहीं...।"

"तो जब हालात ठीक हो जाएं तो तब आना।"

"क्या मतलब?"

"यहां से चली जाओ और दोबारा तब आना जब खुद को असली मोना चौधरी साबित कर सको।"

"होश में आओ पारसनाथ।"

"मैं होश में ही हूं।" पारसनाथ की आवाज में कठोरता आ गई—"निकल जाओ यहां से।"

मोना चौधरी दांत भींचे पारसनाथ को देखने लगी।

पारसनाथ का व्यवहार, उसके प्रति पूरी तरह रूखा था।

"तो मैं जाऊं?" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"बेशक और दोबारा तभी मेरे पास आना, जब तुम ये साबित कर सको कि तुम ही असली मोना चौधरी हो।"

"दोनों को सामने खड़ा करके तुम ही क्यों नहीं पहचान लेते कि कौन-सी असली है।" मोना चौधरी बोली।

"मेरे लिए ये सम्भव नहीं।" पारसनाथ ने इंकार में सिर हिलाया और मुस्करा पड़ा।

"क्यों?"

"क्योंकि नकली, असली से भी बढ़िया है। जथूरा सच में कमाल का है।"

"मैं समझ सकती हूं कि तुम कैसी स्थिति से गुजर रहे हो।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में बोली—"जा रही हूं मैं...।"

पारसनाथ उसे देखता रहा।

मोना चौधरी पलटी और बाहर निकल गई।

'मेरा दिमाग खराब होता जा रहा है।' पारसनाथ बड़बड़ा उठा।

▭ ▭

मखानी नाराज था शौहरी से।

रात बीत गई थी। शौहरी ने उसकी इच्छा को पूरा न किया था।

मखानी चार बार पुकारने पर शौहरी की बात का जवाब देता। इस वक्त मखानी जगमोहन के रूप में था और सड़क किनारे फुटपाथ पर पेड़ की छाया में बैठा था। सड़क पर से ट्रैफिक आ-जा रहा था।

"मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट, उसके कान में पड़ी।

"मैं नाराज हूं तेरे से।" मखानी ने मुंह फुलाकर कहा।

"जानता हूं। लेकिन तेरे नाराज होने से कुछ नहीं होगा। खुश रहना सीख।"

"रात बीत गई और तूने लड़की नहीं दिलाई मुझे।"

"कमला रानी बहुत व्यस्त है, वरना मैं तो...।"

"तू झूठ बोलता है।"

"मैं तेरे से क्यों झूठ बोलूंगा मखानी। मैंने तो तेरे को खुश करने का पूरा इंतजाम कर लिया था।"

"फिर किया क्यों नहीं?"

"बताता हूं—सुन, कमला रानी मिन्नो बनकर खुले में आ गई है। हर पल उसे सबके सामने रहना पड़ रहा है कि उसके साथी उसे देखकर चक्कर खा जाएं। वो असली मिन्नो के सामने भी गई। परसू तब वहां था।"

"ये सब करने का क्या फायदा?"

"ये कि मिन्नो को उसके साथियों का सहारा न मिले। परसू अब इस चक्कर में पड़ गया है कि असली कौन है।"

"थोड़ी देर के लिए कमला रानी मेरे पास जा जाती तो क्या हर्ज था।"

"उसे तो एक मिनट की भी फुर्सत नहीं।"

"मिन्नो को भी पकड़कर वहां पहुंचा देते, जहां नगीना, महाजन है।"

"ये इतना भी आसान नहीं। मिन्नो पर काबू पाना आसान होता तो ये काम पहले ही हो जाता।"

"मैं कमला रानी की सहायता कर देता हूं।"

"तू करेगा?"

"क्यों नहीं।"

"ठहर, भौरी से बात करता हूं।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी, फिर खामोशी छा गई।

कुछ देर बाद शौहरी की फुसफसाहट पुनः कानों में पड़ी।

"मखानी, तेरा काम बन गया।"

"कैसे?"

"तू कमला रानी की सहायता कर। लेकिन भौरी कहती है कि तू कहीं काम भूलकर कमला रानी के साथ न चिपक जाए।"

"काम के बाद चिपकूंगा।"

"ठीक है। चल तेरे को कमला रानी के पास ले चलता हूं।"

"तेरे को पता है वो कहां है?"

"सब पता है। क्या नहीं पता मेरे को।"

"वो मुझे पहचानेगी कैसे?"

"मैं हूं तेरे साथ, फिक्र क्यों करता है। लेकिन पहले काम। उसके बाद बाकी कुछ।"

"सुन लिया—सुन लिया। बार-बार मत कह।"
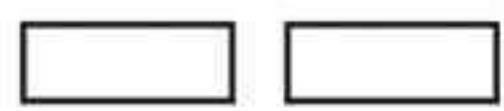
मोना चौधरी ने कॉफी बनाई और घूंट भरा।

तभी कॉलबेल बजी।

कॉफी का प्याला थामे, मोना चौधरी दरवाजे के पास पहुंची और दरवाजा खोला।

सामने जगमोहन खड़ा था।

दोनों की नजरें मिलीं।

"कमला रानी।" तभी भौरी का स्वर मोना चौधरी के कानों में पड़ा—"ये मखानी है, तेरे को बताया था मैंने।"

"हां, याद है।" मोना चौधरी के चेहरे पर मुस्कान उभरी।

"कैसा लगा ये तेरे को?"

"बढ़िया।" मोना चौधरी जगमोहन को देखते मुस्करा रही थी।

"सोएगी इसके साथ?"

"मैं तो अभी से बे-सब्र हो रही हूं।" मोना चौधरी ने गहरी सांस ली।

"लेकिन पहले तेरे को मिन्नो को पकड़ना है। एक बार वो तेरे हाथों से बच निकली।"

"अब सामने पड़ी तो वो भाग नहीं सकेगी।"

"मखानी तेरी सहायता करेगा उसे पकड़ने में। इसमें जग्गू जैसा दम और चालाकियां भरी पड़ी हैं।"

"समझ गई।" कमला रानी ने सिर हिलाया और जगमोहन से बोली—"भीतर आ जाओ मखानी।"

जगमोहन मुस्कराया और भीतर आ गया।

कमला रानी ने दरवाजा बंद किया।

"तू मुझे अच्छा लगा।" कमला रानी मुस्करा रही थी।

"तू भी मुझे अच्छी लगी।" मखानी बोला—"मैं तो तेरे को पाने के लिए कब का तड़प रहा हूं।"

"आग इधर भी लगी है।" कमला रानी ने तड़प भरे स्वर में कहा।

"तो सोचती क्या है, अभी...।"

"भौरी कहती है कि पहले मिन्नो को पकड़ना है। उसके बाद हम प्यार करेंगे।"

"मिन्नो है कहां?"

"पता नहीं। सुबह मेरे सामने पड़ी थी। मेरा मुकाबला नहीं कर सकी तो भाग निकली।"

"तूने उसे जकड़ लेना था, वो...।"

"मौका ही कहां दिया उसने। फुर्तीली है। पर अब नहीं छोड़ूंगी। एक बार सामने आने दे।"

जगमोहन आगे बढ़कर कुर्सी पर बैठता कह उठा।

"मैं ये काम जल्दी पूरा करना चाहता हूं, कमला रानी।"

"मुझे तो तेरे से भी जल्दी है, पर क्या करूं, भौरी की बात माननी पड़ती है। तू शौहरी की बात नहीं मानता?"

"मानता हूं। वो दोनों भी चक्कर में हैं।"

"चक्कर?"

"शौहरी और भौरी भी मिलने के चक्कर में हैं। एक-दूसरे को चारा फेंकते रहते हैं।" मखानी हंसकर बोला।

"ऐ मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"तू मेरी पोल क्यों खोलता है?"

"इसमें गलत क्या है?"

"नहीं, तू मेरी बात नहीं करेगा। करेगा तो आगे से तू मेरे बारे में कुछ नहीं जान पाएगा।"

"ठीक है। तेरी बात नहीं करता।"

"शौहरी ने मना कर दिया, उसकी बात क्यों की?" कमला रानी मुस्कराई।

"पागल है वो। तू बैठ मेरे पास। बातें तो कर ही सकते हैं हम। जब मैं जवान हुआ करता था तो बहुत मौज करता था।"

"मौज तो मैंने भी की।" कमला रानी बोली—"पर तेरे जितनी नहीं। मुझे कम ही मौके हाथ लगे।"

"जवानी के वो दिन भी क्या दिन...।"

ठीक उसी समय कॉलबेल बजी।

दोनों ने दरवाजे की तरफ देखा।

"कौन आ गया?" मखानी बोला।

"तू पीछे कमरे में चला जा। मैं देखती हूं।" कमला रानी कॉफी का घूंट भरके बोली।

जगमोहन उठा और पीछे वाले कमरे में चला गया।

कमला रानी ने कॉफी का मग टेबल पर रखा और दरवाजे की तरफ बढ़ गई। दरवाजा खोला, तो जोरों से चौंकी। फिर संभली।

सामने मोना चौधरी खड़ी थी।

"तो तू आ गई फिर।" कमला रानी गुर्रा उठी।

"तूने मुझे पलक झपकते ही घर से बे-घर कर दिया।" मोना चौधरी कठोर स्वर में बोली—"मेरी पहचान वाले मुझे पहचानने से इंकार कर रहे हैं। आखिर तू चाहती क्या है?"

कमला रानी मुस्कराई।

"जो मैं चाहती हूं, वो ही होके रहेगा। तू अपने को बचा नहीं सकती मिन्नो।"

"मैं तेरे से आराम से बात करना चाहती हूं।"

"ठीक है, भीतर आ-जा। आराम से बात कर ले।"

मोना चौधरी उसे शक-भरी निगाहों से देखती भीतर आ गई। अपने ही घर में जैसे वो पराई हो गई थी।

कमला रानी ने दरवाजा बंद किया और पलटकर कह उठी।

"ये तेरा ही घर है। आराम से बैठ।"

होंठ भींचे मोना चौधरी ने कमला रानी को देखा।

"एक मेहमान भी आया है, उससे नहीं मिलेगी।"

"मेहमान।"

"मखानी।" कमला रानी ऊंचे स्वर में बोली—"देख तो, कौन आया है।"

दूसरे कमरे से मखानी वहां आ पहुंचा।

मोना चौधरी जगमोहन के डुप्लीकेट को देखते ही चौंकी।

"इससे तो मैं रात मिला था।" मखानी बोला—"जब महाजन को उठाया था।"

मोना चौधरी के दांत भिंच गए।

"मैं नहीं जानती थी कि तुम दोनों मिले हुए हो।"

"हम कालचक्र का ही हिस्सा हैं।" एकाएक कमला रानी बोली—"इसलिए हमारी तारें एक-दूसरे से बंधी हैं, क्यों मखानी?"

"तूने ठीक कहा कमला रानी।"

एकाएक मोना चौधरी को लगा, उसने यहां आकर गलती कर दी है। वो सतर्क हो चुकी थी।

"सारा झंझट ही तेरा और देवराज चौहान का है। दोनों में से एक मर जाए तो जथूरा खुश हो जाएगा।" मखानी बोला।

"लेकिन जथूरा की ताकत, पूर्व जन्म वाले इंसान पर तब काम करेगी, जब वो पूर्वजन्म में होगा। यही वजह है कि अभी तुम लोग बचे हुए हो।" कमला रानी मुस्कराई—"लेकिन अब तू फंस गई मोना चौधरी।"

"क्या मतलब?" मोना चौधरी ने क्रोध भरी नजरों से दोनों को देखा।

कमला रानी ने मखानी को देखा, आंखें नचाईं, फिर कह उठी।

"चल मखानी इसे मतलब समझा देते हैं।"

मोना चौधरी फुर्ती से दरवाजे की तरफ दौड़ी।

"वो देख—भागी...।" मखानी के होंठों से निकला।

मोना चौधरी दरवाजे तक पहुंच चुकी थी। परंतु दरवाजा खोलने का उसे मौका न मिल सका।

कमला रानी फुर्ती से उसके पास पहुंच चुकी थी और उसके सिर के बाल कसकर पकड़ लिए।

मोना चौधरी के होंठों से कराह निकली।

"अब तू नहीं भाग सकती। डरपोक कहीं की। मुकाबला नहीं कर सकती तो भागती है।"

"तो तूने ही देवराज चौहान की पत्नी नगीना को उठाया था।" मोना चौधरी दांत किटकिटा उठी।

"बहुत देर से समझी तू तो।" कमला रानी हंसी।

"मैंने महाजन को...।" पास पहुंचता मखानी कह उठा।

"कहां हैं वे दोनों?" मोना चौधरी अपने बालों को छुड़ाने की चेष्टा में बोली।

"ये तो हम तेरे को नहीं बताएंगे, लेकिन तेरे को भी वहीं पहुंचा देते हैं।" फिर उसने पुकारा—"शौहरी।"

"क्या है?" शौहरी की झल्लाहट भरी फुसफुसाहट उसके कानों में पड़ी।

"बेहोश कर दे इसे?"

"तू बातें बहुत करता है और काम कम करता है।"

"मेरा मतलब है इसे भी वहीं पहुंचाने का इंतजाम कर लिया है—या फिर अभी...।"

"मैंने पिशाचों को बुला लिया है। वो पहुंचते ही होंगे। तू बेहोश कर मिन्नो को।"

मोना चौधरी खुद को आजाद नहीं करा पा रही थी। कमला रानी उसके सिर के बाल छोड़ने को तैयार नहीं थी और पकड़ ऐसी मजबूत थी कि बाल उखड़ जाए, परंतु कमला रानी की मुट्ठी ढीली न हो।

मखानी ने मोना चौधरी का सिर थामा और जोर से दरवाजे पर मारा। तेज आवाज उभरी।

मोना चौधरी के होंठों से चीख निकली।

अगली बार मखानी ने एक साथ दो बार उसका सिर, दरवाजे से टकराया। बेदम होती मोना चौधरी उसी पल बेहोश होकर नीचे गिरती चली गई। कमला रानी ने उसके सिर के बाल छोड़ दिए थे।

मखानी ने नीचे पड़ी मोना चौधरी को चैक किया।

वो बेहोश थी।

"कितना आसान था इस पर काबू पाना।" कह उठा मखानी।

"मौके की बात थी। पकड़ में आ गई। वरना कम नहीं है ये।" कमला रानी हंसी और मखानी को देखा।

"ऐसे मत देख। अभी पिशाचों को आकर, इसे ले जाने दे। कुछ और इंतजार कर ले।"

कमला रानी ने गहरी सांस ली।

तभी कॉलबेल बजी।

दोनों की नजरें मिलीं।

मखानी ने नीचे पड़ी मोना चौधरी को थोड़ा-सा इस तरफ घसीटा कि दरवाजा खुले तो वो दरवाजे की ओट में आ जाए। खुद भी उसके पास ही खड़ा हो गया और कमला रानी को दरवाजा खोलने का इशारा किया।

कमला रानी ने दरवाजा खोला।

सामने नंदराम खड़ा था। सामने के फ्लैट में रहने वाला नंदराम।

"मोन्ना चौधरी सब ठीक तो है नी। बोत ठक-ठक की आवाजें आ रही थीं नी।"

"ओह, नंदराम, माई डार्लिंग।" मोना चौधरी के चेहरे में, कमला रानी गहरी सांस लेकर कह उठी।

"माई डार्लिंग?" नंदराम चौंका—"वड़ी सब ठीक तो है नी।"

"हां, मेरी जान सब ठीक है। तेरे पास दो बियर हैं, फ्रिज में। एकदम चिल्ड।"

"तेरे को कैसे पता नी?" नंदराम सकपकाया।

"अभी मेरे को कहने वाला था कि मारते हैं बियर। तेरी बीवी घर पर नहीं है।"

"तू तो सब जानती है वड़ी।"

"ओह माई डार्लिंग—नंदराम।"

नंदराम घबराकर दो कदम पीछे हुआ।

"ये तेरे को आज किया हो गया है नी। तू मेरे को डार्लिंग बोल रही है।"

"ये ही तो तू चाहता है।" कमला रानी ने गहरी सांस ली—"आ, भीतर आ जा।"

"क...क्यों—नी?" नंदराम हड़बड़ाया।

"मेरे पास दो बीयर हैं। एकदम ठंडी। पास-पास बैठ के बियर मारेंगे।"

"वो—ठक-ठक...।"

"वो भी करेंगे। ठक-ठक भी होगी। तू आ तो भीतर।"

नंदराम ने दोनों हाथों से पेट पकड़ लिया। वो पलटकर अपने फ्लैट के दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

"नंदराम।" पीछे से कमला रानी ने पुकारा।

"सांई। मेरे पेट में मरोड़ उठ रहा है नी। तेरी बात सुनकर तबीयत बोत खराब हो गई।" दरवाजा खोला नंदराम घबराहट भरे स्वर में कह उठा—"मेरे कू दो दिन पूरा आराम करना पड़ेगा।" कहकर नंदराम ने दरवाजा बंद कर लिया।

कमला रानी ने भी दरवाजा बंद किया।

"तू तो बोत रोमांटिक बातें करती है।" मखानी मुस्कराकर कह उठा।

"अपनी जवानी में मैं कम रोमांटिक नहीं थी। बस, बुढ़ापे ने सारा जोश ठंडा कर दिया था।" कमला रानी ने गहरी सांस ली।

"अब तो फिर तू जवान हो गई है।"

"कुछ देर बाद तेरे को जवानी का जलवा दिखाऊंगी।" कमला रानी ने आंख दबाकर कहा।

मखानी ने ठंडी आह भरी।

तभी कमरे में दो काली-काली परछाइयां नजर आने लगीं।

फिर वो परछाइयां बेहोश पड़ी मोना चौधरी पर छा गईं।

देखते-ही-देखते मोना चौधरी का शरीर सिकुड़ने लगा। वो शरीर इस हद तक सिकुड़ गया कि बिंदु बनकर उन परछाइयों में गुम हो गया और वो परछाइयां लुप्त हो गईं।

अब वहां मोना चौधरी नहीं थी।

मखानी और कमला रानी ने एक-दूसरे को देखा।

"आ कमला रानी, मेरी बांहों में...।"

"मखानी।" उसी पल उसके कानों में, शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"क्या है?" मखानी ने उखड़े स्वर में कहा।

"अब जान ले कि तेरे को अगला काम क्या करना...।"

"मैं नहीं करूंगा।" मखानी गुस्से से चीखा।

"क्या? तेरे को फिर बूढ़ा बना दूं।"

"ऐसी जवानी का क्या फायदा कि तू मजे लेने नहीं देता। जवान बनाकर तू अपने काम ही लिए जा रहा है। मुझे भी अपना काम करने दे। पेट भरा हो तो मैं शांति से काम करूंगा तेरे।"

"बहुत बेसब्र है तू।"

"बूढ़े से जवान हुआ हूं, मैं चैक कर लूं कि ये जवानी असली है कि नकली। बेचारी कमला रानी भी मेरे बिना तड़प-तड़प के जी रही है। उसकी आग भी तो बुझानी है। तेरे को अपने कामों की पड़ी है।"

"मेरे काम जब तक तू करेगा तब तक ही तेरी जवानी कायम रहेगी। ये बात समझ ले।"

"जानता हूं मैं। अब तू चुप हो जा। मुझे ये काम कर लेने दे।"

"कर ले।"

"तो क्या तू आंखें फाड़कर देखता रहेगा कि हम क्या कर रहे हैं। तू जा यहां से।" मखानी झल्लाया।

"मैं नहीं जा सकता।"

"क्यों?"

"जब तक तेरे भीतर हूं, तू जवान रहेगा। नहीं तो मर जाएगा। बोल जाऊं?"

"नहीं। तू-तू मेरे भीतर ही रह।" मखानी घबराकर बोला।

शौहरी की आवाज नहीं आई।

मखानी का चेहरा पसीने से भरने लगा।

"क्या हुआ?" कमला रानी ने उसे देखा।

"शौहरी ने ऐसी बात कही कि मैं ठंडा हो गया हूं।" मखानी ने मुंह लटकाकर कहा।

"फिक्र क्यों करता है।" कमला रानी पास आ पहुंची—उसका हाथ थामा—"तेरे को अभी गर्म कर देती हूं।"

"हो गया गर्म।" मखानी ने कहा और कमला रानी पर झपट पड़ा।

□ □

"मिल गई शांति?" शौहरी की आवाज मखानी के कानों में पड़ी।

"मजा आ गया। जवानी के वो दिन फिर से याद आ गए।" मखानी ने लम्बी आह भरकर कहा।

"अब भी तो तू जवान है। जग्गू के रूप में है तू।" शौहरी ने शरारत भरे स्वर में कह।

"ये तो कमला रानी बताएगी।" मखानी ने मोना चौधरी के बहरूप की तरफ देखा—"क्यों, जवान हूं मैं?"

"बहुत।" कमला रानी ने छाती पर हाथ रखकर कहा—"तूने तो मेरी जान ही ले ली थी।"

"तेरी जान लेकर मैं क्या करूंगा। पर अभी दिल नहीं भरा।"

"मखानी।" शौहरी की आवाज पुनः सुनाई दी—"होश में आ। काम की सोच।"

"आराम का वक्त भी तो मिलना चाहिए।"

"अभी आराम नहीं मिलेगा। कालचक्र गति में है। कोई भी आराम नहीं कर सकता।"

"कब आराम करने को मिलेगा?"

"जब कालचक्र थम जाएगा।"

"कब थमेगा?"

"जब सारे काम पूरे हो जाएंगे। लेकिन अगले काम के साथ तेरे को खुशी भी होगी।"

"कोई लड़की मिलेगी क्या?" मखानी के होंठों से निकला।

"अगला काम तू कमला रानी के साथ मिलकर करेगा।" शौहरी की आवाज सुनाई दी।

"सच?" मखानी ने खुश होकर कमला रानी को देखा।

कमला रानी मुस्कराई।

"लेकिन तुम दोनों सिर्फ मेरा कहा काम करोगे, और कुछ नहीं करना है। समझ गए?"

"काम बता।" मखानी बोला।

"जग्गू को देवा के पास से दूर करना है। कोई शक्ति उसे कालचक्र की हरकतों का भी पूर्वाभास करा रही है, जो कि ठीक नहीं है। देवा कभी भी कालचक्र के खिलाफ कोई चाल चल सकता है। देवा को मौका नहीं मिलना चाहिए।"

"लेकिन वो दोनों तो मुम्बई में हैं।" कमला रानी ने कहा।

"मैं तुम दोनों को पलों में मुम्बई पहुंचा दूंगा।"

"ये सब करना कैसे है, तुमने सोचा है कुछ।"

"हां। जग्गू को भटकाकर देवा से दूर ले जाना है। मैं बताता हूं ये कैसे होगा। मेरी बात सुन लो, परंतु मौके पर तुम लोगों को जो ठीक लगे, वही करना। काम को हर हाल में पूरा होना चाहिए।"

"जब तक भौरी मुझे इजाजत नहीं देगी, मैं ये काम नहीं करूंगी।" कमला रानी बोल पड़ी।

"भौरी की 'हां' है।" शौहरी की आवाज आई।

तभी भौरी की आवाज, कमला रानी के कानों में पड़ी।

"शौहरी की बात मान। मेरी सहमति है उसकी बातों में।"

"ठीक है।"
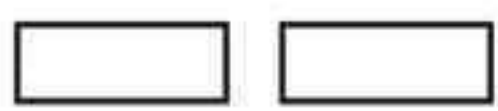
उस वक्त सुबह के नौ बज रहे थे।

जगमोहन नहा-धोकर किचन में जा पहुंचा था कि नाश्ता तैयार करे। देवराज चौहान अभी नहाने-धोने में व्यस्त था। बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव, रात यहीं पर सो गए थे। आधी रात तो उन्हें यहां ही हो गई थी। वो दोनों अभी नींद में थे। जगमोहन ने उन्हें उठाने की चेष्टा भी नहीं की थी।

किचन में काम में व्यस्त जगमोहन, अपनी ही सोचों में उलझा हुआ था, देवराज चौहान ठीक कह रहा था कि उनके पास करने को कुछ नहीं है। उनके सामने ऐसा कोई दुश्मन नहीं है कि जिसका वे मुकाबला कर सके। पूर्वजन्म की शक्तियों का मामला था। जथूरा का मामला था जो कि अपनी विद्या में ताकत रखता था और भरसक इस प्रयत्न में था कि वे लोग पूर्वजन्म की यात्रा न कर सकें। मोना चौधरी और देवराज चौहान के ग्रहों के अनुसार, अगर वो पूर्वजन्म की यात्रा करते हैं तो वो जथूरा के लिए नुकसानदेह हो सकती है।

परंतु जथूरा की कोई दुश्मन शक्ति उसे जथूरा की हरकतों का पूर्वाभास करा रही थी कि वो पूर्वजन्म की यात्रा करें। वे सब इन्हीं बातों में बुरी तरह उलझ चुके थे।

जथूरा ने कालचक्र उन पर छोड़ दिया था।

और कालचक्र उनके ही रूप ओढ़कर, कुछ इस तरह काम कर रहा था कि उनकी समझ ने ठीक से काम करना बंद कर दिया था। अब इस बात की उलझन होने लगी थी कि कौन बहरूप है, कौन असली है। ये हालात खतरनाक थे। कभी भी, किसी के भीतर का गुस्सा फूट सकता था और वो दूसरे पर जानलेवा वार कर सकता था। जथूरा उनमें और मोना चौधरी में झगड़ा करवा देना चाहता था। परंतु वे सतर्क थे कि झगड़ा न हो। जथूरा की चालों को समझ चुके थे।

लेकिन किसी के भी सब्र का बांध, कभी भी टूट सकता था।

'साला जथूरा।' जगमोहन बड़बड़ाया—'नजर भी तो नहीं आता।'

"तूने मुझसे कुछ कहा जग्गू?" पोतेबाबा की आवाज जगमोहन ने सुनी।

जगमोहन चौंककर पलटा। नजरें घुमाईं।

किचन खाली था।

"तो तू आ गया पोतेबाबा।" जगमोहन ने कहा और अपने काम में व्यस्त हो गया। उसके होंठ भिंच गए थे।

"मुझे तो तेरे भले के लिए बार-बार तेरे पास आना पड़ता है।"

"जथूरा से मिलवा दो एक बार।"

"वो पूर्वजन्म में है। अभी बाहर नहीं आ सकता।" पोतेबाबा की आवाज आई।

"हमसे डरकर वो सामने नहीं आ रहा।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा।

"ये सोचकर तू खुश होता है तो मैं तेरी खुशी में बाधा नहीं डालूंगा।" पोतेबाबा कहने के साथ हंसा।

"तू कमीना है।"

"तू मुझे कुछ भी कह, बुरा नहीं मानूंगा।"

"जथूरा का कालचक्र क्या कर रहा है, हम सब समझ चुके हैं। हम आपस में झगड़ेंगे नहीं।"

"ये तो अच्छी बात है। दुश्मन एक हो तो सबको एक हो जाना चाहिए। लेकिन कालचक्र को कोई भी नहीं समझ सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि कालचक्र का रुख कभी भी मोड़ा नहीं जा सकता है। जथूरा स्वयं कालचक्र को संभाल रहा है। कालचक्र से जरूरत पड़ने पर एक नहीं ढेरों काम लिए जा सकते हैं। कालचक्र को कोई भी ठीक से नहीं समझ सकता।"

"तुम समझ सकते हो?"

"नहीं, कालचक्र कब क्या करेगा, ये बात वो ही जान सकता है, जो कालचक्र को संभाल रहा हो। जथूरा कालचक्र को संभाल रहा है। वो ही कालचक्र को आदेश दे रहा है कि अब उसे क्या करना है।" पोतेबाबा का सुनाई देने वाला स्वर शांत था—"वैसे अब जथूरा को खास चिंता नहीं रही इस बात की कि तुम लोग पूर्वजन्म में प्रवेश कर पाते हो या नहीं।"

"क्यों—अब क्या हो गया?"

"जथूरा ने देवा और मिन्नो के ग्रहों से बचने का रास्ता निकाल लिया है।"

"फिर तो जथूरा को चाहिए कि कालचक्र का काम बंद कर दे।"

"जथूरा इतना भी निश्चिंत नहीं हुआ कि ऐसा कर दे।"

"उस शक्ति का पता लगा, जो मुझे पूर्वाभास करा रही है।"

"नहीं। वो चालाक शक्ति है। अपना एहसास नहीं होने दे रही। पकड़ में आने से पहले ही बच निकलती है।"

"मेरे पास क्यों आया?"

"यूं ही, बातें करने, सोचा तेरे से बात करके, मन को कुछ बहला लेता हूं।"

"तू कमीना है।"

पोतेबाबा के हंसने की आवाज गूंजी।

"अपनी तारीफ सुनकर हंसता है।"

"मुझे तेरी बातों पे गुस्सा नहीं आएगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं तेरा दुश्मन नहीं हूं। तेरा अपना हूं।"

"तू क्या है, मैं जानता हूं।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा—"हम क्या करते हैं, जथूरा को खबर रहती है?"

"पूरी तरह।"

"कैसे?"

"कालचक्र ने अपनी छाया तुम पर छोड़ रखी है। पल-पल की खबर कालचक्र में तुम्हारी हरकतें रिकॉर्ड होकर जथूरा तक...।"

"क्या होकर?"

"रिकॉर्ड होकर। पूर्वजन्म के कुछ हिस्से ने बहुत तरक्की कर ली है। ये अब पहले वाली दुनिया नहीं रही। जथूरा के हिस्से वाली जगह पर, मशीनों से काम होता है। सच में जथूरा महान है।"

"मशीनों से काम होता है और साथ में कालचक्र जैसी शक्तियां भी काम करती हैं?" जगमोहन ठिठक गया।

"हां। ये सब जथूरा की देन है। उसी ने ही मेहनत करके, अपने लोगों को यहां तक पहुंचाया। वो बहुत प्यारा इंसान है। अपने लोगों की बहुत देखभाल करता है। तभी तो उसके लिए हर कोई जान देने को तैयार रहता है।"

"मेरे सामने जथूरा की तारीफ मत कर।" जगमोहन का स्वर सख्त हो गया।

"मैंने कुछ गलत नहीं कहा।"

"उसके बारे में सही बातें भी मत कर।"

"तेरे को नहीं अच्छा लगता तो नहीं करता। लेकिन ये जरूर कहूंगा कि तुम लोगों ने पूर्वजन्म में प्रवेश किया तो मारे जाओगे।"

"अब उस तरह की बातें न करके, इस तरह की बातें करके मुझे रोकना चाहते हो?" जगमोहन ने व्यंग से कहा।

"तेरा दिमाग उलटा है। सीधी बात को भी गलत तरीके से लेगा।" पोतेबाबा की आवाज कानों में पड़ी—"मैंने सच कहा है। पूर्वजन्म में प्रवेश किया तो इस बात का एहसास हो जाएगा।" पोतेबाबा का स्वर गम्भीर था।

"मैं तेरी बेकार की बातों का भरोसा नहीं करता। एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता हूं।"

तभी देवराज चौहान ने वहां प्रवेश किया। उसने सिगरेट सुलगा रखी थी। सिगरेट के धुएं में पोते बाबा का दाढ़ी वाला चेहरा चमक उठा। देवराज चौहान की तीखी निगाह पोतेबाबा के चेहरे की धुएं से भरी आकृति पर जा टिकी।

"अब क्या कह रहा है ये?" देवराज चौहान ने जगमोहन से पूछा।

"ये इस बात की कोशिश में है कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश न करें।" जगमोहन बोला।

"इस वक्त मैं जथूरा के हक में ये बात नहीं कर रहा। तुम लोगों के भले के लिए कह रहा हूं।" पोतेबाबा के चेहरे के होंठ हिले।

"तुमने हमारा भला कब से सोचना शुरू कर दिया?" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।

"नादान हो, नहीं समझोगे।" इसके साथ ही पोतेबाबा का चेहरा दरवाजे की तरफ जाते दिखा।

देवराज चौहान उसे देखता रहा।

वो बाहर निकल गया।

"हम घिरे पड़े हैं जथूरा की चालों से।" देवराज चौहान कह उठा।

□ □

बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव अभी तक नींद में थे।

देवराज चौहान और जगमोहन ने नाश्ता समाप्त किया और कॉफी के प्याले अपनी तरफ सरका लिए।

"हमें सोहनलाल को सम्पर्क में रखना चाहिए। पूर्वजन्म का होने के नाते, वो भी हर मामले से जुड़ा है।"

"फोन कर लो उसे।"

"उसे ये भी बताना होगा कि रात मोना चौधरी यहां आई थी और दूसरी दिल्ली में थी। और महाजन को भी बेहोश करके नगीना भाभी के पास पहुंचा दिया गया।" उठते हुए जगमोहन कह उठा—"पारसनाथ की तो बुरी हालत होगी। वो समझ नहीं पा रहा होगा कि किसे असली समझे और किसे नकली। पहले पारसनाथ को फोन करता हूं, शायद कोई नई बात पता चले।"

जगमोहन फोन के पास पहुंचा और रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाने लगा।

दो-तीन बार नम्बर मिलाने पर पारसनाथ से बात हो सकी।

"हैलो।" उसका स्वर नींद से भरा था।

"नींद में हो।" जगमोहन बोला।

"ओह, तुम।" पारसनाथ का संभला स्वर कानों में पड़ा—"कोई नई बात?"

"नहीं। यही पूछने के लिए तुम्हें फोन किया।"

"मैं परेशान हो चुका हूं इस बात से कि असली मोना चौधरी कौन-सी है।"

"पूरी बात बताओ।"

पारसनाथ ने मोना चौधरी से वास्ता रखते, अपने सारे हालात बता दिए।

"तुम तो सच में मुश्किल में हो। इसमें मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता।"

"कोई भी कुछ नहीं कर सकता।" पारसनाथ के गहरी सांस लेने का स्वर कानों में पड़ा।

"महाजन की कोई खबर?"

"जरा भी नहीं।"

"मेरा पूर्वाभास मुझे इस बात का एहसास करा चुका है कि महाजन नगीना भाभी के पास ही बेहोश पड़ा है।"

"वो जगह कौन-सी है?"

"नहीं जानता। बंद करता हूं, फिर बात करूंगा।" जगमोहन ने फोन बंद करके, सोहनलाल का नम्बर मिलाया।

कई बार बेल होने पर भी सोहनलाल ने उधर से बात नहीं की।

"सोहनलाल से बात नहीं हो पा रही। वो कॉल रिसीव नहीं कर रहा...।"

"पारसनाथ ने क्या कहा?" देवराज चौहान ने पूछा।

जगमोहन ने बताकर कहा।

"मैं सोहनलाल के पास जा रहा हूं। पता नहीं वो अपने घर पर है भी या नहीं।"

देवराज चौहान कुछ कहने लगा कि जगमोहन के चेहरे के बदलते भाव देखकर ठिठक गया।

जगमोहन के मस्तिष्क में बिजलियां सी कौंधीं। दोनों हाथों से उसने सिर को थाम लिया। आंखें बंद होती चली गईं। मस्तिष्क में जैसे धमाके फूट रहे थे। फिर उसके मस्तिष्क ने वो ही समुद्र के किनारे वाली जगह देखी। लहरों के चट्टानों से टकराने की आवाजें उसे स्पष्ट सुनाई दे रही थीं। हवा से पेड़ों के पत्ते और टहनियां हिल रही थीं। वो ही चट्टानें और हरी घास से भरी जगह। नगीना

और महाजन उसी जगह बेहोश पड़े थे, जहां उन्हें वो पहले भी देख चुका था। परंतु अब वहां कोई तीसरा भी बेहोश पड़ा था। वो कुछ हट के था। जगमोहन का मस्तिष्क उसे स्पष्ट देख पा रहा था। वो कोई युवती थी। उलझन में घिरा वो आगे बढ़ा और पास जा पहुंचा। वो मोना चौधरी थी। उसने पहचान लिया—वो...।

तभी उसके मस्तिष्क में उठी बिजलियां थमती चली गईं।

सब कुछ शांत हो गया।

जगमोहन ने लम्बी-गहरी सांस ली और सिर से हाथ हटाकर आंखें खोलीं।

देवराज चौहान की एकटक निगाह उस पर ही थी।

"क्या हुआ अब?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मैंने मोना चौधरी को वहां बेहोश देखा। नगीना भाभी और महाजन के पास।" जगमोहन कह उठा।

"ओह, तो मोना चौधरी भी कालचक्र के फंदे में जा फंसी।"

"हां।"

"लेकिन तुम्हें इस बात का पूर्वाभास क्यों कराया जा रहा है कि कौन-कौन कालचक्र में फंस चुका है।" देवराज चौहान ने कहा।

"इसलिए कि इनमें से कोई हमारे सामने आए तो हम समझ जाए कि वो कोई बहरुपिया है।"

"शायद यही बात होगी। तुम्हें ये बात पारसनाथ को बता देनी चाहिए।"

"जरूर।"

जगमोहन ने पारसनाथ को पुनः फोन किया। बात हो गई।

"बुरी खबर है तुम्हारे लिए।" जगमोहन बोला—"मोना चौधरी भी कालचक्र में जा फंसी है।"

"तुम्हें कैसे...।"

"मुझे अभी-अभी पूर्वाभास हुआ है। मैंने मोना चौधरी को नगीना भाभी और महाजन के पास बेहोश देखा।"

"ओह।"

"अब तुम्हें कोई मोना चौधरी दिखे तो उसे बहरूप समझना उसका।"

"मै समझ गया।" पारसनाथ की आवाज कानों में पड़ी।

जगमोहन रिसीवर रखकर, देवराज चौहान से बोला।

"मैं सोहनलाल के पास जा रहा हूं।"

"उसे यहीं ले आना।" देवराज चौहान ने कहा।

जगमोहन ने सिर हिलाया और बाहर की तरफ बढ़ता चला गया।

देवराज चौहान के बंगले के बाहर, एक कार में मखानी और कमला रानी बैठे थे। उनकी नजरें बंगले के गेट की तरफ थीं। कमला रानी कह उठी।

"जगमोहन कभी भी बाहर आ सकता है।"

"तुझे कैसे पता?"

"भौरी ने बताया।"

"उसे कैसे पता चला कि जगमोहन...।"

"भौरी कह रही थी कि कुछ देर पहले जगमोहन ने सोहनलाल को फोन किया। परंतु सोहनलाल से बात नहीं हो सकी। जानता है मखानी क्यों?" कमला रानी मुस्करा पड़ी।

"क्यों?"

"भौरी ने कालचक्र का पिचाश, पहले ही सोहनलाल के पास भेज दिया था। जब जगमोहन ने फोन किया तो पिशाच ने अपनी ताकतों के दम पर सोहनलाल के फोन की आवाज बंद कर दी। सोहनलाल को फोन आने का पता ही नहीं लगा।"

"तो भौरी इस तरह जगमोहन को बाहर निकालना चाहती है कि वो सोहनलाल के पास जाए।"

"हां। भौरी कहती है कि जगमोहन सोहनलाल के पास जाने के लिए, बाहर आने ही वाला है।"

"कमला रानी।" मखानी ने प्यार से कहा।

"हां।"

"हम कितनी बढ़िया जिंदगी जी रहे हैं। हम इन इंसानों से बढ़कर हो गए हैं। हमारे साथ जथूरा की ताकतें हैं।"

"ठीक कहा तुमने।" कमला रानी हंसी—"मैं तो लाठी लेकर चला करती थी और सोचती थी कि जल्दी ही मर जाऊंगी।"

"लेकिन हम फिर जवान हो गए। अब दोबारा जिंदगी के मजे ले रहे हैं।" मखानी ने उसका हाथ थाम लिया।

"हाथ छोड़।"

"क्यों—मैं तो...।"

"तू जल्दी गर्म हो जाता है। इस वक्त इस काम पर...वो देख—बंगले से एक कार...।"

"उसे जगमोहन ही चला रहा है।" मखानी कार स्टार्ट करता कह उठा।

"पहचान लिया, तेरी नजरें बहुत तेज हैं।" कमला रानी बोली।

"लेकिन किसी के कपड़ों के भीतर नहीं देख सकतीं।" मखानी ने कार आगे बढ़ाई और वे जगमोहन के पीछे चल दिए।

"जथूरा की मेहरबानी रही तो ये भी हो जाएगा।" कमला रानी ने शरारती स्वर में कहा।

"तू बड़ी हरामी है, सच में।"

□ □

जगमोहन ने दो-तीन बार कॉलबेल बजाई तो सोहनलाल ने दरवाजा खोला।

"अभी तक सो रहा है।" जगमोहन कह उठा।

"सब ठीक है?" सोहनलाल शंका-भरे स्वर में कह उठा।

"ठीक ही है।" जगमोहन भीतर प्रवेश करता कह उठा—"मोना चौधरी भी कालचक्र की कैद में पहुंच गई है। रात महाजन भी...।"

"ओह, ये तो बुरी खबर है।" सोहनलाल ने दरवाजा बंद करते हुए कहा।

"हम कुछ नहीं कर सकते। रात मोना चौधरी लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के साथ हमारे पास बंगले पर आई। परंतु एक मोना चौधरी और मैं दिल्ली में थे।"

"क्या?"

"मेरे बहरूप वाले व्यक्ति ने ही महाजन को उठाया...।"

"ये सब बातें हमें पागल कर देंगी।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा और बैठ गया।

"मैंने तेरे को फोन किया, परंतु तूने...।"

"मेरा फोन नहीं बजा। बजा होता तो मेरी आंख खुल जाती।" कहकर सोहनलाल ने अपना फोन उठाया।

स्क्रीन पर मिस्ड कॉल आया देखा।

"बजा होगा। परंतु मैंने नहीं सुना शायद।" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"चल मेरे साथ। हालात ऐसे हैं कि हमें एक साथ रहना चाहिए।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"बांके और रुस्तम भी वहीं हैं?"

"हां।"

"इन सब बातों से हमें कैसे छुटकारा मिलेगा?"

"मैं नहीं जानता कि इन सब बातों का अंत कहां और कब होगा।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"पूर्वजन्म की यात्रा तो नहीं करनी...।"

"जथूरा हमें रोक रहा है कि हम पूर्वजन्म की यात्रा न करें।"

जगमोहन ने कठोर स्वर में कहा—“हमारे पूर्वजन्म में जाने में जथूरा को भारी नुकसान है, तभी तो वो ऐसी कोशिश कर रहा है। इसलिए हमें पूर्वजन्म में जाने पर एतराज नहीं होना चाहिए।”

“वहां खतरे हैं।”

“अवश्य, वो तो हर बार होते हैं।”

“लेकिन तुम्हारा पूर्वाभास, तुम्हें इस बात का एहसास दिला रहा है कि कालचक्र सबको एक ही जगह पर इकट्ठे कर रहा है। वो ऐसा क्यों कर रहा है, उसकी मंशा क्या है?”

“हममें झगड़ा करवाने की। ताकि जब वहां सब होश में आए तो एक-दूसरे पर टूट पड़ें। लेकिन ऐसा नहीं होगा। हम सब हालातों से वाकिफ हो चुके हैं। हम झगड़ेंगे नहीं। तुम तैयार हो जाओ, बंगले पर चलने को।”

“आधे घंटे में चलते हैं।” कहने के साथ ही सोहनलाल उठ खड़ा हुआ।

□ □

एक घंटे बाद जगमोहन और सोहनलाल बाहर निकले।

सोहनलाल ने फ्लैट का दरवाजा लॉक किया। दोनों सामने खड़ी कार की तरफ बढ़ गए।

वे कार में बैठे कि जगमोहन का फोन बजा। बात हुई।

“हैलो।” देवराज चौहान था दूसरी तरफ—“सोहनलाल मिला?”

“हां, हम आ रहे हैं।”

“ठीक है।” उधर से देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया।

जगमोहन ने फोन रखा और कार स्टार्ट की। तभी वो बुरी तरह चौंका।

सामने से मोना चौधरी जा रही थी।

जगमोहन हैरानी से उसे देखने लगा।

“जगमोहन। मोना चौधरी...।” सोहनलाल के होंठों से निकला।

“ये मोना चौधरी नहीं है।” जगमोहन ने भिंचे स्वर में कहा।

“क्या कह रहा है।”

“ये उसकी बहरूप है। असली मोना चौधरी को कालचक्र ने कहीं पर बेहोश कर रखा है।”

“ओह।”

तभी दोनों ने मोना चौधरी को एक कार में बैठते देखा।

“ये यहां क्या कर रही है?” सोहनलाल बोला।

“इसने हमें नहीं देखा।”

"नहीं देखा। मैं इस बात को नोट कर रहा था।"

"हम इसके पीछे चलेंगे, देखते हैं कि ये क्या करती है।" जगमोहन ने दृढ़ स्वर में कहा।

मोना चौधरी की कार आगे बढ़ती देखी तो जगमोहन ने अपनी कार पीछे लगा दी।

वो मोना चौधरी नहीं, कमला रानी थी।

कालचक्र अपना खेल खेल रहा था।

जगमोहन और सोहनलाल नहीं जान सके कि कालचक्र का जाल उन पर पड़ चुका है।

"कमला रानी।" भौरी का स्वर उसके कानों में पड़ा—"जग्गू और गुलचंद तेरे पीछे आ रहे हैं।"

"ये ही तो हम चाहते थे।" मोना चौधरी के बहरूप में कमला रानी मुस्करा पड़ी।

"आगे तेरे को क्या करना है, तुझे सब याद है?"

"हां, मैं भूलती नहीं।"

"जहां जरूरत पड़े, मेरे से बात कर लेना, मैं तेरे पास ही हूं।" भौरी की आवाज उसे सुनाई दी।

"ठीक है भौरी, लेकिन मखानी कहां है?"

"वो अपना काम करेगा।"

"मेरे को मखानी पसंद आया। उसे, मुझे दे दे भौरी।"

"ठीक है तू ले लेना। शौहरी से बात करूंगी। लेकिन जब तक काम पड़े हैं, तब तक मखानी को सोच भी नहीं।"

"काम के बाद।"

"शौहरी से बात करके बताऊंगी।"

कमला रानी ने बैक मिरर में पीछे आती कार को देखा फिर बोली।

"मैंने अपनी जिंदगी में कभी कार नहीं चलाई थी।" कमला रानी बोली।

"हमने तेरे में ताकतें डाली हैं। जरूरत के हिसाब से ही हम सामने वाले में ताकतें डालते हैं। जब तक तू हमारे साथ है, तू खुश रहेगी।"

"तू बहुत अच्छी है भौरी।"

"तू चाहे तो तेरे को पूर्वजन्म की उस दुनिया में ले जाऊंगी।"

"मखानी मेरे साथ हो तो मैं कहीं भी चलने को तैयार हूं।"

"तो बात कर लेना मखानी से।"

"वो मेरी बात जरूर मान जाएगा। पूर्वजन्म की दुनिया में क्या होता है?"

"वो अपने तरह की दुनिया है, ये अपनी तरह की। वहां तेरे को मेरी सेविका बनकर रहना होगा।"

"और मखानी?"

"वो शौहरी के काम करेगा।"

"फिर मैं और मखानी मिलेंगे कब?"

"मिलते रहोगे। सप्ताह में एक बार तो मिल ही लिया करोगे।"

"ओह भौरी। तू सच में अच्छी है। मैं तेरे को देखना चाहती हूं।" कमला रानी ने कहा।

"अभी तो मैं कालचक्र के काम कर रही हूं। मेरा शरीर उस दुनिया में पड़ा है। जब तू मेरे साथ वहां चलेगी, तभी देख पाएगी मुझे। अब बातें न बना, काम की तरफ ध्यान दे। जग्गू और गुलचंद तेरे पीछे हैं।"

मखानी जगमोहन के बहरूप में दूर खड़ा था, जब उसने कमला रानी को कार पर जाते देखा तो उदास हो गया।

"तेरा चेहरा क्यों लटक गया?" कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"कमला रानी चली गई!" मखानी ने बिगड़कर कहा।

"हमेशा के लिए थोड़े ना गई है। आ जाएगी।"

"कब?"

"जग्गू और गुलचंद को भटकाकर। तब तक तू भी अपने काम पूरे कर।"

मखानी का चेहरा लटका ही रहा।

"नखरे मत दिखा, काम कर। नहीं तो मैं तेरे को छोड़कर चला जाऊंगा।"

"नहीं, मत जाना। नहीं तो मैं मर जाऊंगा।" मखानी जल्दी-से बोला।

"तो काम के लिए तैयार हो न?"

"मैंने कब मना किया है। अब मैं जगमोहन बनकर देवा के पास जाऊं?"

"हां। सब बताया है तेरे को। अब तेरे लिए वो देवा नहीं देवराज चौहान होगा। पूर्वजन्म का कोई नाम उसके सामने मत लेना।"

"समझ गया।"

"अब उधर जा, दीवार की ओट में।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी।

"वहां क्या करूंगा?"

"तेरे को दूसरे कपड़े पहनाने हैं, जो जग्गू ने पहने थे।"

मखानी सिर हिलाता, दीवार की तरफ बढ़ गया।

दो मिनट में ही वापस आ गया। अब उसके शरीर पर वैसे ही कपड़े थे, जैसे जगमोहन पहनकर बंगले से आया था।

"जगमोहन के पास मोबाइल भी होगा।"

"तेरे पास भी है। जेब देख। वो ही फोन और वो ही नम्बर। जग्गू का फोन हमने खराब कर दिया है। देवा तुझे फोन करेगा या कोई भी करेगा तो तेरा ही फोन बजेगा। तब तूने जगमोहन बनकर बात करनी है।"

"समझ गया।"

"जग्गू के सारे हालात मैंने तेरे दिमाग में डाल दिए हैं। तेरे को कोई परेशानी नहीं आएगी।"

"जगमोहन कार पर बंगले से बाहर निकला था।" मखानी बोला।

"देवा जानता है कि जग्गू-गुलचंद के साथ, बंगले पर आ रहा है, तू वहां जाकर देवा से कहना कि गुलचंद कार ले गया है, कुछ देर में आ जाएगा। ये सुनकर देवराज चौहान फिर कुछ नहीं पूछेगा।"

"लेकिन सोहनलाल तो आएगा नहीं, वो...।"

"न आए। तू क्यों चिंता करता है। देवराज चौहान पूछे ये बात तो तू भी उसे थोड़ा परेशान होकर दिखा देना।"

"समझ गया।"

"तू बहुत समझदार है। सब काम तू बढ़िया ढंग से करेगा।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी—"भंवर सिंह और त्रिवेणी देवा के पास ही हैं, तूने बढ़िया मौका देखकर उन्हें बेहोश करना है कि पिशाच उन्हें ले जा सके।"

"वो मैं कर दूंगा।" मखानी ने सिर हिलाया—"परंतु देवराज चौहान भी तो है वहां।"

"उसको बाद में देखेंगे। पहले वो ही काम कर, जो तेरे को कहा है। चल टैक्सी पकड़।"

"कमला रानी...।"

"चुप।" शौहरी गुस्से से बोला—"तू बार-बार मुझसे कमला रानी की बात क्यों करता है?"

"तू नाराज क्यों होता है शौहरी। बात ही तो कर रहा हूं। इससे मेरा दिल बहल जाता है।"

"इस वक्त सिर्फ काम की तरफ ध्यान दे। ये जथूरा का फेंका

कालचक्र है। मौत का खेल है ये। होशियार रह हर वक्त। तेरी एक भूल तेरे साथ-साथ मुझे भी हमेशा-हमेशा के लिए नर्क में धकेल देगी। तूने नर्क देखा है?"

"न...न...हीं।"

"बहुत तड़पन होती है वहां। घोर यातना मिलती है। हर तरफ गहरा होता है। कोई बात नहीं करता। हर वक्त वो भयानक पिशाच गला घोंटते रहते हैं। वहां सब कुछ बहुत भयानक है। तू अनजाने में जथूरा के कालचक्र का हिस्सा बन चुका है। अगर तूने कोई गलती की तो तेरे को वो ही नर्क मिलेगा, जो हमें मिलता है। हम दोनों का भाग्य जुड़ चुका है।

☐ ☐

जगमोहन यानी कि मखानी बंगले पर पहुंचा।

वे सोच भी नहीं सकते थे कि कालचक्र की छाया उनके बंगले में प्रवेश कर आई है।

देवराज चौहान ड्राइंग रूम में बैठा मिला। बांकेलाल राठौर नहाया-धोया वहीं था। रुस्तम राव नहाने गया था।

"जगमोनो।" बांकेलाल राठौर उसे देखते ही मूंछों पर उंगली फेरता कह उठा—"तंम म्हारे साथो सौतेलो व्यवहार करो हो।"

"क्यों?" जगमोहन मुस्कराकर पास ही आ बैठा।

"तंम देवराज चौहानो वास्ते नाश्ता बनायो। अपने वास्ते बनायो। पर म्हारे वास्ते न बनायो।"

"तुम और रुस्तम नींद में थे।"

"तो का हो गयो, उठनो तो था।"

"अब बना दूं?"

"ईब का बनायो। अंम खुद ही नाश्तो बना लायो। खा-पी के हजम भी कर लयो ईब तको।" बांकेलाल राठौर बोला—"छोरो तो नाश्तो के बादो ही नहानो गयो हो।"

"सोहनलाल कहां है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कह रहा था कोई काम है। मेरे को बाहर उतारकर कार ले गया। कुछ देर में आ जाएगा।" जगमोहन ने कहा।

"उसने फोन पर क्यों नहीं बात की, जब तुमने फोन किया था?" देवराज चौहान कह उठा।

"उसे फोन बजना सुनाई नहीं दिया।"

"म्हारे को यो न समझ आयो कि अंम सबों यां पे बैठे का करत हो?"

"हमारे पास करने को कुछ भी नहीं है बांके।"

"कूं?"

"क्या करें, तुम ही कहो।

"जथूरो को 'वड' देतो है।" बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर पहुंच गया।

"ठीक है, चलो।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"किधरो?"

"जथूरा के पास।"

"वो किधर होवे?"

"यही तो समस्या है कि हम नहीं जानते वो कहां है। वो पूर्वजन्म की दुनिया में बैठा, यहां पर अपनी शक्तियों के सहारे हमारे साथ खेल खेल रहा है और हम कुछ भी कर सकने की स्थिति में नहीं हैं। उसकी ताकतें हमें नजर नहीं आतीं। वो जो कर रहा है, उसका मतलब हमारी समझ में नहीं आ रहा।" देवराज चौहान गम्भीर हो उठा।

"उसो को कोई ठिकाणो भी न होवे।"

"एक तरह से हम हवा में सिर मार रहे हैं।" जगमोहन कह उठा।

"हां।" देवराज चौहान ने गर्दन हिलाई—"जथूरा हम सब लोगों के बहरूप से, हमें गुस्सा दिलाने की चेष्टा कर रहा है। परंतु हम उसका खेल समझ चुके हैं, इसलिए वो अपनी कोशिशों में सफल नहीं हो सकता।"

"क्या पता उसका असली मकसद क्या है।" जगमोहन बोला—"हो सकता है, हम उसकी चालों को अभी तक समझे ही न हों।"

देवराज चौहान गम्भीर निगाहों से जगमोहन को देखने लगा।

"हम जो भी जानते हैं, वो सब कुछ पोतेबाबा की कही उन बातों के आधार पर है, जो उसने मुझसे कही। परंतु ये कौन जानता है कि पोतेबाबा ने मुझे सच कहा। वो जथूरा का सेवक है। जो कहेगा, जो करेगा, जथूरा के भले के लिए ही होगा।"

"मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं।"

"जगमोनो। ईबी तको कौणो-कौणो बेहोश पड़ो हो?"

"नगीना भाभी, मोना चौधरी और महाजन।"

"वो कालचक्रो म्हारे को भी वहां ले जाने की ट्राई करो हो।"

"पक्का।" देवराज चौहान ने कहा—"तभी तो हम एक साथ मौजूद हैं कि जथूरा ऐसी किसी कोशिश में सफल न हो सके।"

"बाप।" रुस्तम राव पास आता कह उठा—"कालचक्र बोत फंदेबाज है, चांस नेई उससे बचने का।"

"छोरे, अंम कालचक्र को 'वड' दयो।"

"नेई बाप। फालतू बात नेई बोलने का। हम लोग उसका मुकाबला नेई कर सकेला।"

बांकेलाल राठौर ने पहलू बदला।

"गलत बोला बाप।"

"तू ठीको कहो हो।" जथूरो के पासों शक्तियों हौवो हो।"

"वो आपुन लोगों के साथ कोई चाल खेएला। बोत खतरनाक होएला वो।"

"हमें हर वक्त सतर्क रहना होगा।" देवराज चौहान ने कहा—"इसके अलावा हम कुछ नहीं कर सकते।"

जगमोहन ने आंखें बंद कर रखी थीं। बांके उससे कह उठा।

"जगमोनो। तंम पारसनाथो को फोनो करो। पूछो, कोई नेई बात हौवो का?"

जगमोहन ने आंखें खोलकर उसे देखा।

"क्या फायदा फोन करने का?"

"वो भी खतरे में है।" देवराज चौहान बोला—"मोना चौधरी और महाजन के बाद वो भी गायब हो सकता है।"

"बात करता हूं उससे।" जगमोहन ने फोन निकाला और पारसनाथ का नम्बर मिलाने लगा।

"उसे कहना कि अकेले रहना ठीक नहीं। बेहतर होगा कि इन हालातों में वो हमारे पास आ जाए।"

नम्बर लग गया। बात भी हो गई।

"कुछ नया हुआ पारसनाथ?" पूछा जगमोहन ने।

"मैं मोना चौधरी के फ्लैट पर गया था। फ्लैट खुला पड़ा था। वो वहां नहीं थी।" पारसनाथ की आवाज आई।

"मैंने तुमसे कहा तो था कि मुझे पूर्वाभास हुआ है कि मोना चौधरी, महाजन भी नगीना भाभी के पास ही बेहोश पड़े हैं।"

"मुझे उन दोनों की चिंता हो रही है।"

"मैं नहीं जानता कि वो कहां पर हैं, पता होता तो कब का उन्हें ले आते।"

"ये सब कुछ कहां पहुंचकर रुकेगा?"

"कुछ पता नहीं, लेकिन तुम्हें ज्यादा खतरा है। क्योंकि तुम अकेले रह गए हो।"

"जानता हूं।"

"तुम हमारे पास आ जाओ। इधर हम सब एक साथ हैं।"

"इधर सितारा और राधा हैं, उन्हें अकेला छोड़ना ठीक नहीं। मैं दिल्ली में ही रहूंगा।"

"ठीक है। इतना याद रखना कि हमें आपस में झगड़ना नहीं है। जथूरा यही तो चाहता है कि हम झगड़ें और...।"

"समझता हूं सब।"

जगमोहन ने फोन बंद करके, देवराज चौहान से कहा।

"पारसनाथ, वहीं रहना चाहता है।"

देवराज चौहान ने सिगरेट सुलगा ली।

"इन हालातों ने हमें कितना बेबस कर दिया है।" जगमोहन कह उठा।

"म्हारा तो खूनो खौलो हो।"

जगमोहन उठता हुआ बोला।

"मैं भीतर कमरे में जा रहा हूं। सोहनलाल आए तो बता देना।" कहकर वो भीतर की तरफ बढ़ गया।

कमरे में पहुंचकर बेड पर जा लेटा।

"मखानी।" कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"हां।"

"मौका देख और त्रिवेणी, भंवर सिंह को बेहोश कर।"

"मौका तो मिलने दे।"

"मौका तुमने तलाशना है, इन लोगों के साथ बैठने में तेरे को कोई परेशानी तो नहीं हुई न?"

"नहीं।"

"मैंने नहीं होने दी। जगमोहन के दिमाग के सारे हालात, तेरे भीतर मैंने पहले ही डाल दिए थे।"

मखानी ने कुछ नहीं कहा।

"एक बात ओर, तेरे को पूर्वाभास का दिखावा करना है।"

"वो क्यों?"

"कमला रानी तेरे पास आएगी अपना काम निबटाकर, वो देवराज चौहान की पत्नी नगीना के रूप में होगी।"

"ओह।" मखानी खुश हो उठा—"कमला रानी यहां आ रही है?"

"अभी नहीं। वो उधर का अपना काम निबटाने के बाद आएगी, जब तू त्रिवेणी-भंवरसिंह को बेहोश करके पिशाचों के हवाले कर देगा। तूने पूर्वाभास का ये दिखावा करना है कि तूने नगीना को इस बंगले में देखा है।"

"समझ गया। ताकि नगीना के आने पर देवराज चौहान शक न करे कि वो बहरूप हो सकती है।" मखानी बोला।

"अब तू बहुत समझदार हो गया है मखानी।"

"मैं अभी करता हूं ये दिखावा।"

"जल्दी-जल्दी काम पूरे कर। कमला रानी भी तो तेरे से मिलने को बहुत बेचैन है।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"सच में?"

"हां, भौरी ने मुझे बताया कि कमला रानी तेरे को पसंद करने लगी है।"

"तू भौरी से कब मिला?"

"मेरी और भौरी की तारें मिली हुई हैं। हममें सीधी बात हो जाती है।"

"एक बात तो बता।"

"पूछ।"

"क्या मेरी किस्मत में कमला रानी ही है। स्वाद बदलने के लिए कभी-कभी दूसरी नहीं मिल सकती?"

"क्यों नहीं मिल सकती। तू किसी को भी प्यार कर सकता है।"

"ये बात कमला रानी को मत बताना।"

"तू बहुत चालाक है मखानी।" कानों में शौहरी की हंसी पड़ी—"आखिर है तो मर्द ही।"

"मैंने तो यूं ही पूछा था कि कहीं मैं कमला रानी के साथ बंध तो नहीं गया।"

"प्यार करने के मामले में तू आजाद है, कमला रानी भी आजाद है। जहां चाहो वहीं दिल लगाओ।"

"कमला रानी भी आजाद है।" मखानी ने मुंह बनाया।

"हां, हमारी दुनिया में औरत और मर्द को बराबरी का दर्जा हासिल है। तुम्हारी दुनिया की तरह नहीं कि औरत को दो कदम नीचे दबा के रखो। हमारी दुनिया में जो हक मर्दों को है, वो ही औरतें को। अब तू वो काम कर, जो कहा है।"

जगमोहन ने तेजी से ड्राइंग रूम में प्रवेश किया।

देवराज चौहान, बांके और रुस्तम राव ने उसे देखा।

"मुझे अभी-अभी पूर्वाभास हुआ है।" जगमोहन तेज स्वर में बोला—"मैंने नगीना भाभी को इस बंगले में आते देखा।"

"क्या?" एकाएक देवराज चौहान ने चौंककर जगमोहन की तरफ देखा।

"शायद भाभी को होश आ गया होगा, वो वहां से कैद से निकल आई होगी।"

"फिर तो बाप, मोना चौधरी और महाजन का पता चलेगा।"

"कब आएगी नगीना यहां?"

"ये तो पता नहीं, परंतु पूर्वाभास में मैंने नगीना भाभी को उस दरवाजे से भीतर प्रवेश करते देखा।"

"देवराज चौहान, थारी तो लाटरो लगो हो। भाभी जल्दी ही वापस आयो हो।"

"ये अच्छा संकेत मिला है हमें।" जगमोहन ने कहा।

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव थे।

"इस तरह नगीना का वापस आना, हैरान करने वाली बात है।" देवराज चौहान बोला।

"क्यों?"

"जथूरा उसे इस तरह नहीं आने दे सकता। उसकी जादुई कैद से निकल पाना आसान नहीं।"

"परंतु मैंने भाभी को, पूर्वाभास में, यहां इस बंगले में आते देखा है।"

"ये जथूरा की कोई चाल हो सकती है।" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर कहा।

"चाल?"

"आपुन को भी बहना का वापस लौटना हजम नेई होईला बाप।" रुस्तम राव गम्भीर स्वर में बोला।

जगमोहन सब पर नजर मारता बोला।

"नगीना भाभी जब आएगी, तभी पता चलेगा कि क्या हो रहा है ये सब।"

"ठीक कहते हो।" देवराज चौहान बोला—"नगीना के आने पर ही, सोच सकेंगे हम कि वो असली है या नकली?"

"पूर्वाभास मुझे असली लोगों को लेकर ही होता है।" जगमोहन ने कहा।

देवराज चौहान ने सिर हिला दिया।

जगमोहन वापस कमरे में आ गया और धीमे स्वर में बोला।

"देवराज चौहान नगीना के वापस आने पर शक कर रहा है शौहरी।"

"तू क्यों फिक्र करता है।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"वो कालचक्र के खेल से बच नहीं सकता।"

"रुस्तम और बांके भी कुछ शक में हैं।"

"कालचक्र के सामने उसकी हस्ती मिट्टी है। तू अपने काम किए जा।"

"रुस्तम और बांके को बेहोश करूं?"

"कर। लेकिन सावधान, देवा को शक न हो तुझ पर। कालचक्र को अड़चन पसंद नहीं।"

"कालचक्र है कौन?"

"ये जथूरा के भाई सोबरा की शक्तियों का समुद्र है, जो कभी सोबरा ने जथूरा को खत्म करने के लिए, जथूरा पर छोड़ा था। परंतु तब जथूरा को पहले ही खबर मिल गई कि सोबरा ने कालचक्र छोड़ दिया है तो जथूरा ने कालचक्र पर अपना मायाजाल फैला दिया। मायाजाल ने कालचक्र को धोखे से अपने आगोश में कैद कर लिया और फिर जथूरा कालचक्र का मालिक बन बैठा। कालचक्र को अपने काबू में कर लिया और सोबरा को बुरी मात मिली, कालचक्र हाथ से निकल जाने से। अब वक्त आने पर जथूरा ने इन सब पर उसी कालचक्र का इस्तेमाल किया है। कालचक्र के भीतर मौजूद हम सब पहले सोबरा के सेवक थे, अब जथूरा का हुक्म मानते हैं, लेकिन काम कालचक्र के ही कर सकते हैं। क्योंकि हम कालचक्र से बंधे पड़े हैं।"

"तुम्हारी बातें उलझन से भरी हैं शौहरी।"

"तू फालतू बातें पूछता ही क्यों है, अपने काम से मतलब रख।"

तभी रुस्तम राव ने भीतर प्रवेश किया और जगमोहन के पास ही बेड पर बैठता कह उठा।

"बाप ये पूर्वाभास तेरे को कौन कराईला है?"

"मुझे क्या पता?" जगमोहन मुस्करा पड़ा।

"वो तेरे से बात नेई करेला?"

"मुझे सिर्फ पूर्वाभास ही होता है।" जगमोहन बोला—"पोतेबाबा ने कहा था जथूरा की कोई दुश्मन शक्ति, पूर्वाभास कराकर मुझे खबरें दे रही है। परंतु वो मेरे से बात नहीं कर रही।"

"वो तेरे को पूर्वाभास काये को कराईला?"

"वो जो भी है, ये चाहती है कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश कर जाएं। वहां का सफर करें।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्यूं बाप?"

"अभी तक जो बातें सामने आई हैं, उससे ये स्पष्ट है कि अगर हम पूर्वजन्म में प्रवेश कर गए तो, हमारा टकराव जथूरा से होगा और वो टकराव जथूरा के लिए नुकसानदेह हो सकता है, इसलिए जथूरा हमें रोकने की चेष्टा कर रहा है। देवराज चौहान और मोना

चौधरी के पूर्वजन्म में प्रवेश करने पर, दोनों के ग्रह मिलकर एक बड़ी ताकत बन जाते हैं, जो कि जथूरा पर भारी पड़ेंगे। इसलिए जथूरा देवराज चौहान और मोना चौधरी में झगड़ा कराकर, जड़ को खत्म करा देना चाहता है, ताकि जथूरा के लिए हमेशा के लिए खतरा टल जाए।"

"आपुन लोग जथूरा की चाल में नेई फंसेला बाप।"

"कोशिश तो यही है।" जगमोहन मुस्कराकर बेड से उतरा और दरवाजे के पास पहुंचकर बाहर झांका—"लेकिन जथूरा भी कम नहीं है।" जगमोहन पलटा—"खासतौर से उसका कालचक्र। जथूरा अपनी चालें चल रहा है।" कहते हुए जगमोहन आगे बढ़ा और बेड के पास पड़ा छोड़ा साइड टेबल उठा लिया—"और हम हैं कि जथूरा को कोई जवाब नहीं दे पा रहे हैं।"

"कम्भी तो जथूरा फंसेला बाप।"

जगमोहन साइड टेबल थामे, बेड पर बैठे, रुस्तम राव की तरफ बढ़ता बोला।

"ये टेबल देखो, इसके नीचे क्या है।" कहकर जगमोहन ने टेबल आगे किया।

रुस्तम राव ने टेबल थामने के लिए हाथ बढ़ाया।

उसी पल फुर्ती से जगमोहन ने वो छोटा टेबल ऊंचा किया और रुस्तम राव के सिर पर दे मारा।

रुस्तम के होंठों से तीव्र कराह निकली और वो बेहोश होकर बेड पर ही लुढ़क गया।

"तूने तो कमाल कर दिया मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"जल्दी से पिशाचों को बुला कि इसे ले जाएं।" जगमोहन ने कहा—"कोई आ गया तो गड़बड़ हो जाएगी।"

"बुलावा भेज दिया है पिशाचों को, वो आते ही होंगे।"

"तू पहले क्यों नहीं बुला के रखता।"

"पिशाचों को बहुत काम होते हैं। वो इंतजार नहीं करते। उन्हें जल्दी जाना होता है।"

"तुम तो...।"

जगमोहन के शब्द मुंह में रह गए।

किसी के कदमों की आहट सुनी, जो इस तरफ आ रही थी।

"कोई आ रहा है मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

मखानी ने फुर्ती से बेड पर उकड़ूं पड़े रुस्तम राव को सीधा

किया कि देखने पर लगे कि वो नींद में है। फिर वो साइड टेबल उठाकर बेड के पास वापस रखा, जैसा पहले पड़ा था। उसी पल बांकेलाल राठौर ने भीतर प्रवेश किया।

"मैं हाल में आ ही रहा था।" जगमोहन बोला।

"यो म्हारो छोकरो लौटन लागो हो?"

"कह रहा था घंटा भर नींद लूंगा।" जगमोहन ने बांकेलाल को देखा—"एक घंटे बाद उठा देना।"

"ईबी तो घनी नींद मार के उठो हो। ईबी फिर नींद मारो हो। लगो म्हारो छोकरो जवान हो गयो हो।"

जगमोहन कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ा।

बांकेलाल राठौर भी उसके साथ ही बाहर आता कह उठा।

"लंच का, का प्रोग्राम हौवो हो। नाश्तो से तो म्हारी भूखो ही न मिटो हो। बढ़ियो रेस्टोरेंट से मुर्गे मंगायो, म्हारे वास्तो।"

▭ ▭

मोमो जिन्न की इच्छाएं बढ़ती ही जा रही थीं।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा उसकी मांगों से परेशान होने लगे थे।

इस वक्त मोमो जिन्न के शरीर पर सपन चड्ढा का कीमती सूट था। टाई लगा रखी थी। चूंकि जूते सपन चड्ढा के पूरे नहीं आए थे, इसलिए पांवों में स्लीपर पहन रखे थे। यूं उसे समझाने को दोनों ने बहुत चेष्टा की कि ये गर्मियों का मौसम है और इस मौसम में सूट नहीं पहना जाता। परंतु मोमो जिन्न सूट पहनकर ही रहा। सुबह उसने जलेबी-रबड़ी खाई। सुबह-सुबह नौकर कार पर गया और जाने कहां से ढूंढ़कर लाया। उसके बाद मोमो जिन्न के मन में सूट पहनने की इच्छा जागी तो वो भी पहन लिया। सूट पहनकर वो अजीब-सा लगने लगा था। कानों में कुंडल, चोंचदार नाक। बड़े-बड़े कान और कद चार फीट और ढीला सूट। एक बारगी तो ऐसा लगता था कि जैसे उसने कोई मोटा कम्बल लपेट रखा हो।

फिर उसने तेज मसालेदार चिकन और कबाब खाने को कहा।

नौकर भेजकर वो भी मंगवाया।

सारे का सारा वो खा गया, जबकि वो चार लोगों के लिए खाने का सामान था।

उसके बाद उसने सूट उतारना शुरू कर दिया। अंत में वो सपन चड्ढा के वीआईपी के अण्डरवियर में दिखने लगा। उसके चेहरे पर नाराजगी के भाव आ गए थे।

"तुम्हारा सूट अच्छा नहीं है।" मोमो जिन्न ने कहा।

"मैंने तो तुम्हें पहले ही कहा था।" सपन चड्ढा ने तुरंत सिर हिलाया।

"मुझे ये दो, जो तुमने पहना है।"

"ये?" सपन चड्ढा ने अपने शरीर पर पड़े कुर्ते-पायजामे को देखा।

"हां, मैं ये पहनूंगा। ये मुझे अच्छा लगेगा।"

"तुम तो कुर्ता पहनकर ही छिप जाओगे, पायजामा कहां पहनोगे।" सपन चड्ढा सकपकाकर बोला।

"इसका दिमाग खराब हो गया है?" लक्ष्मण चड्ढा ने मुंह बनाया।

मोमो जिन्न ने अपने को सिर से पांव तक देखा, फिर सपन चड्ढा के पहने कुर्ते को।

"तुम ठीक कहते हो। मेरा शरीर कुर्ते में ही छिप जाएगा।" मोमो जिन्न बोला।

"तुम कुछ और लम्बे क्यों नहीं हो जाते?" सपन चड्ढा ने कहा।

"नहीं, अपने शरीर से छेड़छाड़ करना ठीक नहीं होगा, अब।"

"क्यों?"

"मेरी इच्छाएं जाग चुकी हैं। अभी ये बात जथूरा के पहरेदार नहीं जानते। मुझे यही आदेश है कि मैं तीन इंच का बनूं या फिर चार फीट का। मैं चार फीट से बड़ा हुआ तो वो फौरन मशीनों से जांच करेंगे कि मैंने अपने को बड़ा क्यों बनाया। क्या जरूरत पड़ गई। जांच में उन्हें पता चलेगा कि मुझे कोई जरूरत नहीं थी अपने शरीर को बड़ा करने की। तब वो मेरे से सम्पर्क करके पूछेंगे कि मैं बड़ा क्यों बना, तो मैं क्या जवाब दूंगा उन्हें।"

"ये तुम्हारी समस्या है।"

"अगर तब ठीक जवाब न दिया तो वो शक में आकर, मेरे शरीर को चैक करेंगे तो उन्हें पता चल जाएगा कि मेरी इच्छाएं जाग चुकी हैं। वो उसी पल मेरे को खत्म कर देंगे।"

"तुम्हारी बात, तुम जानो।" लक्ष्मण चड्ढा ने मुंह बनाया।

"ये तुम लोगों की भी बात है।"

"क्यों?"

"मेरी इच्छा को खत्म पाकर उन्होंने मुझे मारा तो तुम दोनों फिर फंस जाओगे। वो फिर तुम्हारे पास किसी दूसरे जिन्न को भेज देंगे, जो तुम लोगों पर, जथूरा पर, जथूरा के आदेश के मुताबिक हकूमत करेगा। ये मत भूलो कि मुझमें इच्छाएं आ जाने के कारण

तुम दोनों भी मजे कर रहे हो। वरना अब तक डरे-सहमे से एक तरफ बैठे होते।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"कहां फंस गए?" लक्ष्मण दास बोला।

"तुम यहां से भाग क्यों नहीं जाते?" सपन चड्ढा बोला।

"भागकर कहां जाऊंगा?" मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा।

"कहीं भी जाओ—तुम तो...।"

"वो मुझे ढूंढ़ लेंगे।" मोमो जिन्न गम्भीरता से बोला—"मेरे शरीर में एक ऐसा यंत्र डाला हुआ है जथूरा के पहरेदारों ने कि मैं कहीं भी चला जाऊं, वो यंत्र उन्हें बता देगा कि मैं कहां हूं और वो मुझे पकड़ लेंगे।"

"ओह।"

"लेकिन सोबरा मुझे बचा सकता है। जथूरा से मुझे आजाद करवाने की ताकत उसके पास है।"

"सोबरा कौन?"

"जथूरा का भाई।"

"ये कौन से इलाके में रहता है?"

"पूर्वजन्म की ही दुनिया में रहता है। अगर मैं वहां उसके पास पहुंच जाऊं तो मेरे बचने की उम्मीद हो सकती है।"

"तो उसके पास कैसे पहुंचोगे?"

"अभी नहीं जानता। तुम पहले मुझे ऐसा कुर्ता-पायजामा, मेरे साइज का सिलवा कर दो।"

"अभी?"

"हां, अभी।" मोमो जिन्न ने जिद भरे स्वर में कहा।

लक्ष्मण दास ने मुस्कराकर सपन चड्ढा से कहा।

"भुगत।"

"दोनों ही भुगत रहे हैं।" सपन चड्ढा ने जले-भुने स्वर में कहा।

"तुम हमें छोड़कर क्यों नहीं जाते। अब हम तुम्हारे किस काम के हैं।"

"अभी इस बारे में मुझे अगला आदेश नहीं मिला। आदेश मिलने तक मुझे तुम लोगों के पास ही रहना होगा।"

"तो हमारे सिर पर सवार रहोगे?"

"दूर भी जा सकता हूं। लेकिन तब अपनी इच्छाएं पूरी करने के लिए मुझे उत्पात मचाना पड़ेगा। तब इस बात की संभावना हो सकती है कि उत्पात की खबर जथूरा के पहरेदारों को लग जाए

और वो जान जाएं कि मुझमें इच्छाएं आ गई हैं। इसलिए ठीक यही है कि मुझे यहीं रहने दो और मेरी इच्छाएं पूरी करते रहो। तुम भी बचे रहोगे और मैं भी।"

"तुम में इच्छाएं डाली किसने हैं?" सपन चड्ढा झल्लाकर बोला।

"जथूरा के किसी दुश्मन ने। पहले भी बताया था तुम्हें। कोई जथूरा का काम बिगाड़ने के लिए, ऐसा कर रहा है। मेरे में इच्छाएं डालकर मुझे काम से भटका दिया। अब मैं अपनी इच्छाएं पूरी करने में ही व्यस्त रहता हूं, तो जथूरा का काम करने के लिए वक्त कैसे निकालूंगा। मेरी इच्छाएं ही मुझे चैन से बैठने नहीं दे रहीं।"

"अजीब मामला है।" बोला सपन चड्ढा।

"मेरा कुर्ता-पायजामा लाकर दो। जो मुझे पूरा आए और मुझे विमल सूटिंग्स की कमीज-पैंट भी बनवा दो। रैड टेप के जूते भी ले आना मेरे साइज के। परफ्यूम वो हो जो...।"

"अबे मैं तेरा नौकर हूं...।" सपन चड्ढा झल्लाकर कह उठा।

मोमो जिन्न ने उसे कठोर नजरों से देखा।

सपन चड्ढा फौरन संभलकर बोला।

"ठीक है, अभी किसी को भेजकर, सब कुछ मंगवा देता हूं।"

"जलेबी और रबड़ी भी मंगवा लेना।"

"अभी तो तूने चिकन और बिरयानी खाई...।"

"मेरी इच्छा, मैं जो भी खाऊं।" मोमो जिन्न ने मुस्कराकर कहा—"जिन्न की इच्छाएं भी कमाल की होती हैं। अक्सर हममें ये इच्छा भी जागती है कि हम इंसानों को खा जाएं।"

"क्या?" सपन चड्ढा के चेहरे का रंग उड़ गया।

"रगड़ देगा ये हमें।" लक्ष्मण दास ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"घबराओ मत। अभी तक मेरे मन में इंसान को खाने की इच्छा नहीं जागी। जब ऐसा होता है तो हम जिन्नों के दांत लम्बे होकर होंठों से बाहर झांकने लगते हैं। नाक थोड़ी ऊपर चढ़ जाती है, आंखें कुछ फैल जाती हैं और मुंह से पानी बहता है।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं। दोनों के चेहरे फक्क थे।

"सुना तूने, अब ये हमें खाएगा।" लक्ष्मण चड्ढा ने घबराए स्वर में कहा।

"मैंने पहले ही कहा है कि घबराओ मत। ऐसा तब होता है जब जिन्न की इच्छाएं पूरी न हो। तुम तो मेरी हर इच्छा पूरी कर रहे हो।"

"ह...हां।" सपन चड्ढा जल्दी-से बोला—"तुम जो कह रहे हो, वो हम तुम्हें दे तो रहे हैं।"

"फिर क्यों घबराते हो। मेरी इच्छाएं पूरी करो और मौज करते रहो। मेरी तरह।"

"मौज?" सपन चड्ढा ने मुंह लटकाकर कहा—"तुम्हारी इच्छाएं पूरी करते-करते मेरी जिंदगी बीत जाएगी।"

"जिंदा तो रहोगे।"

लक्ष्मण दास सपन चड्ढा से बोला।

"इसने जो-जो मांगा है, वो जल्दी से लाकर दे इसे।"

"तू इसे अपने घर क्यों नहीं ले जाता?"

"अपने...? नहीं यहीं ठीक है। हम दोनों यार हैं। तेरे-मेरे घर में फर्क ही क्या है। जल्दी कर, जो इसने मांगा है, वो लाकर दे। नौकर भेज के मंगवा। देर हुई तो गड़बड़ हो जाएगी।"

सपन चड्ढा जल्दी से कमरे से बाहर निकल गया।

लक्ष्मण दास मोमो जिन्न के पास जाकर धीमे स्वर में बोला।

"एक बात कहूं—मानेगा?"

"बोल। अब तो हम दोस्त हैं।"

"अगर तेरी इंसान को खाने की इच्छा करे तो पहले सपन चड्ढा को खाना, मुझे नहीं।"

"वो तेरा दोस्त है—तू...।"

"जब जीने-मरने का सवाल आए तो दोस्त-वोस्त कुछ नहीं होता। तू पहले सपन को खाना। मुझे नहीं।"

"ठीक है। तेरी बात मान लेता हूं।"

"तू कितना अच्छा है। ला, मैं तेरी टांगें दबाता हूं।"

□ □

"रुस्तम कहां है?" अपने कमरे की तरफ गया जगमोहन, वापस आकर देवराज चौहान और बांके से बोला।

"वो तो थारो बिस्तरो पर ई नींद मारो हो।"

"वहां नहीं है वो।"

"बगलो वाले कमरो में हौवो?"

"वहां भी नहीं है। मैंने कई जगह देखा है। बंगले से बाहर जाता तो वो यहीं से निकलता।"

"बाथरूम वगैरह चैक करो।" देवराज चौहान उठते हुए बोला—"वो मिल जाएगा।"

उसके बाद तीनों ने रुस्तम राव को बंगले में तलाशा।

परंतु रुस्तम राव नहीं मिला।

देवराज चौहान और बांकेलाल राठौर परेशान थे कि रुस्तम राव कहां चला गया। जगमोहन के बहरूप में मखानी भी चिंतित होने का भरपूर दिखावा कर रहा था। वो सोच भी नहीं सकते थे कि जगमोहन के रूप में कालचक्र उसके पास मौजूद है।

"म्हारो तो खोपड़िया खराब हो गयो हो कि छोरो कां पे चल्लो गयो।"

"सच में ये हैरानी वाली बात है।" जगमोहन परेशान-सा कह उठा।

"हमारी निगाहों में आए बिना रुस्तम बंगले से बाहर जाएगा ही क्यों?" देवराज चौहान बोला—"मेरे खयाल में कुछ हुआ है, जिसका हमें आभास नहीं हो सका। जथूरा के कालचक्र ने इस बंगले पर भी पांव फैलाने शुरू कर दिए हैं।"

"का कहत हो देवराज चौहानो।" बांकेलाल राठौर हड़बड़ाकर बोला—"कालचक्रो इधरो आयो हो?"

"मुझे भी यही लगता है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"सोहनलाल नहीं आया अभी तक?" देवराज चौहान ने जगमोहन से पूछा।

"आ जाएगा।"

देवराज चौहान ने फोन निकाला और सोहनलाल के नम्बर मिलाने लगा। वो चिंता में था।

देवराज चौहान ने बार-बार नम्बर मिलाया, परंतु उधर बजने वाली बेल कानों में नहीं पड़ी।

"क्या हुआ?" जगमोहन ने पूछा।

"नम्बर नहीं लग रहा।" देवराज चौहान कह उठा।

"नेटवर्क में समस्या होगी।" जगमोहन ने कहा—"आ जाएगा वो। मैं तो रुस्तम के बारे में चिंतित हूं।"

"छोरा जवानो हो गयो हो। इसो तरहो इसको गायब हो जानो, ठीको न हौवो।"

"मैं एक बार फिर बंगला देखता हूं।" कहकर जगमोहन बंगले के भीतर वाले हिस्से की तरफ बढ़ गया।

बांकेलाल राठौर ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता के भाव नजर आ रहे थे।

"देवराज चौहानो। म्हारो छोकरो किधर जायो हो?"

"मुझे भारी खतरे का अंदेशा हो रहा है।" देवराज चौहान बोला।

"भारी खतरो?"

"रुस्तम के इस तरह बंगले से गायब हो जाने के पीछे, जथूरा की शक्तियों का ही हाथ है।"

"यो जथूरा म्हारे को मिल्लो तो अंम उसी को 'वड' दयो।" बांकेलाल राठौर गुर्रा उठा।

"हम कुछ नहीं कर सकते बांके।" देवराज चौहान गम्भीर था—"हमारे पास कुछ भी करने को रास्ता नहीं है। हम नहीं जानते कि जथूरा सबका अपहरण करके उन्हें कहां रख रहा है। हम नहीं जानते कि जथूरा कहां रहता...।"

"वो पूर्वोजन्मो में हौवे। चल्लो हंम उधरो चल्ले।"

"पूर्वजन्म में प्रवेश करने का रास्ता हमें नहीं मालूम।"

"वो रास्तो किधर से मिल्लो हो?"

"मैं नहीं जानता। लेकिन जब पूर्वजन्म में प्रवेश करने का वक्त आएगा, हम रास्ते के सामने होंगे। ये ठीक है कि जथूरा की शैतानी शक्तियों के काम करने का एहसास हमें हो रहा है, परंतु मुझे पूरा विश्वास है कि पवित्र शक्तियां भी इस काम में आ चुकी हैं। पूर्वजन्म की जब बुरी शक्ति हमारे खिलाफ हरकत में आती हैं तो, अच्छी शक्तियां भी हमारे बचाव में सामने आ जाती हैं। हमारे पूर्वजन्म में प्रवेश करने की ये शुरुआत-भर है। खेल तो अभी शुरू होना है।"

"जथूरो तो चाहो कि अंम पूर्वजन्म में ना जायो।"

"हां, वो इसी कोशिश में लगा है कि इस बार हमें पूर्वजन्म के सफर से रोक ले। वो अपनी भरपूर कोशिशें कर रहा है, मेरे खयाल से जब पूर्वजन्म के सफर का वक्त आता है, तो हमें वहां जाना ही पड़ता है। परंतु एक बात अजीब है बांके।"

"बोल्लो।"

"हमने जब-जब पूर्वजन्म में प्रवेश किया है, उससे पहले पेशीराम (फकीर बाबा) अवश्य हमारे पास आया। हमें पहले ही आगाह कर देता था आने वाले हालातों से, परंतु इस बार, अभी तक पेशीराम हमारे पास क्यों नहीं आया?"

"वो बुड्ढो हौवे, मरो खपो गयो हौवे।"

"नहीं वो मर नहीं सकता।" देवराज चौहान ने इंकार में सिर हिलाया।

"कूं?"

"पेशीराम ने ही पहले जन्म में मोना चौधरी को मेरे खिलाफ भड़का-भड़काकर, नगरी में झगड़ा पैदा किया था। जिसका अंत बुरा हुआ था। तब पवित्र बड़ी शक्तियों ने पेशीराम को श्राप दिया

था कि जब तक वो देवा और मिन्नो में दोस्ती नहीं करा देता, तब तक उसे मोक्ष (मृत्यु) की प्राप्ति नहीं होगी।"

"यो बात थारे को कौन्नो बताये हो?"

"पेशीराम ने स्वयं बताई थी।"

"समझो...।"

"यही वजह है कि पेशीराम मेरे और मोना चौधरी की दोस्ती करवाने का यत्न करने में लगा हुआ है। श्राप से ग्रस्त वो मर नहीं सकता। वो अवश्य कहीं पर व्यस्त होगा।"

"थारे को यादो हौवे पूर्वजन्मो के कांडो की?"

"नहीं, लेकिन पूर्वजन्म में प्रवेश करने के बाद, कभी-कभी अपने उस जीवन की याद आ जाती है। ऐसा लगता है जैसे सब कुछ मेरी आंखों के सामने हुआ हो।"

"भयानको हुओ सबो।"

"हां, बहुत ही बुरा हुआ था।" देवराज चौहान जाने कहां गुम होता कह उठा—"मैं मिन्नो की जान नहीं लेना चाहता था। जानता था कि वो पेशीराम की भड़काई हुई है। परन्तु मिन्नो को कौन समझाता। वो तो पागल थी मुझे जान से मार देने को। वो शाम कभी-कभी याद आती है मुझे। धुंधली-धुंधली सी याद। नगरी में युद्ध छिड़ा था। मिन्नो तब नगरी की मालकिन बन चुकी थी अपनी युद्ध कला के दम पर। उसके साथ नीलसिंह और परसू तथा नगरी के सैनिक थे। मेरे साथ जग्गू, गुलचंद, भंवर सिंह और त्रिवेणी के अलावा और भी बहुत लोग थे। युद्ध हो रहा था हममें कि तभी मिन्नो मेरे हाथ पड़ गई। वो घोड़े पर थी, मैं पैदल। हम दोनों के हाथ में तलवारें थीं, आंखों में खून उतरा हुआ था। मैं उसे समझाना चाहता था, लेकिन उसने तलवार मेरे पेट में भौंक दी थी। वो पागल हुई पड़ी थी। ऐसा होते ही मैंने उसके घोड़े की लगाम पकड़ ली। मिन्नो को घोड़े से नीचे गिरा दिया। इससे पहले कि वो उठ पाती, मैंने अपनी तलवार उसकी छाती में घुसेड़ दी। हम दोनों ही मर गए थे। बाकी सब भी इसी लड़ाई में मर गए थे।"

"बोत जुल्म हौयो।"

"ये सब पेशीराम की वजह से हुआ था।"

"बोत बुरो इंसानो हौवो पेशीराम तो?"

"तब था। अब ऐसा नहीं है। तपस्या कर-करके अब वो विद्वान बन चुका है। परंतु अभी भी श्राप में ग्रस्त है। वो जीना नहीं चाहता, लेकिन श्राप की वजह से वो जीने को मजबूर है। उसका शरीर बूढ़ा हो चुका है और उसी शरीर के साथ उसे जीना पड़ रहा है।"

बांकेलाल राठौर की निगाह देवराज चौहान पर थी।

देवराज चौहान का चेहरा बता रहा था कि वो कहीं खोया हुआ है। बांके ने पहले कभी देवराज चौहान को इस हाल में न देखा था। बांके उसे इन बातों से बाहर निकालने के लिए बोला।

"अंम जल्दो ही जथूरा का कोई इंतजामो करो हो।"

देवराज चौहान ने गहरी सांस लेकर उसे देखा फिर कह उठा।

"ये बातें मुझे कभी याद नहीं आतीं। परंतु आज जाने कैसे ये सब कुछ मेरी सोचों में आ गया।"

"अम जगमोनो को देखो हो, किधरो हौवे।"

"मखानी।" जगमोहन के कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"बोल।"

"भंवर सिंह को भी बेहोश करना है।"

"बेहोश करने की जरूरत क्यों होती है?" मखानी के होंठ हिले।

"पिशाचों को शोर से नफरत है। शिकार होश में होगा तो शोर करेगा ही। तब पिशाच गुस्से में उसकी जान ले लेंगे।"

"पिशाचों को मना कर दो कि शिकार की जान नहीं लेनी है।" मखानी ने राय दी।

"पिशाच की जात ही ऐसी है कि शोर सुनते ही वो गुस्से में भर जाते हैं।"

"तो ये काम किसी और को...।"

"जो काम पिशाच कर सकते हैं, वो दूसरा नहीं कर सकता। ये काम पिशाचों के लिए ही है।"

"तुम लोगों की दुनिया मेरी समझ से बाहर है।"

"तूने करना भी क्या है समझ के?" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"भंवर सिंह को बेहोश कर। कमला रानी से नहीं मिलना?"

"क्यों नहीं मिलना।" मखानी कह उठा—"उससे मिलने के लिए तो मैं कुछ भी कर...।"

"रास्ता साफ होगा तो कमला रानी आएगी।"

"मैं अभी मुच्छड़ को बेहोश करता हूं।"

"वो तुझे ढूंढ़ता ही आ रहा है।"

"मुच्छड़?"

"हां, भंवरसिंह।"

जगमोहन इस वक्त बंगले की लॉबी में था कि बांके वहां आ पहुंचा।

"तम उधरो हौवे, छोरो दिखो का?"

"नहीं। वो बंगले में नहीं है।"

"पक्को?"

"हां। मेरा दिल तो बुरी आशंका से घबरा रहा है। रुस्तम के साथ कुछ बुरा न हो गया हो।"

बांकेलाल राठौर के दांत भिंच गए।

"पोतोबाबे आए क्या?"

"नहीं।"

"ईब वो आयो तो म्हारे को बतायो।" बांकेलाल राठौर गुर्रा उठा।

"क्यों?"

"अंम उसो को 'वड' दयो। वो ई सबो कुछ करो हो और जथूरा का नाम ले दयो।"

तभी जगमोहन दीवार के पास पहुंचा और नीचे देखता कह उठा।

"बांके ये देख, क्या है।"

बांकेलाल राठौर करीब आया। बोला।

"किधरो?"

"इधर, नीचे।"

पास आकर बांकेलाल राठौर देखने के लिए नीचे झुका।

उसी पल फुर्ती से मखानी ने बांके का सिर थामा और दीवार पर दे मारा।

"ये का करो हो। मन्ने का थारी भैंसों को खोल लयो हो।" बांकेलाल राठौर गुस्से से बोला और छिटककर दो कदम दूर हट गया।

दोनों की नजरें मिलीं।

जगमोहन खतरनाक निगाहों से बांकेलाल राठौर को देख रहा था।

बांकेलाल राठौर हाथ से अपना सिर रगड़ता जगमोहन को देखते ही चौंका।

"तंम जगमोनो न हौवे। थारी यो मुस्कान, उसो की न हौवो।" बांके के होंठों से निकला।

"ठीक पहचाना तूने भंवर सिंह।"

"भंवर सिंह, थारे को म्हारा नामो भी पतो हौवे, पैले जन्मो का, तंम-तंम कौनो हौवे?"

"मखानी।"

"मखानो?"

"मखानी हूं मैं।" जगमोहन के होंठों से खतरनाक, धीमा स्वर निकल रहा था—"त्रिवेणी के पास जाना है तेरे को?"

"छोरे को तंमने गायब करो हो।"

जगमोहन मुस्कराकर, बांकेलाल राठौर की तरफ बढ़ने लगा।

बांकेलाल राठौर सतर्क हो गया।

"तंम जगमोनो नेई, उसी का बहरूपो हौवे हो। अंम थारो को 'वड' दयो हो।" वो गुर्राया।

"छोड़ना नहीं मखानी।" जगमोहन के कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी—"जैसे भी हो, बेहोश कर दे इसे। इसके बाद कमला रानी तेरे पास आएगी। वो भी तेरे से मिलने को बेचैन है।"

जगमोहन बांके के पास पहुंचता जा रहा था।

"ये बहुत खतरनाक है मखानी, ये...।"

तभी बांकेलाल राठौर, पास आते जगमोहन पर झपट पड़ा।

तेजी से जगमोहन से टकराया।

जगमोहन के पांव उखड़ गए। वो पीछे को गिरने को हुआ तो उसने बांके की कमीज पकड़ ली। नतीजा ये हुआ कि दोनों ही नीचे आ गिरे। बांके ने फुर्ती दिखाई और जगमोहन के ऊपर चढ़ बैठा।

"अंम थारे को 'वड' दयो।" कहने के साथ ही बांकेलाल राठौर ने रिवॉल्वर निकाल ली। चेहरे पर खतरनाक भाव बिखरे हुए थे। आंखों में क्रोध की लाली दिख रही थी। उसने रिवॉल्वर जगमोहन के गले पर लगा दी।

"अपने जगमोहन को मारेगा तू?" मखानी जल्दी-से बोला।

"तंम जगमोनो न हौवो—तंम...।"

"ये शरीर तो जगमोहन का है।" मखानी ने चालाकी से उसे बातों में फंसाने की कोशिश की।

"यो शरीरो।"

"हां। ये शरीर तो जगमोहन का है। मैं जगमोहन के भीतर हूं। मेरा क्या है, मैं तो निकल जाऊंगा, हवा की तरह। तू जो भी करेगा, उसमें जगमोहन के शरीर को क्षति पहुंचेगी।"

बांकेलाल राठौर के दांत भिंच गए।

वो मखानी की बातों में फंसता दिखा।

"अब तू क्या करेगा मुच्छड़?"

"तंम म्हारे को मुच्छड़ बोल्लो हो।"
"हां।" जगमोहन के होंठों पर मुस्कान उभरी—"तू मुझे गोली मार दे।"
"थारी बॉडी किधर हौवे, यो तो जगमोहन की बॉडी हौवे।"
"हां। समझ चुका है मेरी बात।" मखानी हंसा—"फंस गया तू। मुझे मारेगा तो जगमोहन मरेगा। नहीं मारेगा तो मैं तेरे को बेहोश कर दूंगा। बोल अब क्या करेगा?"
बांके दांत भींचे उसे देखता रहा।
"रिवॉल्वर हटा ले। घोड़ा दब गया तो जगमोहन मर जाएगा।"
बांके ने रिवॉल्वर गले से हटा ली।
"ऊपर से हट, जगमोहन को तकलीफ हो रही है।"
"थारे को कैसे पतो कि जगमोनो को तकलीफ हौवो हो?" बांके के माथे पर बल पड़े।
"मैं उसके भीतर हूं। वो जो भी सोचता महसूस करता है, मुझे पता चल जाता है।" मखानी ने कहा।
न चाहते हुए भी बांके जगमोहन के ऊपर से उठ खड़ा हुआ।
मखानी खड़ा हुआ और जेब से चाकू निकालकर उसे खोल लिया।
"यो का करो हो?"
"मैं जगमोहन को चाकू मारने जा रहा हूं।"
"न...नहीं।" बांके के होंठों से निकला—"यो मत करो हो। जगमोहन को मतो मारो।"
"ना मारूं?"
"भगवानो वास्तो नेई मारो।" बांकेलाल राठौर का स्वर कांप सा उठा था।
"रिवॉल्वर फेंक।"
बांके ने तुरंत रिवॉल्वर फेंक दी।
"तू तो अच्छा यार है जगमोहन का।" मखानी रिवॉल्वर उठाते हुए कह उठा।
बांके क्रोध भरी निगाहों से उसे घूर रहा था।
मखानी उसके पास पहुंचा और बोला।
"मैं तो तेरे को त्रिवेणी के पास भेज रहा हूं।"
"वो किधर हौवो?"
तभी मखानी का रिवॉल्वर वाला हाथ घूमा और नाल की तीव्र चोट उसकी कनपटी पर की।
बांके के होंठों से दबी-दबी कराह निकली।

मखानी ने उसी पल दूसरी चोट की।

बांके की आंखों के सामने लाल-पीले सितारे नाचे और वो बेहोश होकर नीचे जा लुढ़का।

मखानी ने चाकू और रिवॉल्वर अपनी जेब में रख लिए।

"वाह मखानी, तूने तो बढ़िया ढंग से काम निबटा डाला। मैं तेरे को अपने साथ ले जाऊंगा।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी।

"कहां?"

"पूर्वजन्म में—चलेगा?"

"कमला रानी के बिना मैं कहीं नहीं जाऊंगा।"

"वो भी यही कहती है कि तेरे बिना कहीं नहीं जाऊंगी।" शौहरी की आवाज में हंसी आ गई—"वो तेरे साथ कहीं भी जाने को तैयार है।"

"तो मैं उसके साथ ही पूर्वजन्म में जाऊंगा।"

"ठीक है तुम दोनों चलना पूर्वजन्म में। भौरी के साथ इस बारे में मेरी बात हो चुकी है।"

"इसे ले जाने के लिए पिशाचों को बुला। देवराज चौहान इधर आ गया तो...।"

"बुलावा भेज दिया है उन्हें। वो आते ही होंगे। तू देवा के पास जा, कि वो इधर न आए।"

मखानी लॉबी से बाहर की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान सोफा चेयर पर बैठा सिगरेट के कश ले रहा था, जब जगमोहन वहां पहुंचा।

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"रुस्तम बंगले में है ही नहीं।" जगमोहन ने बैठते हुए चिंतित स्वर में कहा।

"वो खतरे में फंस चुका है।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा।

"समझ में नहीं आता कि बंगले में उसके लिए क्या खतरा आ सकता है।"

"कुछ तो हुआ ही है। बांके कहां है?"

"किचन में है। कॉफी बना रहा है।" जगमोहन बोला—"जो कुछ भी हो रहा है, उसके बचाव में करने को हमारे पास कुछ नहीं?"

"नहीं। मेरी समझ में तो कुछ नहीं, तुम ही बता दो अगर कुछ किया जा सकता है।"

जगमोहन चुप कर गया।
थोड़ा वक्त बीता कि देवराज चौहान उठकर किचन की तरफ बढ़ा।
"कहां चले?"
"बांके के पास। अब तक उसे आ जाना चाहिए था। अब ये जगह सुरक्षित नहीं रही।" देवराज चौहान ने जाते हुए कहा।
जगमोहन उसे जाते देखता रहा।
"मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"अब देवा को पता चल जाएगा कि भंवर सिंह भी बंगले पर नहीं है।"
"पिशाच उसे ले गए?" जगमोहन के होंठ हिले।
"कब के। भंवर सिंह को तो अब तक, बाकी लोगों के पास पहुंचा दिया होगा।"
"कहां पर?"
"ये तेरे जानने के लायक नहीं है। तू ज्यादा बातें न पूछा कर। कालचक्र के सेवक सिर्फ अपने काम से मतलब रखते हैं।"
"मैं कालचक्र का सेवक नहीं हूं।"
"अब तू भी कालचक्र से जुड़ चुका है। ये बात तेरे को पहले भी समझाई थी।"
"कमला रानी भी कालचक्र से जुड़ गई है?"
"हां, वो भी।"
"कमला रानी कब आएगी यहां?"
"जग्गू और गुलचंद को मंजिल पर पहुंचाकर, नगीना के रूप में वो यहां पहुंचेगी।"
तभी देवराज चौहान आता दिखा।
"बांके किचन में नहीं है।" देवराज चौहान बोला—"बंगले में भी नहीं लग रहा।"
"ये कैसे हो सकता है।" जगमोहन कहते हुए तेजी से किचन की तरफ बढ़ा और जोर से पुकारा—"बांके।"
देवराज चौहान की अजीब-सी निगाह जगमोहन पर थी।
जगमोहन निगाहों से ओझल हो गया।
पांच मिनट बाद जगमोहन वापस लौटा। चेहरे पर हैरानी-परेशानी के भाव थे।
"बांके कहीं भी नहीं है। रुस्तम की तरह गायब हो गया। आखिर वो कहां गया?" जगमोहन का स्वर तेज था।
"इस बात का जवाब मुझसे ज्यादा तुम बेहतर जानते हो।" देवराज चौहान ने चुभते स्वर में कहा।
"क्या मतलब?" जगमोहन की नजर, देवराज चौहान पर जा बैठी।

"कौन हो तुम?"

"मैं?" जगमोहन चौंका—"मैं जगमोहन हूं।" उसके होंठों से निकला।

"अब मुझे तुम पर शक होने लगा है।"

"क्या कह रहे हो?" जगमोहन अचकचाया। आंखें फैलकर चौड़ी हो गई थीं।

"मस्त रह मखानी।" कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी—"देवा अंधेरे में तीर चला रहा है।"

"रुस्तम को तुम अपने बिस्तर पर सोया छोड़कर आए और वो गायब हो गया।" देवराज चौहान बोला।

"तो इसमें मेरा क्या कसूर है।"

"बांके को तुम किचन में छोड़कर आए और वो गायब हो गया।"

"तो क्या करूं मैं अगर वो गायब हो गए।" जगमोहन के माथे पर बल नजर आने लगे।

"सोहनलाल तुम्हें बंगले से बाहर उतारकर, खुद कार ले गया और अभी तक वापस नहीं लौटा। कई घंटे बीत गए। फोन मिलाओ तो उसका फोन नहीं मिल रहा।" देवराज चौहान ने चुभते स्वर में कहा—"ये तीनों आखिरी बार सिर्फ तुम्हारे सम्पर्क में आए और गायब हो गए। अब तुम्हें पूर्वाभास भी नहीं हो रहा। रुस्तम गायब हुआ तो कोई पूर्वाभास नहीं। उससे पहले सोहनलाल की कोई खबर नहीं...।"

"नगीना भाभी का पूर्वाभास हुआ...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

"रुस्तम के गायब होने के बाद तुम्हें उसका पूर्वाभास नहीं हुआ। जबकि बारी-बारी सबका हो रहा था।"

"तो इसमें मेरी क्या गलती है, नहीं हुआ तो नहीं हुआ।" जगमोहन झल्लाया।

"तुम जगमोहन नहीं, बल्कि उसके चेहरे में बहरुपिये हो।" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर कहा।

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया।"

"तुम इस बात को नकार नहीं सकते।" देवराज चौहान के दांत भिंच गए।

"देवा अंधेरे में तीर चला रहा है। तू लगा रह अपनी लाइन पर।" शौहरी की फुसफुसाहट पुनः कानों में पड़ी।

"मुझे लगता है कि जथूरा अब अपनी कोशिश में कामयाब होने लगा है।" जगमोहन चिढ़कर बोला—"वो हममें झगड़ा करवाना

चाहता है, एक-दूसरे के प्रति मन में शक डालना चाहता है और वो सफल हो गया। तुम्हारे मन में मेरे लिए शक आ गया कि मैं, मैं नहीं तो आगे कुछ भी कहना बेकार होगा।"

देवराज चौहान जगमोहन को देखता रहा।

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"अब हमारी बारी है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"हमारी बारी?" जगमोहन ने उसे देखा।

"हां, जथूरा का कालचक्र तेजी से काम कर रहा है। वो सबको गायब करता जा रहा है। नगीना, मोना चौधरी, महाजन, बांके, रुस्तम राव, सोहनलाल, ये सब कालचक्र के फंदे में फंस चुके हैं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"फिर तो हम दोनों और पारसनाथ ही बचे हैं।"

"हां।" देवराज चौहान ने उसे देखा—"क्या पता पारसनाथ भी फंस चुका हो।"

"मैं उसे फोन करके देखता हूं।"

जगमोहन ने पारसनाथ का नम्बर मिलाया। बात हो गई।

"तू ठीक है?" जगमोहन ने व्याकुलता से पूछा।

"तू घबराया हुआ क्यों है?"

"बांके और रुस्तम भी जाने कहां गायब हो गए। हम तीनों ही बचे हैं। सोहनलाल का भी कुछ पता नहीं चल रहा।"

"ओह।"

बात करके जगमोहन ने देवराज चौहान से कहा।

"अभी तक तो पारसनाथ ठीक है।"

"जथूरा इस बात की पूरी चेष्टा कर रहा है कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश कर सकें।" देवराज चौहान बोला।

"मुझे समझ नहीं आता कि आखिर हम पूर्वजन्म में प्रवेश करना ही क्यों चाहते हैं?" जगमोहन झल्लाया।

"हम नहीं प्रवेश करना चाहते। परंतु हालात ऐसे बनते जा रहे हैं कि हम चुप भी नहीं बैठ सकते। हम नहीं जानते कि जथूरा हम सबको गायब करके कहां ले जा रहा है। वो करना क्या चाहता है।" देवराज चौहान ने परेशान स्वर में कहा—"हम सिर्फ इतना जानते हैं कि जथूरा तब तक हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता, जब तक हम पूर्वजन्म की धरती पर कदम न रख दें। और वो हमें हर हाल में रोकने की चेष्टा में है कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश न कर सकें।"

"मखानी।" कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी—"देवा का

दिमाग खराब होता जा रहा है। इसे कुछ भी ठीक से समझ नहीं आ रहा। कुछ ही देर की बात है, कमला रानी के आते ही, ये भी पिशाचों के कब्जे में होगा।"

"मैं इसे भी बेहोश करूं क्या?" जगमोहन धीमे स्वर में बड़बड़ा उठा।

"तू अकेला देवा को नहीं संभाल सकता। मामला खराब मत कर देना। कमला रानी को आ लेने दे।"

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखकर कहा।

"कुछ कहा तुमने?"

"नहीं।" जगमोहन ने चेहरे पर परेशानी ओढ़े, इंकार में सिर हिला दिया।

▭ ▭
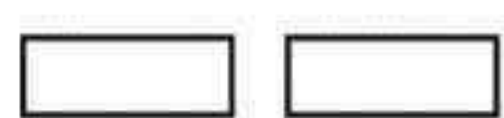
जगमोहन और सोहनलाल कमला रानी का पीछा करते, कब के मुम्बई से बाहर निकल चुके थे। वो मोना चौधरी को नजरों से ओझल नहीं होने देना चाहते थे और जानना चाहते थे कि कहां जाती है। उसका कोई ठिकाना है तो कहां पर है। पीछा करते हुए अब तो दोपहर भी ढलने लगी थी। हाइवे पर उनकी कारें दौड़ी जा रही थीं।

"ये आखिर जा कहां रही है?" सोहनलाल बोला।

"जहां भी जाए।" जगमोहन के होंठ भिंच गए—"मैं इसे छोड़ूंगा नहीं। ये मोना चौधरी असली नहीं, उसका बहरूप है।"

"देवराज चौहान तुम्हारा-मेरा इंतजार कर रहा होगा।"

"उसे फोन करके बता दो कि हम किस काम में व्यस्त हैं। अब तक तो देवराज चौहान का फोन आ जाना चाहिए था।"

सोहनलाल जेब से फोन निकालता कह उठा।

"जथूरा ने हम लोगों के बहरूप पेश करके, हमारा दिमाग खराब कर रखा है।"

"जथूरा का ये तमाशा ज्यादा नहीं चलने वाला।" जगमोहन कड़वे स्वर में बोला—"जल्दी ही सब ठीक हो जाएगा।"

सोहनलाल ने देवराज चौहान का नम्बर मिलाया।

दो-चार बार कोशिश की, परंतु नम्बर नहीं मिला।

"मेरे फोन में शायद सिगनल नहीं आ रहा।"

"मेरा फोन ले लो।" जगमोहन ने जेब से अपना फोन निकालकर उसे दिया।

तभी काफी आगे जा रही कमला रानी की कार को सड़क से उतरकर कच्चे में जाते देखा।

"ये कहां जा रही है?"

सोहनलाल ने गर्दन घुमाकर सामने देखा। साथ ही नम्बर मिला रहा था।

"उधर गांव है कोई।" नम्बर मिलाने के बाद सोहनलाल ने फोन कान से लगाया।

परंतु नम्बर नहीं लगा।

"तुम्हारे फोन से भी नम्बर नहीं लग रहा।" सोहनलाल ने कहा।

"रहने दो। मेरे खयाल में हम मंजिल पर आ पहुंचे हैं। मोना चौधरी का बहरूप उस गांव की तरफ जा रहा है। वहीं उसका ठिकाना होगा।"

"उस गांव में। मुझे नहीं लगता।"

"हाईवे छोड़कर उस गांव की तरफ जाने का तो यही मतलब है सोहनलाल।"

"वो अभी तक पीछे हैं कमला रानी।" भौरी की आवाज कानों में पड़ी।

"जग्गू और गुलचंद सोचते हैं कि जैसे मुझे उनके पीछे आने का पता नहीं है।" कमला रानी मुस्करा पड़ी।

"तेरे को जैसा समझाया है, वैसा ही करना। जल्दी से काम को पूरा कर।"

"कर तो रही हूं भौरी।"

"मैं देख रही हूं तेरे में सुस्ती आ रही है। तू ऐसे ही ढीली होती रही तो मखानी से कैसे मिलेगी?"

"मखानी।" कमला रानी की आंखों में चमक आ गई—"वो कहां है?"

"तेरे इंतजार में बैठा है।"

"किधर?"

"देवा के पास। उसने अपना काम पूरा कर लिया है। वो तेरे से तेज है।"

"क्यों न होगा।" कमला रानी मुस्कराई—"आखिर मर्द जो ठहरा।"

"हमारी दुनिया में मर्द-औरत एक ही फुर्ती से काम करते हैं। तूने मखानी के साथ वहां जाना है कि नहीं।"

"मखानी को पूछूंगी।"

"पूछ लिया है। शौहरी से मेरी बात हो गई है। मखानी तेरे साथ पूर्वजन्म में जाने को तैयार है।"

"सच?" कमला रानी का चेहरा खिल उठा—"मखानी मेरे से कितना प्यार करता है?"

"जग्गू की कार भी इधर मुड़ गई है।" भौरी की आवाज कमला रानी के कानों में पड़ी—"वो तेरे को मिन्नो समझ रहा है।" फिर तुरंत ही कह उठी—"एक मिनट—शौहरी कुछ कह रहा है।"

दो पलों के बाद भौरी कह उठी।

"मैंने तेरे को गलत कहा, जग्गू और गुलचंद जानते हैं कि तू मिन्नो नहीं, उसका बहरूप है। इसलिए वो तेरे पीछे हैं कि देख सके तू जाती कहां है, क्या कर रही है।"

कमला रानी कुछ नहीं बोली।

"सामने के कच्चे मकान के पीछे है कुआं, सीधे वहीं चल।"

कमला रानी कार को वहीं ले गई।

"बस, अब बाहर आ जा।"

कमला रानी बाहर निकली और पलटकर पीछे देखा।

काफी दूर से कार इधर आती दिखाई दी।

"सब याद है तेरे को?"

"हां।"

"मैं तेरा रूप बदल रही हूं। जग्गू और गुलचंद आए तो...।"

"सब संभाल लूंगी, तू मेरा रूप बदल।"

मात्र दस सेकंड बीते कि कमला रानी का रूप बदलने लगा। देखते-ही-देखते वो गांव की बूढ़ी औरत में परिवर्तित हो गई। झुर्रियों से भरा चेहरा। शरीर पर सूती, मैला हो रहा सूट। बालों की चुटिया हुई पड़ी थी। पांवों में टूटी-सी चप्पल थी। कमला रानी पीठ झुकाए, सामने नजर आ रहे कुएं की तरफ बढ़ने लगी।

इस वक्त यहां गांव का कोई इंसान नजर नहीं आ रहा था।

"ये काम खत्म कर।" भौरी की आवाज कमला रानी के कानों में पड़ी—"इसके बाद तेरे को देवा के पास भेजूंगी। वहां मखानी भी होगा।"

□ □

जगमोहन ने कार को कुछ पहले ही रोक दिया था।

"वो उस तरफ गई है।" सोहनलाल गांव के मकानों के पीछे देखता कह उठा।

दोनों आगे बढ़े।

"यहां क्या करने आई होगी वो?"

"देखते हैं।"

दोनों उस कार के पास पहुंचे। कार के भीतर झांका। वो खाली थी।

वो आगे बढ़ते चले गए।

ज्योंही गांव के कच्चे मकान को पार किया तो उन्हें कुआं दिखा। कुएं के पास बूढ़ी औरत दिखी जो कुएं के भीतर झांक रही थी। दोनों की निगाह इधर-उधर गई, परंतु उन्हें मोना चौधरी न दिखी।

"कहां गई वो?"

"उस बुढ़िया से पूछते हैं।"

दोनों बुढ़िया के पास जा पहुंचे।

"सुनो।" सोहनलाल ने बुढ़िया से कहा—"अभी-अभी यहां एक लड़की आई थी। किधर गई?"

बुढ़िया कुएं में झांकना छोड़कर, सीधी हुई और पलटी।

"क्या कहा?" उसने पूछा।

"अभी-अभी यहां एक लड़की आई थी। वो कहां गई। तुमने देखा होगा उसे।" सोहनलाल ने पुनः कहा।

"शर्म नहीं आती।" बुढ़िया ने आंखें निकालकर कहा।

"हमने ऐसा क्या कह दिया जो...।"

"लड़की का पीछा करते हो और पूछते हो क्या कह दिया।" बुढ़िया ने डांट वाले अंदाज में कहा।

"व...वो मेरी बहन है।" सोहनलाल जल्दी से बोला।

"तो यूं कहो न।" बुढ़िया ने सिर हिलाया—"लेकिन वो गांव में क्या करने आई है?"

"उसे कुछ काम होगा।"

"तो तुम लोग अपनी बहन का पीछा क्यों कर रहे हो?"

सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

जगमोहन ने जेब से सौ का नोट निकालकर उसे दिखाया।

"तुम हमें बताओ वो लड़की किस तरफ गई है, तब ये नोट तुम्हें दे देंगे।"

"मुझे नोट नहीं चाहिए।" बुढ़िया बोली—"मेरी बाल्टी कुएं में गिर गई है, वो निकाल दो।"

"बाल्टी?"

"उस लड़की ने मुझसे किसी का नाम बताकर पूछा था कि वो कहां रहता है। मैं जानती हूं वो कहां गई है, मेरी बाल्टी निकाल दो तो, मैं बता दूंगी।" बुढ़िया ने कहा।

"तू इसकी बाल्टी देख, मैं आस-पास देखता हूं।" सोहनलाल ने कहा और आगे बढ़ गया।

जगमोहन जल्दी से कुएं के पास पहुंचा।

तीन-साढ़े तीन फीट ऊंची दीवार थी कुएं की। दीवार पर हाथ रखकर जगमोहन ने भीतर झांका तो नीचे कुएं में पानी चमका। रस्सी नीचे तक जा रही थी, परंतु नीचे जाने के लिए सीढ़ियों जैसा कुछ नहीं था। स्पष्ट था कि कुएं में नीचे उतरना कठिन था। बाल्टी नहीं निकाली जा सकती थी।

इससे पहले कि जगमोहन वहां से हटता, सीधा होता।

बुढ़िया फुर्ती से नीचे झुकी और जगमोहन की दोनों पिंडलियां पकड़कर ऊपर उठाती चली गई। जगमोहन को संभलने का मौका नहीं मिला और बुढ़िया ने पिंडलियां उठाकर, जगमोहन को कुएं में धकेल दिया।

जगमोहन की जोरदार चीख गूंजी।

'छपाक' उसके कुएं के पानी में गिरने की आवाज आई।

बुढ़िया मुंडेर पर हाथ रखे, नीचे झांकने लगी।

"वाह कमला रानी, तूने तो कमाल कर दिया।" उसके कानों में भौरी की आवाज पड़ी।

जगमोहन की वो चीख सोहनलाल के कानों तक पहुंच गई थी।

सोहनलाल दौड़ा आया।

"क्या हुआ?"

"तुम्हारा भाई कुएं में गिर गया है।" बुढ़िया ने कहा।

"क्या?" सोहनलाल ने उसी पल आगे बढ़कर कुएं में झांका।

उसे कुएं के पानी में जगमोहन दिखा।

"ठीक है तू?" सोहनलाल ने ऊंचे स्वर में पूछा।

"हां। मुझे इसी बुढ़िया ने कुएं में फेंका है।" नीचे से जगमोहन ने गुस्से से कहा।

"क्या?" सोहनलाल ने अचकचाकर, पास खड़ी बुढ़िया को देखा।

"तुम्हारा भाई तो पागल है।" बुढ़िया ने भोलेपन से कहा—"भला मैं बूढ़ी, उसे कैसे नीचे फेंक सकती हूं।"

"वो झूठ नहीं बोलेगा।" सोहनलाल ने बुढ़िया को घूरा।

"सत्यवादी की औलाद है कि वो झूठ नहीं बोलेगा।" बुढ़िया ने तीखे स्वर में कहा—"वो झूठ ही तो बोल रहा है। कुएं में झांक रहा था, खुद को संभाल नहीं सका और नीचे जा गिरा। अब गुस्से में मेरी तरफ उंगली उठा रहा है।"

"तेरे से बाद में बात करूंगा। इसे निकालूं कैसे?"

"रस्सी नीचे लटका दे। ऊपर चढ़ आएगा।" बुढ़िया बोली।

सोहनलाल ने नीचे झांककर कहा।

"जगमोहन रस्सी लटक रही है। मैं इधर से रस्सी पकड़ लेता हूं, तू ऊपर चढ़ आ।"

"इस बुढ़िया से बचकर रहना। इसने मुझे कुएं में फेंका है।" नीचे से जगमोहन ने कहा।

"तू ऊपर आ, फिर इस बुढ़िया से भी बात कर लेंगे।" सोहनलाल ने ऊपर रस्सी कसकर पकड़ ली।

तभी बुढ़िया मुस्कराई और सोहनलाल के पास आ गई।

"तू कुछ खाता-पीता नहीं है।" वो बोली।

"क्यों?" सोहनलाल रस्सी पकड़े कह उठा।

"इतना दुबला-पतला क्यों है?"

"तेरे को क्यों चिंता हो रही है?"

"चिंता नहीं हो रही, सोच रही हूं कि तेरे को तो मैं इस तरह उठा लूंगी, जैसे बच्चे को उठाया जाता है।"

"मुझे उठाने की जरूरत क्या पड़ गई तेरे को?" सोहनलाल ने उसे देखते हुए तीखे स्वर में कहा।

"कुएं में जो फेंकना है तेरे को।" बुढ़िया मुस्करा पड़ी।

"क्या?" सोहनलाल चौंका।

तभी बुढ़िया ने बिल्ली की तरह सोहनलाल पर झपट्टा मारा और उसे अपने आगोश में जकड़ लिया।

सोहनलाल ने रस्सी छोड़ी और बुढ़िया से भिड़ गया।

परंतु अगले ही पल उसे महसूस हो गया कि बुढ़िया में बेपनाह ताकत है।

बुढ़िया ने सोहनलाल को दोनों हाथों में उठाया और आगे बढ़कर उसे कुएं में फेंक दिया।

उसके पानी में गिरने की 'छपाक' आवाज ऊपर तक आई।

"मान गई कमला रानी तुझे।" भौरी की आवाज उसके कानों में पड़ी।

"कोई गांव वाला आएगा और उन्हें कुएं से निकाल लेगा।" कमला रानी ने कहा।

"कालचक्र से वो नहीं बच पाएंगे।"

"क्या मतलब?"

"इस वक्त कालचक्र का जोर चल रहा है। होगा वही, जो कालचक्र चाहेगा। कालचक्र जग्गू और गुलचंद को भटका देगा।"

"भटका देगा, कैसे—वो तो कुएं में हैं।"

"ये आम कुआं नहीं है।" भौरी के हंसने की आवाज आई।

"मैं समझी नहीं।"

"तुझे समझने की जरूरत क्या है। तू मेरे संग रह और मजे कर। अब तेरा रूप बदल रही हूं मैं।"

"मोना चौधरी बनाएगी मुझे?"

"नगीना बनाऊंगी। अब तू देवा के पास जाएगी।" भौरी की आवाज कानों में पड़ी।

"एक बात मुझे समझ में नहीं आई।"

"पूछ।"

"जग्गू और गुलचंद को क्यों नहीं बेहोश करके, पिशाचों के हवाले किया?"

"इसकी दो वजहें हैं कमला रानी।"

"क्या?"

"पहली वजह तो ये है कि जग्गू पर किसी पवित्र शक्ति का साया है, जो उसे पूर्वाभास करा रही है। कालचक्र को इस बात का अंदेशा था कि वो जग्गू पर सीधे-सीधे हाथ डालेगा तो वो पवित्र शक्ति मुकाबले पर उतर सकती है।"

"तो क्या कालचक्र उस शक्ति से डरता है?"

"नहीं डरता। परंतु झगड़े में वक्त खराब करने का भी क्या फायदा। कालचक्र ने इस प्रकार जग्गू को झटका दिया। गुलचंद जग्गू के पास था तो उसके साथ कालचक्र को यही सलूक करना पड़ा।"

"और दूसरी वजह क्या है?"

"दूसरी ये कि मखानी, जग्गू के रूप में वहां पर मौजूद रहेगा, जहां वो सब हैं। वहां ऐसे काम करेगा कि उनमें झगड़ा हो।"

"समझ गई।" कमला रानी ने सिर हिलाया—"अब तू मुझे नगीना बना।"

दो पल बीते कि कमला रानी का रूप परिवर्तित होने लगा। देखते ही देखते वहां बुढ़िया के बदले नगीना खड़ी थी।

"सच में तू खूबसूरत है।"

"मैं या नगीना?"

"नगीना के बारे में ही कह रही हूं।"

कमला रानी कुएं के पास पहुंची और नीचे झांका।

नीचे कमर-भर पानी में जगमोहन और सोहनलाल दिखे। वो ऊपर ही देख रहे थे।

"भाभी।" तभी कुएं के भीतर फंसा जगमोहन कह उठा—"तुम यहां...।"

"हां मेरे प्यारे देवर, मैं यहां।" कमला रानी हंसी—"कुएं में तू कितना अच्छा लग रहा है और गुलचंद भी।"

"ये भाभी का बहरूप है।" सोहनलाल ने कहा।

कमला रानी वहां से हटी और भौरी से बोली।

"चलें अब।" कहकर वे कार की तरफ बढ़ीं।

"कार की क्या जरूरत है। मैं तेरे को वैसे ही, पलों में मुम्बई पहुंचा देती हूं।" भौरी बोली।

"ओह, मैं तो भूल ही गई थी।" कमला रानी ठिठकी।

अगले ही पल देखते ही देखते कमला रानी का शरीर छोटा हुआ और नजरों से ओझल हो गया।

अब वहां कोई भी नहीं था।

जगमोहन और सोहनलाल कुएं के भीतर फंसे पड़े थे।

देवराज चौहान ड्राइंग रूम में टहल रहा था। चेहरे पर गम्भीरता थी।

जगमोहन बना मखानी सोफा चेयर पर खामोशी से बैठा था।

काफी देर से उनके बीच खामोशी थी। शाम के छः बजने जा रहे थे।

"सोहनलाल अभी तक नहीं लौटा।" जगमोहन कह उठा—"अब मुझे पूरा विश्वास है कि वो मुसीबत में फंस चुका है।"

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा, कहा कुछ नहीं। टहलता रहा।

"तुम चुप क्यों हो, कुछ तो बोलो।" जगमोहन ने झल्लाकर कहा।

"क्या कहूं, मेरे पास कहने को कुछ भी नहीं है। जथूरा एक-एक करके सबको गायब करता जा रहा है।" देवराज चौहान ने ठिठककर होंठ भींचते हुए कहा—"हैरानी की बात है कि बांके और रुस्तम को बंगले से ही गायब कर दिया। ये बात स्पष्ट है कि जथूरा की पहुंच बंगले के भीतर तक है और हम सुरक्षित नहीं हैं।"

"बचाव में भी कुछ नहीं कर सकते।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"पहले पता तो चले कि किस चीज से बचाव करना है।" देवराज चौहान ने कड़वे स्वर में कहा—"अंजानी ताकतों से हम मुकाबला नहीं कर सकते। हम सब साधारण इंसान हैं और जथूरा पूर्वजन्म में ताकत रखता है। उसके पास विद्या है। तुम भूले नहीं होंगे कि पूर्वजन्म में क्या-क्या होता है। हम वहां पर बेबस से हो जाते हैं।"

"इतने भी बेबस नहीं होते, जितना कि तुम कह रहे हो। हम वहां के हालातों का मुकाबला करते हैं।"

"फिर भी, पूर्वजन्म में हमारे लिए कठिनाइयां हैं।"

"क्या हम पूर्वजन्म में जाएंगे?" पूछा जगमोहन ने।

"पक्का जाएंगे।" देवराज चौहान ने दृढ़ता से कहा—"जिस तरह जथूरा हमें रोकने के लिए अपनी ताकतें लगा रहा है, उसी तरह, पवित्र शक्तियां भी हरकत में आ चुकी होंगी कि हमें पूर्वजन्म में भेजा जा सके। जब-जब भी हालात बने हैं हम पूर्वजन्म में अवश्य गए हैं। एक बार भी ऐसा नहीं हुआ कि हमें रुके हो।"

तभी मखानी के कानों में शौहरी की फुसफुसाहट पड़ी।

"मखानी। कमला रानी आ गई है।"

मखानी का दिल जोरों से उछला परंतु चेहरा शांत ही बनाए रखा।

तभी बेल बज उठी।

जगमोहन रूपी मखानी अपने पर काबू रखे, शांत भाव से उठा।

देवराज चौहान ठिठका।

"कौन हो सकता है?" जगमोहन बोला।

"शायद, सोहनलाल आया हो।"

"देखता हूं।" कहकर जगमोहन दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

जगमोहन ने दरवाजा खोला।

सामने नगीना खड़ी थी।

"भाभी।" जगमोहन खुशी भरे स्वर में कह उठा।

"तेरे भैया कहां हैं?" नगीना व्याकुल स्वर में कह उठी।

नगीना की आवाज सुनकर देवराज चौहान चौंका। नजरें दरवाजे की तरफ गईं।

उसने नगीना को भीतर आते देखा।

देवराज चौहान के चेहरे पर खुशी की हल्की-सी चमक आ गई।

"कैसे हैं आप?" भीतर आने पर नगीना ने देवराज चौहान को देखा तो उसकी तरफ दौड़ी।

"नगीना।" देवराज चौहान के स्वर में खुशी थी।

पास आकर नगीना देवराज चौहान से लिपट गई।

"भाभी।" पास आता जगमोहन बोला—"मुझे पूर्वाभास हुआ था कि तुम बंगले पर आओगी?"

नगीना और देवराज चौहान अलग हुए।

"तुम कहां थी नगीना?" पूछा देवराज चौहान ने।

"वो जगह मैं नहीं जानती। होश आने पर बहुत घबराई हुई थी। मोना चौधरी मुझे बेहोश करके, उठा ले गई थी। वो कोई जंगल

जैसी जगह थी। पास में कहीं समुद्र भी था। मैं वहां से भाग आई। टैक्सी पर यहां पहुंची।"

"वहां।" देवराज चौहान बोला—"मोना चौधरी, महाजन, रुस्तम, बांके, सोहनलाल भी बेहोश दिखे होंगे।"

"नहीं, वहां मुझे कोई और नहीं दिखा।"

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखकर कहा।

"तुमने तो पूर्वजनम में सबको एक ही जगह पर, पास-पास बेहोश पड़े देखा था।"

"हां, देखा था।"

"नगीना कहती है कि वहां पर इसे कोई दूसरा नहीं दिखा।" देवराज चौहान बोला।

"तो इसमें मैं क्या कर सकता हूं। जो मुझे महसूस हुआ, वो बताया था मैंने।" जगमोहन का स्वर सरल था—"भाभी, मैं तुम्हारे लिए चाय बनाता हूं। तुम आ गईं हो तो, हौसला मिला कि शायद बाकी भी लौट आएंगे।"

जगमोहन किचन में चला गया।

देवराज चौहान और नगीना सोफों पर आमने-सामने जा बैठे।

"ये सब क्या हो रहा है। मोना चौधरी ने मेरा अपहरण क्यों किया?" नगीना ने पूछा।

"मोना चौधरी नहीं थी वो।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला—"तुम शायद कुछ नहीं जानती।"

"हां, मैं कुछ नहीं जानती, मुझे बताओ कि...।"

"पूर्वजन्म का साया फिर हम पर पड़ रहा है।"

"क्या?" नगीना चौंकी।

"हां। पूर्वजन्म की कोई शक्ति है जथूरा। जिसके बारे में किसी को याद नहीं आया कि वो कौन है। वो जथूरा चाहता है कि हम पूर्वजन्म का सफर न करें, परंतु कोई शक्ति जगमोहन को पूर्वाभास कराकर, पूर्वजन्म के सफर की तैयारी करवा रही है।"

"क्या मतलब—मुझे सारी बात बताइए कि हालातों को समझ सकूं।"

देवराज चौहान नगीना को सब कुछ बताने लगा।

इस दौरान जगमोहन कॉफी बनाकर ले आया। वो भी पास बैठ गया।

नगीना ने सब कुछ सुना। देवराज चौहान खामोश हुआ तो वो चिंतित स्वर में कह उठी।

"ये तो बहुत खतरनाक बातें बताईं आपने।"

"हम सब इन्हीं हालातों में फंसे पड़े हैं।"

"मुझे तो आप दोनों की चिंता होने लगी है कि कहीं...।"

"मेरे खयाल में अब सब कुछ ठीक होने लगा है।" देवराज चौहान बोला।

"वो कैसे?" नगीना के होंठों से निकला।

"तुम जो वापस आ गईं। हो सकता है इसी तरह बाकी सब भी वापस आ जाएं।"

"आपका मतलब कि जथूरा अपनी कोशिशों से पीछे हट गया है।" नगीना बोली।

"कह नहीं सकता।"

"जथूरा पीछे हटने वालों में से नहीं है।" जगमोहन कह उठा—"हमें किसी भ्रम में नहीं रहना चाहिए।"

"तुम्हारा मतलब कि बात अभी और आगे चलेगी।" नगीना ने जगमोहन को देखा।

"हां। मुझे तो लगता है कि ये भी जथूरा की कोई चाल है, तुम्हारा वापस आ जाना।" जगमोहन बोला।

"ओह, जाने क्यों मेरा मन घबरा रहा है।" नगीना ने कहा।

"हमारे पास इस बात की जानकारी है कि जथूरा ने हम सब के लिए कालचक्र छोड़ा हुआ है। वो हम सबको बुरी तरह फंसा देना चाहता है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"बांके और रुस्तम तो बंगले से ही गायब हो गए।"

देवराज चौहान को चुप देखकर नगीना बेचैनी से बोली।

"आप कुछ करते क्यों नहीं?"

"मैं नहीं समझ पा रहा हूं कि क्या करूं, क्योंकि हालातों को मैं ठीक से समझ नहीं पा रहा कि आखिर जथूरा करना क्या चाहता है। इतना जरूर है कि उसने हमें बेहद परेशान कर रखा है। वो बहुत कुछ कर रहा है और हमारे करने को कुछ नहीं।"

"अब हम क्या करें?" नगीना ने उलझन भरे स्वर में कहा।

"मैंने पहले ही कहा है कि हम कुछ नहीं कर सकते। ये हाथ-पांवों का खेल नहीं, जथूरा की ताकतों की चाल है। परंतु मैं इतना जानता हूं कि जथूरा कुछ भी कर ले, हमारी पूर्वजन्म की यात्रा को नहीं रोक सकता। जब-जब भी पूर्वजन्म के सफर का संयोग बना है, तब-तब हमने पूर्वजन्म में प्रवेश किया है। अब भी कुछ ऐसा होगा कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश कर जाएंगे।"

तीनों एक-दूसरे को देख रहे थे।

"कॉफी ठंडी हो रही है।" जगमोहन बोला।

सबने कॉफी का प्याला उठा लिया।

"ऐसे मौके पर अक्सर पेशीराम (फकीर बाबा) आकर हमें सलाह देता है। उलझनें दूर करता है, परंतु इस बार पेशीराम हमसे बात करने नहीं आया।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसका न आना भी हमारे सामने सवाल खड़ा करता है कि...।"

"कोई तो बात होगी ही जो, इन हालातों में भी वो नहीं आया।" जगमोहन सोच-भरे स्वर में बोला।

"पेशीराम को सिर्फ एक ही काम है, वो है कि मेरी और मोना चौधरी की दुश्मनी खत्म कराकर, श्राप से मुक्ति पा लें। वो तीन जन्मों से मुक्ति पाने के लिए ही भटक रहा है। इस वक्त मैं और मोना चौधरी को हालातों ने करीब-करीब कर रखा है। इस मौके को पेशीराम कभी भी गंवाना नहीं चाहेगा। मुझे हैरानी है कि वो अभी तक आया क्यों नहीं?" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"इस बारे में तो पेशीराम ही जवाब दे सकता है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

इसी तरह की बातें उनमें होती रही।

कॉफी समाप्त करके नगीना देवराज चौहान से बोली।

"मैं इसी बंगले पर रहना चाहती हूं अभी, आपको एतराज तो नहीं?"

"मैं स्वयं, तुम्हें अपने पास ही देखना चाहता हूं।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला—"जो हालात हैं उन्हें देखते हुए कुछ नहीं कहा जा सकता कि कब क्या हो जाए। हम कभी भी किसी नई मुसीबत में घिर सकते हैं।"

"मैं कुछ देर आराम करना चाहूंगी।" कहकर नगीना उठी और भीतर के कमरे की तरफ बढ़ गई।

देवराज चौहान के चेहरे का तनाव अब कुछ कम था।

"कितनी अच्छी बात है कि भाभी लौट आई।" जगमोहन मुस्कराकर बोला।

"हां, बात तो तब बने, जब बाकी भी इसी तरह लौट आएं।" देवराज चौहान गम्भीर था।

"शायद वो भी लौट...।"

"मुझे नहीं लगता।" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"क्या मतलब?"

"जथूरा जो भी है, कम-से-कम वो कच्ची गोलियां नहीं खेलता। ये बात तो तुझे महसूस हो चुकी है। वो ताकत रखता है और पक्का

खेल खेलता है। नगीना के इस तरह लौट आने में, अवश्य कोई रहस्य छिपा है जथूरा का।"

"तुम अब बेकार की बातें कर रहे हो।" जगमोहन ने मुंह बनाया।

"मैं सही कह रहा हूं, जथूरा ने अपने किसी मतलब की ही खातिर, नगीना को अपनी कैद से आजाद किया है।" देवराज चौहान के शब्दों में सोचों के गहरे भाव मौजूद थे—"वरना वो नगीना को छोड़ने वाला नहीं।"

जगमोहन उठते हुए बोला।

"मैं तुम्हारी बातों से सहमत नहीं हूं। भाभी पर नजर डालने जा रहा हूं। बांके और रुस्तम की तरह भाभी भी गायब न हो जाए।" कहने के साथ जगमोहन भीतर की तरफ बढ़ गया।

कुछ ही पलों में वो नगीना के सामने था।

"कमला रानी।"

"ओह—मखानी।"

दोनों कसके गले जा लगे।

"कितनी शांति मिली है तेरे सीने से लगकर।" कमला रानी ने आह भरकर कहा।

"मुझे भी चैन मिला है।" मखानी ने प्यार से डूबे स्वर में कहा।

"तू मेरे साथ पूर्वजन्म में चलेगा न?"

"तेरे साथ तो मैं हर जगह जाने को तैयार हूं।"

"भौरी से मैंने बात कर ली है। वो हम दोनों को पूर्वजन्म में ले जाएगी। वहां हम सप्ताह में एक बार मिला करेंगे।"

"सिर्फ एक बार।" मखानी ने नाराजगी से कहा।

"धीरे-धीरे मैं भौरी को मना लूंगी कि वो हमें दो बार मिलने दे। अब छोड़ मुझे।"

"नहीं।"

"समझा कर।" कमला रानी जबरन उससे अलग हुई—"मैं इस वक्त नगीना के रूप में और तू जगमोहन के बहरूप में है।"

"ठीक है, ठीक है।" मखानी ने बुरा सा मुंह बनाकर कहा।

"काम की तरफ ध्यान दे। देवराज चौहान को पिशाच के फंदे में पहुंचाना है।" कमला रानी ने धीमे स्वर में कहा।

"मैं कोई रास्ता निकालता हूं।"

"उसके सिर में कुछ मारकर, बेहोश कर दे।" कमला रानी ने कहा।

"मखानी।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी—"देवा आसानी से कब्जे में नहीं आएगा।"

"तो?"
"तुम दोनों मिलकर देवा पर काबू करो।"
"मैं उसे काबू में कर लेता।"
"अगर ये तेरे अकेले के बस का काम होता तो मैं क्यों कहता, कमला रानी के आने का इंतजार कर। अगर तुम लोग चूक गए तो देवा तुम्हें खत्म कर देगा। वो पहले से ही गुस्से में है।"
"क्या करूं मैं?"
"उसकी कॉफी में बेहोशी की दवा मिला देना। कमला रानी उसे बातों में लगाए रखेगी जिससे स्वाद का पता नहीं चलेगा। दो घूंट कॉफी भी उसने पी ली तो वो बेहोश होने से बच नहीं सकेगा। इस बीच अगर उसे शक हो जाए तो तुम लोग ही सब कुछ संभालोगे।"
"बेहोशी की दवा मैं कहां से लाऊंगा?"
"वो तेरे को किचन में, चीनी के डिब्बे के ऊपर रखी पुड़िया में मिलेगी।"
"तो सब इंतजाम पहले ही कर रखा है तूने।" मखानी ने कहा—"अभी तो देवराज चौहान ने कॉफी पी है।"
"कुछ वक्त ठहर कर उसे कॉफी पिलाना। जल्दबाजी मत करना, वरना देवा शक खा जाएगा।"
"ठीक है।"
"ये काम निबटा, फिर अगला काम करना है।"
"अभी मैं और काम नहीं करूंगा।" मखानी ने बच्चों जैसी जिद-भरे स्वर में कहा।
"क्यों?"
"पहले मैं कमला रानी के साथ...।"
"वो बाद में, पहले काम। हमारी दुनिया में कामों को महत्त्व दिया जाता है। कार्य पूरे हो तो तभी आराम की सोची जाती है।"
"मैं जो कमला रानी के साथ करूंगा, वो भी तो कार्य है, महत्त्वपूर्ण कार्य।" मखानी चिढ़कर बोला।
"तू मेरी बात नहीं मानेगा तो मैं तुझे छोड़कर चला जाऊंगा।"
"जाना मत।" मखानी डरकर बोला—"नहीं तो मैं मर जाऊंगा। अगला काम क्या है?"
"परसू को भूल गया तू?"
"ओह पारसनाथ—समझ गया।"
"उसे भी बेहोश करना है कि पिशाच उसे ले जा सके।"
"उसके बाद तो मुझे छुट्टी मिलेगी।"

"थोड़ी-सी, ज्यादा नहीं।"

"ज्यादा क्यों नहीं?"

"क्योंकि अब तूने जग्गू की जगह लेनी है। जग्गू बनकर देवा के साथ रहेगा और उनकी मुसीबतें बढ़ाएगा। मिन्नो के प्रति उसे भड़काएगा कि देवा मिन्नो को खत्म कर देना चाहे। इस दौरान सब लोग वहां पर होंगे। झगड़ा कराना है सबमें।"

"ये काम तो मेरे लिए आसान है।"

"तू ये काम करना, फिर बताना कि आसान है या कठिन।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ रही थी।

"तो कमला रानी कोई काम नहीं करेगी तब?" मखानी ने पूछा।

"वो भी तेरे पास ही रहेगी।"

"किस रूप में?"

"नया रूप देखेगा तू वहां कमला रानी का। ये तेरे को वहीं पे पता चलेगा।"

"तो मैं कमला रानी को पहचानूंगा कैसे?"

"कमला रानी ही तेरे से बात कर लेगी तब। अब तू ज्यादा मत पूछ और देवा का काम खत्म कर। कालचक्र को अपना काम समय-सीमा के भीतर पूरा करना है। कालचक्र को जब काम सौंपा जाता है तो उसे समय-सीमा से बांध दिया जाता है।"

"ओह, मगर काम समय-सीमा के भीतर पूरा न हो तो?"

"तो कालचक्र से बंधा हर कोई जान गंवा बैठेगा। मत भूल, अब तू भी कालचक्र से बंध चुका है।"

"ये तो मुसीबत वाली बात बताई। फिर तो मुझे सारे काम जल्दी करने पड़ेंगे।" मखानी ने फंसे स्वर में कहा।

□ □

नगीना घंटा-भर आराम करके ड्राइंग हॉल में आ पहुंची। देवराज चौहान लम्बे सोफे पर अधलेटा सा था। शाम के सात बज रहे थे। अंधेरा होना शुरू हो चुका था। जगमोहन ने बंगले की लाइटें रोशन कर दीं।

"जगमोहन।" नगीना बोली—"अपने भैया को कॉफी पिला। थोड़ी-सी मुझे भी दे देना।"

"अभी बनाता हूं भाभी।" कहकर जगमोहन किचन की तरफ बढ़ गया।

नगीना बैठती हुई देवराज चौहान से बोली।

"आप चिंतित क्यों होते हैं।"

"चिंता में नहीं, परेशान हूं।" देवराज चौहान बोला—"जथूरा की हरकतों का मतलब नहीं समझ पा रहा।"

"जो भी होगा, सामने आ जाएगा। क्या पता मेरी तरह सब सामने आ जाएं। बच आएं।"

"वो जगह याद करके बताओ कि कौन-सी थी, जहां तुमने खुद को होश में आने के बाद पाया।"

"मैं जानती तो आपको पहले ही बता देती। जब मैं होश में आई तो अपने को वहां पाकर मैं घबरा गई। कुछ पल तो मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया कि मैं कहां हूं, फिर मैं उठी जिधर रास्ता मिला, भाग निकली। मुझे डर था कि मोना चौधरी पास में न हो और मुझे फिर उससे झगड़ा करना पड़े। इसी घबराहट में मैं सड़क पर आ पहुंची। वहीं टैक्सी मिल गई तो बैठकर मैं आ गई। मैंने तो टैक्सी वाले से भी नहीं पूछा, वो जगह कौन-सी है।"

देवराज चौहान ने आंखें बंद कर लीं।

"पता तो कीजिए, कहीं दूसरे लोग भी वापस आ गए हो।" नगीना बोली।

"सोहनलाल, बांके-रुस्तम आते तो, यहीं आते या फोन पर बात अवश्य करते।"

"मोना चौधरी या महाजन लौट आए हो?"

"जगमोहन से कहकर, पारसनाथ को फोन करवाता हूं।"

तभी जगमोहन ट्रे में कॉफी के तीन प्याले रखे वहां आ पहुंचा। एक प्याला उसने देवराज चौहान की तरफ टेबल पर रखा। दूसरा नगीना की तरफ, तीसरा खुद थामे एक तरफ बैठ गया।

देवराज चौहान उठ बैठा और कॉफी का प्याला थामे, जगमोहन से बोला।

"पारसनाथ को फोन करके पूछो कि क्या कुछ नया हुआ है।"

"कॉफी के बाद फोन करता हूं।" जगमोहन बोला।

तीनों कॉफी पीने लगे। साथ-साथ थोड़ी-बहुत बात भी चल रही थी।

दो मिनट ही बीते होंगे कि नगीना की आंखें बंद होने लगीं।

"कमला रानी।" भौरी की फुसफुसाहट उसके कानों में पड़ी—"होश में आ, क्या हो रहा है तुझे।"

"नींद आ रही है।" नगीना के होंठ से मध्यम-सा स्वर निकला।

"ओह, तो मखानी ने दवा वाली कॉफी तेरे को दे दी।"

परंतु कमला रानी कोई जवाब न दे सकी। कॉफी का प्याला उसके हाथ से छूट गया और उसकी गर्दन लुढ़क गई।

देवराज चौहान चौंका।

मखानी समझ गया कि उसने दवा वाली कॉफी गलती से, कमला रानी को दे दी है।

"भाभी।" जगमोहन के होंठों से निकला।

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ गईं। उसने उठकर नगीना को चैक किया।

नगीना गहरी बेहोशी में थी।

"क्या हुआ भाभी को?" जगमोहन घबराया-सा कह उठा।

"कॉफी के कुछ घूंट लेते ही बेहोश हो गई है।" देवराज चौहान ने तीखी नजरों से जगमोहन को देखा।

"कॉफी के घूंट?" जगमोहन बोला—"वो ही कॉफी तो हम पी रहे हैं। मैंने बनाई है कॉफी।"

इस बात पर देवराज चौहान उलझन में पड़ गया कि वो ही कॉफी उन्होंने पी है।

देवराज चौहान की तीखी नजर अभी तक जगमोहन पर थी।

"मुझे क्यों देखे जा रहे हो?" जगमोहन कह उठा।

"मुझे तुम पर शक होने लगा है।" देवराज चौहान ने स्पष्ट कहा।

"शक? कैसा शक?"

"कि तूने ही कॉफी में कुछ मिलाया। परंतु गलती से तूने, मेरी अपेक्षा वो कॉफी नगीना को दे दी।"

"पागलों वाली बात मत करो, मैं ऐसा सोच भी नहीं सकता। तुम बेवकूफों की तरह मुझ पर शक कर रहे हो।"

"कुछ तो गड़बड़ है ही।" देवराज चौहान ने पुनः नगीना को चैक किया।

"कैसी है भाभी?"

"बेहोश है, ऐसी बेहोशी नशीली दवा से ही आती है और मुझे पूरा विश्वास है कि कॉफी में बेहोशी की दवा थी।"

"कमाल है। ऐसा कैसे हो सकता है?" जगमोहन कह उठा।

"कॉफी बनाते वक्त तुम हर वक्त पास में ही रहे?"

"नहीं, लॉबी में आ गया था, ओह तो बंगले पर कोई और भी है, उसी ने कॉफी में...।"

"अगर पूरी कॉफी में कुछ मिलाया होता तो हम भी बेहोश हो गए होते। सिर्फ एक कप में ही नशे की दवा थी।" देवराज चौहान का चुभता स्वर जगमोहन के कानों में पड़ा।

"तुम मुझ पर शक करना छोड़ो, ये ही तो चाहता है जथूरा।"

जगमोहन पलटते हुए बोला—"मैं बंगले में नजर मारकर आता हूं कि कोई भीतर है तो नहीं। ये सब शरारत उसी ने की हो।"

जगमोहन बंगले की लॉबी में आ पहुंचा।

"तूने बहुत बड़ी गलती कर दी।" शौहरी की मध्यम-सी आवाज कानों में पड़ी—"जो कप देवा को देना था, वो नगीना को दे दिया।"

"हो गई गलती।" मखानी झल्लाया—"अब क्या करूं?"

"अब तेरे को अकेले ही देवा पर काबू पाना है। तूने गलती की तो तू भुगत। अगर असफल रहा तो तुझे सजा मिलेगी।"

मखानी के दांत भिंच गए।

"कमला रानी तेरे साथ होती तो देवा पर हाथ डालने में आसानी हो जाती। अब तो खतरा और भी बढ़ गया है।"

"वो कैसे?"

"देवा को तुझ पर शक हो गया है कि काफी के कप में दवा तुमने ही मिलाई है।"

मखानी के दांत भिंचे रहे।

"तू अपना काम पूरा कर।"

"मैं देवा का मुकाबला कर पाऊंगा?"

"तेरे में जग्गू जितनी ताकत है।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी थी—"मुकाबला नहीं कर पाएगा। तू मुकाबले की सोचता ही क्यों है। चालाकी से काम करेगा तो, शायद काम हो जाए।"

"काम न हुआ तो?"

"तो मैं तुझे छोड़कर चला जाऊंगा। तब तू मर जाएगा। तेरा जीवन खत्म जो जाएगा। कमला रानी तुझे कभी नहीं मिलेगी। कालचक्र कभी भी किसी को, एक गलती के बाद दोबारा मौका नहीं देता।"

"मैं सफल होकर रहूंगा। देवा को बेहोश कर दूंगा।" मखानी के होंठों से गुर्राहट निकली।

"कर। मैं भी देखता हूं कि तू ये काम कैसे पूरा करता है। अपना जीवन बचा पाता है कि नहीं?"

▭ ▭

मखानी वापस हाल में पहुंचा।

देवराज चौहान बेहोश कमला रानी को सोफा चेयर से उठाकर, लम्बे सोफे पर लिटा चुका था।

देवराज चौहान ने जगमोहन को आते देखा। उसकी आंखें सिकुड़ीं।

जगमोहन के चेहरे के भाव उसे बदले-बदले लगे। एक हाथ पीठ पीछे कर रखा था।

देवराज चौहान कुछ सतर्क हुआ।

पास पहुंचते हुए जगमोहन ने पीछे कर रखा हाथ सामने किया। हाथ में डंडा थाम रखा था, पांच फीट का।

देवराज चौहान सतर्क-सा उसे देखे जा रहा था।

"भीतर एक आदमी मिला।" जगमोहन गुस्से से बोला—"मैंने उसे बेहोश कर दिया है डंडा मारकर।"

"कौन आदमी?"

"मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा। तुम देखो उसे कि, क्या तुमने उसे पहले कभी देखा है।"

देवराज चौहान कमला रानी के पास से उठ खड़ा हुआ।

"कहां है वो?"

"भीतर लॉबी में। मुझे पूरा विश्वास है कि उसी ने कॉफी के प्याले में बेहोशी की दवा डाली होगी। उसे मौका नहीं मिल पाया कि तीनों प्यालों में वो दवा डाल सके।" जगमोहन के स्वर में गुस्सा था।

देवराज चौहान उसके साथ चल पड़ा।

जगमोहन की बातें सुनकर देवराज चौहान उसके प्रति लापरवाह हो गया था। उसने सोचा कि वो यूं ही जगमोहन पर शक कर रहा था। और इसी लापरवाही का फायदा उठाया मखानी ने।

देवराज चौहान दो कदम आगे निकल गया, या यूं कह ले कि मखानी ही धीमा होकर दो कदम पीछे हट गया था और पीछे से मखानी ने डंडे का भरपूर वार, देवराज चौहान के सिर पर किया।

देवराज चौहान के होंठों से पीड़ा भरी कराह निकली। वो बिजली की तरह घूमा। और एक हाथ से डंडा पकड़ लिया। चेहरा क्रोध और पीड़ा से धधक उठा था।

मखानी के भी दांत भिंचे हुए थे।

"तो तुम जगमोहन नहीं हो। मेरा शक ठीक निकला।"

तभी मखानी ने जूते की ठोकर देवराज चौहान की टांगों के बीच मारी।

देवराज चौहान चीख पड़ा। डंडा उसके हाथ से छूट गया। दोनों हाथ टांगों के बीच रख लिए।

पागल हो चुके मखानी ने दोनों हाथों से डंडा थामकर पूरी ताकत से देवराज चौहान के सिर पर मारा।

ये वार घातक सिद्ध हुआ।

नीचे जा गिरा देवराज चौहान। सिर से बहता खून चेहरे और फर्श पर बिखरने लगा।

"तू ठीक समझा कि मैं जगमोहन नहीं हूं, मैं मखानी हूं—मखानी।"

देवराज चौहान बेहोश हो चुका था।

"शौहरी।" मखानी ने डंडा फेंकते हुए, ऊंचे स्वर में पुकारा।

"तूने तो कमाल कर दिया मखानी।"

"मैंने अपनी जिंदगी बचाई है। मैं मर जाता तो कमला रानी का क्या होता।"

"उसकी फिक्र क्यों करता है। कमला रानी को कोई दूसरा मिल जाता।"

"ऐसा मत कह। कमला रानी सिर्फ मेरे से ही प्यार करेगी।"

जथूरा के हंसने की आवाज कानों में पड़ी।

"पिशाचों को बुला कि...।"

"वो रास्ते में हैं, आ रहे हैं।"

"कमला रानी को होश कब आएगा?"

"अभी आ जाएगा। भौरी उसके भीतर गई बेहोशी की दवा का असर खत्म कर रही है। कुछ ही देर में कमला तेरे सामने खड़ी होगी।"

"अगला काम पारसनाथ को बेहोश करना है?" पूछा मखानी ने।

"हां।"

"उसके बाद।"

"बाद की तेरे को बता ही चुका हूं। परसू को भी बेहोश कर। कमला रानी के साथ ही उसके पास जाना। तू जगमोहन के रूप में ही उसके पास जाएगा और कमला रानी, नगीना के चेहरे में ही...।"

"कुछ देर मैं यहीं पर कमला रानी के साथ रहूंगा।" मखानी एकाएक मुस्कराकर बोला।

"सिर्फ कुछ देर। उसके बाद मैं और भौरी तुम दोनों को परसू के पास दिल्ली पहुंचा देंगे।"

रात के बारह बज रहे थे।

पारसनाथ रेस्टोरेंट के ऊपर अपने घर में था। रेस्टोरेंट बंद किया जा रहा था। सितारा राधा के पास थी। न तो महाजन का कुछ पता था और न मोना चौधरी का। इन हालातों में वो खुद को अकेला महसूस कर रहा था। मन-ही-मन ये भी सोचता कि जथूरा ने सबको बुरी तरह चक्कर में डाल रखा है। उसने सब

कुछ तहस-नहस कर दिया है। साथ ही ये भी उसे महसूस होता कि ये सब तो शुरुआत भर है। अगर पूर्वजन्म में प्रवेश करना पड़ गया तो पता नहीं वहां के खतरनाक हालातों का सामना कर पाएगा कि नहीं?

तभी इंटरकॉम बजा।

नीचे से उसके नौकर ने बताया कि जगमोहन किसी युवती के साथ आया है और उससे मिलना चाहता है।

जगमोहन को इस प्रकार अचानक आया पाकर, पारसनाथ को हैरानी हुई।

वो तुरंत नीचे जा पहुंचा। जगमोहन के करीब पहुंचा।

"तुम यहां कैसे?"

"देवराज चौहान भी अन्य लोगों की तरह गायब हो गया है।" जगमोहन ने कहा।

"ओह, ये तो...।" तभी उसकी निगाह दो कदम दूर खड़ी नगीना पर पड़ी—"ये...ये तो नगीना है, जिसे मोना चौधरी ने गायब किया था।"

"हां, ये वापस आ गई है।"

"कैसे?" पारसनाथ उलझन से बोला।

"होश आया इसे तो वहां से भाग निकली।"

"ओह, तो क्या बाकी लोग भी वहां थे?"

"नहीं।" कमला रानी पास आकर बोली—"मैं अकेली थी वहां और वो जगह भी नहीं जानती—मैं तो...।"

"ये बातें बाद में।" जगमोहन पारसनाथ से कह उठा—"जरा बाहर चलो, तुम्हें कुछ दिखा दूं।"

"क्या?"

"कार में रखा है कुछ। मेरे खयाल में हमने जथूरा का रहस्य पा लिया है।"

"ओह, दिखाना मुझे, क्या दिखाना चाहते हो?"

वे तीनों बाहर पहुंचे।

बाहर अंधेरा था। रेस्टोरेंट के साइन बोर्ड की रोशनी अवश्य फैली थी। जगमोहन पारसनाथ के साथ था। तीन कदम पीछे कमला रानी थी। कमला रानी ने पहले से ही एक तरफ रखी ईंट उठाई और दबे पांव पारसनाथ के पीछे पहुंचकर वेग के साथ जोरों से तीन-चार बार, सिर पर चोट कर दी।

पारसनाथ को संभलने का मौका नहीं मिला और वो बेहोश होकर नीचे गिरता चला गया।

"ले शौहरी।" मखानी बोला—"तेरा काम खत्म कर दिया।"

"काम तो अब शुरू होगा।" शौहरी के हंसने की आवाज आई।

"अब तो मैं कुछ देर कमला रानी के साथ बिता सकता हूं।" मखानी कह उठा।

"अभी तो मुम्बई में देवा के बंगले पर तुम दोनों ने...।"

"वो तो जल्दी-जल्दी...।"

"तू तो पागल है मखानी, ज्यादा अच्छा नहीं...।"

"मखानी।" कमला रानी पास आकर प्यार से कह उठी—"चल, हम कार में चलते हैं।"

"कार में?"

"समझा कर।"

"हां-हां, चल। मैं तो कंट्रोल से बाहर होता जा रहा हूं।" मखानी ने कमला रानी की कमर में हाथ डाल दिया।

▭ ▭

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा का हाल देखने वाला था।

मोमो जिन्न एक के बाद एक अपनी फरमाइश किए जा रहा था।

इस वक्त मोमो जिन्न के शरीर पर उसके साइज का सिल्क का कुर्ता था। नौकर एक घंटे में हाथोहाथ बनवा के लाया था। ये बात अलग थी कि उसे पहनकर वो कार्टून जैसा दिखने लगा था।

"अब बस भी कर।" लक्ष्मण दास बोला—"तू भी कुछ आराम कर ले और हमें भी करने दे।"

"जिन्न को ज्यादा आराम की जरूरत नहीं होती।" मोमो जिन्न ने कहा—"मैं तो बहुत खुश हूं कि मेरी इच्छाएं जाग उठी हैं, वरना मैं व्यर्थ की जिदंगी जी रहा था और जथूरा की गुलामी कर रहा था। अब मैं अपने लिए जी रहा हूं।"

"तू तो जी रहा है, लेकिन हमारी जिंदगी क्यों खराब कर रहा है, हमें इस तरह दौड़ा-दौड़ाकर?"

"मैं तो अब तुम लोगों को तंग नहीं कर रहा।"

"तेरी इच्छाएं तो तंग कर रही हैं।"

"उन पर मेरा बस नहीं। मैं भी कभी इंसान था। जिसने भी चालाकी से मेरे भीतर इच्छाएं जगाई हैं, उसने इंसानी इच्छाओं वाला हिस्सा मेरे मन में डाला है, इसलिए मेरी इच्छाएं इंसानों जैसी हैं।"

"खून पीने की इच्छा तो इंसानों में नहीं होती।" सपन चड्ढा जल्दी से कह उठा।

"हां, वो तो इंसानों में नहीं होती।" मोमो जिन्न ने सिर हिलाया—"तभी तो अभी तक मेरे मन में खून पीने की इच्छा नहीं उठी।"

"इसका मतलब तू हमारा खून नहीं पिएगा।" सपन चड्ढा ने चैन भरे स्वर में कहा।

"भविष्य में क्या होगा, मैं कैसे बता सकता हूं।"

लक्ष्मण दास ने सपन चड्ढा से कहा।

"इसका कोई भरोसा नहीं, कब क्या कर दे। ये न तो इंसानों में है और न ही प्रेत योनि में।"

"ये ठीक कहता है।" मोमो जिन्न मुस्कराया—"मेरा शरीर जिन्न का है। दिमाग जिन्न का है और इच्छाएं इंसानों वाली।"

"एक बात तो बता।" लक्ष्मण दास एकाएक कह उठा।

"बोल—पूछ?"

"तेरे में औरत को पाने की इच्छा नहीं होती। इंसान में, मर्दों को तो बहुत जरूरत पड़ती है।"

"जिन्न ये काम नहीं करते।" मोमो जिन्न बोला।

"क्यों?"

"क्योंकि औरत पाने की इच्छा के लिए, जिस चीज का होना आवश्यक है, वो चीज हमारे पास नहीं होती।"

लक्ष्मण दास ने हड़बड़ाकर सपन चड्ढा से कहा।

"सुना।"

"शुक्र है कि हम जिन्न नहीं हैं।" सपन चड्ढा ने लम्बी सांस ली।

"मेरे में अभी-अभी तरबूज खाने की इच्छा जागी है।" मोमो जिन्न कह उठा।

"तरबूज?" सपन चड्ढा के होंठों से निकला।

"मिल जाएगा।" लक्ष्मण दास हाथ हिलाकर बोला—"आजकल बाजार में तरबूज आया हुआ है।"

"मैं नौकर को भेजता हूं।" सपन चड्ढा कहकर उठने लगा।

तभी मोमो जिन्न के होंठों से निकला।

"रुक जा।"

सपन चड्ढा ठिठका।

मोमो जिन्न सिर को जरा-सा टेढ़ा करके, इस तरह सिर हिलाने लगा, जैसे कोई कुछ कर रहा हो और वो सुन रहा हो। इस दौरान मोमो जिन्न की आंखें बंद हो गई थीं।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

दोनों का हाल ऐसा था कि मौका मिले तो भाग लें और पीछे पलटकर भी न देखें।

"ठीक है।" मोमो जिन्न सिर हिलाकर बोला—"मैं इन दोनों के साथ अभी वहां जाता हूं।"

फिर मोमो जिन्न ने आंखें खोलीं और गर्दन सीधी करके खड़ा होकर, पहना कुर्ता-पायजामा उतारने लगा। देखते ही देखते सारे कपड़े उतार दिए और जल्दी-से एक कोने में पहुंचकर, वहां पड़ा अपना पुराना कपड़ा उठाकर कमर के बीच की जगह में लपेटने लगा। ये करते हुए जल्दी में लग रहा था वो।

"क्या हुआ?" सपन चड्ढा ने पूछा—"नए कपड़े उतारकर तुमने पुराने क्यों पहन लिए?"

"जाना है।"

"ओह, जा रहे हो।" सपन चड्ढा मुस्कराकर बोला—"जाते-जाते तरबूज तो खा जाते।"

"तुम दोनों को भी मेरे साथ चलना है।" मोमो जिन्न ने कमर में कपड़ा लपेट लिया।

"हमें?"

"हां, जथूरा के सेवकों की तरफ से मुझे आदेश मिला है कि तुम लोगों के साथ वहां पहुंचूं जहां, देवा, मिन्नो, नील सिंह, परसू, नगीना बेहोश पड़े हैं।" मोमो जिन्न ने कहा।

"लेकिन हमारे उधर जाने की क्या जरूरत है?" सपन चड्ढा घबराकर बोला।

"वहां तुम लोगों ने काम करने हैं।"

"काम?"

"हां। क्या काम करने हैं, वहीं पहुंचकर बताऊंगा। मेरा क्या होगा, समझ में नहीं आ रहा।"

"तेरे को क्या होना है। मुसीबत तो हम दोनों पर...।"

"तुम दोनों समझते नहीं। मेरे में इच्छाएं जाग उठी हैं। मैं कैसे अपनी इच्छाओं पर काबू पाऊंगा। अगर ये भेद खुल गया कि मेरे में इच्छाएं आ गई हैं तो जथूरा के सेवक मुझे भस्म कर देंगे।" मोमो जिन्न परेशान नजर आ रहा था—"तुम दोनों ये बात किसी को न बताना।"

"इच्छाओं वाली?"

"हां।"

"तुम हमें साथ मत ले जाओ, तो हम ये बात किसी से नहीं कहेंगे।" लक्ष्मण दास ने कहा।

"मैं तुम दोनों को छोड़ नहीं सकता। तुम लोगों को साथ ले जाने का हुक्म मिला है।" मोमो जिन्न बोला।

"तो हम वहां पहुंचकर सबको बता देंगे कि तुममें इच्छाएं आ गई हैं।" लक्ष्मण दास ने कहा।

"हां-हां, हम बता देंगे।" सपन चड्ढा ने फौरन सिर हिला दिया।

मोमो जिन्न घबराकर दोनों के पास आ पहुंचा।

"ये क्या कह रहे हो।" मोमो जिन्न जल्दी से बोला—"मेरा भेद खुल गया तो, तुम दोनों को कोई दूसरा जिन्न आकर गुलाम बना लेगा।"

"हम अब भी तुम्हारी गुलामी कर रहे हैं।"

"गलत मत समझो। इस वक्त हम दोस्त हैं। तुम अपने ढंग से फंसे हो और मैं अपने ढंग से। लेकिन तुमसे वादा करता हूं कि मौका मिलते ही तुम दोनों को आजाद कर दूंगा। परंतु इस वक्त मेरी बात मान लो और मेरे साथ ऐसे चलो, जैसे मैंने तुम दोनों पर काबू पा रखा है। बेशक दो-चार गालियां भी मुझे देते रहना। किसी को ये मत बताना कि मेरे में इच्छाएं आ गई हैं। मेरा विश्वास करो, वक्त आने पर तुम लोगों के लिए मैं अपनी जान भी दे दूंगा, लेकिन इस वक्त मेरी मजबूरी समझो।"

"सच कह रहे हो? जाने दोगे?" सपन चड्ढा बोला।

"मुझ पर अविश्वास मत करो। दिल को दुख होता है।" मोमो जिन्न कह उठा।

सपन चड्ढा ने लक्ष्मण दास को देखा।

"क्या कहता है?"

"जाना ही है इसके साथ तो नखरे क्या दिखाने। भाव क्यों बढ़ाने।" लक्ष्मण दास बाहरी सांस लेकर बोला—"अभी तो ये हमें इज्जत देकर कह रहा है, न माने तो साला हमें उलटा लटकाकर भी राजी कर लेगा।"

मोमो जिन्न उन्हें देखता, सहमति से सिर हिला उठा।

"देख तो हरामी कैसे सिर हिला रहा है।"

मोमो जिन्न दांत फाड़कर मुस्करा पड़ा।

"ये हमारा पीछा छोड़ने वाला नहीं।" सपन चड्ढा ने कहा।

"देखते हैं। जब तक निभती है, तब तक निभाते हैं, बाद की बाद में देखेंगे।" लक्ष्मण दास ने मन मारकर कहा।

"ये हुई बात, बोलो, जथूरा महान है।"

दोनों ने मोमो जिन्न को घूरा।

"नहीं बोलेंगे।"

"समझा करो। जरूरी है बोलना, ये बोलने से तुम लोगों के शब्द जथूरा के सेवकों तक पहुंचेंगे और उन्हें लगेगा कि सब ठीक-ठाक चल रहा है। ये शब्द उन्हें न सुनाई दें तो, वो शक करने लगते हैं।" मोमो जिन्न ने कहा।

"ये शब्द भला उन तक कैसे पहुंच जाएंगे?" सपन चड्ढा उलझन से कह उठा।

"मेरे में सैंसर लगा हुआ है, जो 'जथूरा महान है' शब्दों को कैच करके आगे भेज देता है और जथूरा के सेवकों के सैंसर, उन शब्दों को कैच करके वहां खुले मेरे खाते में डाल देते हैं कि मोमो जिन्न का काम ठीक चल रहा है।"

"कितनी अजीब बातें करता है ये।" सपन चड्ढा ने कहा।

"अजीब नहीं है, साधारण बात है ये। मैं देवा और मिन्नो के पूर्वजन्म के, इस हिस्से से वास्ता रखता हूं, जहां के लोगों ने बहुत तरक्की कर ली है विज्ञान में। जथूरा सबसे बड़ा वैज्ञानिक है।"

"वैज्ञानिक?"

"हां।"

"कैसी दुनिया है वो, जहां वैज्ञानिकों के सेवक जिन्न हैं। वो जादू नगरी है या वैज्ञानिक नगरी?"

"वहां सब कुछ मिलता है। जथूरा की दुनिया तुम्हारी इस दुनिया से बहुत आगे है।" मोमो जिन्न बोला—"वहां पर जिन्न, प्रेतों और पिशाचों को भी मशीनों से कंट्रोल किया जाता है। वहां जीते-जागते लोग भी काम करते हैं और रोबोट भी।"

"रोबोट?" लक्ष्मण दास ने हडबड़ाकर कहा—"पूर्वजन्म के वक्त में।"

मोमो जिन्न मुस्कराया।

"तो तुम लोग क्या सोचते हो कि जथूरा की दुनिया आदमयुग की है। जथूरा सच में महान है। लेकिन मैं उसका गुलाम बनकर नहीं जीना चाहता। अब मेरे में इच्छाएं जाग गईं। अब सिर्फ उसके हाथों से आजाद होना बाकी है। एक बार पूर्वजन्म में, सोबरा की शरण में चला गया तो वो मुझे जथूरा की गुलामी से आजाद करा देगा। वो मेरे दर्द को समझेगा।"

"तुम्हारी बातें हमारी समझ से बाहर हैं।"

"तो मैं कहां कह रहा हूं कि मेरी बात को समझो। तुम जैसे नन्हे नादान जथूरा के साम्राज्य को नहीं जान सकते हैं। जो देखता है, वो ही समझता है। मात्र सुन-सुनकर जथूरा के बारे में नहीं जाना जा सकता। बोलो, जथूरा महान है।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने एक दूसरे को देखा।

"बोलो। वहां मेरे खाते में इस बात की एंट्री हो जाएगी कि मेरे यहां सब ठीक चल रहा है। मैं ड्यूटी पर हूं।"

"बोल दे सपन।" लक्ष्मण दास ने मुंह बनाकर कहा—"ये हमारा यार बना हुआ है, तभी तो सब बातें बता रहा है।"

"इसने हमें नंगा करके सड़क पर घुमा दिया तो, तब भी कहना पड़ेगा। पहले तू बोल।"

"दोनों एक साथ बोलते हैं—बोलो...।"

मोनो जिन्न मुस्कराकर कह उठा।

"तुम दोनों बहुत अच्छे हो, जो मेरी बात मान जाते हो। चलो, अब मेरे पास आकर मेरी बांहें थाम लो। हमें यहां से रवाना होना है, जहां देवा मिन्नो, नगीना, नील सिंह, परसू, भंवर सिंह और त्रिवेणी मौजूद हैं।"

दोनों उठकर मोमो जिन्न के पास पहुंचे।

मोमो जिन्न ने दोनों बांहें फैला दीं। लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने उसकी एक-एक बांह थाम ली।

"हम जा कहां रहे हैं?" सपन चड्ढा बोला।

"वहां पहुंचकर देख लेना।"

"हम कार पर नहीं जा सकते।"

"वहां कार नहीं जाती।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?" लक्ष्मण दास कह उठा।

"वहां पहुंचोगे तो पता चल जाएगा। एक बार फिर बोलो, जथूरा महान है।"

"जथूरा महान है।" दोनों फंसे स्वर में कह उठे।

अगले ही पल, मोमो जिन्न के साथ-साथ लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा का शरीर भी धुंधला-सा पड़ने लगा। देखते-ही-देखते उनके शरीर जैसे हवा में घुलते गायब होते चले गए।

अब ऐसा लग रहा था जैसे कोई वहां था ही नहीं।

जगमोहन और सोहनलाल कुएं में फंसे ऊपर देख रहे थे। ऊपर धूप और आसमान नजर आ रहा था, जबकि भीतर अंधेरा था। बहुत कम, बाहर की रोशनी नीचे पहुंच पा रही थी। ऊपर से आती रस्सी अभी तक नीचे लटक रही थी, जिसके साथ बाल्टी बंधी थी। वो अगर खींचते तो पूरी की पूरी रस्सी नीचे गिर जानी थी। उन्हें इंतजार था कि कोई कुएं पर आए और उन्हें बाहर निकाले। सोहनलाल जगमोहन को देखकर बोला।

"हम तो बुरे फंस गए।"

"बेवकूफ हैं हम।" जगमोहन ने झल्लाकर कहा।

"वो कैसे?" उसके शब्दों पर सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

"वो मोना चौधरी नहीं थी, उसका बहरूप था। ये हम जानते थे। हमने उसे देखा तो, सोचने लगे कि उसका पीछा करके, बहुत बड़ा तीर मार रहे हैं जबकि हकीकत ये थी कि वो हमें फंसाने के लिए जानबूझकर हमारे सामने आई थी कि हम उसके पीछे जाएं और वो हमें इस तरह फंसा दे।" जगमोहन ने कुढ़कर कहा—"जथूरा का कालचक्र सच में बहुत चालाक है।"

"अब तो जो होना था, हो चुका।"

"मुझे आशंका है कि बंगले में देवराज चौहान, बांके और रुस्तम के साथ भी बुरी घटना पेश आई होगी।"

"ये जरूरी तो नहीं।"

"जरूरी है। जथूरा का कालचक्र हर उसके लिए है, जो पूर्वजन्म से सम्बंध रखता है।" जगमोहन बोला।

"परंतु वो तो हम लोगों को गायब कर रहा था, अब हमें इस तरह फंसा क्यों दिया।" सोहनलाल ने कहा।

"क्या पता कालचक्र ने हमें क्या सोचकर कुएं में फंसाया है। जरूर इसके पीछे कोई बड़ी चाल है।" जगमोहन ने गहरी सांस लेकर कहा—"मैं उस बुढ़िया को पहचान न सका। मैं क्या मेरी जगह कोई भी होता धोखा खा जाता। वो ही पहले मोना चौधरी के रूप में थी, जो बुढ़िया हमें मिली। मैं कुएं की मुंडेर पर हाथ रखे नीचे झांक रहा था कि कितनी आसानी से उसने मेरी दोनों टांगें उठाईं और मुझे नीचे फेंक दिया।"

"तेरे को तो फिर भी उसने इज्जत से फेंका।" सोहनलाल ने मुंह बनाया—"मुझे तो बच्चों की तरह उठाकर नीचे फेंक दिया।

ये तो अच्छा हुआ कि मैं तेरे ऊपर नहीं गिरा। मुझे तो अपने इस हाल पर तरस आ रहा है।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"उधर देवराज चौहान, बांके, रुस्तम हमारा इंतजार कर रहे होंगे। शाम होने वाली है।"

"पता नहीं यहां कितनी देर रहना पड़ेगा। ऊपर कुएं पर कोई गांव वाला अभी तक पानी निकालने आया नहीं।"

तभी जगमोहन को अपने बेहद करीब से, धीमी-सी आवाज सुनाई दी।

"जग्गू।"

जगमोहन की नजर तेजी से कुएं में हर तरफ घूमी। परंतु कोई न दिखा।

"कौन है?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"मैं वही हूं जग्गू, जो तेरे को जथूरा के हादसों का पूर्वाभास करा रहा था।" आवाज पुनः सुनाई दी।

इस बार सोहनलाल ने भी उस आवाज को सुना।

"कौन हो तुम?"

"इस वक्त मैं तुझे अपने बारे में नहीं बता सकता।"

"क्यों?"

"तुम कालचक्र के भीतरी हिस्से में आ फंसे हो। यहां मैंने अपना नाम बताया तो कालचक्र सुन लेगा।"

"तुम कालचक्र से डरते हो?"

"मैं नहीं जानता कि इसका क्या जवाब दूं, परंतु मैं नहीं चाहता कि अभी कालचक्र मेरे बारे में जाने। वैसे तू मुझे अच्छी तरह से जानता है। मेरी आवाज सुनकर तू मुझे पहचान सकता है।" वो धीमी आवाज दोनों को सुनाई दे रही थी।

"तो मैं तुझे पहचान क्यों नहीं रहा?"

"अभी तेरे को पूर्वजन्म की याद नहीं आई। जब भी तेरे मस्तिष्क में पूर्वजन्म की यादें आएंगी, तू मुझे पहचान लेगा।"

"हमें यहां से बाहर निकलो।" जगमोहन ने कहा।

"ये मेरे बस में नहीं। मैं सीधे-सीधे कालचक्र से नहीं टकरा सकता।"

"तो तुम हमारे लिए क्या कर सकते हो?"

"मैं तुम पर आने वाली मुसीबतों से तुम्हें बचा सकता हूं।" वो आवाज पुनः सुनाई दी—"तुम दोनों को कालचक्र, अपने भीतर

निगलने वाला है। वहां तुम दोनों के लिए ढेरों खतरे सामने आएंगे। कोई भी खतरा तुम लोगों की जिंदगी ले लेगा। तब मेरे से जितनी सहायता हो सकेगी, करूंगा, तुम्हें बचाऊंगा।"

"आखिर हमारी मंजिल क्या है?"

"पूर्वजन्म में प्रवेश करना। लेकिन कालचक्र तुम दोनों को अपने भीतर समेट चुका है। तुम दोनों के सामने इतने खतरे आएंगे कि बच न सकोगे, अगर बच गए तो खुद को पूर्वजन्म के प्रवेश द्वार पर खड़े पाओगे। परंतु शायद बच न सकोगे।"

"ओह!"

"लेकिन मैं तुम्हारे साथ हूं। भरसक चेष्टा करूंगा कि तुम लोग कालचक्र से बचे रह सको।"

जगमोहन और सोहनलाल के चेहरे पर गम्भीरता के भाव थे।

"तुम मुझे जथूरा के हादसों का पूर्वाभास क्यों कराते रहे, अब तुम मेरी सहायता क्यों कर रहे हो?"

"वक्त आने पर तुम्हें तुम्हारे सवालों का जवाब मिल जाएगा जग्गू। अभी इन बातों का जवाब देकर मैं कालचक्र के सामने अपना भेद नहीं खोलना चाहता। इस वक्त तुम लोग बहुत भारी खतरे में हो।"

"तुम सामने क्यों नहीं आते?"

"नहीं आ सकता। ये ही बहुत बड़ी बात है कि मैं कालचक्र के भीतर पहुंचकर तुमसे बात कर रहा हूं।"

"ओह।"

"अब मेरी बात ध्यान से सुनो। जल्द ही तुम लोग कालचक्र के भीतरी हिस्से में पहुंचने वाले हो। ये बात मन से निकाल दो कि तुम लोग इस कुएं से बाहर निकल सकोगे। ये कुआं नहीं, कालचक्र का प्रवेश द्वार है। बाहर गांव वालों को ये कुआं नजर नहीं आता। क्योंकि ये मायावी है। कुछ ही देर में ये कुआं भी गायब हो जाएगा।"

"तुम तो हमारे में डर पैदा कर रहे हो।"

"डरो मत। हौसले से काम लो। तभी आने वाले खतरों का सामना करके जिंदा रह पाओगे।" वो आवाज उनके कानों में पड़ रही थी—"कुछ ही देर में कालचक्र तुम दोनों को अपने भीतर समेटकर, मौत की राह पर फेंकने जा रहा है। वहां तुम्हें दो रास्ते नजर आएंगे। तुम्हें गुलचंद के साथ बाईं तरफ वाले रास्ते में जाना है।"

"बाईं तरफ वाला रास्ता?"

"हां।"

"वहां क्या होगा—जो...।"

"मैं नहीं जानता कि बाईं तरफ वाले रास्ते में क्या होगा, परंतु इतना जान लिया है मैंने कि उस रास्ते पर जाने से, तुम लोग अगले खतरे के आने तक, जिंदा रह सकते हो। ये मत सोचना कि बाईं तरफ वाले रास्ते पर तुम लोग सुरक्षित हो। खतरे वहां भी होंगे, लेकिन कम होंगे। सतर्क रहे तो बचे रह सकते हो। भूलना मत, बाईं तरफ वाले रास्ते पर जाना है तुम दोनों ने। अब मैं जाता हूं, कालचक्र के भीतर की रहस्यमय परतों के बारे में पता लगाना है कि वहां क्या-क्या खतरे भरे पड़े हैं, ताकि तुम दोनों को बचाकर पूर्वजन्म के प्रवेश द्वार तक ले जा सकूं। इसमें मुझे भी खतरा है। कालचक्र मुझ पर भी अपना जाल फेंक सकता है। मुझे भी सावधानी से काम करना होगा।"

"फिर कब आओगे हमारे पास?"

"जल्दी लौटूंगा।"

"लेकिन मेरे या सोहनलाल के पूर्वजन्म में प्रवेश कर लेने से क्या होगा। हम दोनों वहां के खतरों का सामना नहीं कर सकते। जब-जब भी हमने पूर्वजन्म में प्रवेश किया है, सबके साथ ही किया है।"

"कालचक्र ने देवा, मिन्नो, भंवर सिंह, परसू, नीलसिंह, नगीना को भी बुरा फंसा रखा है। वो भी इस वक्त जहां पहुंच चुके हैं, वहां खतरे ही खतरे हैं, वो लोग भी खतरों से बच नहीं सके, जो बचेगा, वो ही पूर्वजन्म के प्रवेश द्वार तक पहुंच सकेगा।"

"ओह।" जगमोहन चिंतित स्वर में बोला—"वो सब लोग हैं कहां?"

"उनके बारे में सोचकर वक्त बर्बाद मत करो, अपने बारे में सोचो। याद रखना बाईं तरफ वाले रास्ते पर जाना है। अब मैं जा रहा हूं।" इसके साथ ही आवाज आनी बंद हो गई।

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

"ये तो फंस गए हम।" जगमोहन गहरी सांस लेकर बोला।

"बुरे फंसे हैं।"

तभी कुएं में कम्पन उभरा।

दो पल के लिए लगा जैसे कुएं की गोल दीवार गिरने वाली हो, फिर वो गोल दीवार धीरे-धीरे, गोल-गोल घूमने लगी। जैसे लट्टू घूमता है। हर बीतते पल के साथ उसकी रफ्तार तेज होती जा रही

थी। जगमोहन और सोहनलाल कुएं के पानी के बीचोबीच खड़े थे। हैरत की बात तो ये थी कि पानी शांत था, कुएं की गोल दीवारों के गोल-गोल घूमने पर भी, पानी अपनी जगह पर स्थिर था। तेज-तेज ऐसी आवाजें आ रही थीं, जैसे पत्थर आपस में रगड़ खा रहे हों।

तभी सोहनलाल की निगाह ऊपर पड़ी तो उसके मुंह से निकला।

"ओह, हम जमीन के भीतर जा रहे हैं।"

जगमोहन ने सिर उठाकर ऊपर देखा तो खुद को सुरंग जैसी जगह में महसूस किया। बाहर की रोशनी और आसमान बहुत दूर, बिंदु की तरह दिखे।

'ये कैसी मुसीबत है।' जगमोहन बड़बड़ाया।

वे दोनों अब घुप्प अंधेरे में, पानी में थे।

फिर ऊपर बिंदु जैसी रोशनी नजर आनी बंद हो गई।

देर तक उन्हें पत्थरों के रगड़ने की आवाज सुनाई देती रही। फिर एकाएक ही सब कुछ थम गया। सन्नाटा सा उभर आया वहां। चुप्पी ऐसी थी कि उन्हें अपनी सांसों की आवाजें स्पष्ट सुनाई दे रही थीं। एकाएक ही उन्हें पुनः पत्थरों के रगड़ खाने की आवाज सुनाई दी और देखते-ही-देखते सामने दो दरवाजे जैसी जगह नजर आने लगी। जिनके पार दिन का उजाला फैला था। वहां पेड़ थे, मैदान था, हवा चल रही थी, उनकी नजरें दोनों दरवाजों पर थीं। उनके लिए हैरत की बात तो ये थी कि दोनों दरवाजों के पास एक ही जगह थी। बाएं से भीतर जाएं या दाएं से, पहुंचेंगे एक ही जगह पर, फिर उसने क्यों कहा कि वो बाईं तरफ वाले दरवाजे से भीतर प्रवेश करे। ये उलझन खुद-ब-खुद ही उनके मस्तिष्क में आ ठहरी थी।

जगमोहन ने ऊपर देखा। कुआं पाइप की तरह बंद दिखा।

"ये सब क्या है?" सोहनलाल बोला।

"हम कालचक्र के भीतरी हिस्से में आ फंसे हैं।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"लेकिन ये दो दरवाजों का क्या मामला है। उसने कहा था कि हम बाईं तरफ वाले दरवाजे से भीतर प्रवेश करें। जबकि दोनों दरवाजे तो एक ही जगह पर लगे हैं। बाएं दरवाजे से जाएं या दाएं से, बात तो एक ही है।" सोहनलाल बोला।

"कुछ तो बात होगी जो उसने हमें बाईं तरफ वाले दरवाजे से जाने को कहा।"

"क्या पता वो कौन था। ये भी कालचक्र की कोई चाल न हो।"

जगमोहन सोहनलाल को देखने लगा। सोहनलाल की बात सही हो सकती थी।

जगमोहन को खामोश पाकर सोहनलाल कह उठा।

"क्या सोचा, कौन-से दरवाजे से भीतर जाएं?"

"हमारे लिए दोनों रास्ते अंजाने हैं।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"किसी से भी भीतर प्रवेश करें। कोई फर्क नहीं पड़ता। वो जो कोई भी था, हम उस पर भरोसा करके, बाईं तरफ वाले दरवाजे से भीतर जाएंगे।"

"एक बार फिर सोच ले।" सोहनलाल ने बेचैन स्वर में कहा।

"सोच लिया।" जगमोहन की आवाज में दृढ़ता थी। इसके साथ ही वो कुएं के पानी में आगे बढ़ा और ऊपर चढ़कर बाईं तरफ वाले दरवाजे से उस हरे-भरे, पेड़ों-भरे मैदानी हिस्से में प्रवेश कर गया।

सोहनलाल वहीं खड़ा देखता रहा।

जगमोहन ने मुस्कराकर सोहनलाल से कहा।

"बहुत ठंडी हवा चल रही है, तू भी आ जा।"

सोहनलाल के होंठ भिंच गए।

"सब ठीक है। फिक्र क्यों करता है।" जगमोहन पुनः कह उठा—"आ, अब, देर न कर।"

सोहनलाल कुएं के पानी में आगे बढ़ा और फिर वो भी बाईं तरफ वाले दरवाजे से निकलकर, जगमोहन के पास जा पहुंचा। तभी गड़-गड़ की आवाजें उभरीं। उन्होंने चौंककर कुएं की दीवारों में नजर आ रहे दरवाजों की तरफ देखा। आवाजें वहीं से उभरी थीं। उनके देखते-ही-देखते वो दरवाजे जैसे रास्ते बंद हो गए। वहां कुएं की दीवार नजर आने लगी। जहां से वो आए थे, वो रास्ता बंद हो चुका था और कुआं वहां किसी मीनार की तरह खड़ा था।

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें वहां दूर-दूर तक घूमीं।

परंतु वहां इंसान तो क्या, जानवर या चिड़िया तक भी नजर न आई। ऐसे हरियाली भरे वातावरण में किसी पक्षी का भी नजर न आना, उलझन में डालने वाली बात थी।

"वो क्या है?" तभी सोहनलाल के होंठों से निकला।

जगमोहन ने सोहनलाल की निगाहों का पीछा करते हुए उस तरफ देखा।

वो कोई घुड़सवार था, जो कि तेजी से इसी दिशा की तरफ दौड़ा चला आ रहा था।

दोनों उसी घुड़सवार को देखते रहे। वो अब काफी पास आ चुका था। उसके शरीर पर गहरे नीले रंग के कपड़े थे। वर्दी की तरह, वो कैप्टन या फिर किसी सिपाही या ऐसे ही किसी ओहदे जैसी वर्दी में था। जब वो पास से निकला तो उसने घोड़े की रफ्तार धीमी करते हुए चिल्लाकर कहा।

"ऐ तुम लोग यहां क्या कर रहे हो, रानी साहिबा की सवारी आ रही है, जल्दी से रास्ता साफ कर दो। इस बात का ढिंढोरा पहले ही पिटवा दिया था कि कोई नजर न आए, फिर तुम दोनों रानी साहिबा की राहों में क्यों खड़े हो। जल्दी से दूर हट जाओ, वरना बेहद कठोर सजा मिलेगी।"

इसके साथ ही वो घुड़सवार पुनः तेजी से आगे को दौड़ता चला गया।

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

"ये सब क्या हो रहा है, ये कैसी जगह है?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"यहां मत खड़े रहो। कोई जगह ढूंढो छिपने की, वरना नई मुसीबत में फंस जाएंगे।" जगमोहन ने कहा।

"ये रानी साहिबा कौन है जो...।"

"कहीं छिपकर देखते हैं कि रानी साहिबा और उसकी सवारी कैसी है, आओ उधर, उस पत्थर के पीछे...।"

दोनों जल्दी से कुछ दूरी पर मौजूद बड़े-से पत्थर की तरफ दौड़ते चले गए। अभी उस पत्थर के पीछे पहुंचकर, उन्होंने दो-चार सांसें ही ली होंगी कि काफी दूर धूल का छोटा सा गुब्बार उठता दिखा, साथ ही घोड़ों की बेहद मध्यम टप-टप की आवाजें, उनके कानों में पड़ने लगी थीं।

"रानी साहिबा की सवारी आ रही है।" धूल के गुब्बार को देखते हुए जगमोहन कह उठा।

"मुझे घोड़ों की टॉपों की आवाजें सुनाई दे रही हैं।" सोहनलाल बोला।

"पता नहीं, कहां आकर फंस गए हैं।" जगमोहन गहरी सांस लेकर सोहनलाल को देखते हुए मुस्करा पड़ा।

दोनों की निगाह दूर उठते धूल के गुब्बार पर थी, जो इसी तरफ आता जा रहा था।